Vaaraa[N] by Bhai Gurdaas

Vaar 1

नमस्कार गुरदेव को सतनामु जिस मंत्र सुणाया॥ (१-१-१)
भवजल व्चिों क्ढके मुकति पदार्थ माँहि समाया॥ (१-१-२)
जनम मरन भउ क्टिआ संसा रोग विजोग मिटाया॥ (१-१-३)
संसा इह संसार है जनम मरन विच दुख सबाया॥ (१-१-४)
जमदंड सिरों न उतरै साकत दुरजन जनम गवाया॥ (१-१-५)
चरन गहे गुरदेव के सति सबद दे मुकति कराया॥ (१-१-६)
भाइ भगत गुरपुरब कर नाम दान इशनान दृड़ाया॥ (१-१-७)
जेहा बीउ तेहा फल पाया ॥१॥ (१-१-८)

प्रथमैं सास न मास सन अंध धुंद कछ खबर न पाई॥ (१-२-१)
रक्त बिंद की देह रच पाँच तत की जड़त जड़ाई॥ (१-२-२)
पउण पाणी बैसंतरो चौथी धरती संग मिलाई॥ (१-२-३)
पंच विच आकास कर करता छटम अदिश समाई॥ (१-२-४)
पंच त्त पचीस गुण शत्र मित्र मिल देह बणाई॥ (१-२-५)
खाणी बाणी चलित कर आवागउण चरित दिखाई॥ (१-२-६)
चौरासीह ल्ख जोन उपाई ॥२॥ (१-२-७)

चौरासीह ल्ख जोन विच उ्तम जनम सु माणस देही॥ (१-३-१)
अखी वेखन करन सुनण मुख शुभ बोलन बचन सनेही॥ (१-३-२)
हथीं कार कमावनी पैरी चल सतिसंग मिलेही॥ (१-३-३)
किरत विरत कर धर्म दी ख्ट खवालन कार करेही॥ (१-३-४)
गुरमुख जनम सकारथा गुरबाणी पड़ह समझ सनेही॥ (१-३-५)
गुर भाई संतुशट कर चरनामृत लै मुख पिवेही॥ (१-३-६)
पैरी पवन न छोडीऐ कली काल रहिरास करेही॥ (१-३-७)
आप तरे गुर सिख तरेही ॥३॥ (१-३-८)

ओअंकार आकार कर एक कवाउ पसाउ पसारा॥ (१-४-१)
पंच त्त परवान कर घट घट अंदर तृभवन सारा॥ (१-४-२)
कादर किने न लखिआ कुदरत साज कीआ अवतारा॥ (१-४-३)
इकदूं कुदरत ल्ख कर ल्ख बिअंत असंख अपारा॥ (१-४-४)

रोम रोम विच रखिओन कर ब्रहमंड करोड़ शुमारा॥ (१-४-५)
इकस इकस ब्रहमंड विच दस दस कर औतार उतारा॥ (१-४-६)
केते बेद बिआस कर कई कतेब महम्मद यारा॥ (१-४-७)
कुदरत इक एता पासारा ॥४॥ (१-४-८)

चार जुग कर थापणा सतिजुग त्रेता दुआपुर साजे॥ (१-५-१)
चौथा कलजुग थापिआ चार वरन चारों के राजे॥ (१-५-२)
बहमण छत्री वैश सूद्र जुग जुग एको वरन बिराजे॥ (१-५-३)
सतिजुग हंस अउतार धर सोहम्ब्रहम न दूजा पाजे॥ (१-५-४)
एको ब्रह्म वखाणीऐ मोह माइआ ते बेमुहताजे॥ (१-५-५)
करन तप्सया बन विखे वखत गुजारन पिन्नी सागे॥ (१-५-६)
लख वरिहआँ दी आरजा कोठे कोट न मंदर साजे॥ (१-५-७)
इक बिनसे इक असथिर गाजे ॥५॥ (१-५-८)

त्रेते छ्त्री रूप धर सूरज बंसी बड अवतारा॥ (१-६-१)
नउं हिसे गई आरजा माया मोह अहंकार पसारा॥ (१-६-२)
दुआपुर जादव वेस कर जुग जुग अउध घटै आचारा॥ (१-६-३)
रिगबेद महिं ब्रहमकृत पूरब मुख शुभ कर्म बिचारा॥ (१-६-५)
खत्री थापे जुजर वेद दखण मुख बहु दान दातारा॥ (१-६-५)
वैसों थापिआ सिआम वेद पछम मुख कर सीस निवारा॥ (१-६-६)
रिग नीलम्बर जुजर पीत सवेतम्बर कर सिआम सुधारा॥ (१-६-७)
तृहु जुगीं त्रै धर्म उचारा ॥६॥ (१-६-८)

कलिजुग चौथा थापिआ सूद्र बिरत जग महि वरताई॥ (१-७-१)
कर्म सु रिग जुजर सिआमदे करे जगत रिद बहु सुकचाई॥ (१-७-२)
माया मोही मेदनी कलि कल वाली सभ भरमाई॥ (१-७-३)
उठी गलान जगत विच हउमै अंदर जले लुकाई॥ (१-७-४)
कोई न किसे पूजदा ऊच नीच सभ गति बिसराई॥ (१-७-५)
भए बिअदली पातशाह कलिकाती उमराव कसाई॥ (१-७-६)
रहिआ तपावस तृहु जुगी चौथे जुग जो देइ सु पाई॥ (१-७-७)
कर्म भ्रशट सभ भई लुकाई ॥७॥ (१-७-८)

चहुं बेदाँ के धर्म मथ खट शासत्र मथ रिखी सुनावै॥ (१-८-१)
ब्रहमादिक सनकादिका जिउ तिह कहा तिवें जग गावै॥ (१-८-२)
गावन पड़न बिचार बहु कोटि मधे विरला गति पावै॥ (१-८-३)

इह अचरज मन आँवदी पड़हत गुड़हत कछु भेद न आवै॥ (१-८-४)
जुग जुग एको वरन है कलजुग किवें बहुत दिखलावै॥ (१-८-५)
जंद्रे वजे तूहु जुगीं कथ पड़ह रहै भर्म नहिं जावै॥ (१-८-६)
जिओंं कर कथिआ चार वेद खट शासत्र संग साँख सुणावै॥ (१-८-७)
आपो आपणे सब मत गावै ॥८॥ (१-८-८)

गोतम तपे बिचार कै रिग वेद की कथा सुणाई॥ (१-९-१)
निआइ शासत्र को मथ कर सभ बिध करते हूथ जणाई॥ (१-९-२)
सब कुझ करते वस है होर बात विच चले न काई॥ (१-९-३)
दुहीं सिरीं करतार है आप निआरा कर दिखलाई॥ (१-९-४)
करता किनै न देखिआ कुदरत अंदर भर्म भुलाई॥ (१-९-५)
सोहं ब्रह्म छपाइकै पड़दा भर्म कतार सुणाई॥ (१-९-६)
रिग कहै सुण गुरमुखहु आपे आप न दूजी राई॥ (१-९-७)
सतिगुरू बिनाँ न सोझी पाई ॥९॥ (१-९-८)

फिर जैमन रिख बोलिआ जुजरवेद मथ कथा सुणावै॥ (१-१०-१)
करमाँ उते निबड़े देही मूध करे सो पावै॥ (१-१०-२)
थापसि कर्म संसार विच कर्म वास कर आवै जावै॥ (१-१०-३)
सहसा मनहु न चुकई करमाँ अंदर भर्म भुलावै॥ (१-१०-४)
भर्म वर्तण जगत की इको माया ब्रह्म कहावै॥ (१-१०-५)
जुजर वेद को मथन कर तूत ब्रह्म विच भर्म भुलावै॥ (१-१०-६)
कर्म दिड़ाइ जगत विच कर्म बंध कर आवै जावै॥ (१-१०-७)
सतिगुर बिना न सहसा जावै ॥१०॥ (१-१०-८)

सिआम वेद कउ सोध कर मथ वेदाँत बिआस सुणाया॥ (१-११-१)
कथनी बदनी बाहिरा आपे आपन ब्रह्म जणाया॥ (१-११-२)
नदरी किसे न लिआवई हउमैं अंदर भर्म भुलाया॥ (१-११-३)
आप पुजाइ जगत विच भाउ भगत दा मर्म न पाया॥ (१-११-४)
तृपति न आवी वेद मथि अगनी अंदरि तपत तपाया॥ (१-११-५)
माया दंड न उतरे जम दंडे बहु दुख रूआया॥ (१-११-६)
नारद मुन उपदेसिआ मथ भगवत गुण गीत कराया॥ (१-११-७)
बिन सरनी नहि कोइ तराया ॥११॥ (१-११-८)

दुआपर जुग बीतत भए कलिजुग के सिर छत्र फिराई॥ (१-१२-१)
बेद अथरबण थापिआ उतर मुख गुरमुख गुनगाई॥ (१-१२-२)

कपल रिखीशर साँख मथ अथरबण बेद की रिचा सुनाई॥ (१-१२-३)
गिआनी महारस पीअ कै सिमरै नित अनित निआई॥ (१-१२-४)
गिआन बिना नहि पाईऐ जे कई कोट जतन कर धाई॥ (१-१२-५)
कर्म जोग देही करे सो अनित् खिन टिकै न राई॥ (१-१२-६)
गिआन मते सुख ऊपजै जनम मरन का भर्म चुकाई॥ (१-१२-७)
गुरमुख गिआनी सहिज समाई ॥१२॥ (१-१२-८)

बेद अथरबण मथन कर गुरमुख बाशेखक गुण गावै॥ (१-१३-१)
जेहा बीजै सो लुणै समें बिनाँ फल ह्थि न आवै॥ (१-१३-२)
हुकमै अंदरि सभ को मन्नै हुकम सु सहज समावै॥ (१-१३-३)
आपहु कछू न होवई बुरा भला नहि मंनि वसावै॥ (१-१३-४)
जैसा करे तैसा लहै रिखी कणादिक भाख सुणावै॥ (१-१३-५)
सतिजुग का अनिआउं सुण इक फेड़े सभ जगत मरावै॥ (१-१३-६)
त्रेते नगरी पीड़ीऐ दुआपर वंस कुवंस कुहावै॥ (१-१३-७)
कलिजुग जो फेड़े सो पावै ॥१३॥ (१-१३-८)

सेखनाग पातंजल मथिआ गुरमुख शासत्र नाग सुणाई॥ (१-१४-१)
वेद अथरवण बोलिआ जोग बिना नहि भर्म चुकाई॥ (१-१४-२)
जिउंकर मैली आरसी सिकल बिना नहिं मुख दिखाई॥ (१-१४-३)
जोग पदार्थ निरमला अनहद धुन अंदर लिवलाई॥ (१-१४-४)
अशदसा सिधि नउनिधी गुरमुख जोगी चरन लगाई॥ (१-१४-५)
तृहु जुगाँ की बाशना कलिजुग विच पातंजल पाई॥ (१-१४-६)
हथो हथी पाईऐ भगत जोग की पूर कमाई॥ (१-१४-७)
नाम दान इशनान सुभाई ॥१४॥ (१-१४-८)

जुग जुग मेर सरीर का बाशना ब्धा आवै जावै॥ (१-१५-१)
फिर फिर फेर वटाईऐ गिआनी होइ मर्म को पावै॥ (१-१५-२)
सतिजुग दूजा भर्म कर त्रेते विच जोनी फिर आवै॥ (१-१५-३)
त्रेते करमाँ बाँधते दुआपर फिर अवतार करावै॥ (१-१५-४)
दुआपर ममता अहंकार हउमैं अंदर गरबि गलावै॥ (१-१५-५)
तृहु जुगाँ के कर्म कर जनम मरन संसा न चुकावै॥ (१-१५-६)
फिर कलिजुग अंदर देह धर करमाँ अंदर फेर वसावै॥ (१-१५-७)
अउसर चुका हथ न आवै ॥१५॥ (१-१५-८)

कलिजुग की सुध साधना कर्म किरत की चलै न काई॥ (१-१६-१)

बिनाँ भजन भगवान के भाउ भगत बिन ठौर न थाई॥ (१-१६-२)
लहे कमाणा एत जुग पिछलीं जुगीं कर कमाई॥ (१-१६-३)
पाया मानस देह कउ ऐथोंं चुकिआ ठौर न ठाई॥ (१-१६-४)
कलिजुग के उपकार सुण जैसे बेद अथरबण गाई॥ (१-१६-५)
भाउ भगति परवाणु है ज्ग होम ते पुरब कमाई॥ (१-१६-६)
करके नीच सदावणा ताँ प्रभ लेखे अंदर पाई॥ (१-१६-७)
कलिजुग नावै की वडिआई ॥१६॥ (१-१६-८)

जुगगरदी जब होवहे उलटे जुग किआ होइ वरतारा॥ (१-१७-१)
उठे गिलान जगत विच वरतै पाप भ्रशट संसारा॥ (१-१७-२)
वरना वरन न भावनी खहि खहि जलन बाँस अंगयारा॥ (१-१७-३)
निंदा चालै वेद की समझन नहि अगिआन गुबारा॥ (१-१७-४)
बेद ग्रंथ गुर हट है जिस लग भवजल पार उतारा॥ (१-१७-५)
सतिगुर बाझ न बुझीऐ जिचर धरे न गुर अवतारा॥ (१-१७-६)
गुर परमेशर इक है स्चा शाह जगत वणजारा॥ (१-१७-७)
चड़े सूर मिट जाइ अंधारा ॥१७॥ (१-१७-८)

कलिजुग बोध अवतार है बोध अबोध न दृशटी आवै॥ (१-१८-१)
कोइ न किसै वरजई सोई करै जोई मन भावै॥ (१-१८-२)
किसै पुजाई सिला सुन्न कोई गोरीं मड़ही पुजावै॥ (१-१८-३)
तंत्र मंत्र पाखंड कर कलह क्रोध बहु वाध वधावै॥ (१-१८-४)
आपो धापी होइकै निआरे निआरे धर्म चलावै॥ (१-१८-५)
कोई पूजै चंद्र सूर कोई धरत अकास मनावै॥ (१-१८-६)
पउण पाणी बैसंतरो धरमराज कोई तृपतावै॥ (१-१८-७)
फोकट धरमी भर्म भुलावै ॥१८॥ (१-१८-८)

भई गिलान जगत विच चार वरन आश्रम उेपाए॥ (१-१६-१)
दस नाम सनिआसीआँ जोगी बारह पंथ चलाए॥ (१-१६-२)
जंगम अते सरेवड़े दगे दिगम्बर वाद कराए॥ (१-१६-३)
ब्रह्मण बहु परकार कर शासत्र वेद पुराण लड़ाए॥ (१-१६-४)
खट दरशन बहु वैर कर नाल छतीस पाखंड चलाए॥ (१-१६-५)
तंत मंत रासाइणा करामात कालख लपटाए॥ (१-१६-६)
एकस ते बहु रूप करूपी घणे दिखाए॥ (१-१६-७)
कलिजुग अंदर भर्म भुलाए ॥१६॥ (१-१६-८)

बहु वाटीं ज्ग चलीआँ जब ही भए महम्मद यारा॥ (१-२०-१)
कौम बह्तर संग कर बहु बिधि बैर बिरोध पसारा॥ (१-२०-२)
रोझे ईद नमाझ कर करमी बंद कीआ संसारा॥ (१-२०-३)
पीर पकम्बर औलीऐ ग़ौस कुतब बहु भेख सवारा॥ (१-२०-४)
ठाकुर दुआरै ढाहिकै तिह ठअुड़ीं मसीत उसारा॥ (१-२०-५)
मारन गउ गरीब धरती उपर पाप बिथारा॥ (१-२०-६)
काफर मुलहद इरमनी रूम्मी जंगी दुशमन दारा॥ (१-२०-७)
पापे दा वरतिआ वरतारा ॥२०॥ (१-२०-८)

चार वरन चार मझहबाँ जग विच हिंदू मुसलमाणे॥ (१-२१-१)
खुदी बकीली तक्बरी खिंचोताण करेन धिङाणे॥ (१-२१-२)
गंग बनारस हिंदूआँ म्का काबा मुसलमाणे॥ (१-२१-३)
सुन्नत मुसलमान दी तिलक जंञू हिंदू लोभाणे॥ (१-२१-४)
राम रहीम कहाइंदे इक नाम दुइ राह भुलाणे॥ (१-२१-५)
बेद कतेब भुलाइकै मोहे लालच दुनी शैताणे॥ (१-२१-६)
स्च किनारे रहि गया खहि मरदे बामण मउलाणे॥ (१-२१-७)
सिरों न मिटे आवण जाणे ॥२१॥ (१-२१-८)

चारे ज्गे चहु जुगी पंचाइण प्रभ आपे होआ॥ (१-२२-१)
आपे प्टी कलम आप आपे लिखणहारा होआ॥ (१-२२-२)
बाझ गुरू अंधेर है खहि खहि मरदे बहु बिध लोआ॥ (१-२२-३)
वरतिआ पाप जग्त्र ते धउल उडीणा निसदिन रोआ॥ (१-२२-४)
बाझ दइआ बल हीण हो न्घिर चले रसातल टोआ॥ (१-२२-५)
खड़ा इक ते पैर ते पाप संग बहु भारा होआ॥ (१-२२-६)
थम्मे कोइ न साध बिन साध न द्सै जग विच कोआ॥ (१-२२-७)
धर्म धौल पुकारै तले खड़ोआ ॥२२॥ (१-२२-८)

सुणी पुकार दातार प्रभ गुर नानक जग माहिं पठाया॥ (१-२३-१)
चरन धोइ रहिरास कर चरनामृत स्खाँ पीलाया॥ (१-२३-२)
पारब्रह्म पूरन ब्रह्म कलिजुग अंदर इक दिखाया॥ (१-२३-३)
चारै पैर धरम्म दे चार वरन इक वरन कराया॥ (१-२३-४)
राणा रंक बराबरी पैरीं पवणा जग वरताया॥ (१-२३-५)
उलटा खेल पिरम्म दा पैराँ उपर सीस निवाया॥ (१-२३-६)
कलिजुग बाबे तारिआ स्तनाम पड़ह मंत्र सुणाया॥ (१-२३-७)
कलि तारण गुर नानक आया ॥२३॥ (१-२३-८)

पहिलाँ बाबे पाया बखश दर पिछों दे फिर घाल कमाई॥ (१-२४-१)
रेत अ्क आहार कर रोड़ाँ की गुर करी विछाई॥ (१-२४-२)
भारी करी त्पसिआ बडे भाग हरि सिउं बणि आई॥ (१-२४-३)
बाबा पैधा सच खंड नानिधि नाम गरीबी पाई॥ (१-२४-४)
बाबा देखे धिआन धर जलती सभ पृथवी दिस आई॥ (१-२४-५)
बाझहु गुरू गुबार है हैहै करदी सुणी लुकाई॥ (१-२४-६)
बाबे भेख बणाइआ उद्ासी की रीत चलाई॥ (१-२४-७)
चड़िहआ सोधन धरत लुकाई ॥२४॥ (१-२४-८)

बाबा आइआ तीरथीं तीर्थ पुरब सभे फिर देखै॥ (१-२५-१)
पूरब धर्म बहु कर्म कर भाउ भगति बिन किते न लेखै॥ (१-२५-२)
भाउ न ब्रह्मे लिखिआ चार बेद सिम्म्रति पड़ह देखै॥ (१-२५-३)
ढूंडी सगली पिरथमी सतिजुग आदि दुआ्पर त्रेतै॥ (१-२५-४)
कलिजुग धुंधूकार है भर्म भुलाई बहु बिधि भेखै॥ (१-२५-५)
भेखीं प्रभू न पाईऐ आप गवाए रूप न रेखै॥ (१-२५-६)
गुरमुख वरन अवरन होइ निव चलै गुरसिख विसेखै॥ (१-२५-७)
ताँ कुछ घाल पवै दर लेखै ॥२५॥ (१-२५-८)

जत सती चिर जीवणे साधिक सि्ध नाथ गुर चेले॥ (१-२६-१)
देवी देव रखीशराँ भैरों खेत्र पाल बहु मेले॥ (१-२६-२)
गण गंधरब अपशराँ किन्नर ज्छ चलित बहु खेले॥ (१-२६-३)
राकश दानो दैंत लख अंदर दूजा भाउ दुहेले॥ (१-२६-४)
हउमैं अंदर सभको डुबे गुरू सणें बहु चेले॥ (१-२६-५)
गुरमुख कोइ न दिसई ढूंडे तीर्थ जात्री मेले॥ (१-२६-६)
ढूंडे हिंदू तुरक सभ पीर पैकम्बर कउमि कतेले॥ (१-२६-७)
अंधी अंधे खूहे ठेले ॥२६॥ (१-२६-८)

सतिगुर नानक प्रगटिआ मिटी धुंध जग चानण होआ॥ (१-२७-१)
जिउं कर सूरज निकलिआ तारे छपे अंधेर पलोआ॥ (१-२७-२)
सिंघ बुके मिरगावली भन्नी जाए न धीर धरोआ॥ (१-२७-३)
जिथै बाबा पैर धरै पूजा आसण थापण सोआ॥ (१-२७-४)
सिध आसण सभ जगत दे नानक आद मते जे कोआ॥ (१-२७-५)
घर घर अंदर धरमसाल होवै कीर्तन सदा विसोआ॥ (१-२७-६)
बाबे तारे चार चक नौ खंड पृथमी सचा ढोआ॥ (१-२७-७)

गुरमुख कलि विच परगट होआ ॥२७॥ (१-२७-८)

बाबे डिठी पिरथमी नवै खंड जिथै तक आही॥ (१-२८-१)
फिर जा चड़े सुमेर पर सिध मंडली दृशटी आई॥ (१-२८-२)
चौरासीह सिध गोरखादि मन अंदर गणती वरताई॥ (१-२८-३)
सिध पुछन सुन बालिआ कौन शकत तुहि एथे लिआई॥ (१-२८-४)
हउं जपिआ परमेशरो भाउ भगत संग ताड़ी लाई॥ (१-२८-५)
आखण सिध सुण बालिआ अपणा नाँ तुम देहु बताई ॥ (१-२८-६)
बाबा आखे नाथ जी नानक नाम जपे गत पाई॥ (१-२८-७)
नीच कहाइ ऊच घर आई ॥२८॥ (१-२८-८)

फिर पुछण सिध नानका मात लोक विच किआ वरतारा॥ (१-२९-१)
सभ सिधीं एह बुझिआ कलि तारण नानक अवतारा॥ (१-२९-२)
बाबे कहिआ नाथ जी स्च चंद्रमा कूड़ अंधारा॥ (१-२९-३)
कूड़ अमावस वरतिआ हउं भालण चड़िआ संसारा॥ (१-२९-४)
पाप गिरासी पिरथमी धौल खड़ा धर हेठ पुकारा॥ (१-२९-५)
सिध छप बैठे परबतीं कौण जग कउ पार उतारा॥ (१-२९-६)
जोगी गिआन विहूणिआँ निसदिन अंग लगाइन छारा॥ (१-२९-७)
बाझ गुरू डुबा जग सारा ॥२९॥ (१-२९-८)

कल आई कूते मुही खाज होआ मुरदार गुसाई॥ (१-३०-१)
राजे पाप कमाँवदे उलटी वाड़ खेत कउ खाई॥ (१-३०-२)
परजा अंधी गिआन बिन कूड़ कुसत मुखहु अलाई॥ (१-३०-३)
चेले साज वजाइंदे न्चण गुरू बहुत बिध भाई॥ (१-३०-४)
सेवक बैठन घराँ विच गुर उठ घरीं तिनाड़े जाई॥ (१-३०-५)
काज़ी होए रिशवती व्ढी लैके ह्क गवाई॥ (१-३०-६)
इसत्री पुरखा दाम हित भावें आइ किथाऊं जाई॥ (१-३०-७)
वरतिआ पाप सभस जग माँही ॥३०॥ (१-३०-८)

सिधीं मने बिचारिआ किव दरशन एह लेवे बाला॥ (१-३१-१)
ऐसा जोगी कली माहि हमरे पंथ करे उजिआला॥ (१-३१-२)
ख्पर दिता नाथ जी पाणी भर लैवण उठ चाला॥ (१-३१-३)
बाबा आइआ पाणीऐ डिठे रतन जवाहर लाला॥ (१-३१-४)
सतिगुर अगम अगाध पुरख केहड़ा झले गुर दी झाला॥ (१-३१-५)
फिर आया गुर नाथ जी पाणी ठउड़ नहीं उस ताला॥ (१-३१-६)

शबद जिती सिध मंडली कीतोसु अपणा पंथ निराला॥ (१-३१-७)
कलिजुग नानक नाम सुखाला ॥३१॥ (१-३१-८)

बाबा फिर मके गया नील बसत्र धारे बनवारी॥ (१-३२-१)
आसा हथ किताब कछ कूजा बाँग मुसला धारी॥ (१-३२-२)
बैठा जाइ मसीत विच जिथे हाजी हज गुजारी॥ (१-३२-३)
जाँ बाबा सुता रात नूं वल महिराबे पाँइ पसारी॥ (१-३२-४)
जीवन मारी लत दी केड़हा सुता कुफ़र कुफ़ारी॥ (१-३२-५)
लताँ वल खुदाइ दे किउंकर पइआ होइ बजगारी॥ (१-३२-६)
टंगों पकड़ घसीटिआ फिरिआ मका कला दिखारी॥ (१-३२-७)
होइ हैरान करेन जुहारी ॥३२॥ (१-३२-८)

पुछन गल ईमान दी काज़ी मुलाँ इकठे होई॥ (१-३३-१)
वडा साँग वरताइआ लख न सके कुदरति कोई॥ (१-३३-२)
पुछण खोल किताब नूं वडा हिंदू की मुसलमानोई॥ (१-३३-३)
बाबा आखे हाज़ीआँ शुभ अमलाँ बाझो दोवें रोई॥ (१-३३-४)
हिंदू मुसलमान दोइ दरगहि अंदर लैण न ढोई॥ (१-३३-५)
कचा रंग कुसुम्भ का पाणी धोतै थिर न रहोई॥ (१-३३-६)
करन बखीली आप विच राम रहीम कुथाइ खलोई॥ (१-३३-७)
राह शैतानी दुनीआ गोई ॥३३॥ (१-३३-८)

धरी निशानी कौस दी मके अंदर पूज कराई॥ (१-३४-१)
जिथे जाई जगत विच बाबे बाझ न खाली जाई॥ (१-३४-२)
घर घर बाबा पूजीए हिंदू मुसलमान गुआई॥ (१-३४-३)
छपे नाँहि छपाइआ चड़िआ सूरज जग रुशनाई॥ (१-३४-४)
बुकिआ सिंघ उजाड़ विच सब मिरगावल भन्नी जाई॥ (१-३४-५)
चड़िहआ चंद न लुकई कढ कुनाली जोत छपाई॥ (१-३४-६)
उगवणहु ते आथवणहु नउ खंड पृथवी सभ झुकाई॥ (१-३४-७)
जग अंदर कुदरत वरताई ॥३४॥ (१-३४-८)

बाबा गिआ बगदाद नूं बाहर जाइ कीआ असथाना॥ (१-३५-१)
इक बाबा अकाल रूप दूजा रबाबी मरदाना॥ (१-३५-२)
दिती बाँग निमाज़ कर सुन्न समान होया जहाना॥ (१-३५-३)
सुन्न मुन्न नगरी भई देख पीर भइआ हैराना॥ (१-३५-४)
वेखै धिआन लगाइ कर इक फकीर वडा मसताना॥ (१-३५-५)

पुछिआ फिरके दसतगीर कौन फकीर किस का घराना॥ (१-३५-६)
नानक कलि विच आइआ रब फकीर इक पहिचाना॥ (१-३५-७)
धरत अकाश चहूं दिस जाना ॥३५॥ (१-३५-८)

पुछे पीर तकरार कर एह फकीर वडा आताई॥ (१-३६-१)
एथे विच बगदाद दे वडी करामात दिखलाई॥ (१-३६-२)
पातालाँ आकाश लख ओड़क भाली खबर सु साई॥ (१-३६-३)
फेर दुराइण दसतगीर असी भि वेखाँ जो तुहि पाई॥ (१-३६-४)
नाल लीता बेटा पीर दा अखीं मीट गिआ हवाई॥ (१-३६-५)
लख अकाश पताल लख अख फुरक विच सभ दिखलाई॥ (१-३६-६)
भर कचकौल प्रशाद दा धुरों पतालों लई कड़ाई॥ (१-३६-७)
ज़ाहर कला न छपै छपाई ॥३६॥ (१-३६-८)

गड़ह बगदाद निवाइकै मका मदीना सभ निवाया॥ (१-३७-१)
सिध चौरासीह मंडली खट दरशन पाखंड जणाया॥ (१-३७-२)
पातालाँ आकाश लख जि्ती धरती जगत सबाया॥ (१-३७-३)
जिती नवखंड मेदनी सतनाम का चक्र फिराया॥ (१-३७-४)
देवदानो राकस दैंत सभ चित्र गुप्त सभ चरनी लाया॥ (१-३७-५)
इंद्रासण अप्छराँ राग रागनी मंगल गाया॥ (१-३७-६)
हिंदू मुसलमान निवाइआ ॥३७॥ (१-३७-७)

बाबा आइआ करतारपुर भेख उदासी सगल उतारा॥ (१-३८-१)
पहिर संसारी कपड़े मंजी बैठ कीआ अवतारा॥ (१-३८-२)
उलटी गंग वहाईओन गुर अंगद सिर उपर धारा॥ (१-३८-३)
पुतीं कौल न पालिआ मन खोटे आकी नसिआरा॥ (१-३८-४)
बाणी मुखहु उचारीऐ होइ रुशनाई मिटै अंधारा॥ (१-३८-५)
गिआन गोश चरचा सदा अनहद शबद उठे धुनकारा॥ (१-३८-६)
सोदर आरती गावीऐ अमृत वेले जाप उचारा॥ (१-३८-७)
गुरमुख भार अथरबण धारा ॥३८॥ (१-३८-८)

मेला सुण शिवरात दा बाबा अचल वटाले आई॥ (१-३९-१)
दरशन वेखण कारने सगली उलट पई लोकाई॥ (१-३९-२)
लगी बरसन लछमी रिध सिध नउ निधि सवाई॥ (१-३९-३)
जोगी वेख चलित्र नों मन विच रिशक घनेरी खाई॥ (१-३९-४)
भगतीआँ पाई भगत आन लोटा जोगी लइआ छपाई॥ (१-३९-५)

भगतीआँ गई भगत बूल लोटे अंदर सुरत भुलाई॥ (१-३६-६)
बाबा जाणी जाण पुरख कढिआ लोटा जहाँ लुकाई॥ (१-३६-७)
वेख चलित्र जोगी खुणसाई ॥३६॥ (१-३६-८)

खाधी खुणस जोगीशराँ गोसट करन सभे उठ आई॥ (१-४०-१)
पुछे जोगी भंग्र नाथ तुहि दुध विच किउं काँजी पाई॥ (१-४०-२)
फिटि आ चाटा दुध दा रिड़किआँ मखण हथ न आई॥ (१-४०-३)
भेख उातर उदास दा वत किउं संसारी रीत चलाई॥ (१-४०-४)
नानक आखे भंग्रनाथ तेरी माउ कुच्जी आई॥ (१-४०-५)
भाँडा धोइ न जातिओन भाइ कुचजे फुल सड़ाई॥ (१-४०-६)
होइ अतीत गृहसत तज फिर उनहूंके घर मंगन जाई॥ (१-४०-७)
बिन दिते किछ हथ न आई ॥४०॥ (१-४०-८)

एह सुण बचन जुगीसराँ मार किलक बहु रूप उठाई॥ (१-४१-१)
खट दरशन कउ खेदिआ कलिजुग बेदी नानक आई॥ (१-४१-२)
सिध बोलन सभ अउखधीआँ तंत्र मंत्र की धुनो चड़हाई॥ (१-४१-३)
रूप वटाइआ जोगीआँ सिंघ बाघ बहु चलित दिखाई॥ (१-४१-४)
इक पर करके उडरन पंखी जिवें रहे लीलाई॥ (१-४१-५)
इक नाग होइ पवन छोड इकना वरखा अगन वसाई॥ (१-४१-६)
तारे तोड़े भंग्रनाथ इक चड़ मिरगानी जल तर जाई॥ (१-४१-७)
सिधाँ अगन न बुझे बुझाई ॥४१॥ (१-४१-८)

सिध बोले सुन नानका तुहि जग नूं करामात दिखलाई॥ (१-४२-१)
कुझ दिखाईं असानूं भी तूं किउं ढिल अजेही लाई॥ (१-४२-२)
बाबा बोले नाथ जी असाँ वेखे जोगी वसतु न काई॥ (१-४२-३)
गुर संगत बाणी बिना दूजी ओट नहीं है राई॥ (१-४२-४)
सिव रूपी करता पुरख चले नाहीं धरत चलाई॥ (१-४२-५)
सिध तंत्र मंत्र कर झड़ पए शबद गुरू कै कला छपाई॥ (१-४२-६)
ददे दाता गुरू है कके कीमत किनै न पाई॥ (१-४२-७)
सो दीन नानक सतिगुर सरणाई ॥४२॥ (१-४२-८)

बाबा बोले नाथ जी शबद सुनहु सच मुखहु अलाई॥ (१-४३-१)
बाजहु सचे नाम दे होर करामात असाथे नाही॥ (१-४३-२)
बसतर पहिरों अगनि के बरफ हिमाले मंदर छाई॥ (१-४३-३)
करो रसोई सार दी सगली धरती नूथ चलाई॥ (१-४३-४)

एवड करी विथार कउ सगली धरती ह्की जाई॥ (१-४३-५)
तोलीं धरति आकाश दुइ पिछे छाबे टंक चड़हाई॥ (१-४३-६)
एह बल रखाँ आप विच जिस आखाँ तिस पार कराई॥ (१-४३-७)
सतिनाम बिन बादर छाई ॥४३॥ (१-४३-८)

बाबे कीती सिध गोशट शबद शाँति सिधाँ विच आई ॥ (१-४४-१)
जिण मेला शिवरात दा खट दरशन आदेश कराई॥ (१-४४-२)
सिध बोलन शुभ बचन धन्न नानक तेरी वडी कमाई॥ (१-४४-३)
वडा पुरख प्रगटिआ कलिजुग अंदर जोत जगाई॥ (१-४४-४)
मेलिओं बाबा उठिआ मुलताने दी ज़िआरत जाई॥ (१-४४-५)
अगों पीर मुलतान दे दुध कटोरा भर लै आई॥ (१-४४-६)
बाबे कढ कर बगल ते चम्बेली दुध विच मिलाई॥ (१-४४-७)
जिउं सागर विच गंग समाई ॥४४॥ (१-४४-८)

ज़िआरत कर मुलतान दी फिर करतारपुरे नूं आया॥ (१-४५-१)
चड़हे सवाई दहदिही कलिजुग नानक नाम धिआया॥ (१-४५-२)
विण नावै होर मंगणा सिर दुखाँ दे दुख सबाया॥ (१-४५-३)
मारिआ स्का जगत विच नानक निर्मल पंथ चलाया॥ (१-४५-४)
थापिआ लहिणा जींवदे गुरिआई सिर छत्र फिराया॥ (१-४५-५)
जोती जोत मिलाइकै सतिगुर नानक रूप वटाया॥ (१-४५-६)
लख न कोई सकई आचरजे आचरज दिखाया॥ (१-४५-७)
कायाँ पलट सरूप बणाया ॥४५॥ (१-४५-८)

सो टिका सो छत्र सिर सोई सचा तखत टिकाई॥ (१-४६-१)
गुर नानक हंदी मोहर हथ गुर अंगद दी दोही फिराई॥ (१-४६-२)
द्ता छ्ड करतारपुर बैठ खड़ूरे जोति जगाई॥ (१-४६-३)
जम्मे पूरब बीजिआ विच विच होर कूड़ी चतराई॥ (१-४६-४)
लहिणे पाई नानकों देणी अमरदास घर आई॥ (१-४६-५)
गुर बैठा अमर सरूप हो गुरमुख पाई दात इलाही॥ (१-४६-६)
फेर वसाया गोंदवाल अचरज खेल न लखिआ जाई॥ (१-४६-७)
दाति जोत खसमै वडिआई ॥४६॥ (१-४६-८)

द्चे पूरब देवणा जिस दी वसत तिसै घर आवै॥ (१-४७-१)
बैठा सोढी पातिशाह रामदास सतिगुरू कहावै॥ (१-४७-२)
पूरन ताल खटाइआ अम्मृतसर विच जोत जगावै॥ (१-४७-३)

उलटा खेल खसम्म दा उलटी गंग समुंद समावै॥ (१-४७-४)
दिता लईए आपणा अण दिता कछ हथ न आवै॥ (१-४७-५)
फिर आई घर अरजने पुत संसारी गुरू कहावै॥ (१-४७-६)
जान न देसाँ सोढीओं होरस अजर न जरिआ जावै॥ (१-४७-७)
घर ही की व्थ घरे रहावै ॥४७॥ (१-४७-८)

पंज पिआले पंज पीर छटम पीर बैठा गुर भारी॥ (१-४८-१)
अरजन काइआँ पलट कै मूरत हरिगोबिंद सवारी॥ (१-४८-२)
चली पीड़ही सोढीआँ रूप दिखावन वारो वारी॥ (१-४८-३)
दल भंजन गुर सूरमाँ वड जोधा बहु परउपकारी॥ (१-४८-४)
पुछ्न स्ख अरदास कर छे महिलाँ तक दरस निहारी॥ (१-४८-५)
अगम अगोचर सतिगुरू बोले मुख ते सुणहु संसारी॥ (१-४८-६)
कलिजुग पीड़ही सोढीआँ निहचल नीन उसार खल्हारी॥ (१-४८-७)
जुग जुग सतिगुर धरे अवतारी ॥४८॥ (१-४८-८)

सतिजुग सतिगुर वासदेव वावा विशना नाम जपावै॥ (१-४९-१)
दुआपर सतिगुर हरीकृशन हाहा हरि हरि नाम धिआवै॥ (१-४९-२)
त्रेते सतिगुर राम जी रारा राम जपे सुख पावै॥ (१-४९-३)
कलिजुग नानक गुर गोबिंद गगा गोविंद नाम जपावै॥ (१-४९-४)
चारे जागे चहु जुगी पंचाइण विच जाइ समावै॥ (१-४९-५)
चारोंं अछर इक कर वाहिगुरू जप मंत्र जपावै॥ (१-४९-६)
जहाँ ते उपजिआ फिर तहाँ समावै ॥४९॥१॥ (१-४९-७)

Vaar 2

ੴ सतिगुरप्रसादि॥ (२-१-१)

आपनड़े हथि आरसी आपे ही देखै॥ (२-१-२)
आपे देख दिखाइदा छिअ दरशन भेखै॥ (२-१-३)
जेहा मूंह कर भालदा तेवेहै देखै॥ (२-१-४)
हसदे हसदा देखीऐ सो रूप सरेखै॥ (२-१-५)
रोंदे दिसे रोंवदा होइ निमख निमेखै॥ (२-१-६)
आपे आप वरतदा सतसंग विसेखै ॥१॥ (२-१-७)

जिउं जंत्री हथ जंत्र लै सभ राग वजाए॥ (२-२-१)
आपे सुण सुण मगन होइ आपे गुन गाए॥ (२-२-२)
शबद सुरति लिवलीण होइ आपे रीझाए॥ (२-२-३)
कथता थकता आप है सुरता लिव लाए॥ (२-२-४)
आपे आप विसमाद होइ सरबंग समाए॥ (२-२-५)
आपे आप वरतदा गुरमुख पतीआए ॥२॥ (२-२-६)

आपे भुखा होइकै आप जाइ रसोई॥ (२-३-१)
भोजन आप बनाइंदा रस विच रस गोई॥ (२-३-२)
आपे खाइ सलाहकै होइ तृपत समोई॥ (२-३-३)
आपे रसीआ आप रस रस रतना भोई॥ (२-३-४)
दातद भुगता आप है सरबंग समोई॥ (२-३-५)
आपे आप वरतदा गुरमुख सुख होई ॥३॥ (२-३-६)

आपे पलंघ विछाइकै आप अंदर सउंदा॥ (२-४-१)
सुपने अंदर जाइकै देसंतर भउंदा॥ (२-४-२)
रंक राउ राउ रंक होइ दुख सुख विच पाउंदा॥ (२-४-३)
त्ता सीअरा होइ जल आवटण खउंदा॥ (२-४-४)
हरख सोग विच धाँवदा चावाए चउंदा॥ (२-४-५)
आपे आप वरतदा गुरमुख सुख रउंदा ॥४॥ (२-४-६)

समसर वरसै सवाँत बूंद जिउं सभनी थाईं॥ (२-५-१)
जल अंदर जल होइ मिलै धरती बहु भाईं॥ (२-५-२)
किरख बिरख रस कस घणे फल फुल सुहाई॥ (२-५-३)

केले विच कपूर होइ सीतल सुखदाई॥ (२-५-४)
मोती होवै सिप महि बहु मोल मुलाई॥ (२-५-५)
बिसीअर दे मुहि कालकूट चितवै बुरिआई॥ (२-५-६)
आपे आप वरतदा सतसंग सुभाई ॥५॥ (२-५-७)

सोई ताँबा रंग संग जिउं कैहाँ होई॥ (२-६-१)
सोई ताँबा जिसत मिल पितल अविलोई॥ (२-६-२)
सोई शीशे संगती भंगार भलोई॥ (२-६-३)
ताँबा परस परसिआ होइ कंचन सोई॥ (२-६-४)
सोई ताँबा भसम होइ अउखध कर भोई॥ (२-६-५)
आपे आप वरतदा संगत गुन गोई ॥६॥ (२-६-६)

पाणी काले रंग विच जिउं काला द्सिै॥ (२-७-१)
र्ता रते रंग विच मिल मेल सलिसै॥ (२-७-२)
पीले पीला होइ मिलै हित जोई विसै॥ (२-७-३)
सावा सावे रंग मिल सभ रंग सर्सिै॥ (२-७-४)
त्ता ठंढा होइकै हित जिस त्सिै॥ (२-७-५)
आपे आप वरतदा गुरमुख सुख ज्सिै ॥७॥ (२-७-६)

दीवा बलै बसंतरहु चानण आनध्रेरे॥ (२-८-१)
दीपक विचहु म्स होइ कम्म आइ लिखेरे॥ (२-८-२)
क्जल होवै कामनी संग भले भलेरे॥ (२-८-३)
मसवाणी हरि जस लिखे दफतर अगलेरे॥ (२-८-४)
बिरखों बिरख उपाइंदा फल फुल घनेरे॥ (२-८-५)
आपे आप वरतदा गुरमुख चौफेरे ॥८॥ (२-८-६)

बिरख होवै जीउ बीजीऐ करदा पासारा॥ (२-९-१)
जड़ अंदर पेड बाहरा बहु ताल बिसथारा॥ (२-९-२)
प्त फुल फल फलीदा रस रंग सवारा॥ (२-९-३)
वास निवास उलास कर होइ वड परवारा॥ (२-९-४)
फल विच बीउ संजीउ होइ फल फलो हज़ारा॥ (२-९-५)
आपे आप वरतदा गुरमुख निसतारा ॥९॥ (२-९-६)

होवै सूत कपाह दा कर ताणा वाणा॥ (२-१०-१)
सूतहु क्पड़ जाणीऐ आखाण वखाणा॥ (२-१०-२)

चउसी ते चउतार होइ गंगा जल जाणा॥ (२-१०-३)
खासा मलमल सिरीसाफ तन सुख मन भाणा॥ (२-१०-४)
प्ग दुप्टा चोलणा पटका परवाणा॥ (२-१०-५)
आपे आप वरतदा गुरमुख रंगमाणा ॥१०॥ (२-१०-६)

सुनिआरा सोना घड़ै गहिणे सावारे॥ (२-११-१)
पिपल वतरे वालीआँ तानउड़े तारे॥ (२-११-२)
वेसर नथ वखाणीऐ कंठ माला धारे॥ (२-११-३)
टीकत मणीआ मोतिसर गजरे पासारे॥ (२-११-४)
दुर बुहटा गोल छाप कर बहु परकारे॥ (२-११-५)
आपे आप वरतदा गुरमुख वीचारे ॥११॥ (२-११-६)

गन्ना कोहलू पीड़ीऐ रस दे दरसाला॥ (२-१२-१)
कोई करे गुड़ भेलीआँ को शकर वाला॥ (२-१२-२)
कोई खंड सवारदा मखण मासाला॥ (२-१२-३)
होवे मिसरी कलीकंद मठिआई ढाला॥ (२-१२-४)
खावै राजा रंक कर रस भोग सुखाला॥ (२-१२-५)
आपे आप वरतदा गुरमुख सुखाला ॥१२॥ (२-१२-६)

गाँई रंग बरंग बहु दुध उज्ल वरणा॥ (२-१३-१)
दुधहु दही जमाईऐ कर निहचल धरणा॥ (२-१३-२)
दही विलोइ अलोईऐ छाहि मखण करणा॥ (२-१३-३)
मखणताइ अउटाइकै घिउ निर्मल करणा॥ (२-१३-४)
होम जग नईवेद कर सभ कारज सरणा॥ (२-१३-५)
आपे आप वरतदा गुरमुख होइ जरणा ॥१३॥ (२-१३-६)

पल घड़ीआँ मूरत पहिर थित वार गणाए॥ (२-१४-१)
दोइ पख बारह माह कर संजोग बणाए॥ (२-१४-२)
छिअ वरताईआँ बहु चोलत बणाए॥ (२-१४-३)
सूरज इक वरतदा लोक वेद अलाए॥ (२-१४-४)
चार वरन छिअ दरशना बहु पंथ चलाए॥ (२-१४-५)
आपे आप वरतदा गुरमुख समझाए ॥१४॥ (२-१४-६)

इक पाणी इक धरत है बहु बिरख उपाए॥ (२-१५-१)
अफल सफल परकार बहु फल फुल सुहाए॥ (२-१५-२)

बहु रंग रश सुवाशना परकिरत सुभाए॥ (२-१५-३)
बैसंतर इक वरन होइ सभ तरवर छाँए॥ (२-१५-४)
गुपता परगट होइकै भसमंत कराए॥ (२-१५-५)
आपे आप वरतदा गुरमुख सुख पाए ॥१५॥ (२-१५-६)

चंदन वास वणासपत सभ चंदन होवै॥ (२-१६-१)
अशटधाँत इक धाँत होए संग पारस ढोवै॥ (२-१६-२)
नदीआँ नाले वाड़े मिल गंग गंगोवै॥ (२-१६-३)
पतित उधारण साधु संग पापाँ मल धोवै॥ (२-१६-४)
नरक निवार असंख होइ लख पतित संगोवै॥ (२-१६-५)
आपे आप वरतदा गुरमुख आलोवै ॥१६॥ (२-१६-६)

दीपक हेत पतंग दा जल मीन तरंदा॥ (२-१७-१)
मिरग नाद विसमाद है भवर कवल वसंदा॥ (२-१७-२)
चंद चकोर परीत है देख धिआन धरंदा॥ (२-१७-३)
चकवी सूरज हेत है संजोग बणंदा॥ (२-१७-४)
नार भतार पिआर है माँ पुत मिलंदा॥ (२-१७-५)
आपे आप वरतदा गुरमुख परचंदा ॥१७॥ (२-१७-६)

अ्खीं अंदर देखदा सभ चोज विडाणा॥ (२-१८-१)
कन्नी सुणदा सुरति कन्न अखाण वखाणा॥ (२-१८-२)
जीभै अंदर बोलदा बहु साध लुभाणा॥ (२-१८-३)
ह्थीं किरत कमाँवदा पग चलै सुजाणा॥ (२-१८-४)
देही अंदर इक मन इंद्री परवाणा॥ (२-१८-५)
आपे आप वरतदा गुरमुख सुख माणा ॥१८॥ (२-१८-६)

पवण गुरू गुर शबद है राग नाद विचारा॥ (२-१९-१)
मात पिता जल धरत है उतपत संसारा॥ (२-१९-२)
दाई दाइआ रात दिउ वरते वरतारा॥ (२-१९-३)
शिव शकती दा खेल मेल परकिरत पसारा॥ (२-१९-४)
पारब्रह्म पूरन ब्रह्म घट चंद्र अकारा॥ (२-१९-५)
आपे आप वरतदा गुरमुख निरधारा ॥१९॥ (२-१९-६)

फुलाँ अंदर वासु है होइ भवर लुभाणा॥ (२-२०-१)
अम्बाँ अंदर रस धर कोइल रस माणा॥ (२-२०-२)

मोर बम्बीहा होइकै घण वरस सिवाणा॥ (२-२०-३)
खीर नीर संजोग कर कलीकंद वखाणा॥ (२-२०-४)
ओअंकार अकार कर धोइ पिंड पराणा॥ (२-२०-५)
आपे आप वरतदा गुरमुख परवाणा ॥२०॥२॥ (२-२०-६)

Vaar 3

ੴ सतिगुरप्रसादि॥ (३-१-१)

आदि पुरख आदेस आदि वखाणिआ॥ (३-१-२)
सतिगुर सचा वेस सबद सिञाणिआ॥ (३-१-३)
शबद सुरति उपदेश सूच समाणिआ॥ (३-१-४)
साध संगत सच देस घर परवाणिआ॥ (३-१-५)
प्रेम भगत आवेस सहज सुखाणिआ॥ (३-१-६)
भगत वछल परवेश माण निमाणिआ॥ (३-१-७)
ब्रह्मा बिशन महेश अंतु न जाणिआ॥ (३-१-८)
सिमरे सहस फणेश तिल न पछाणिआ॥ (३-१-९)
गुरमुख दर दरवेश सचु सुहाणिआ ॥१॥ (३-१-१०)

गुर चेले रहिरास अलख अभेउ है॥ (३-२-१)
गुर चेले शाबाश नानक देउ है॥ (३-२-२)
गुरमत सहिज निवास सिफत समेउ है॥ (३-२-३)
शबद सुरत प्रगास अछल अछेउ है॥ (३-२-४)
गुरमुख आस निरास मति अरपेउ है॥ (३-२-५)
काम करोध विणास सिफत समेउ है॥ (३-२-६)
सति संतोख उलास शकति न सेउ है॥ (३-२-७)
घर ही विच उदास सूच सचेउ है॥ (३-२-८)
वीह इकीह अभिआस गुरसिख देउ है ॥२॥ (३-२-९)

गुर चेला परवाण गुरमुख जाणीऐ॥ (३-३-१)
गुरमुख चोज विडाणअकथ कहाणीऐ॥ (३-३-२)
कुदरत नों कुरबाण कादर जाणीऐ॥ (३-३-३)
गुरमुख जग महिमान जग महिमाणीऐ॥ (३-३-४)
सतिगुर सति सुहाण आख वखाणीऐ॥ (३-३-५)
दरि ढाढी परवाण चलै गुरबाणीऐ॥ (३-३-६)
अंतरजामी जाण हेत पछाणीऐ॥ (३-३-७)
सच सबद नीसाण सुरति समाणीऐ॥ (३-३-८)
इको दर दीवाण शबद सिञाणीऐ ॥३॥ (३-३-९)

शबद गुरू गुर वाह गुरमुख पाइआ॥ (३-४-१)

चेला सुरत समाह अलख लखाइआ॥ (३-४-२)
गुर चेले वीवाहु तुरी चड़ाइआ॥ (३-४-३)
गहिर गम्भीरअथाह अजर जराइआ॥ (३-४-४)
सचा बेपरवाह सच समाइआ॥ (३-४-५)
पातशाहाँ पातिशाह हुकम चलाइआ॥ (३-४-६)
लउबाली दरगाह भाणा भाइआ॥ (३-४-७)
सची सिफत सलाह अपिउ पीआइआ॥ (३-४-८)
शबद सुरत असगाह अघड़ घड़ाइआ ॥४॥ (३-४-९)

मुल न मिलै अमोल न कीमत पाईऐ॥ (३-५-१)
पाइ तराजू तोल न अतुल तुलाईऐ॥ (३-५-२)
निज घर तखत अडोल न डोल डोलाईऐ॥ (३-५-३)
गुरमुख पंथ निरोल न रलै रलाईऐ॥ (३-५-४)
कथा अकथ अबोल न बोल बोलाईऐ॥ (३-५-५)
सदा अभुल अभोल न भोल भुलाईऐ॥ (३-५-६)
गुरमुख पंथ अलोल सहज समाईऐ॥ (३-५-७)
अमिउ सरोवर झोल गुरमुख पाईऐ॥ (३-५-८)
लख टोलीं इक टोल न आप गणाईऐ ॥५॥ (३-५-९)

सौदा इकत हट सबद विसाहीऐ॥ (३-६-१)
पूरा पूरै वट कि आख सलाहीऐ॥ (३-६-२)
कदे न होवै घट सची पतिशाहीऐ॥ (३-६-३)
पूरे सतिगुर खूट अखुट समाहीऐ॥ (३-६-४)
साध संगत परगट सदा निबाहीऐ॥ (३-६-५)
चावल इकते सूट न दूजी वाहीऐ॥ (३-६-६)
जम दी फाही कट दाद इलाहीऐ॥ (३-६-७)
पंज दूत संघट सु ढेरी ढाहीऐ॥ (३-६-८)
पाणी जिउं हरहट सु खेत उमाहीऐ ॥६॥ (३-६-९)

पूरा सतिगुर आप न अलख लखावई॥ (३-७-१)
देखै थापि उथाप जिउं तिस भावई॥ (३-७-२)
लेप न पुन्न न पाप उपाइ समावई॥ (३-७-३)
लगू वर न सराप न आप जनावई॥ (३-७-४)
गावै बेद अलाप अकथ सुनावई॥ (३-७-५)
अकथ कथा जप जाप न जगत कमावई॥ (३-७-६)

पूरे गुर परताप आप गवावई॥ (३-७-७)
लाहे तिन्ने ताप संताप घटावई॥ (३-७-८)
गुरबाणी मन ध्राप निज घर आवई ॥७॥ (३-७-९)

पूरा सतिगुर सति गुरमुख भालीऐ॥ (३-८-१)
पूरी सतिगुर मति शबद सम्हालीऐ॥ (३-८-२)
दरगह धोईऐ पति हउमै जालीऐ॥ (३-८-३)
घर ही जोग जुगति बैसन धरमसालीऐ॥ (३-८-४)
पावन मोख मुकति गुर सिख पालीऐ॥ (३-८-५)
अंतर प्रेम भगति नदरि निहालीऐ॥ (३-८-६)
पातिशाही इक छत खरी सखालीऐ॥ (३-८-७)
पाणी पीहण घ्त सेवा घालीऐ॥ (३-८-८)
मसकीनी विच व्त चाल निरालीऐ ॥८॥ (३-८-९)

गुरमुख सचा खेल गुर उपदेसिआ॥ (३-९-१)
साध संगत दा मेल सबद अवेसिआ॥ (३-९-२)
फुलीं तिलीं फुलेल संग अलेसिआ॥ (३-९-३)
गुर सिख न्क नकेल मिटे अंदेसिआ॥ (३-९-४)
नश्रावण अमृत वेल वसन सु देसिआ॥ (३-९-५)
गुर जप रिदे सुहेल गुर परवेसिआ॥ (३-९-६)
भाउ भगत भउ भेख साध सरेसिआ॥ (३-९-७)
नित नित नवल नवेल गुरमुख मेसिआ॥ (३-९-८)
खैर दलाल दलेल सेव सहेसिआ ॥९॥ (३-९-९)

गुर मूरत कर धिआन सदा हजूर है॥ (३-१०-१)
गुरमुख शबद गिआन नेड़ न दूर है॥ (३-१०-२)
पूरब लिखत निशान कर्म अंकूर है॥ (३-१०-३)
गुर सेवा प्रधान सेवक सूर है॥ (३-१०-४)
पूरन पर्म निधान सद भरपूर है॥ (३-१०-५)
साध संगत असथान जगमग नूर है॥ (३-१०-६)
लख लख ससी अर भान किरण ठरूर है॥ (३-१०-७)
लख लख बेद पुरान कीर्तन चूर है॥ (३-१०-८)
भगत वछल परवाण चरनाँ धूर है ॥१०॥ (३-१०-९)

गुर सिख सिख गुर सोइ अलख लखाइआ॥ (३-११-१)

गुर दीखिआ लै सिख सिख सदाइआ॥ (३-११-२)
गुर सिख इको होइ जो गुर भाइआ॥ (३-११-३)
हीरा कणी परोइ हीर बिधाइआ॥ (३-११-४)
जल तरंग अवलोइ सलिल समाइआ॥ (३-११-५)
जोती जोत समाइ दीप दिवाइआ॥ (३-११-६)
अचरज अचरज ढोइ चलित बणाइआ॥ (३-११-७)
दुधहु दही विलोइ घेउ कढाइआ॥ (३-११-८)
इक चानण तृहु लोइ प्रगटी आइआ ॥११॥ (३-११-९)

सतिगुर नानक देउ गुराँ गुर होइआ॥ (३-१२-१)
अमगद अलख अमेउ सहिज समोइआ॥ (३-१२-२)
अमरहु अमर समेउ अलख अलोइआ॥ (३-१२-३)
राम नाम अरि खेउ अमृत चोइआ॥ (३-१२-४)
गुर अरजन कर सेउ ढोऐ ढोइआ॥ (३-१२-५)
गुर हरि गोबिंद अमेउ विलोइ विलोइआ॥ (३-१२-६)
सूचा सच सुचेउ सच खलोइआ॥ (३-१२-७)
आतम अगह अगेउ शबद तरोइआ॥ (३-१२-८)
गुरमुख अभर भरेउ भर्म भउ खोइआ ॥१२॥ (३-१२-९)

साध संगति भउ भाउ सहिज बैराग है॥ (३-१३-१)
गुरमुख सहिज सुभाउ सुरति सु जाग है॥ (३-१३-२)
मधुर बचन आलाउ हउमैं त्याग है॥ (३-१३-३)
सतिगुर मति परथाउ सदा अनुराग है॥ (३-१३-४)
पिर्म पिआले साउ मसतक भाग है॥ (३-१३-५)
ब्रह्म जोति ब्रहमाओ ज्ञान चराग है॥ (३-१३-६)
अंतर गुरमत चाउ अलिपत अदाग है॥ (३-१३-७)
वीह इकीह चड़ाउ सदा सुहाग है ॥१३॥ (३-१३-८)

गुरमुखि शबद समाल सुरत समालीऐ॥ (३-१४-१)
गुरमुख नदर निहाल नेह निहालीऐ॥ (३-१४-२)
गुरमुख सेवा घाल विरले घालीऐ॥ (३-१४-३)
गुरमुख दीन दयाल हेत हिआलीऐ॥ (३-१४-४)
गुरमुख निबहै नाल गुर सिख पालीऐ॥ (३-१४-५)
रतन पदार्थ नाल गुरमुख भालीऐ॥ (३-१४-६)
गुरमुख अकल अकाल भगति सुखालीऐ॥ (३-१४-७)

गुरमुख हंसा डार रसक रसालीऐ ॥१४॥ (३-१४-८)

एका एकंकार लिख दिखालिआ॥ (३-१५-१)
ऊड़ा ओअंकार पास बहालिआ॥ (३-१५-२)
सतिनाम करतार निरभउ भालिआ॥ (३-१५-३)
निरवैरहु जैकारु अजूनि अकालिआ॥ (३-१५-४)
सच नीसाण अपार जोत उजालिआ॥ (३-१५-५)
पंच अखर उपकार नाम सम्हालिआ॥ (३-१५-६)
परमेशर सुख सार नदरि निहालिआ॥ (३-१५-७)
नउ अमग सुन्न शुमार संग निरालिआ॥ (३-१५-८)
नील अनील विचार पिर्म पिआलिआ ॥१५॥ (३-१५-९)

चार वरन सतिसंग गुरमुखि मेलिआ॥ (३-१६-१)
जाण तम्बोलहु रंग गुरमुख चेलिआ॥ (३-१६-२)
पंजे शबद अभंग अनहद केलिआ॥ (३-१६-३)
सतिगुर शबद तरंग सदा सुहेलिआ॥ (३-१६-४)
शबद सुरत परसंग गिआन संग मेलिआ॥ (३-१६-५)
राग नाद सरबंग अहिनिस भेलिआ॥ (३-१६-६)
शबद अनाहद रंग सुझ इकेलिआ॥ (३-१६-७)
गुरमुख पंथी पंग बाहर खेलिआ ॥१६॥ (३-१६-८)

होई आगिआ आदि आदि निरंजनो॥ (३-१७-१)
नादै मिलिआ नाद हउमैं भंजनो॥ (३-१७-२)
बिसमादै बिसमाद गुरमुख अंजनो॥ (३-१७-३)
गुरमति गुरपरसादि भर्म निखंजनो॥ (३-१७-४)
आदि पुरख परमाद अकाल अगंजनो॥ (३-१७-५)
सेवक शिव सनकादि कृपा करंजनो॥ (३-१७-६)
जपीऐ जुगह जुगादि गुर सिख मंजनो॥ (३-१७-७)
पिर्म पिआले साद पर्म पुरंजनो॥ (३-१७-८)
आदि जुगादि अनाद सर्ब सुरंजनो ॥१७॥ (३-१७-९)

मुरदा होइ मुरीद न गलीं होवणा॥ (३-१८-१)
सबर सिदक शहीद भर्म भउ खोवणा॥ (३-१८-२)
गोला मूल खरीद कारे जोवणा॥ (३-१८-३)
ना तिसु भुख न नींद न खाणा सोवणा॥ (३-१८-४)

पीहण होइ जदीद पाणी ढोवणा॥ (३-१८-५)
पखे दी तागीद पग मल धोवणा॥ (३-१८-६)
सेवक होइ सजीद न ह्सण रोवणा॥ (३-१८-७)
दर दरवेस रसीद पिर्म रस भोवणा॥ (३-१८-८)
चंद मुमारख ईद पुग खलोवणा ॥१८॥ (३-१८-९)

पैरीं पै पाखाक मुरीदे थीवणा॥ (३-१९-१)
गुर मूरत मुशताक मर मर जीवणा॥ (३-१९-२)
परहर सभे साक सु रंग रंगीवणा॥ (३-१९-३)
होर न झखण झाक सरन मन सीवणा॥ (३-१९-४)
पिर्म पिआला पाक अमिअ रस पीवणा॥ (३-१९-५)
मसकीनी अउताक असथिर थीवणा॥ (३-१९-६)
दस अउरात तलाक सहजि अलीवणा॥ (३-१९-७)
सावधान गुरवाक न मन भरमीवणा॥ (३-१९-८)
शबद मूरति हुशनाक पार परीवणा ॥१९॥ (३-१९-९)

सतिगुर सरणी जाइ सीस निवाइआ॥ (३-२०-१)
गुर चरनी चित लाइ मथा लाइआ॥ (३-२०-२)
गुरमति रिदै वसाइ आप गवाइआ॥ (३-२०-३)
गुरमुख सहज सुभाइ भाणा भाइआ॥ (३-२०-४)
शबद सुरति लिव लाइ हुकम कमाइआ॥ (३-२०-५)
साध संगत भै भाइ निज घर पाइआ॥ (३-२०-६)
चरन कमल पतीआइ भवर लुभाइआ॥ (३-२०-७)
सुख सम्पत परचाइ अमिउ पीआइआ॥ (३-२०-८)
धन्न जणेंदी माइ सहिला आइआ ॥२०॥३॥ (३-२०-९)

Vaar 4

ੴ सतिगुरप्रसादि ॥ (४-१-१)

ओअंकार अकार कर पवण पाणी बैसंतर धारे॥ (४-१-२)
धरत अकाश विछोड़ीअनु चंद सूर दुइ जोति सवारे॥ (४-१-३)
खाणी चार बंधान कर ल्ख चउरासीह जूनि दुआरे॥ (४-१-४)
इकस इकस जूनि विच जीअजंत अनगनत अपारे॥ (४-१-५)
मानस जनम दुलम्भ है सफल जनम गुर सरण उधारे॥ (४-१-६)
साध संग गुरुसबद सुण भाइ भगत गुर ज्ञान बीचारे॥ (४-१-७)
पर उपकारी गुरू पिआरे ॥१॥ (४-१-८)

सभदूं नीवीं धरति है आप गवाइ होई ओडीणी॥ (४-२-१)
धीरज धर्म संतोख कर दिड़ह पैराँ हेठ रहे लिव लीणी॥ (४-२-२)
साध जनाँ दे चरन छुहि आढीणी होए लाखीणी॥ (४-२-३)
अमृत बूंद सुहावणी छहबुर छलुक रेनु होइ रीणी॥ (४-२-४)
मिलिआ माण निमाणीऐ पिर्म पिआला पी पतीणी॥ (४-२-५)
जो बीजै सोई लुणै सभ रस कस बहु रंग रंगीणी॥ (४-२-६)
गुरमुख सुख फ़ल है मसकीणी ॥२॥ (४-२-७)

माणस देह सु खेह है तिस विच जीभै लई नकीबी॥ (४-३-१)
अखीं देखनि रूप रंग नाद कन्न सुन करन रकीबी॥ (४-३-२)
नक सुवास निवास है पंजे दूत बुरी तरतीबी॥ (४-३-३)
सभदूं नीवें चरन होइ आप गवाइ नसीब नसीबी॥ (४-३-४)
हउमैं रोग मिटाइदा सतिगुर पूरा करै तबीबी॥ (४-३-५)
पैरीं पै रहिरास कर गुरसिख सुण गुर सिख मनीबी॥ (४-३-६)
मुरदा होइ मुरीद गरीबी ॥३॥ (४-३-७)

जिउं लहुड़ी चीचूंगली पैधी छाप मिली वडिआई॥ (४-४-१)
लहुड़ी घनहर बूंद होइ परगट मोती सि्प समाई॥ (४-४-२)
लहुड़ी बूटी केसरै मि्थै टि्का शोभा पाई॥ (४-४-३)
लहुड़ी पारस पि्थरी अशट धात कंचन करवाई॥ (४-४-४)
जिउं मणि लहुड़े सप सिर देखै लुक लुक लोक लुकाई॥ (४-४-५)
जान रसाइण पारिअहु रती मुल न जाइ मुलाई॥ (४-४-६)
आप गणाइ न आप गणाई ॥४॥ (४-४-७)

अग ततो जलसीअला कित अवगणु कित गुण विचारा॥ (४-५-१)
अगी धूंआं धउलहर निर्मल गुर गिआन सुचारा॥ (४-५-२)
कुल दीपक बैसंतरहु जल कुल कवल वडे परवारा॥ (४-५-३)
दीपक हेत पतंग दाहं कवल भवर परगट पहारा॥ (४-५-४)
अ्गी लाट उचाट है सिर उळचा कर करे कचारा॥ (४-५-५)
सिरु नीवां निवाण वासु पाणी अंदर पर उपकारा॥ (४-५-६)
निव चलै सो गुरू पिआरा ॥५॥ (४-५-७)

रंग मजीठ कसुम्भ दा कळचा पळका कित वीचारे॥ (४-६-१)
धरती उखण कढीऐ मूल मंजीठ जड़ी जड़ तारे॥ (४-६-२)
उळखल मुहले कुटीऐ पीहण पीसै चकी भारे॥ (४-६-३)
सहै अवटण अळग दा होइ पिआरी मिलै पिआरे॥ (४-६-४)
मोहलीअहं सिर कढकै फुळल कसुम्भ चुलम्भ खिलारे॥ (४-६-५)
खट तुरसी दे रंगीऐ कपट सनेहु रहै दिनचारे॥ (४-६-६)
नीवाँ जिणे उचेरा हारे ॥६॥ (४-६-७)

कीड़ी निकड़ी चलति कर भ्रिंगी नों मिल भ्रिंगी होवै॥ (४-७-१)
निकड़ी दिसै मकड़ी सूत मूंहो कढ फिर संगोवै॥ (४-७-२)
निकड़ी मखि वखाणीऐ माखिओ मिठा भागठ होवै॥ (४-७-३)
निकड़ा कीड़ा आखीऐ पट पटोले कर ढंग ढोवै॥ (४-७-४)
गुटका मूंह विच पाइके देस दिसंतर जाइ खड़ोवै॥ (४-७-५)
मोती माणक हीरिआ पातसाह लै हार परोवै॥ (४-७-६)
पाइ समाइण दही विलोवै ॥७॥ (४-७-७)

लताँ हेठ लताड़ीऐ घाह न कढे साह विचारा॥ (४-८-१)
गोरस दे खड़ खाइके गाइ गरीबी परउपकारा॥ (४-८-२)
दुधहुं दही जमाईऐ दहीअहुं म्खण छाहि पिआरा॥ (४-८-३)
घिअ ते होवण होम ज्ग ढंग सुआरथ चज अचारा॥ (४-८-४)
धर्म धउल परगट होइ धीरज वसै सहै सिर भारा॥ (४-८-५)
इक इक जाउ जणेंदिआँ चहुं चकाँ विच वग हजारा॥ (४-८-६)
तृण अंदर व्डा पासारा ॥८॥ (४-८-७)

लहुड़ा तिल होइ जंमिआ नीचहुं नीच न आप गणाया॥ (४-९-१)
फुलाँ सौगति वसिआ होइ निरगंध सुगंध सुहाया॥ (४-९-२)

कोलू पाइ पीड़ाइआ होइ फुलेल खेल वरताया॥ (४-९-३)
पतित पवित्र चलित्र कर पातिशाह सिर धर सुख पाया॥ (४-९-४)
दीवे पाइ जलाइआ कुल दीपक जग बिरद सदाया॥ (४-९-५)
कजल होआ दीविअहुं अखीं अंदर जाइ समाया॥ (४-९-६)
बाला होइ न वडा कहाया ॥९॥ (४-९-७)

होइ वड़ेवाँ जग विच बीजे तन खेह नाल रलाया॥ (४-१०-१)
बूटी होइ कपाह दी टींडे हस आप खिड़ाया॥ (४-१०-२)
दुह मिल वेलण वेलिआ लूंअ लूंअ कर तुम्ब तुम्बाया॥ (४-१०-३)
तिंञण पिंञ उडाइआ कर कर गोड़हीं सूत कताया॥ (४-१०-४)
तण तण खुम्ब चड़ाइकै दे दे दुख धुवाइ रंगाया॥ (४-१०-५)
कैंची क्टण कटिआ सूई धागे जोड़ सवाया॥ (४-१०-६)
ल्जण क्जण होइ कजाया ॥१०॥ (४-१०-७)

दाणा होइ अनार दा होइ धूड़ धूड़ी विच धसै॥ (४-११-१)
होइ बिरख हरीआवला लाल गुलाला फुल विगसै॥ (४-११-२)
इकस बिरख सहस फुल फुल फल इकदूं इक सरसै॥ (४-११-३)
इक दूं दाणे ल्ख होइं फल फलदे मन अंदर वसै॥ (४-११-४)
तिस फल तोट न आवई गुरमुख सुख फल अमृत रसै॥ (४-११-५)
ज्यौं ज्यौं ल्यन तोड़फल त्यों त्यों फिर फिर फलीऐ हसै॥ (४-११-६)
निव च्लण गुर मारग दसै ॥११॥ (४-११-७)

रैणि रसाइण सिंजीऐ रत हेत कर कंचन वसै॥ (४-१२-१)
धोइ धोइ कणि कढीऐ रती मासा तोला घ्सै॥ (४-१२-२)
पोइ कुठाली गालीऐ रैणी कर सुनिआर विगसै॥ (४-१२-३)
घड़ घड़ पत्र पखालीअन लूणी लाइ जलाइ रह्सै॥ (४-१२-४)
बारह वन्नी होइकै लंगै लवै कसउटी कसै॥ (४-१२-५)
टकसाले सिका पवै घण अहरण विच अचल सरसै॥ (४-१२-६)
साल सुनाई पोते पसै ॥१२॥ (४-१२-७)

खशखश दाणा होइकै ख़ाक अंदर होइ ख़ाक समावै॥ (४-१३-१)
दोसत पोसत बूट होइ रंग बिरंगी फुल खिड़ावै॥ (४-१३-२)
होडा होडी होडीआँ इक दूं इक चड़हाउ चड़हावै॥ (४-१३-३)
सूली उपर खेलणा पिछों दे सिर छतर धरावै॥ (४-१३-४)
चुख चुख होइ मिलाइ कै लोहू पाणी रंग रंगावै॥ (४-१३-५)

पिर्म पिआला मजलसी जोग भोग संजोग बणावै॥ (४-१३-६)
अमली होइ सु मजलस पावै ॥१३॥ (४-१३-७)

रस भरिआ रस रखदा बोलण अण बोलण अभरिठा॥ (४-१४-१)
सुणिआ अण सुणिआ करै करे वीचार डिठा अणडिठा॥ (४-१४-२)
अखीं धूड़ अटाईआ अखी विच अंगूर बहिठा॥ (४-१४-३)
इकदूं बाहले बूट होइ सिर तलवाया इठहु इठा॥ (४-१४-४)
दोह खूंड विच पीड़ीऐ टोटे लाहे इत गुण मिठा॥ (४-१४-५)
वीह इकीह वरतदा अवगुणिआरे वणिठा॥ (४-१४-६)
मन्नै गन्नै वाँग सुधिठा ॥१४॥ (४-१४-७)

घनहरि बूंद सुहावणी नीवीं होइ अगासहुं आवै॥ (४-१५-१)
आप गवाइ समुंद वेख सिप दे मूंहविच समावै॥ (४-१५-२)
लैंदो ही मुहि बूंद सिप चुभी मार पताल लुकावै॥ (४-१५-३)
फड़ कढै मरजीवड़ा पर कारन नोंं आप फड़ावै॥ (४-१५-४)
परवस परउपकार नोंं पर दथ पथर दंद भनावै॥ (४-१५-५)
भुल अभुल अमुल दे मोती दान न पछोतावै॥ (४-१५-६)
सफल जनम कोई वरसावै ॥१५॥ (४-१५-७)

हीरै हीरा बेधीऐ बरसै कणी अणी हुइ धीरै॥ (४-१६-१)
धागा होइ परोईऐ हीरे माल रसाल गहीरै॥ (४-१६-२)
साध संगत गुर शबद लिव हउंमै मार मरै मणधीरै॥ (४-१६-३)
मन जिण मनदे लए मन गुण गुरमुख सरीरै॥ (४-१६-४)
पैरीं पै पाखाक होइ कामधेनु संतरेण न नीरै॥ (४-१६-५)
सिला अलूणी चटणी लख अमृत रस तरसन सीरै॥ (४-१६-६)
विरला सिख सुणै गुर पीरै ॥१६॥ (४-१६-७)

गुर सिखी गुर सिख सुण अंदर सिआणा बाहर भोला॥ (४-१७-१)
शबद सुरति सावधान हो विण गुर सबद न सुणई थोला॥ (४-१७-२)
सतिगुर दरशन देखणा साध संगत विच अन्ना पोला॥ (४-१७-३)
वाहिगुरू गुर शबद लै पिर्म पिआला चुप चलोला॥ (४-१७-४)
पैरीं पै पाखाक होइ चरन धोइ चरणोदक झोला॥ (४-१७-५)
चरण कवल चित भवर कर भवजल अंदर रहै निरोला॥ (४-१७-६)
जीवण मुकति सचावा चोला ॥१७॥ (४-१७-७)

सिर विच निके वाल होइ साधू चवर चवर कर ढालै॥ (४-१८-१)
गुरसर तीर्थ नश्राइकै हूझू भर भर पैर पखालै॥ (४-१८-२)
कालीं हूं धउले करे चलण जाण नीशान समालै॥ (४-१८-३)
पैरीं पै पाखाक होइ पूरा सतिगुर नदरि निहालै॥ (४-१८-४)
काग कुमंतहु पर्म हंस उ्जल मोती खोइ खवालै॥ (४-१८-५)
वालहुं निकी आखीऐ गुरसिखी सुण गुरसिख पालै॥ (४-१८-६)
गुरसिख लंघै पिर्म पिआलै ॥१८॥ (४-१८-७)

गुलर अंदर भुलहणा गुलर नों ब्रहमंड वखाणै॥ (४-१६-१)
गुलर लगन लख फल इक दू लख अलख न जाणै॥ (४-१६-२)
लख लख बिरख बगीचिअहुं लख बगीचे बाहग वखाणै॥ (४-१६-३)
लख बाग ब्रहमंड विच लख ब्रहमंड लूंअ विच आणै॥ (४-१६-४)
मिहर करे जे मिहरवान गुरमुख साध संगत रंग माणै॥ (४-१६-५)
पैरी पै पाखाक होइ साहिब दे चलै ओह भाणै॥ (४-१६-६)
हउंमै जाइ ता जाइ सिञाणै ॥१६॥ (४-१६-७)

दुइ देह चंद अलोप होइै तीऐ दिह चड़दा हुइ नि्का॥ (४-२०-१)
उठ उठ जगत जुहारदा गगन महेशुर मसतक टि्का॥ (४-२०-२)
सोलह कला संघारीऐ सफल जनम सोहै कल इ्का॥ (४-२०-३)
अमृत किरण सुहावणी निझर झरै सिंजै सह सि्का॥ (४-२०-४)
सीतल साँत संतोख दे सहज संतोखी रतन अमि्का॥ (४-२०-५)
करे अनश्रेरों चानणा डोर चकोर प्यान धर छि्का॥ (४-२०-६)
आप गवाइ अमोल मनि्का ॥२०॥ (४-२०-७)

होइ निमाणा भगति कर गुरमुख ध्रू हरि दरशन पाया॥ (४-२१-१)
भगत वछल होइ भेटिआ माण निमाणे आप दिवाया॥ (४-२१-२)
मात लोक विच मुकति कर निहचल वास अगास चड़ाया॥ (४-२१-३)
चंद सूर तेती करोड़ परदखणा चउफेर फिराया॥ (४-२१-४)
वेद पुराण वखाणदे परगट कर परगट जणाया॥ (४-२१-५)
अवगत गत अति अगम है अकथ कथा वीचार न पाया॥ (४-२१-६)
गुरमुख सुख फल अलख लखाया ॥२१॥४॥ (४-२१-७)

Vaar 5

ੴ सतिगुरप्रसादि॥ (५-१-१)

गुरमुख होवै साध संग हेत न संग कुसंग न रचै॥ (५-१-२)
गुरमुख पंथ सुहेलड़ा बारह पंथ न खेचल खचै॥ (५-१-३)
गुरमुख वरन अवरन होइ रंग सुरंग तम्बोल परचै॥ (५-१-४)
गुरमुख दरसन देखणा छिअदरसण परसण न सरचै॥ (५-१-५)
गुरमुख निहचल मति है दूजै भाइ लुभाइ न पचै॥ (५-१-६)
गुरमुख शबद कमावणा पैरीं पै रहिरास न हचै॥ (५-१-७)
गुरमुख भाइ भगति चह मवै ॥१॥ (५-१-८)

गुरमुख इक अराधणा इक मन होइ न होइ दुचिता॥ (५-२-१)
गुरमुख आप गवाइआ जीवन मुकति न तामस पिता॥ (५-२-२)
गुर उपदेश आदेश कर सण दूताँ विखड़ा गड़ह जिता॥ (५-२-३)
पैरीं पै पाखाक होइ पाहुनड़ा जग होइ अथ्ति॥ (५-२-४)
गुरमुख सेवा गुरसिखाँ गुरसिख मा पिउ दाई मिता॥ (५-२-५)
दुरमत दुबधा दूर कर गुरमत शबद सुरत मन सिता॥ (५-२-६)
छड कुफकड़ कूड़ि कुधिता ॥२॥ (५-२-७)

अपणे अपणे वरन विच चार वरन कुल धर्म धरंदे॥ (५-३-१)
छिअ दरशन छिअ शासत्रा गुरमती खट कर्म करंदे॥ (५-३-२)
अपणे अपणे साहिबै चाकर जाइ जुहार जुड़ंदे॥ (५-३-३)
अपणे अपणे वणज विच वापारी वापार मचंदे॥ (५-३-४)
अपणे अपणे खेत विच बीउ सभै किरसाण बीजंदे॥ (५-३-५)
कारीगर कारीगराँ कारखाने विच जाइ मिलंदे॥ (५-३-६)
साध संगति गुर सिख पूजंदे ॥३॥ (५-३-७)

अमली रचन अमलीआं सोफी सोफी मेल करंदे॥ (५-४-१)
जूआरी जूआरीआं वेकरमी वेकरम रचंदे॥ (५-४-२)
चोराँ चोराँ पिरहड़ी ठग ठग मिल देस ठगंदे॥ (५-४-३)
मसकरिआँ मिल मसकरे चुगलाँ चुगल उमाह मिलंदे॥ (५-४-४)
मनतारू मनतारूआं तारू तारू तार तरंदे॥ (५-४-५)
दुखिआरे दुखिआरिआँ मिल मिल अपणे दुख रुवंदे॥ (५-४-६)
साध संगत गुर सिख वसंदे ॥४॥ (५-४-७)

कोई पंडत जोतशी को पाँधा को वैद सदाए॥ (५-५-१)
कोई राजा राउ को को महिता चउधरी अखाए॥ (५-५-२)
कोई बजाझ सराफ को को जहुरी जड़ाउे जड़ाए॥ (५-५-३)
पासारी परचूनिआ कोई दलाली किरस कमाए॥ (५-५-४)
जतिसनात सहंसलख किरत विरत कर नाउं गणाए॥ (५-५-५)
साध संगति गुर सिख मिल आसा विच निरास जमाए॥ (५-५-६)
शबद सुरति लिख अलख लखाए ॥५॥ (५-५-७)

जती जती चिर जीवने साधिक सिध नाथ गुर चेले॥ (५-६-१)
देवी देव रखीशराँ भैरउ खेत्रपाल बहु मेले॥ (५-६-२)
गण गंधरब अपछराँ किन्नर जछ चलित बहु खेले॥ (५-६-३)
राकश दानों दैंत लख अंदर दूजा भाउ दुहेले॥ (५-६-४)
हउमैं अंदर सभ को गुरमुख साध संगत रस केले॥ (५-६-५)
इक मन इक आराधणा गुरमति आप गवाइ सुहेले॥ (५-६-६)
चलण जाण पए सिर तेले ॥६॥ (५-६-७)

जत सत संजम होम जग जप तप दान पुन बहुतेरे॥ (५-७-१)
रिध सिध निध पाखंड बहु तंत्र मंत्र नाटक अगलेरे॥ (५-७-२)
बीराराधण जोगणी मड़ही मसाण विडाण घनेरे॥ (५-७-३)
पूरक कुम्भक रेचका निवली कर्म भुइअंगम घेरे॥ (५-७-४)
सिधासन परचे घणे हठ निग्रहै कोतक लख हेरे॥ (५-७-५)
पारस मणी रसाइणा करामात कालक आनश्रेरे॥ (५-७-६)
पूजा वरत उपारणे वर सराप शिव शकति लवेरे॥ (५-७-७)
साध संगत गुर शबद विण थाउं न पाइण भले भलेरे॥ (५-७-८)
कूड़ इक गंढी सौ फेरे ॥७॥ (५-७-९)

सउण सगुन बीचारणे नउं ग्रह बारह रासि वीचारा॥ (५-८-१)
कामण टूणे अउसीआँ कण सोही पासार पासारा॥ (५-८-२)
गदों कूते बिलीआँ इल मलाली गिदड़ छारा॥ (५-८-३)
नारि पुरख पाणी अगनि छिक पद हिडकी वरतारा॥ (५-८-४)
थित वार भदराँ भर्म दिशाशूल सहिसा संसारा॥ (५-८-५)
वल छल कर विसवास लख बहु चुखीं किउं रवै पतारा॥ (५-८-६)
गुरमुख सुख फल पार उतारा ॥८॥ (५-८-७)

नदीआँ नाले वाहड़ै गंग संग गंगोदक होई॥ (५-९-१)
अश धात इक धात होइ पारस परसै कंचन सोई॥ (५-९-२)
चंदनवास वणासपति अफल सफल कर चंदन गोई॥ (५-९-३)
छिअ रुत बारह माह कर सूझै सुझ न दूजा कोई॥ (५-९-४)
चार वरन छिअ दरशना बारह वाट भवे सभ लोई॥ (५-९-५)
आवा गउण गवाइकै गुरमुख मारग दुबिधा खोई॥ (५-९-६)
इक मन इक अराधन ओई ॥९॥ (५-९-७)

नानक दादक साहुरे विरली सुर लागातक होए॥ (५-१०-१)
जम्मण भदण मंगणै मरणै परणै करदे ढोए॥ (५-१०-२)
रीती रूड़ी कुला धर्म च्ज अचार विचार विखोए॥ (५-१०-३)
कर करतूत कसूत विच पाइ दुलीचे गैण चंदोए॥ (५-१०-४)
साध जठेरे मन्नीअनि सतीआँ सउत टोभरी टोए॥ (५-१०-५)
साध संगत गुरु शबद विण मर मर जम्मण दई विगोए॥ (५-१०-६)
गुरमुख हीरे हार परोए ॥१०॥ (५-१०-७)

लशकर अंदर लाडले पातिशाहाँ जाए शाहज़ादे॥ (५-११-१)
पातिशाह अगे चड़हन पिछे सभ उमराउ पिआदे॥ (५-११-२)
बन बन आवण ताइफे ओइ शाहज़ादे साद मुरादे॥ (५-११-३)
खिज़मतगार वडीरीअन दरगह होवण खुआर खुवादे॥ (५-११-४)
अ्गे ढोई से लहनि सेवा अंदर करन कुशादे॥ (५-११-५)
पातिशाहाँ पातिशाह सो गुरमुख वरतै गुर परसादे॥ (५-११-६)
शाह सुहेले आदि जुगादे ॥११॥ (५-११-७)

तारे लख हनेर विच चड़िहआ सूरज सुझै न कोई॥ (५-१२-१)
शींह बुके मिरगावली भन्नी जाइ न आइ खड़ोई॥ (५-१२-२)
बिसीअर गहड़ै डिठिआँ खुडीं वड़दे लख पलोई॥ (५-१२-३)
पंखेरू शाहबाज़ देख ढुक न हंघन मिलै न ढोई॥ (५-१२-४)
चार वीचार संसार विच साध संगत मिल दुरमति खोई॥ (५-१२-५)
सतिगुर सचा पातशाह दुबिधा मार मिवासा गोई॥ (५-१२-६)
गुरमुख जाता जाण जाणोई ॥१२॥ (५-१२-७)

सतिगुर सचा पातिशाह गुरमुख गाडी राह चलाया॥ (५-१३-१)
पंच दूत कर भूत वस दुरमत दूजा भाउ मिटाया॥ (५-१३-२)
शबद सुरति निव चलणा जमजागाती नेड़ न आया॥ (५-१३-३)

बेमुख बारह बाट कर साध संगत सच खंड वसाया॥ (५-१३-४)
भाउ भगति भउ मंत्र दे नाम दान इशनान दृड़ाया॥ (५-१३-५)
जिउं जल अंदर कमल है माया विच उदास रहाया॥ (५-१३-६)
आप गवाइ न आपा गणाया ॥१३॥ (५-१३-७)

राजा परजा होइ कै चाकर कूकट देण दुहाई॥ (५-१४-१)
जम्मदिआँ रण विच जूझना नानक दादक होइ वधाई॥ (५-१४-२)
वीवाहै नों सिठणीआँ दुहीवलीं दोइ तूर वजाई॥ (५-१४-३)
रोवण पिटण मोइआँ नों वैण अलाहणि धूम्म धुमाई॥ (५-१४-४)
साध संगत सच सोहिला गुरमुख साध संगत लिवलाई॥ (५-१४-५)
बेद कतेबहुं बाहरा जम्मन मरन अलिपत रहाई॥ (५-१४-६)
आसा विच निरास वलाई ॥१४॥ (५-१४-७)

गुरमुख पंथ सुहेलड़ा मनमुख बारह वाट फिरंदे॥ (५-१५-१)
गुरमुख पार लंघाइदा मनमुख भवजल विच डुबंदे॥ (५-१५-२)
गुरमुख जीवन मुकत कर मनमुख फिर फिर जनम मरंदे॥ (५-१५-३)
गुरमुख सुखफल पाइंदे मनमुख दुखफल दुख लहंदे॥ (५-१५-४)
गुरमुख दरगहि सुरखरू मनमुख जमपुर दंड सहंदे॥ (५-१५-५)
गुरमुख आप गवाइआ मनमुख हउमैं अगन जलंदे॥ (५-१५-६)
बंदी अंदर विरले बंदे ॥१५॥ (५-१५-७)

पेवकड़ै घर लाडली माऊ पीऊ खरी पिआरी॥ (५-१६-१)
विच भरावाँ भैनड़ी नानक दादक सण परवारी॥ (५-१६-२)
लख खरच वीवाहीऐ गहिणे दाज साज अति भारी॥ (५-१६-३)
साहुरड़ै घर मन्नीऐ सणखती परवार सुधारी॥ (५-१६-४)
सुख माणै पिर सेजड़ी छती भोजन सदा सींगारी॥ (५-१६-५)
लोक वेद गुण गिआन विच अर्ध सरीरी मोख दुआरी॥ (५-१६-६)
गुरमुख सुख फल निहचउ नारी ॥१६॥ (५-१६-७)

जिउं बहु मितीं वेसिआ सभ कुल्खण पाप कमावै॥ (५-१७-१)
लोकहुं देसहुं बाहरी तिहु प्खाँ कालंक लगावै॥ (५-१७-२)
डुबी डोबै होरनाँ महुरा मि्ठा होइ पचावै॥ (५-१७-३)
घंडा हेड़ा मिरग जिउं दीपक होइ पतंग जलावै॥ (५-१७-४)
दुहीं सराँई ज़रदरू प्थर बेड़ी पूर डुबावै॥ (५-१७-५)
मनमुख मन अठ खंड होइ दुशटाँ संगति भर्म भुलावै॥ (५-१७-६)

वेसुआ पुत न नाउ सदावै ॥१७॥ (५-१७-७)

सुध न होवै बाल बुधि बालक लीला विच विहावै॥ (५-१८-१)
भर जोबन भरमाईऐ पर तन पर धन निंद लुभावै॥ (५-१८-२)
बिरध होआ जंजाल विच महाँ जाल परवार फहावै॥ (५-१८-३)
बल हीणा मति हीण होइ नाउं बहतरिआ बरड़ावै॥ (५-१८-४)
अन्ना बोला पिंगला तन थ्का मन दहिदिस धावै॥ (५-१८-५)
साध संगति गुर शबद विण लख चौरासी जोन भवावै॥ (५-१८-६)
अउसर चुका हथ न आवै ॥१८॥ (५-१८-७)

हंस न चूडै मानसर बगुला बहु छपड़ फिर आवै॥ (५-१६-१)
कोइल बोले अम्बवण वणवण काउं कुथाउं सुखावै॥ (५-१६-२)
वग न होवन कुतईं गाईं गोरस वंस वधावै॥ (५-१६-३)
सफल बिरख निहचल मतीं निहफल मानस दहिदिस धावै॥ (५-१६-४)
अग ततो जल सीअला सिर उचा नीवाँ दिखलावै॥ (५-१६-५)
गुरमुख आप गवाइआ मनमुख मूरख आप गणावै॥ (५-१६-६)
दूजा भाउ कुदाउ हरावै ॥१६॥ (५-१६-७)

गज मृग मीन पतंग अलि इकत इकत रोग पचंदे॥ (५-२०-१)
मानस देही पंच रोग पंजे दूत कसूत करंदे॥ (५-२०-२)
आसा मणसा डाइणी हरख सोग बहु रोग वधंदे॥ (५-२०-३)
मनमुख दूजै भाइ लग भम्भल भूसे खाइ भवंदे॥ (५-२०-४)
सतिगुर सचा पातशाह गुरमुख गाडी राह चलंदे॥ (५-२०-५)
साध संगत मिल चलणा भज गए ठग चोर डरंदे॥ (५-२०-६)
लै लाहा निज घर निबहंदे ॥२०॥ (५-२०-७)

बेड़ी चाड़ लंघाइंदा बाहले पूर माणस मोहाणा॥ (५-२१-१)
आगू इक निबाहिंदा लशकर संग शाह सुलताणा॥ (५-२१-२)
फिरै महलै पाहरू होइ निचिंद सवन परधाणा॥ (५-२१-३)
लाड़ा इक वीवाहीऐ बाहले जाञीं कर महिमाणा॥ (५-२१-४)
पातशाह इक मुलक विच होर परजा हिंदू मुसलमाणा॥ (५-२१-५)
सतिगुर सचा पातशाह साध संगति गुरु सबद निसाणा॥ (५-२१-६)
सतिगुर परणै तिन कुरबाणा ॥२१॥५॥ (५-२१-७)

Vaar 6

ੴ सतिगुरप्रसादि॥ (६-१-१)

पूरा सतिगुर जाणीऐ पूरै पूरा थाट बणाया॥ (६-१-२)
पूरे पूरा साध संग पूरे पूरा मंत दृड़ाया॥ (६-१-३)
पूरे पूरा पिरमरस पूरे गुरमुख पंथ चलाया॥ (६-१-४)
पूरे पूरा दरसनो पूरे पूरा शबद सुणाया॥ (६-१-५)
पूरे पूरा बैहण कर पूरे पूरा तकथ रचाया॥ (६-१-६)
साधसंगति सचखंड है भगत वछल हुइ वसि गति पाया॥ (६-१-७)
सतिरूप सच नाउ गुर गिआन धिआन सिखाँ समझाया॥ (६-१-८)
गुर चेले परचा परचाया ॥१॥ (६-१-९)

करण कारण समरथ है साध संगत दा करै कराया॥ (६-२-१)
भरे भंडार दातार है साध संगत दा देइ दवाया॥ (६-२-२)
पारब्रह्म गुर रूप होइ साध संगत गुर शबद समाया॥ (६-२-३)
जग भोग जोग धिआन कर पूजा परो न दरशन पाया॥ (६-२-४)
साध संगत पिओ पुत होइ दिता खाइ पहिन पैनश्राया॥ (६-२-५)
घर बारी होइ वरतिआ घर बारी सिख पैरीं पाया॥ (६-२-६)
माया विच उदास रखाइआ ॥२॥ (६-२-७)

अमृत वेले उठ के जाइ अंदर दरयाइ नश्रवंदे॥ (६-३-१)
सहज समाध अगाध विच इक मन हो गुर जाप जपंदे॥ (६-३-२)
मथे टिके लाल लाइ साध संगत चल जाइ बहंदे॥ (६-३-३)
शबद सुरति लिवलीन होइ सतिगुर बाणी गाव सुनंदे॥ (६-३-४)
भाइ भगत भै वरतमान गुर सेवा गुर पुरब करंदे॥ (६-३-५)
संझै सोदर गावणा मन मेली कर मेल मिलंदे॥ (६-३-६)
राती कीर्तन सोहिला कर आरती परसाद वंडंदे॥ (६-३-७)
गुरमुख सुखफल पिर्म चखंदे ॥३॥ (६-३-८)

इक कवाउ पसाउ कर ओअंकार अकार पसारा॥ (६-४-१)
पउण पाणी बैसंतरो धरत अगास करे निरधारा॥ (६-४-२)
रोम रोम विच रखिउन कर वरभंड करोड़ अकारा॥ (६-४-३)
पारब्रह्म पूरन ब्रह्म अगम अगोचर अलख अपारा॥ (६-४-४)
प्रेम पिआले वस होइ भगत वछल होइ सिरजनहारा॥ (६-४-५)

बीउ बीज अति सूखमो तिदू होइ वड बिरख बिथारा॥ (६-४-६)
फल विच बीउ समाइकै इक दूं बीओं लख हजारा॥ (६-४-७)
गुरमुख सुखफल प्रेम रस गुरसिखाँ सतिगुरू पिआरा॥ (६-४-८)
साध संगति सचखंड विच सतिगुर पुरख वसै निरंकारा॥ (६-४-९)
भाइ भगति गुरमुख निसतारा ॥४॥ (६-४-१०)

पउण गुरू गुर सबद है वाहिगुरू गुर सबद सुणाया॥ (६-५-१)
पाणी पिता पवित्र कर गुरमुख पंथ निवाण चलाया॥ (६-५-२)
धरती मात महत कर ओत पोत संजोग बनाया॥ (६-५-३)
दाई दाइआ रात दिहु बाल सुभाइ जगत खिलाया॥ (६-५-४)
गुरमुख जनम सकारथा साध संगति वस आप गवाया॥ (६-५-५)
जम्मण मरनों बाहिरे जीवन मुकति जुगति वरताया॥ (६-५-६)
गुरमत माता मृत है पिता संतोख मोख पद पाया॥ (६-५-७)
धीरज धर्म भराव दुइ जपतप जतसत पुत जणाया॥ (६-५-८)
गुर चेला चेला गुरू पुरखहु पुरख चलत वरताया॥ (६-५-९)
गुरमुख सुखफल अलख लखाया ॥५॥ (६-५-१०)

पर घर जाइ पराहुणा आसा विच निरास वलाए॥ (६-६-१)
पाणी अंदर कवल जिउ सूरज धिआन अलिपत तराए॥ (६-६-२)
शबद सुरत सतसंग मिल गुर चेले दी संध मिलाए॥ (६-६-३)
चार वरन गुरसिख होइ साध संगत सच खंड वसाए॥ (६-६-४)
आप गवाए तम्बोल रस खाइ चबाइ सु रंग चड़ाए॥ (६-६-५)
छिअ दरशन तरसन खड़े बारह पंथ गरंथ सुनाए॥ (६-६-६)
छिअ रुत बारह मास कर इक इक सूरज चंद दिखाए॥ (६-६-७)
बारह सोलह मेलके ससीअर अंदर सूर समाए॥ (६-६-८)
शिव शकती नूं लंघ कै गुरमुख इक मन इक धिआए॥ (६-६-९)
पैरीं पै जग पैरीं पाए ॥६॥ (६-६-१०)

गुरउपदेश अवेश कर पैरीं पै रहिरास करंदे॥ (६-७-१)
चरन सरन मसतक धरन छरन रेण मुख तिलक सुहंदे॥ (६-७-२)
भर्म कर्म दा लेख मेट लेप अलेख वसेख बणंदे॥ (६-७-३)
जग मग जोत उदोत कर सूरज चंद न अलख पुजंदे॥ (६-७-४)
हउमैं गरब निवारकै साध संगत सच मेल मिलंदे॥ (६-७-५)
साध संगत पूरन ब्रह्म चरन कवल पूजा परचंदे॥ (६-७-६)
सुख संगत कर भवर वसंदे ॥७॥ (६-७-७)

गुरदरशन परशन सफल छे दरशन इक दरशन जाणै॥ (६-८-१)
दिब दृशट परगास कर लोक वेद गुर गिआन पछाणै॥ (६-८-२)
एका नारी जती होइ पर नारी धी भैण वखाणै॥ (६-८-३)
पर धन सूअर गाइ जिउ मकरूह हिंदू मुसलमाणै॥ (६-८-४)
घरबारी गुर सिख होइ सिखा सूत्र मल मूत्र विडाणै॥ (६-८-५)
पारब्रह्म पूरन ब्रह्म ज्ञान ध्यान गुरसिख सिञाणै॥ (६-८-६)
साध संगत मिल पत परवाणै ॥८॥ (६-८-७)

गाईं बइहले रंग जिउं दुध देण है इक रंगी॥ (६-९-१)
बाहले बिरख बणासपत अंदर अगनी है बहु रंगी॥ (६-९-२)
रतना वेखे सभ को रतन पारखू विरला संगी॥ (६-९-३)
हीरे हीरा बेधिआ रतन माल सत संगत चंगी॥ (६-९-४)
अमृत नदर निहालिओ होइ निहाल न होरस मंगी॥ (६-९-५)
दिबदेह दिब दृशट होइ पूरन ब्रह्म जोा अंग अंगी॥ (६-९-६)
साध संगत सतिगुर सह लंगी ॥९॥ (६-९-७)

शबद सुरत लिव साध संग पंच सबद इक सबद मिलाए॥ (६-१०-१)
रागनाद सम्बाद रख भाखिआ भाउ सुभाउ अलाए॥ (६-१०-२)
गुरमुख ब्रह्म धिआन धुन जाणै जंत्री जंत्र वजाए॥ (६-१०-३)
अकथ कथा वीचार कै उसतत निंदा वरज रहाए॥ (६-१०-४)
गुर उपदेश अदेस कर मिठा बोलण मन परचाए॥ (६-१०-५)
जाइ मिलण गुड़ कीड़िआँ रखे रखणहार लुकाए॥ (६-१०-६)
गन्ना होइ कोहलू पड़ाए ॥१०॥ (६-१०-७)

चरन कमल मकरंद रस होइ भवर लै वास लुभावै॥ (६-११-१)
इड़ा पिंगला सुखमना लंघ तृबेनी निज घर आवै॥ (६-११-२)
साहि साहि मन पवन लिव सोहं हंसा जपे जपावै॥ (६-११-३)
अचरज रूप अनूप लिव गंध सुगंध अवेस मचावै॥ (६-११-४)
सुख सागर चरनारबिंद सुख सम्पत विच सहज समावै॥ (६-११-५)
गुरमुख सुखफल पिर्म रस देह बिदेह परमपद पावै॥ (६-११-६)
साध संगत मिल अलख लखावै ॥११॥ (६-११-७)

गुरमुख हथ सकथ हन साध संगत गुर कार कमावै॥ (६-१२-१)
पाणी पखा पीहणा पैर धोइ चरणामृत पावै॥ (६-१२-२)

गुरबाणी लिख पोथीआँ ताल मृदंग रबाब बजावै॥ (६-१२-३)
नमस्कार डंडौत कर गुर भाई गल मिल गल लावै॥ (६-१२-४)
किरत विरत कर धर्म दी हथहुं देके भला मनावै॥ (६-१२-५)
पारस परस अपरस होइ पर तन पर धन हथ न लावै॥ (६-१२-६)
गुरसिख गुरसिख पुजकै भाइ भगति भै भाणा भावै॥ (६-१२-७)
आप गवाइ न आप गणावै ॥१२॥ (६-१२-८)

गुरमुख पैर सकारथे गुरमुख मारग चाल चलंदे॥ (६-१३-१)
गुरू दुआरे जान चल साध संगत चल जाइ बहंदे॥ (६-१३-२)
धावन परउपकार नों गुर सिखाँ नो खोज लहंदे॥ (६-१३-३)
दुबिधा पंथ न धावनी माया विच उदास रहंदे॥ (६-१३-४)
बंद खलासी बंदगी विरले कोई हुकमी बंदे॥ (६-१३-५)
गुर सिखाँ परदखणा पैरीं पै रहिरास करंदे॥ (६-१३-६)
गुर चेले परचे परचंदे ॥१३॥ (६-१३-७)

गुरसिख मन परगास है पिर्म पिआला अजर जरंदे॥ (६-१४-१)
पारब्रह्म पूरन ब्रह्म ब्रह्म बबेकी धिआन धरंदे॥ (६-१४-२)
सबद सुरत लिवलीन हो अकथ कथा गुर सबद सुणंदे॥ (६-१४-३)
भूत भविखहु वरतमान अबगत गत अति अलख लखंदे॥ (६-१४-४)
गुरमुख सुखफल अछल छल भगत वछल कर अछल छलंदे॥ (६-१४-५)
भवजल अंदर बोहिथै इकस पिछै लख तरंदे॥ (६-१४-६)
परउपकारी मिलन हसंदे ॥१४॥ (६-१४-७)

बावन चंदन आखीऐ बहिले बिसीअर तिस लपटाहीं॥ (६-१५-१)
पारस अंदर पथराँ पथर पारस होइ न जाहीं॥ (६-१५-२)
मणीं जिनाँ सपाँ सिरीं ओइ भी सपाँ विच फिराहीं॥ (६-१५-३)
लहिरी अंदर हंसले माणक मोती चुग चुग खाहीं॥ (६-१५-४)
ज्योंं जल कवल अलिपत है घरबारी गुरसिख तिवाहीं॥ (६-१५-५)
आसा विच निरास होइ जीवण मुकत सु जुगत जवाहीं॥ (६-१५-६)
साध संगति कित मुख सलाहीं ॥१५॥ (६-१५-७)

धन्न धन्न सतिगुर पुरख निरंकार अकार बनाइआ॥ (६-१६-१)
धन्न धन्न गुरसिख सुण चरन सरन गुरसिख जुआया॥ (६-१६-२)
गुरमुख मारग धन्न धन्न साध संगत मिल संग चलाया॥ (६-१६-३)
धन्न धन्न सतिगुर चरन धन्न मसतक गुर चरनी लाया॥ (६-१६-४)

सतिगुर दरसन धन्न है धन्न धन्न गुरसिख परसन आया॥ (६-१६-५)
भाउ भगति गुरसिख विच होइ दिआल गुरू महि लाया॥ (६-१६-६)
दुरमत दूजा जाउ मिटाइआ ॥१६॥ (६-१६-७)

धन्न पल चसा घड़ी पहिर धन्न धन्न थित सु वार सभागे॥ (६-१७-१)
धन्न धन्न दिह रात है पख माह रुत सम्मत जागे॥ (६-१७-२)
धन्न अभीच निछत्य है काम क्रोध अहंकार तिआगे॥ (६-१७-३)
धन्न धन्न संजोग है अठसठ तीर्थ राज पिरागे॥ (६-१७-४)
गुरू दुआरे आइकै चरन कवल रस अमृत पागे॥ (६-१७-५)
गुरउपदेस अवेस कर अनभै पिर्म पिरी अनुरागे॥ (६-१७-६)
शबद सुरत लिव साधसंगति अंग अंग इक रंग समागे॥ (६-१७-७)
रतन माल कर कचे धागे ॥१७॥ (६-१७-८)

गुरमुख मि्ठा बोलणा जो बोलै सोई जप जापै॥ (६-१८-१)
गुरमुख अखीं देखणा ब्रह्म धिआन धरे आप सुआपै॥ (६-१८-२)
गुरमुख सुनणा सुरत कर पंच शबद गुर शबद अलापै॥ (६-१८-३)
गुरमुख किरत कमावणी नमस्कार डंडउत सिञापै॥ (६-१८-४)
गुरमुख मारग चलणा परदखणा पूरन परतापै॥ (६-१८-५)
गुरमुख खाणा पैनणा जग भोग संजोग पछापै॥ (६-१८-६)
गुरमुख सवण समाधि है आपै आप न थाप उथापै॥ (६-१८-७)
घरबारी जीवन मुकति लहर नहीं लब लोभ बिआपै॥ (६-१८-८)
पार पवे लंघ वरै सरापै ॥१८॥ (६-१८-९)

सतिगुर सति सरूप है धिआन मूल गुर मूरत जाणै॥ (६-१९-१)
सतिनामु करता पुरख मूल मंत्र सिमरण परवाणै॥ (६-१९-२)
चरन कमल मकरंद रस पूजा मूल पिर्म रस माणै॥ (६-१९-३)
सबद सुरति लिव साध संग गुर किरपा ते अंदर आणै॥ (६-१९-४)
गुरमुख पंथ अगम्म है गुरमत निहचल चलण भाणै॥ (६-१९-५)
वेद कतेबहु बाहरी अकथ कथा कउण आख वखाणै॥ (६-१९-६)
वीह इकीह उलंघ सिञाणै ॥१९॥ (६-१९-७)

सीस निवाए ढींगुली गल बधे जल उ्चा आवै॥ (६-२०-१)
घुघू सुझ न सुझई चकवी चंद न डिठा भावै॥ (६-२०-२)
सिम्बल बिरख न सफल होइ चंदन वास न वाँस समावै॥ (६-२०-३)
सपै दुध पीआलीऐ तुम्मे दा कउड़त न जावै॥ (६-२०-४)

जिउं थन चम्मड़ चिचड़ी लहू पीऐ दूध न खावै॥ (६-२०-५)
सब अवगुण मैं तन वसण गुण कीते अवगण नों धावै॥ (६-२०-६)
थोम न वास कथूरी आवै ॥२०॥६॥ (६-२०-७)

Vaar 7

ੴ सतिगुरप्रसादि ॥ (७-१-१)

सतिगुर सूचा पातशाह साध संगत सचुखंड वसाया॥ (७-१-२)
गुरसिख लै गुरसिख होइ आप गवाइ न आप गणाया॥ (७-१-३)
गुरसिख सभो साधनां साधि सधाइ साध सदवाया॥ (७-१-४)
चहुं वरणाँ उपदेश दे माया विच उदास रहाया॥ (७-१-५)
सूचहुं ओरै सभ किहु सूच नाउं गुर मंत्र दिड़ाया॥ (७-१-६)
हुकमै अंदर सभ को मन्नै हुकम सु सूच समाया॥ (७-१-७)
शबद सुरति लिव अलख लखाया ॥१॥ (७-१-८)

सिव सकती नों साधकै चंद सूर दिहु रात सदाए॥ (७-२-१)
सुख दुख साधे हरख सोग नरक सुरग पुन्न पाप लंघाए॥ (७-२-२)
जनम मरण जीवन मुकति भला बुरा मित्र शत्र निवाए॥ (७-२-३)
राज जोग जिण वस कर साध संजोग विजोग रहाए॥ (७-२-४)
वसगति कीती नींद भुख आसा मनसा जिण घर आए॥ (७-२-५)
उसतति निंदा साध कै हिंदू मुसलमान सबाए॥ (७-२-६)
पैरीं पै पैखाक सदाए ॥२॥ (७-२-७)

ब्रह्मा बिसन महेश त्रै लोक वेद गुण गिआन लंघाए॥ (७-३-१)
भूत भविखहु वरतमान आदि मूध जिण अंत सिधाए॥ (७-३-२)
मनबच कर्म इकत्र कर जम्मन मरन जीवन जिण आए॥ (७-३-३)
आधि बिआधि उपाध साध सुरग मिरत पाताल निवाए॥ (७-३-४)
उतम मधम नीच साध बालक जोबन बिरध जिणाए॥ (७-३-५)
इड़ा पिंगला सुखमना तृकुटी लंघ तृबेणी नश्राए॥ (७-३-६)
गुरमुख इक मन इक धिआए ॥३॥ (७-३-७)

अंडज जेरज साधकै सेतज उतभुज खाणी बाणी॥ (७-४-१)
चारे कंदाँ चार जुग चार वरण चार वेद वखाणी॥ (७-४-२)
धर्म अर्थ काम मोख जिण रज तम सत गुन तुरीआराणी॥ (७-४-३)
सनकादिक आश्रम उलंघ चार वीर वसगति करआणी॥ (७-४-४)
चउपड़ जिउं चउसार मार जोड़ा होइ न कोइ रिआणी॥ (७-४-५)
रंग बरंग तम्बोल रस बहु रंगी इक रंग निसाणी॥ (७-४-६)
गुरमुख साध संगत निरबाणी ॥४॥ (७-४-७)

पउण पाणी बैसंतरो धरत अकाश उलंघ पइआणा॥ (७-५-१)
काम करोध विरोध लंघ लोभ मोह अहंकार विहाणा॥ (७-५-२)
सत संतोख दइआ धर्म अर्थ सु ग्रंथ पंच परवाणा॥ (७-५-३)
खेचर भूचर चाचरी उनमन लंघ उगोचर बाणा॥ (७-५-४)
पंचाइण परमेशरो पंच शबद घनघोर नीसाणा॥ (७-५-५)
गुरमुख पंच भूआतमा साध संगति मिल साध सुहाणा॥ (७-५-६)
सहजि समाधि न आवण जाणा ॥५॥ (७-५-७)

छिअ रुती कर साधना छिअ दरसन साधे गुरमती॥ (७-६-१)
छिअ रस रसना साधकै राग रागनी भाइ भगती॥ (७-६-२)
छिअ चिरजीवी छिअ जती चक्रवरत छिअ साथ जुगती॥ (७-६-३)
छिअ शासत्र छिअ क्रम जिण छिआँ गुराँ गुर सुरति निरती॥ (७-६-४)
छिअ वरतारे साधकै छिअ छक छती पवण परती॥ (७-६-५)
साध संगत गुर शबद सुरती ॥६॥ (७-६-६)

सत समुंद उलंघिआ दीप सत इक दीपक बलिआ॥ (७-७-१)
सत सूत इक सूत कर सते पुरीआँ लंघ उछलिआ॥ (७-७-२)
सत सती जिण सप रिख सतसुराँ जिण अटल न टलिआ॥ (७-७-३)
सते सीवाँ साधकै सूतीं सीवीं सुफलिओ फलिआ॥ (७-७-४)
सत अकाश पताल सत वसगति कर उपरेरै चलिआ॥ (७-७-५)
सते धारी लंघकै भैरउ खेत्रपाल दल मलिआ॥ (७-७-६)
सते रोहणि सूत वार सत सुहागणि साधि न ढलिआ॥ (७-७-७)
गुरमुख साध संगत विच खलिआ ॥७॥ (७-७-८)

अठै सिधी साधकै साधक सिध समाधि फलाई॥ (७-८-१)
अशट कुली बिखसाधनाँ सिमरण शेख न कीमत पाई॥ (७-८-२)
मण होइ अठ पैंसेरीआं पंजू अठे चाली भाई॥ (७-८-३)
जिउं चरखा अठ खंडीआ इकत सूत रहे लिवलाई॥ (७-८-४)
अठ पहिर असटाँग जो चावल रूती मासा राई॥ (७-८-५)
अठकाठा मन वसकर असटधाँत कराई॥ (७-८-६)
साध संगति वडी वडिआई ॥८॥ (७-८-७)

नथ चलाए नवैं नाथ नाथां नाथ अनाथ सहाई॥ (७-९-१)
नौं निधान फुरमान विच पर्म निधान गयान गुरभाई॥ (७-९-२)

नौं भगती नौं भगत कर गुरमुख प्रेम भगत लिवलाई॥ (७-९-३)
नौं ग्रहि साध गृहसत विच पूरे सतिगुर दी वडिआई॥ (७-९-४)
नउंखंड साध अखंड हो नउं दुआर लंघ निज घर जाई॥ (७-९-५)
नौं अगनील अनील हो नउं कल निग्रह सहज समाई॥ (७-९-६)
गुरमुख सुख फल अलख लखाई ॥९॥ (७-९-७)

सन्यासी दस नाव धर सच नाँव विण नाँव गणाया॥ (७-१०-१)
दस अवतार अकार कर एकंकार नअलख लखाया॥ (७-१०-२)
तीर्थ पुरब संजोग विच दस पुरबीं गुरपुरब न पाया॥ (७-१०-३)
इक मन इक न चेतिओ साध संगत विण दहदिस धाया॥ (७-१०-४)
दसदहीआ दस असमेध खाइ अमुध निखेध कराया॥ (७-१०-५)
इंदरीआँ दस वस कर बाहर जाँदा वरज रहाया॥ (७-१०-६)
पैरी पै जग पैरी पाया ॥१०॥ (७-१०-७)

इक मन होइ इकादसी गुरमुख वरत पतिब्रत भाया॥ (७-११-१)
गिआरह रुद्र समुद्र विच पलदा पारावार न पाया॥ (७-११-२)
ज्ञारह कस ज्ञारह कसे कस कसवटी क्स कसाया॥ (७-११-३)
गिआरह गुण फैलाउ कर क्च पकाई अघड़ घड़ाया॥ (७-११-४)
गिआरह दाउ चड़ाउ कर दूजा भाउ कुदाउ हराया॥ (७-११-५)
गिआरह गेड़ा सिख सुण गुरसिख लै गुरसिख सदाया॥ (७-११-६)
साध संगत गुर सबद वसाया ॥११॥ (७-११-७)

बारह पंथ सुधाइकै गुरमुख गाडी राह चलाया॥ (७-१२-१)
सूरज बारहमाह विच ससीअर इकतु माहि फिराया॥ (७-१२-२)
बारह सोलह मेल कर ससीअर अंदर सूर समाया॥ (७-१२-३)
बारह तिलक मिटाइकै गुरमुख तिलक नीसाण चड़ाया॥ (७-१२-४)
बारह रासीं साध कै स्च रास रहिरास लुभाया॥ (७-१२-५)
बारह वन्नी होइ कै बारह मासे तोल तुलाया॥ (७-१२-६)
पारस पारस परस कराया ॥१२॥ (७-१२-७)

तेरह ताल अऊरिआ गुरमुख सुख तप ताल पुराया॥ (७-१३-१)
तेरह रतन अकारथे गुर उपदेश रतन धन पाया॥ (७-१३-२)
तेरह पद कर जग विच पितर कर्म कर भर्म भुलाया॥ (७-१३-३)
लख लख ज्ग न पुगनी गुरसिख चरणोदक पीआया॥ (७-१३-४)
जग भोग नईवइद ल्ख गुरमुख मुख इक दाणा पाया॥ (७-१३-५)

गुर भाई संतुश कर गुरमुख सुख फल पिर्म चखाया॥ (७-१३-६)
भगत वछल हुइ अछल छलाया ॥१३॥ (७-१३-७)

चौदह विद्या साध कै गुरमत अबगति अकथ कहाणी॥ (७-१४-१)
चउदह भवन उलंघ कै निज घर वास नेहु निरबाणी॥ (७-१४-२)
पंद्रह थितीं पख इक कृश शुकल दुइ पख नीसाणी॥ (७-१४-३)
सोलह सार संघार कर जोड़ा जुड़िआ निरभउ जाणी॥ (७-१४-४)
सोलह कला सम्पूरणो ससि घर सूरज विरती हाणी॥ (७-१४-५)
सोलह नार सींगार कर सेज भतार पिर्म रसमाणी॥ (७-१४-६)
शिव तै सकति सति रहवाणी ॥१४॥ (७-१४-७)

गोत अठारह साधकै पड़ह पौराण अठारह भाई॥ (७-१५-१)
उळनी वीह इकीह लंघ बाई उमरे साध निवाई॥ (७-१५-२)
संख असंख लुटाइ कै तेई चौवी पंझी पाई॥ (७-१५-३)
छबी जोड़ सताईआ आण अठाई मेल मिलाई॥ (७-१५-४)
उलंघ उणतीह तीह साध लंघे तीह इकतीह वधाई॥ (७-१५-५)
साध सुल्खण बतीए तेती ध्रू चउफेर फिराई॥ (७-१५-६)
चउती लेख अलख लखाई ॥१५॥ (७-१५-७)

वेद कतेबहुं बाहरा लेख अलेख न लखिआ जाई॥ (७-१६-१)
रूप अनूप अचरज है दरशन दृशटि अगोचर भाई॥ (७-१६-२)
इक कवाउ पसाउ कर तोल न तुला धरन समाई॥ (७-१६-३)
कथनी बदनी बाहरा थके सबद सुरत लिव लाई॥ (७-१६-४)
मन बच कर्म अगोचरा मति बुध साध कि सोझी पाई॥ (७-१६-५)
अछल अछेद अभेद है भगत वछल साध संगति छाई॥ (७-१६-६)
वडा आप वडी वडिआई ॥१६॥ (७-१६-७)

वण वण विच वणासपति रहै उजाड़ अंदर असवारी॥ (७-१७-१)
चुण चुण अंजण बूटीआँ पतिशाही बाग लाइ सवारी॥ (७-१७-२)
सिंज सिंज बिरख वडीरीअनि सार सम्हाल करन वीचारी॥ (७-१७-३)
होनि सफल रुति आईऐ अमृत फल अम्मृतसर भारी॥ (७-१७-४)
बिरखहुं साउ न आवई फल विच साउ सुगंध संजारी॥ (७-१७-५)
पूरन ब्रह्म जगत्र विच गुरमुख साध संगत निरंकारी॥ (७-१७-६)
गुरमुख सुख फल अपर अपारी ॥१७॥ (७-१७-७)

अम्बर नदरी आँवदा केवड वडा कोइ न जाणै॥ (७-१८-१)
ऊचा केवड आखीऐ सुन्न सरूप न आख वखाणै॥ (७-१८-२)
लैण उडारी पंखणू अनल मनल उड खबर न आणै॥ (७-१८-३)
ओड़क मूल न लभई सभे होइ फिरन हैराणै॥ (७-१८-४)
लख अगास न अपड़न कुदरति कादर नों कुरबाणै॥ (७-१८-५)
पारब्रह्म सतिगुर पुरख साध संगति वासा निरबाणै॥ (७-१८-६)
मुरदा होइ मुरीद सिञाणै ॥१८॥ (७-१८-७)

गुरमूरति पूरन ब्रह्म घट घट अंदर सूरज सुझै॥ (७-१६-१)
सूरज कवल परीति है गुरमुख प्रेम भगति कर बुझै॥ (७-१६-२)
पारब्रह्म गुर शबद है निझर धार वरहै गुण गुझै॥ (७-१६-३)
किरख बिरख हुइ सफल फल चंदन वास निवास नखुझै॥ (७-१६-४)
अफल सफल सम दरस हो मोहु न धोह न दुबिधा लुझै॥ (७-१६-५)
गुरमुख सुखफल पिर्म रस जीवन मुकत भगत कर दुझै॥ (७-१६-६)
साध संगति मिल सहिज समुझै ॥१६॥ (७-१६-७)

शबद गुरू गुर जाणीऐ गुरमुख होइ सुरति धुन चेला॥ (७-२०-१)
साध संगति सचखंड विच प्रेम भगति परचै होइ मेला॥ (७-२०-२)
ज्ञान ध्यान सिमरण जुगति कूंज कुरम हंस वंस नवेला॥ (७-२०-३)
बिरखहुं फल फल ते बिरख गुरसिख सिख गुरमंत्र सुहेला॥ (७-२०-४)
वीहाँ अंदर वरतमान होइ इकीह अगोचर खेला॥ (७-२०-५)
आदि पुरख आदेस कर आदि पुरख आदेश वहेला॥ (७-२०-६)
सिफत सलाहण अमृत वेला ॥२०॥७॥ (७-२०-७)

Vaar 8

ੴ सतिगुरप्रसादि॥ (८-१-१)

इक कवाउ पसाउ कर कुदरत अंदर कीआ पसारा॥ (८-१-२)
पंज त्त परवान कर चहुं खाणीं विच सभ वरतारा॥ (८-१-३)
केवड धरती आखीऐ केवड तोल अगास अकारा॥ (८-१-४)
केवड पवण वखाणीऐ केवड खाणी तोल विथारा॥ (८-१-५)
केवड अगनी भार है तुल न तोल अतोल भंडारा॥ (८-१-६)
केवड आखाँ सिरजणहारा ॥१॥ (८-१-७)

चौरासी लख जोन विच जल थल महीअल तृभवण सारा॥ (८-२-१)
इकस इकस जोन विच जीअ जंत अनगणत अपारा॥ (८-२-२)
सास गिरास सम्हालदा कर ब्रहमंड करोड़ सुमारा॥ (८-२-३)
रोम रोम विच रखिओन ओअंकार अकार विथारा॥ (८-२-४)
सिरि सिरि लेख अलेख दा लेख अलेख उपावणहारा॥ (८-२-५)
कुदरति कवणु करै वीचारा ॥२॥ (८-२-६)

केवड सत संतोख है दया धर्म ते अर्थ वीचारा॥ (८-३-१)
केवड काम करोध है केवड लोभ मोह अहंकारा॥ (८-३-२)
केवड दिसट वखाणीऐ केवड रूप रंग परकारा॥ (८-३-३)
केवड सुरति सालाहीऐ केवड सबद विथार पसारा॥ (८-३-४)
केवड वास निवास है केवड गंध सुगंध अचारा॥ (८-३-५)
केवड रसकस आखीअन केवड साद नाद ओअंकारा॥ (८-३-६)
अंत बिअंत न पारा वारा ॥३॥ (८-३-७)

केवड दुख सुख आखीऐ केवड हरख सोग विसथारा॥ (८-४-१)
केवड सच वखाणीऐ केवड कूड़ कमावण हारा॥ (८-४-२)
केवड रती माह कर दिह रातीं विसमाद वीचारा॥ (८-४-३)
आसा मनसा केवडी केवड नींद भुख आहारा॥ (८-४-४)
केवड आखाँ भाउ भउ साँत सहिज उोपकार विकारा॥ (८-४-५)
तोल अतोल न तोलण हारा ॥४॥ (८-४-६)

केवड तोल संजोग दा केवड तोल विजोग वीचारा॥ (८-५-१)
केवड ह्सण आखीऐ केवड रोवण दा बिसथारा॥ (८-५-२)

केवड है निरविरत पख केवड है परविरति पसारा॥ (८-५-३)
केवड आखाँ पुन्न पाप केवड आखाँ मोख दुआरा॥ (८-५-४)
केवड कुदरति आखीऐ इकदूं कुदरति लख हज़ारा॥ (८-५-५)
दाने कीमत न पवै केवड दाता देवन हारा॥ (८-५-६)
अकथ कथा अबगत निरधारा ॥५॥ (८-५-७)

लख चउरासीह जोन विच मानस जनम दुलम्भ उपाया॥ (८-६-१)
चार वरन चार मज़हबा हिंदू मुसलमान सदाया॥ (८-६-२)
कितड़े पुरख वखाणीअन नार सुमार अगनत गणाया॥ (८-६-३)
त्रै गुन माया चलतु है ब्रह्मा बिसन महेस रचाया॥ (८-६-४)
बेद कतेबाँ वाचदे इक साहिब दुइ राह चलाया॥ (८-६-५)
शिव शकती विच खेल कर जोग भोग बहु चलित बणाया॥ (८-६-६)
साध असाध संगत फल पाया ॥६॥ (८-६-७)

चार वरन छिअ दरशनाँ शासतर वेद पाठ सुणाया॥ (८-७-१)
देवी देव सरेवणे देव सथल तीर्थ भरमाया॥ (८-७-२)
गण गंधरब अपछराँ सुरपति इंद्र इंद्रासण छाया॥ (८-७-३)
जती सती संतोखीआँ सिध नाथ अवतार गणाया॥ (८-७-४)
जप तप संजम होम जग वरत नेम नईवेद पुजाया॥ (८-७-५)
सिखा सूत्र माला तिलक पितर कर्म वेद कर्म कमाया॥ (८-७-६)
पुन्न दान उपदेश दृड़ाया ॥७॥ (८-७-७)

पीर पैकम्बर अउलीए गउस कुतब वलीउ्लह जाणे॥ (८-८-१)
शेख मुशाइक आखीअन लख लख दर दरवेश वखाणे॥ (८-८-२)
सुंहदे लख शहीद होइ लख अबदाल मलंग मउलाणे॥ (८-८-३)
शरै शरीअत आखीऐ तरक तरीकत राह सिञाणे॥ (८-८-४)
मारफती मारूफ़ लख हक हकीकत हुकम समाणे॥ (८-८-५)
बजर कवार हज़ार मुहाणे ॥८॥ (८-८-६)

कितड़े ब्रह्मण सारसुत वातीसर लागाइ तिलोए॥ (८-९-१)
कितड़े गउड़ कनउजीए तीर्थ वासी करदे ढोए॥ (८-९-२)
कितड़े लख सनउढीए पाँधे पंडत वैद खलोए॥ (८-९-३)
केतड़िआँ लख जोतशी वेद वेदवे लख पलोए॥ (८-९-४)
कितड़े लख कवीशराँ ब्रह्म माट ब्रमाउ बखोए॥ (८-९-५)
केतड़िआँ अभिआगताँ घर घर मंगदे लै कनसोए॥ (८-९-६)

कितड़े सउण सवाणी होए ॥९॥ (८-९-७)

कितड़े खतरी बाहरी केतड़िआँ ही बावंजाही॥ (८-१०-१)
पावाँधे पाचाधिआँ फलीआँ खोखराइण अगवाही॥ (८-१०-२)
केतड़िआँ चउड़ोतरी केतड़िआँ सेरीन विलाही॥ (८-१०-३)
केतड़िआँ अवतार होए चक्र वरति राजे दरगाही॥ (८-१०-४)
सूरजवौसी आखीअन सोम वंस सुर वीर सपाही॥ (८-१०-५)
धर्म राइ धरमातमा धर्म वीचारन बेपरवाही॥ (८-१०-६)
दान खड़ग मंत्र भगति सलाही ॥१०॥ (८-१०-७)

केवड वैश वखाणीअन राजपूत रेवत वीचारी॥ (८-११-१)
पूअर गउड़ पवार ल्ख म्लणहास चउहाण चितारी॥ (८-११-२)
कछवाहे राठउड़ लख राणे राइ भूमीए भारी॥ (८-११-३)
बाघ बघेले केतड़े बलवंड लख बुदेले कारी॥ (८-११-४)
केतड़िआँ ही भरटीए दरबाराँ अंदर दरबारी॥ (८-११-५)
कितड़े गुणी भदउड़ीए देस देस वडे इतबारी॥ (८-११-६)
हउमैं मुए ना हउमै मारी ॥११॥ (८-११-७)

कितड़े सूद सदाइंदे कितड़े काइथ लिकण हारे॥ (८-१२-१)
केतड़िआँ ही बाणीए कितड़े भाबड़िआँ सुनिआरे॥ (८-१२-२)
केतड़िआँ लख जट होइ केतड़िआँ छींबे सैसारे॥ (८-१२-३)
केतड़िआँ ठाठेरिआँ केतड़िआँ लोहार विचारे॥ (८-१२-४)
कितड़े तेली आखीअन कितड़े हलवाई बाज़ारे॥ (८-१२-५)
केतविआँ लख पंखीए कितड़े नाई ते वनजारे॥ (८-१२-६)
चहु वरनाँ दे गोत अपारे ॥१२॥ (८-१२-७)

कितड़े गिरही आखीअन केतड़िआँ ल्ख फिरन उदासी॥ (८-१३-१)
केतड़िआँ जोगीसराँ केतड़िआँ होए सन्न्यासी॥ (८-१३-२)
सन्न्यासी दस नाम धर जोगी बारह पंथ निवासी॥ (८-१३-३)
केतड़िआँ ल्ख पर्म हंस कितड़े बान प्रसत बनवासी॥ (८-१३-४)
केतड़िआँ ही दंड धार कितड़े जैनी जीअ दैआसी॥ (८-१३-५)
छिअघर छिअगुर आखीअन छिअउपदेस भेस अभ्यासी॥ (८-१३-६)
छिअ रुत बारह माह कर सूरज इको बारह रासी॥ (८-१३-७)
गुराँ गुरू सतिगुर अबिनासी ॥१३॥ (८-१३-८)

कितड़े साध वखाणीअन साध संगत विच परउपकारी॥ (८-१४-१)
केतड़िआँ लख संतजन केतड़िआँ निज भगति भंडारी॥ (८-१४-२)
केतड़िआँ जीवन मुकत ब्रह्म गिअनी ब्रह्म वीचारी॥ (८-१४-३)
केतड़िआँ समदरसीआँ केतड़िआँ निर्मल निरंकारी॥ (८-१४-४)
कितड़े लख बबेकीआँ कितड़े दे बिदे अकारी॥ (८-१४-५)
भाई भगत भै वरतणा सहस समाध बैराग सवारी॥ (८-१४-६)
गुरमुख सुख फल गरब निवारी ॥१४॥ (८-१४-७)

कितड़े लख असाध जग कितड़े चोर जार जूआरी॥ (८-१५-१)
वटवाड़े ठग केतड़े केतड़ीआँ निंदक अविचारी॥ (८-१५-२)
केतड़िआँ आकिरतघण कितड़े बेमुख ते अनचारी॥ (८-१५-३)
स्वाम ध्रोही विसवास घात लूण हरामी मूरख भारी॥ (८-१५-४)
बिखलीपत वेसुवा रवत मध मतवाके वडे विकारी॥ (८-१५-५)
विस्व विरोधी केतड़े केतड़ीआँ कूड़े कुड़िआरी॥ (८-१५-६)
गुर पूरे बिन अंत खुआरी ॥१५॥ (८-१५-७)

कितड़े सुन्नी आखीअन कितड़े ईसाई मूसाई॥ (८-१६-१)
केतड़ीआँ ही रावज़ी कितड़े मुलहद गणत न आई॥ (८-१६-२)
लूख फिरंगी इरमनी रूमी जंगी दुशमन दाई॥ (८-१६-३)
कितड़े सयद आखीअन कितड़े तुरकमान दुनिआई॥ (८-१६-४)
कितड़े मुगल पठान हन हबशी ते किलमाग अवाई॥ (८-१६-५)
केतड़िआँ ईमान विच कितड़े बेईमान बलाई॥ (८-१६-६)
नेकी बदी न लुके लुकाई ॥१६॥ (८-१६-७)

कितड़े दाते मंगते कितड़े वेद केतड़े रोगी॥ (८-१७-१)
कितड़े सहज संजोग विच कितड़े विछड़े होइ विजोगी॥ (८-१७-२)
केतड़ीआँ भुखे मरन केतड़ीआँ राजे रस भोगी॥ (८-१७-३)
केतड़ीआँ के सोहिले केतड़ीआँ दुख रोवन सोगी॥ (८-१७-४)
दुनीआ आवण जावणी कितड़ी कोई कितड़ी होगी॥ (८-१७-५)
केतड़ीआँ ही सचिआर केतड़ीआँ दगाबाज़ दरोगी॥ (८-१७-६)
गुरमुख को जोगीशर होगी ॥१७॥ (८-१७-७)

कितड़े अन्ने आखीअण केतड़ीआँ ही दिसण काणे॥ (८-१८-१)
केतड़ीआँ जुगे फिरण कितड़े रतीआँ ने उतकाणे॥ (८-१८-२)
कितड़े नकटे गुणगुणे कितड़े बोले बचे लाणे॥ (८-१८-३)

केतड़िआँ गिलड़ गलीं अंग रसउली वैण विहाणे॥ (८-१८-४)
टूंडे बाँडे केतड़े गंजे लुंजे कोड़ी जाणे॥ (८-१८-५)
कितड़े लूले पिंगुले कितड़े कुबे होइ कुड़ाणे॥ (८-१८-६)
कितड़े खुसरे हीजड़े केतड़िआँ गुंगे तुतलाणे॥ (८-१८-७)
गुर पूरे आवण जाणे ॥१८॥ (८-१८-८)

केतड़िआँ पातशाह जग कितड़े मसलत करन वज़ीराँ॥ (८-१९-१)
केतड़िआँ उमराउ लख मनसबदार हज़ार वडीराँ॥ (८-१९-२)
हिकमद विच हकीम लख कितड़े तरकश बंद अमीराँ॥ (८-१९-३)
कितड़े चाकर चाकरी भोई मेठ महावत मीराँ॥ (८-१९-४)
लख फराश लख सारवान मीराँ खोर सईस वहीराँ॥ (८-१९-५)
कितड़े लख जलोबदार गाडीवाण चलाई गडीराँ॥ (८-१९-६)
छड़ीदार दरवान खलीराँ ॥१९॥ (८-१९-७)

कितड़े लख नगारची केतड़िआँ ढोली सहनाई॥ (८-२०-१)
केतड़िआँ ही ताइफे ढाढी ब्चे कलावत गाई॥ (८-२०-२)
केतड़िआँ बहुरूपीए बाज़ीगर लख भंड अताई॥ (८-२०-३)
कितड़े लख मशालची शमाँ चराग करन रुशनाई॥ (८-२०-४)
केतड़िआँ ही कोरची आलमतोग सिलह सुखदाई॥ (८-२०-५)
केतड़िआँ ही आबदार कितड़े बावरची नानवाई॥ (८-२०-६)
तम्बोली तोसकरची सुहाई ॥२०॥ (८-२०-७)

केतड़िआँ खुशबोइदार केतड़िआँ रंगरेज़ तम्बोली॥ (८-२१-१)
कितड़े मेवेदार हन हुडक हुडकीए लोलण लोली॥ (८-२१-२)
खिज़मतगार खवास लख गोलंगदाज़ तोपची तोली॥ (८-२१-३)
केतड़िआँ तहिसीलदार मुनसफदार दारोगे ओली॥ (८-२१-४)
केतड़िआँ किरसाण होइ कर किरसाणी अतुल अतोली॥ (८-२१-५)
केतड़िआँ दीवान होइ करन करोड़ी मुलक ढंढोली॥ (८-२१-६)
रतन पदार्थ अमोल अमोली ॥२१॥ (८-२१-७)

केतड़िआँ ही जउहरी लख सराफ़ बजाज़ वपारी॥ (८-२२-१)
सउदागर सउदागरी गाँधी कासेरे पासारी॥ (८-२२-२)
केतड़िआँ परचूनीऐ केतड़िआँ दलाल बज़ारी॥ (८-२२-३)
केतड़िआँ सिकलीगराँ कितड़े लख कमगर कारी॥ (८-२२-४)
केतड़िआँ कुमिआर लख कागद कुट घणे लूणारी॥ (८-२२-५)

कितड़े दरज़ी धोबीआँ कितड़े ज़र लोहे सरहारी॥ (८-२२-६)
कितड़े भड़भूजे भठिआरी ॥२२॥ (८-२२-७)

केतड़िआँ कारूंजड़े केतड़िआँ दबगर कासाई॥ (८-२३-१)
केतड़िआँ मुनिआर लख् केतड़िआँ चमिआर अराँइ॥ (८-२३-२)
भंगहेरे होइ केतड़े बगलीगराँ कलाल हवाई॥ (८-२३-३)
कितड़े भंगी पोसती अमली सोफी घणी लुकाई॥ (८-२३-४)
केतड़िआँ घुमिआर लख गुजर लख अहीर गणाई॥ (८-२३-५)
कितड़े ही लख चूहड़े जाति अजाति सनात अलाई॥ (८-२३-६)
नाँव थाँव लख कीम न पाई ॥२३॥ (८-२३-७)

उ्तम मध्म नीच लख गुरमुख नीचहु नीच सदाए॥ (८-२४-१)
पैरी पै पाखाक होइ गुरमुख गुर सिख आप गवाए॥ (८-२४-२)
साध संगत भउ भाउ कर सेवक सेव कार कमाए॥ (८-२४-३)
मिठा बोलन निव चलण हथहुं देकै भला मनाए॥ (८-२४-४)
शबद सुरत लिवलीण हो दरगह माण निमाणा पाए॥ (८-२४-५)
चलण जाण अजाण होइ आसा विच निरास वलाए॥ (८-२४-६)
गुरमुख सुख फल अलख लखाए ॥२४॥८॥ (८-२४-७)

Vaar 9

ੴ सतिगुरप्रसादि ॥ (९-१-१)

गुरमूरति पूरन ब्रह्म अभगति अबिनासी॥ (९-१-२)
पार ब्रह्म गुर शबद है सतसंगि निवासी॥ (९-१-३)
साध संगत सच खंड है भाउ भगत अभ्यासी॥ (९-१-४)
चहूं वरना उपदेश कर गुरमति परगासी॥ (९-१-५)
पैरीं पै पाखाक होइ गुरमुख रहि रासी॥ (९-१-६)
माया विच उदास गति होइ आस निरासी ॥१॥ (९-१-७)

गुरसिखी बारीक है सिल चटन फ्किी॥ (९-२-१)
तृखी खंडे धार है उह वालहुं निकी॥ (९-२-२)
भूत भविखत वरतमान सरि मिकण मिकी॥ (९-२-३)
दुतीआ नासत एत घर होइ इका इकी॥ (९-२-४)
दूआ तीआ वीसरै सण कका किकी॥ (९-२-५)
सभै सिकाँ परहरै सुख इकतु सिकी ॥२॥ (९-२-६)

गुरमुख मारग आखीऐ गुरमति हितकारी॥ (९-३-१)
हुकम रजाई चलणा गुर शबद वीचारी॥ (९-३-२)
भाणा भावै खसम का निहचउ निरंकारी॥ (९-३-३)
इशक मुशक महकार है होइ परउपकारी॥ (९-३-४)
सिदक सबूरी साबते मसती हुशिआरी॥ (९-३-५)
गुरमुख आप गवाइआ जिण हउमैं मारी ॥३॥ (९-३-६)

भाइ भगति भै चलना होइ प्राहुण चारी॥ (९-४-१)
चलन जाण अजाण होइ गहु गरब निवारी॥ (९-४-२)
गुर सिख नित पराहुणे एह करनी सारी॥ (९-४-३)
गुरमत टहिल कमावणी सतिगुरू पिआरी॥ (९-४-४)
शबद सुरति लिवलीण होइ परवार साधारी॥ (९-४-५)
साध संगति जाइ सहजि घर निर्मल निरंकारी ॥४॥ (९-४-६)

परमजोति परगास करि उनमन लिवलाई॥ (९-५-१)
पर्म तत परवाण कर अनहद धुनिवाई॥ (९-५-२)
परमारथ परबोध कर परमातम हाई॥ (९-५-३)

गुर उपदेश अवेश कर अनभउ पद पाई॥ (९-५-४)
साध संगत कर साधनाँ इक मन इक धिआई॥ (९-५-५)
वीह इकीह चड़हाउ चड़ह इउ निज घर जाई ॥५॥ (९-५-६)

दरपण वाँग धिआन धर आप आप निहालै॥ (९-६-१)
घट घट पूरण ब्रह्म है चंद जल विच भालै॥ (९-६-२)
गोरस गाईं वेखदा घिउ दुध विचालै॥ (९-६-३)
फुलाँ अंदर वास लै फल साउ सम्हालै॥ (९-६-४)
काशट अगन चलित वेख जल धरति हिआलै॥ (९-६-५)
घट घट पूरण ब्रह्म है गुरमुख वेखालै ॥६॥ (९-६-६)

दिब दिशट गुर धिआन धर सिख विरला कोई॥ (९-७-१)
रतन पारख होइकै रतनाँ अविलोई॥ (९-७-२)
मन माणक निरमोलका सतसंग परोई॥ (९-७-३)
रतन माल गुरसिख जग गुरमति गुण गोई॥ (९-७-४)
जीवंदिआ मर अमर होइ सुख सहिज समोई॥ (९-७-५)
ओत पोत जोति जोत मिल जाणै जाणोई ॥७॥ (९-७-६)

राग नाद विसमाद होइ गुण गहिर गम्भीरा॥ (९-८-१)
शबद सुरत लिवलीण होइ अनहद धुन धीरा॥ (९-८-२)
जंत्री जंत्र वजाइदा मन उन मन चीरा॥ (९-८-३)
वज वजादि समाइ लै गुर सबद वज़ीरा॥ (९-८-४)
अंतरजामी जाणीऐ अंतरि गति पीरा॥ (९-८-५)
गुर चेला चेला गुरू बेध हीरे हीरा ॥८॥ (९-८-६)

पारस होया पारसहुं गुरमुख वडिआई॥ (९-९-१)
हीरे हीरा बेधिआ जोती जोति मिलाई॥ (९-९-२)
शबद सुरत लिवलीण होइ जंत्र जंत्र वजाई॥ (९-९-३)
गुर चेला चेला गुरू परचा परचाई॥ (९-९-४)
पुरखहुं पुरख उपाइआ पुरखोतम हाई॥ (९-९-५)
वीह इकीह उलंघकै होइ सहिज समाई ॥९॥ (९-९-६)

सतगुर दरशन देखदे परमातम देखै॥ (९-१०-१)
शबद सुरत लिवलीण होइ अंतर गत पेखै॥ (९-१०-२)
चरन कवल दी वाशनाँ होइ चंदन भेखै॥ (९-१०-३)

चरणोदक मकरंद रस विसमाद विसेखै॥ (६-१०-४)
गुरमति निहचल चित कर विच रूप न रेखै॥ (६-१०-५)
साध संगति सचखंड जाइ होइ अलख अलेखै ॥१०॥ (६-१०-६)

अखीं अंदर देखदा दरशन विच दिसै॥ (६-११-१)
सबदै विच वखाणीऐ सुरती विच रिसै॥ (६-११-२)
चरण कमल विच वाशना मन भवर सलिसै॥ (६-११-३)
साध संगत संजोग मिल विंजोग न किसै॥ (६-११-४)
गुरमति अंदर चित है चित गुरमति जिसै॥ (६-११-५)
पारब्रह्म पूरन ब्रह्म सतिगुर है तिसै ॥११॥ (६-११-६)

अखीं अंदर दिशट होइ न्क साह संजोई॥ (६-१२-१)
कन्नाँ अंदर सुरति होइ जीभ साद समोई॥ (६-१२-२)
हथीं किरति कमावणी पैर पंथ सबोई॥ (६-१२-३)
गुरसिख सुख फल पाइआ मति शबद विलोई॥ (६-१२-४)
परकिरती हूं बाहरा गुरसिख विरलोई॥ (६-१२-५)
साध संगति चन्नण बिरख मिल चन्नण होई ॥१२॥ (६-१२-६)

अबगत गत अबिगत दी क्यों अलख लखाए॥ (६-१३-१)
अकथ कथा है अकथ दी किउं आख सुणाए॥ (६-१३-२)
अचरज नों अचरज मिलै हैरान कराए॥ (६-१३-३)
विसमादे विसमाद होइ विदमाद समाए॥ (६-१३-४)
वेद न जाणै भेद किहु शेखनाग ना पाए॥ (६-१३-५)
वाहिगुरू सालाहणा गुर शबद अलाए ॥१३॥ (६-१३-६)

लीहाँ अंदर चलीऐ जिउं गाडी राहु॥ (६-१४-१)
हुकमि रजाई चलणा साध संग निबाहु॥ (६-१४-२)
जिउं धन सोघा रखदा घर अंदरि शाहु॥ (६-१४-३)
जिउं मिरयाद न छडई साइर असगाहु॥ (६-१४-४)
लताँ हेठ लताड़ीऐ अजरावर घाहु॥ (६-१४-५)
धरमसाल है मानसर हंस गुरसिख वाहु॥ (६-१४-६)
रतन पदार्थ गुर शबद कर कीर्तन खाहु ॥१४॥ (६-१४-७)

चंदन जिउं बनखंड विच ओह आल लुकाए॥ (६-१५-१)
पारस अंदर परबताँ होइ गुप्त वलाए॥ (६-१५-२)

सत समुंदीं मानसर नहि अलख लखाए॥ (६-१५-३)
जिउं परछिन्ना पारजात नहि परगटी आए॥ (६-१५-४)
जिउं जग अंदर कामधेन नहिं आप जणाए॥ (६-१५-५)
सतिगुर दा उपदेश लै किउं आप गणाए ॥१५॥ (६-१५-६)

दुइ दुइ अखीं आखीअन इक दरसन दिसै॥ (६-१६-१)
दुइ दुइ कन्न वखाणीअन इक सुरत सलिसै॥ (६-१६-२)
दुइ दुइ नदी किनारिआँ पारावार न तिसै॥ (६-१६-३)
इक जोति दुइ मूरतीं इक शबद सरिसै॥ (६-१६-४)
गुर चेला चेला गुरू समझाए किसै ॥१६॥ (६-१६-५)

पहिले गुर उपदेश दे सिख पैरीं पाए॥ (६-१७-१)
साध संगति कर धरमसाल सिख सेवा लाए॥ (६-१७-२)
भाइ भगति भै सेंवदे गुरपुरब कराए॥ (६-१७-३)
शबद सुरति लिव कीर्तन सच मेलि मिलाए॥ (६-१७-४)
गुरमुख मारग सच दा सच पार लंघाए॥ (६-१७-५)
सच मिलै सचिआर नों मिल आप गवाए ॥१७॥ (६-१७-६)

सिर उचा नीवें चरण सिर पैरीन पाँदे॥ (६-१८-१)
मूंह अखीं नक कन्न हथ देह भार उचाँदे॥ (६-१८-२)
सभ चिहन छड पूजीअन कउण कर्म कमाँदे॥ (६-१८-३)
गुरसरणी साधसंगती नित चल चल जाँदे॥ (६-१८-४)
वृतन परउपकार नों कर पार वसाँदे॥ (६-१८-५)
मेरी खलहुं मौजड़े गुरसिख हंढाँदे॥ (६-१८-६)
मसतक लगे साध रेणु वड भाग जिनाँ दे ॥१८॥ (६-१८-७)

जिउं धरती धीरज धर्म मसकीनी मूड़ी॥ (६-१६-१)
सभ दूं नीवीं होइ रही तिस मणी न कूड़ी॥ (६-१६-२)
कोई हरि मंदर करै को करै अरूड़ी॥ (६-१६-३)
जेहा बीजै सो लुणै फल अम्ब लसूड़ी॥ (६-१६-४)
जीवंदिआँ मर जीवणा जुड़ गुरमुख जूड़ी॥ (६-१६-५)
लृताँ हेठ लताड़ीऐ गति साधाँ धूड़ी ॥१६॥ (६-१६-६)

जिउं पाणी निव चलदा नीवाण चलाया॥ (६-२०-१)
सभनाँ रंगाँ विच मिलै रल जाइ रलाया॥ (६-२०-२)

परउपकार कमाँवदा उन आप गवाया॥ (६-२०-३)
काठ न डोबै पालकै संगि लोहि तराया॥ (६-२०-४)
वुठे मींह सुकाल होइ रसकस उपजाया॥ (६-२०-५)
जीवंदिआँ मर साध होइ सुफलिओ जग आया ॥२०॥ (६-२०-६)

सिर तलवाया जौमिआ होइ अचल न चलिआ॥ (६-२१-१)
पाणी पाला धुप सहि ओह तपहुं न टलिआ॥ (६-२१-२)
सफल्यो बिरख सुहावड़ा फल सुफल्यो फलिआ॥ (६-२१-३)
फल देइ वट गवाईऐ कर वत न हलिआ॥ (६-२१-४)
बुरे करन बुरिआईआँ भलिआई भलिआ॥ (६-२१-५)
अवगुण कीते गुण करन जग साध विरलिआ॥ (६-२१-६)
अउसर आप छलाइंदे तिन अउसर छलिआ ॥२१॥ (६-२१-७)

मुदा होइ मुरीद सो गुर गोर समावै॥ (६-२२-१)
शबद सुरति लिवलीण होइ ओह आप गवावै॥ (६-२२-२)
तनु धरती कर धरमसाल मन द्भ विछावै॥ (६-२२-३)
लताँ हेठ लताड़ीऐ गुर शबद कमावै॥ (६-२२-४)
भाइ भगति नीवाण होइ गुरमति ठहिरावै॥ (६-२२-५)
वरसै निझर धार होइ संगति चल आवै ॥२२॥६॥ (६-२२-६)

Vaar 10

ੴ सतिगुरप्रसादि ॥ (१०-१-१)

धू हसदा घर आइआ कर पिआर पिउ कुछड़ लीता॥ (१०-१-२)
बाहों पकड़ उठालिआ मन विच रोस मत्रेई कीता॥ (१०-१-३)
डुडहुलिका माँ पुछे तूं सावाणी है कि सरीता॥ (१०-१-४)
सावाणी हाँ जनम दी नाम न भगती कर्म दृड़ीता॥ (१०-१-५)
किस उद्म ते राज मिलै सत्र ू ते सभ होवन मीता॥ (१०-१-६)
परमेशर आराधीऐ जिंदू होईऐ पतित पुनीता॥ (१०-१-७)
बाहर चलिआ करन तप मन बैरागी होइ अतीता॥ (१०-१-८)
नारदमुनि उपदेशिआ नाम निधान अमिउरस पीता॥ (१०-१-९)
पिछहु राजे सदिआ अबचल राज करहु नित नीता॥ (१०-१-१०)
हार चले गुरमुख जग जीता ॥१॥ (१०-१-११)

घर हरनाखस दैंत दे क्लर कवल भगत प्रहिलाद॥ (१०-२-१)
पड़हन पठाया चाटसाल पाँधे चित होआ अहिलाद॥ (१०-२-२)
सिमरै मन विच राम नाम गावै शबद अनाहद नाद॥ (१०-२-३)
भगति करन सभ चाटड़े पाँधे होइ रहे विसमाद॥ (१०-२-४)
राजे पास रूआइआ दोखी दैंत वधाइआँ वाद॥ (१०-२-५)
जल अगनी विच घतिआ जलै न डुबै गुर परसाद॥ (१०-२-६)
कढ खड़ग सद पुछिआ कउण सु तेरा है उसताद॥ (१०-२-७)
थम्म पाड़ परगटिआ नर सिंघ रूप अनूप अनाद॥ (१०-२-८)
बेमुख पकड़ पछाड़िअन संत सहाई आदि जुगाद॥ (१०-२-९)
जै जै कार करन ब्रहमाद ॥२॥ (१०-२-१०)

बलि राजा घरि आपणै अंदर बैठा जग करावै॥ (१०-३-१)
बावण रूपी आइआ चार बेद मुख पाठ सुणावै॥ (१०-३-२)
राजे अंदर सदिआ मंग सुआमी जो तुध भावै॥ (१०-३-३)
अछल छलण तुधु आइआ शुक्र परोहत कहि समझावै॥ (१०-३-४)
करौ अढाई धरति मंग पिछहुं दे तृहु लोअ न मावै॥ (१०-३-५)
दुइ करवा कर तिन्न लोअ बलिराजा लै मगरु मिणावै॥ (१०-३-६)
बल छल आप छलाइअन होइ दयाल मिलै गल लावै॥ (१०-३-७)
दिता राज पताल दा होइ अधीन भगत जस गावै॥ (१०-३-८)
होइ दरवान महाँ सुखु पावै ॥३॥ (१०-३-९)

अम्बरीक मुहि वरत है रात पई दुरबाशा आया॥ (१०-४-१)
भीड़ा ओस उपारणा उह उठ नश्रावण नदी सिधाया॥ (१०-४-२)
चरणोदक लै पोखिआ ओह सराप देण नों धाया॥ (१०-४-३)
चक्र सुदरशन काल रूप होइ भीहावल गरब गवाया॥ (१०-४-४)
ब्राहमण भन्ना जीउ लै रख न हंघन देव सबाया॥ (१०-४-५)
इंद्रलोक शिवलोक तज ब्रह्म लोक बैकुंठ तजाया॥ (१०-४-६)
देवतिआँ भगवान सण सिख देइ सभनाँ समझाया॥ (१०-४-७)
आइ पइआ सरनागती मारीदा अम्बरीक छडाया॥ (१०-४-८)
भगत वछल जग बिरद सदाया ॥४॥ (१०-४-९)

भगत वडा राजा जनक है गुरमुख माया विच उदासी॥ (१०-५-१)
देव लोक नों चलिआ गण गंधरब सभा सुखवासी॥ (१०-५-२)
जमपुर गइआ पुकार सुण विललावन जी नरक निवासी॥ (१०-५-३)
धरमराइ नो आखिओनु सभना दी कर बंद खलासी॥ (१०-५-४)
करे बेनती धरमराइ हउ सेवक ठाकुर अबिनासी॥ (१०-५-५)
गहिणे धरिअनु इक नाउं पापाँ नाल करै निरजासी॥ (१०-५-६)
पासंग पाप न पुजनी गुरमुख नाउं अतुल न तुलासी॥ (१०-५-७)
नरकहुं छुटे जीआ जंत कटी गलहु सिलक जमफासी॥ (१०-५-८)
मुकति जुगति नावैं की दासी ॥५॥ (१०-५-९)

सुख राजे हरीचंद घर नार सु तारा लोचन राणी॥ (१०-६-१)
साध संगति मिल गाँवसे रातीं जाइ सुणै गुरबाणी॥ (१०-६-२)
पिछों राजा जागिआ अ्धी रात निखंड विहाणी॥ (१०-६-३)
राणी दिस न आवई मन विच वरत गई हैराणी॥ (१०-६-४)
होरतु रातीं उळठकै चलिआ पिछै तरल जुआणी॥ (१०-६-५)
राणी पहुती संगतीं राजे खड़ी खड़ाँउ नीसाणी॥ (१०-६-६)
साध संगति आराधिआ जोड़ी जुड़ी खड़ाउं पुराणी॥ (१०-६-७)
राजे डिठा चलित इह खड़ाँव है चोज विडाणी॥ (१०-६-८)
साध संगत विटहु कुरबाणी ॥६॥ (१०-६-९)

आइआ सुणिआ बिदर दे बोले दुरजोधन होइ रुखा॥ (१०-७-१)
घर असाडे छ्डके गोले दे घर जाहि कि सुखा॥ (१०-७-२)
भीखम द्रोणा करन तज सभा सींगार वडे मानुखा॥ (१०-७-३)
जुगी जाइ वलाओन सबनाँ दे जीअ अंदर धुखा॥ (१०-७-४)

हस बोले भगवान जी सुणहो राजा होइ सनमुखा॥ (१०-७-५)
तेरे भाउ न दिसई मेरे नाहीं अपदा दुखा॥ (१०-७-६)
भाउ जिवेहा बिदर दे होरी दे चित चाउ न चुखा॥ (१०-७-७)
गोविंद भाउ भगत दा भुखा ॥७॥ (१०-७-८)

अंदर सभा दुसासनै मथै वाल द्रोपती आँदी॥ (१०-८-१)
दूताँ नो फुरमाइआ नंगी करहु पंचाली बाँदी॥ (१०-८-२)
पंजे पाँडो वेखदे अउघट रुधी नारि जिनाँ दी॥ (१०-८-३)
अखीं मीट धिआन धर हाहा कृशन करे विललाँदी॥ (१०-८-४)
कपड़ कोट उसारिओन थके दूत न पार वसाँदी॥ (१०-८-५)
हथ मरोड़न सिर धुणनि पछोतान करन जाह जाँदी॥ (१०-८-६)
घर आई ठाकुर मिले पैज रही बोले शरमाँदी॥ (१०-८-७)
नाथ अनाथाँ बाण धुराँदी ॥८॥ (१०-८-८)

बिप सुदामा दालदी बाल सखाई मित्र सदाए॥ (१०-९-१)
लागू होई बाम्हणी मिल जगदीस दलिद्र गवाए॥ (१०-९-२)
चलिआ गिणदा गटीआँ क्योंं कर जाईए कौण मिलाए॥ (१०-९-३)
पहुता नगर दुआरका सिंघ दुआर खलोता जाए॥ (१०-९-४)
दूरहुं देख डंडउत कर छ्ड सिंघासण हरि जी आए॥ (१०-९-५)
पहिले दे परदखणा पैरीं पै के लै गल लाए॥ (१०-९-६)
चरणोदक लै पैर धोइ शिंघासण उपर बैठाए॥ (१०-९-७)
पुछे कुसल पिआर कर गुर सेवा दी कथा सुणाए॥ (१०-९-८)
लैके तंदल चबिओन विदा करे अगे पहुचाए॥ (१०-९-९)
चार पदार्थ सकुच पठाए ॥९॥ (१०-९-१०)

प्रेम भगति जैदेउ कर गीत गोबिंद सहज धुनि गावै॥ (१०-१०-१)
लील्हा चलित वखाणदा अंतर जामी ठाकुर भावै॥ (१०-१०-२)
अ्खर इक न आवड़ै पुसतक बन्न संधिआ कर आवै॥ (१०-१०-३)
गुण निधान घर आइकै भगत रूप लिख लेख बनावै॥ (१०-१०-४)
अखर पड़ह परतीत कर हुइ विसमाद न अंग समावै॥ (१०-१०-५)
वेखे जाइ उजाड़ विच बिरख इक आचरज सुहावै॥ (१०-१०-६)
गीत गोबिंद सपूरणो पत पतु लिखिआ अमतु न पावै॥ (१०-१०-७)
भगत हेतु परगास कर होइ दइआल मिलै गल लावै॥ (१०-१०-८)
संत अनंत न भेद गणावै ॥१०॥ (१०-१०-९)

कौम किते पिउ चलिआ नामदेव नों आख सिधाया॥ (१०-११-१)
ठाकुर दी सेवा करीं दुध पीआवण कहि समझाया॥ (१०-११-२)
नामदेउ इशनान कर कपल गाइ दुहिकै लै आया॥ (१०-११-३)
ठाकुर नों नश्रावालकै चरणोदक लै तिलक चड़हाया॥ (१०-११-४)
हथ जोड़ बिनती करे दुध पीअहु जी गोबिंद राया॥ (१०-११-५)
निहचउ कर आराधिआ होइ दयाल दरस दिखलाया॥ (१०-११-६)
भरी कटोरी नामदेव लै ठाकुर नों दुध पीआया॥ (१०-११-७)
गाइ मुई जीवालीओन नामदेउ दा छपर छाया॥ (१०-११-८)
फेर देहुरा र्खिओन चार वरन लै पैरीं पाया॥ (१०-११-९)
भगत जनाँ दा करै कराया ॥११॥ (१०-११-१०)

दरशण वेखण नामदेव भलके उळठ तृलोचन आवै॥ (१०-१२-१)
भगति करन मिल दुइ जणे नामदेउ हरि चलत सुणावै॥ (१०-१२-२)
मेरी भी कर बेनती दरशन देखाँ जे तिस भावै॥ (१०-१२-३)
ठाकुर जी नों पुछिओस दरशन किवैं तृलोचन पावै॥ (१०-१२-४)
हसकै ठाकुर बोलिआ नामदेउ नों कहि समझावै॥ (१०-१२-५)
हथ न आवै भेट सो तुस तृलोचन मैं मुहि लावै॥ (१०-१२-६)
हउं अधीन हाँ भगत दे पहुंच न हंघाँ भगती दावै॥ (१०-१२-७)
होइ विचोला आण मिलावै ॥१२॥ (१०-१२-८)

बाम्हण पूजै देवते धन्ना गऊ चरावण आवै॥ (१०-१३-१)
धन्नै डिठा चलित एह पुछै बाम्हण आख सुणावै॥ (१०-१३-२)
ठाकुर दी सेवा करे जो इछे सोई फल पावै॥ (१०-१३-३)
धन्ना करदा जोदड़ी मैं भि देह इक जो तुध भावै॥ (१०-१३-४)
प्थर इक लपेट कर दे धन्ने नों गैल छुडावै॥ (१०-१३-५)
ठाकुर नों नश्रावालके छाहि रोटी लै भोग चड़हावै॥ (१०-१३-६)
हथ जोड़ मिन्नत करे पैरीं पै पै बहुत मनावै॥ (१०-१३-७)
हउं बी मूंह न जुठालसाँ तूं रुठा मैं किहु न सुखावै॥ (१०-१३-८)
गोसईं परत्ख होइ रोटी खाइ छाहि मुहि लावै॥ (१०-१३-९)
भोला भाउ गोविंद मिलावै ॥१३॥ (१०-१३-१०)

गुरमुखे णी भगति कर जाइ इकाँत बहै लिव लावै॥ (१०-१४-१)
कर्म करै अधिआतमी होरसु किसै न अजर लखावै॥ (१०-१४-२)
घर आया जाँ पुछीऐ राज दुआर गइआ आलावै॥ (१०-१४-३)
घर सभ वथूं मंगीअन वल छल करकै झत लंघावै॥ (१०-१४-४)

वडा साँग वरतदा ओह इक मन परमेशर ध्यावै॥ (१०-१४-५)
पैज सवारै भगत दी राजा होइकै घर चल आवै॥ (१०-१४-६)
देइ दिलासा तुसकै अनगणती खरची पहुचावै॥ (१०-१४-७)
ओथहुं आया भगत पास होइ दिआल हेत उपजावै॥ (१०-१४-८)
भगत जना जैकार करावै ॥१४॥ (१०-१४-९)

होइ बिरकत बनारसी रहिंदा रामानंद गुसाई॥ (१०-१५-१)
अमृत वेले उठके जाँदा गंगा नश्रावण ताई॥ (१०-१५-२)
अगों ही दे जाइके लम्मा पिआ कबीर तिथाई॥ (१०-१५-३)
पैरीं टुम्ब उठालिआ बोलहु राम सिख समझाई॥ (१०-१५-४)
जिउं लोहा पारस छुहे चंदन वास निम्म महिकाई॥ (१०-१५-५)
पसू परेतहुं देव कर पूरे सतिगुर दी वडिआई॥ (१०-१५-६)
अचरज नो अचरज मिलै विसमादे विसमाद मिलाई॥ (१०-१५-७)
झरणा झरदा निझरहुं गुरमुख बाणी अघड़ घड़ाई॥ (१०-१५-८)
राम कबीरै भेद न भाई ॥१५॥ (१०-१५-९)

सुण परताप कबीर दा दूजा सिख होआ सैण नाई॥ (१०-१६-१)
प्रेम भगति रातीं करै भलके राज दुआरै जाई॥ (१०-१६-२)
आए संत पराहुणे कीर्तन होआ रैण सबाई॥ (१०-१६-३)
छड न सकै संत जन राज दुआर न सेव कमाई॥ (१०-१६-४)
सैण रूप हरि होइकै आइआ राणे नों रीझाई॥ (१०-१६-५)
साध जनाँ नों विदा कर राजदुआर गइआ शरमाई॥ (१०-१६-६)
राणे दूरहुं सदकै गलहुं कवाइ खोल्ह पैनश्राई॥ (१०-१६-७)
वस कीता हउं तुध अज बोलै राजा सुणै लुकाई॥ (१०-१६-८)
परगट करै भगत वडिआई ॥१६॥ (१०-१६-९)

भगत भगत जग वजिआ चहुं चकाँ दे विच चमरेटा॥ (१०-१७-१)
पाणा गंढे राह विच कुला धर्म ढोइ ढोर समेटा॥ (१०-१७-२)
जिउं कर मैले चीथड़े हीरा लाल अमोल पलेटा॥ (१०-१७-३)
चहुं वरनाँ उपदेश दा ज्ञान ध्यान कर भगत सहेटा॥ (१०-१७-४)
नश्रावण आया संग मिल बानारस कर गंगा थेटा॥ (१०-१७-५)
कढ कसीरा सउंपिआ रविदासै गंगा दी भेटा॥ (१०-१७-६)
लगा पुरब अभीच दा डिठा चलित अचरज आमेटा॥ (१०-१७-७)
लइआ कसीरा हथ कढ सूत इक जिउं ताणा पेटा॥ (१०-१७-८)
भगत जनाँ हरि माँ पिउ बेटा ॥१७॥ (१०-१७-९)

गोतम नार अहिलिआ तिसनों देख इंद्र लोभाणा॥ (१०-१८-१)
पर गर जाइ सराप लै होइ सहस भग पछोताणा॥ (१०-१८-२)
सुंञा होआ इंद्रलोक लुकिआ सरवर मन शरमाणा॥ (१०-१८-३)
सहस भगहु लोइण सहस लैंदोई इंद्रपुरी सिधाणा॥ (१०-१८-४)
सती सतहुं टल सिला होइ नदी किनारे बाझ पराणा॥ (१०-१८-५)
रघुपति चरण छुहंदिआ चली सुरगपुर बणे बिबाणा॥ (१०-१८-६)
भगत वछल भल्याईअहुं पतित उधारण पाप कमाणा॥ (१०-१८-७)
गुणनों गुण सभको करै अउगण कीते गुण तिस जाणा॥ (१०-१८-८)
अविगत गति किआ आख वखाणा ॥१८॥ (१०-१८-९)

वाटे माणस मारदा बैठा बालमीक बटवाड़ा॥ (१०-१९-१)
पूरा सतिगुर सेविआ मन विच होआ खिंजोताड़ा॥ (१०-१९-२)
मारण नों लोचै घणा कढ न हंघै हथ उघाड़ा॥ (१०-१९-३)
सतिगुर मनूआ रखिआ होइ न आवै उछोहाड़ा॥ (१०-१९-४)
अउगण सभ परगासिअनु रोज़गारु है इह असाड़ा॥ (१०-१९-५)
घर विच पुछण घलिआ अंतकाल है कोइ असाड़ा॥ (१०-१९-६)
कोड़मड़ा चउखन्नीऐ कोइ न बेली करदे झाड़ा॥ (१०-१९-७)
सच दृड़ाइ उधारिअनु टप निकथा उपर वाड़ा॥ (१०-१९-८)
गुरमुख लंघे पाप पहाड़ा ॥१९॥ (१०-१९-९)

पति अजामल पाप कर जाइ कलावतणी दे रहिआ॥ (१०-२०-१)
गुर ते बेमुख होइकै पाप कमावे दुरमति दहिआ॥ (१०-२०-२)
बृथा जनम गवाइअनु भवजल अंदर फिरदा वहिआ॥ (१०-२०-३)
छिअ पुत जाए वेसवा पापाँ दे फल इछे लहिआ॥ (१०-२०-४)
पुत्र उपन्ना सतवाँ नाउं धरण नों चित उमहिआ॥ (१०-२०-५)
गुरू दुआरै जाइकै गुरमुख नाउं नराइण कहिआ॥ (१०-२०-६)
अंतकाल जमदूत वेख पुत नराइण बोलै छहिआ॥ (१०-२०-७)
जमगण मारे हरिजनाँ गइआ सुरग जम डंड न सहिआ॥ (१०-२०-८)
नाइ लए दुख डेरा ढहिआ ॥२०॥ (१०-२०-९)

गनका पापन होइकै पापाँ दा गल हार परोता॥ (१०-२१-१)
महाँ पुरख अचाणचक गणका वाड़े आइ खलोता॥ (१०-२१-२)
दुरमति देख दइआल होइ हथहुं उसनों दितोसु तोता॥ (१०-२१-३)
राम नाम उपदेस कर खेल गिआ दे वणज सउता॥ (१०-२१-४)

लिव लागी तिस तोतिअहुं नित पड़हाए करै असोता॥ (१०-२१-५)
पतित उधारण राम नाम दुरमति पाप कलेवर धोता॥ (१०-२१-६)
अंतकाल जम जाल तोड़ नरकै विच न खाधुस गोता॥ (१०-२१-७)
गई बैकुंठ बिबाण चड़ह नाउ नाराइण छोत अछोता॥ (१०-२१-८)
थाउं निथावें माण मणोता ॥२१॥ (१०-२१-९)

आई पापणि पूतनाँ दुहीं थणीं विहु लाइ वहेली॥ (१०-२२-१)
आइ बैठी परवार विच नेहुं लाइ नवहाणि नवेली॥ (१०-२२-२)
कुछड़ लए गोबिंद राइ करि चेटक चतुरंग महेली॥ (१०-२२-३)
मोहण मौमे पाइओन बाहर आई गरब गहेली॥ (१०-२२-४)
देह वधाइ उचाइनु तिह चरिआर नार अठखेली॥ (१०-२२-५)
तिह लोआँ दा भार दे चम्मड़िआ गल होइ दुहेली॥ (१०-२२-६)
खाइ पछाड़ पहाड़ वाँग जाइ पई ओजाड़ धकेली॥ (१०-२२-७)
कीती माऊ तुल सहेली ॥२२॥ (१०-२२-८)

जाइ सुता परभास विच गोडे उते पैर पसारे॥ (१०-२३-१)
चरण कमल विच पदम है झिलमिल झलकै वाँगी तारे॥ (१०-२३-२)
ब्धक आया भालदा मिरगै जाण बाण लै मारे॥ (१०-२३-३)
दरशन डिठोसु जाइकै करन पलाव करै पूकारे॥ (१०-२३-४)
गल विच लीता कृशन जी अवगुण कीते हर न चितारे॥ (१०-२३-५)
कर किरपा संतोखिआ पतित उधारण बिरध बीचारे॥ (१०-२३-६)
भले भले कर मन्नीअनि बुरिआँ दे हरि काज सवारे॥ (१०-२३-७)
पाप करंदे पतित उधारे ॥२३॥१०॥ (१०-२३-८)

Vaar 11

ੴ सतिगुरप्रसादि ॥ (११-१-१)

सतिगुर सचा पातिशाह पातिशाहाँ पातिशाह जुहारी॥ (११-१-२)
साध संगति सच खंड है आइ झरोखै खोलै बारी॥ (११-१-३)
अमिउकिरन निझर झरै अनहदनाद वाइन दरबारी॥ (११-१-४)
पातिशाहाँ दी मजलसै पिर्म पिआला पीवण भारी॥ (११-१-५)
साकी होइ पीआवणा उलश पिआलै खरी खुमारी॥ (११-१-६)
भाइ भगत भै चलणा मसत अलमसत सदा हुशिआरी॥ (११-१-७)
भगत वछल होइ भगत भंडारी ॥१॥ (११-१-८)

इकत नुकतै होइ जाइ मुजरम खैर खुआरी॥ (११-२-१)
मसतानी विच मजलसी गैर महल जाणा मन मारी॥ (११-२-२)
गल न बाहिर निकलै हुकमी बंदे कार करारी॥ (११-२-३)
गुरमुख सुख फल पिर्म रस देह बिदेह वडे वीचारी॥ (११-२-४)
गुर मूरत गुर शबद सुण साध संगत आसन निरंकारी॥ (११-२-५)
आदि पुरख आदेस कर अमृत वेला सबद अहारी॥ (११-२-६)
अवगति गति अगाधबोध अकथ कथा असगाह अपारी॥ (११-२-७)
सहिण अवटण पर उपकारी ॥२॥ (११-२-८)

गुरमुख जनम सकारथा गुरसिख मिल सरनी आया॥ (११-३-१)
आदि पुरख आदेस कर सफल मूरत गुर दरसन पाया॥ (११-३-२)
परदखना डंडउत कर मसतक चरण कमल गुर लाया॥ (११-३-३)
सतिगुर पुरख दइआल होइ वाहिगुरू सचु मंत्र सुणाया॥ (११-३-४)
सच रास रहिरास दे पैरीं पै जग पैरीं पाया॥ (११-३-५)
काम करोध विरोध हर लोभ मोह अहंकार तजाया॥ (११-३-६)
सत संतोख दइआ धर्म दान नाम इशनान दृड़ाया॥ (११-३-७)
गुर सिख लै गुर सिख सदाया ॥३॥ (११-३-८)

शबद सुरत लिवलीण हो साध संगत सच मेल मिलाया॥ (११-४-१)
हुकम रजाई चलणा आप गवाइ न आप जणाया॥ (११-४-२)
गुर उपदेश अवेस कर परउपकार अचार लुभाया॥ (११-४-३)
पिर्म पिआला अपिउपी सहज समाई अजरु जराया॥ (११-४-४)
मिठा बोलण निव चलण हबहुं देकै भला मनाया॥ (११-४-५)

इक मन इक अराधणा दुबिधा दूजा भाउ मिटाया॥ (११-४-६)
गुरमुख सुख फल निज पद पाया ॥४॥ (११-४-७)

गुर सिखी बारीक है खंडे धार गली अति भीड़ी॥ (११-५-१)
ओथै टिकै न भुलहणा चूल न सकै उपर कीड़ी॥ (११-५-२)
वालहुं निकी आखीऐ तेल तिलहुं लै कोल्ह पीड़ी॥ (११-५-३)
गुरमुख वंसी पर्म हंस खीर नीर निरनउ जु निवीड़ी॥ (११-५-४)
सिल आलूणी चटणी माणक मोती चोग निवीड़ी॥ (११-५-५)
गुरमुख मारग चलणा आस निरासी झीड़ उझीड़ी॥ (११-५-६)
सहज सरोवर सच खंड साध संगति सच तखत हरीड़ी॥ (११-५-७)
चड़ह इकीह पउड़ीआँ निरंकार गुर शबद सहीड़ी॥ (११-५-८)
गुंगे दी मठिआईऐ अकथ कथा विसमाद बचीड़ी॥ (११-५-६)
गुरमुख सुख फल सहज अलीड़ी ॥५॥ (११-५-१०)

गुरमुख सुखफल प्रेम रस चरणोदक गुर चरण पखाले॥ (११-६-१)
सुख सम्पट विच रख के चरण कवल मकरंद पिआले॥ (११-६-२)
कउलाली सूरजमुखी लूख कवल खिड़दे रलीअले॥ (११-६-३)
चंद्र मुखी होइ कुमदनी चरण कवल सीतल अमीआले॥ (११-६-४)
चरण कवल दी वाशनाँ लख सूरज होवन अलिकाले॥ (११-६-५)
लख तारे सूरज चड़हे जिउं छप जान न आप सम्हाले॥ (११-६-६)
चरण कमल दल जोत विच लख सूरज लुक जान रवाले॥ (११-६-७)
गुर सिख लै गुर सिख सुखाले ॥६॥ (११-६-८)

चार वरन इकवरन कर वरन अवरन तमोल गुलाले॥ (११-७-१)
अश धात इक धात कर वेद कतेब न भेद विचाले॥ (११-७-२)
चंदण वास वणासपति अफल सफल विच वास बहाले॥ (११-७-३)
लोहा सुइना होइकै सुइना होइ सुगंध विखाले॥ (११-७-४)
सुइने अंदरि रंग रस चरणामृत अमृत मतवाले॥ (११-७-५)
माणक मोती सुइनिअहुं जगमग जोति हीरे परवाले॥ (११-७-६)
दिब देह दिबदृश होइ शबद सुरति दिब जोति उजाले॥ (११-७-७)
गुरमुख सुखफल रसक रसाले ॥७॥ (११-७-८)

प्रेम पिआला साधसंग सबद सुरत अनहद लिवलाई॥ (११-८-१)
धिआन चंद चकोर गति अमृत दृसट सृशट वरसाई॥ (११-८-२)
घनहर चात्रक मोर ज्यों अनहद धुन सुन पाइल पाई॥ (११-८-३)

चरण कवल मकरंद रस सुख सम्पट हुइ भवर समाई॥ (११-८-४)
सुखसागर विच मीन होइ गुरमुख चाल न खोज खोजाई॥ (११-८-५)
अपिउ पीअण निझर झरण अजर जरण अलख लखाई॥ (११-८-६)
वीह इकीह उलंघ कै गुर सिखी गुरमुख फल खाई॥ (११-८-७)
वाहिगुरू वडी वडिआई ॥८॥ (११-८-८)

कळछू अंडा धिआन धर कर परपक नदी विच आणै॥ (११-९-१)
कूंज रिदे सिमरण करै लै बचा उडदी असमाणै॥ (११-९-२)
बळतक बळचा तुर तुरा जल थल वरतै सहिज विडाणै॥ (११-९-३)
कोइल पालै काँवणी मिलदा जाइ कुटम्ब सिञाणै॥ (११-९-४)
हंस वंस वस मानसर माणक मोती चोग चुगाणै॥ (११-९-५)
ज्ञान ध्यान सिमरन सदा सतिगुर सिख रखे निरबाणै॥ (११-९-६)
भूत भविखहुं वरतमान तृभवण सोझी माण निमाणै॥ (११-९-७)
जातीं सुंदर लोक न जाणै ॥९॥ (११-९-८)

चंदन वास वणासपति बावण चंदन चंदन होई॥ (११-१०-१)
फल विण चंदन बावना आदि अनादि बिअंत सदोई॥ (११-१०-२)
चंदन बावन चंदनहु चंदन वास न चंदन कोई॥ (११-१०-३)
अशट धात इक धात होइ पारस परसे कंचन जोई॥ (११-१०-४)
कंचन होइ न कंचनहु वरतमान वरतै सभ लोई॥ (११-१०-५)
नदीआँ नाले गंग संग सागर संजम खारा सोई॥ (११-१०-६)
बगला हंस न होवई मान सरोवर जाइ खलोई॥ (११-१०-७)
वीहाँ दै वरतारै ओही ॥१०॥ (११-१०-८)

गुरमुख इकी पौड़ीआँ गुरमुख सुखफल निज घर भोई॥ (११-११-१)
साध संगत है सहज घर सिमरन दरस परस गुन गोई॥ (११-११-२)
लोहा सुइना होइकै सुइनिअहुं सुइना ज्यों अविलोई॥ (११-११-३)
चंदन होवै निम्म वण निम्महुं चंदन बिरख पलोई॥ (११-११-४)
गंगोदक चरणोदकहुं गंदोदक मिल गंगा होई॥ (११-११-५)
कागहुं हंस सुवंस होइ हंसहु म्परम हंस विरलोई॥ (११-११-६)
गुरमुख वंसी पर्म हंस स्च कूड़ नीर खीर विलोई॥ (११-११-७)
गुर चेला चेला गुर होई ॥११॥ (११-११-८)

क्छू बचा नदी विच गुरसिख लहर न भवजल विआपै॥ (११-१२-१)
कूंज बचे लैइ उळडरे सुन्न समाधि अगाधि न जापै॥ (११-१२-२)

हंस वंस है मानसर सहज सरोवर वड परतापै॥ (११-१२-३)
बृतक बचा कोइलै नंद नंदन वसुदेव मिलापै॥ (११-१२-४)
रवससि चकवी ते चकोर सिव सकती लंघ वरै सरापै॥ (११-१२-५)
अनल पंखि बचा मिलै निराधार होइ समझै आपै॥ (११-१२-६)
गुरसिख संध मिलावणी शबद सुरति परचाइ प्रचापै॥ (११-१२-७)
गुरमुख सुख फल थापि उथापै ॥१२॥ (११-१२-८)

तारू पोपट तारिआ गुरमुख बाल सुभाइ उदासी॥ (११-१३-१)
मूलाकीड़ वखाणीऐ चलित अचरज लुभत गुरदासी॥ (११-१३-२)
पिरथा खंडा सोइरी चरण सरण सुख सहजि निवासी॥ (११-१३-३)
भला रबाब वजाइंदा मजलस मरदाना मीरासी॥ (११-१३-४)
पिरथी मल सहगल भला रामाडिड भगत अभ्यासी॥ (११-१३-५)
दउलतखाँ लोदी भला होआ जिंद पीर अबिनासी॥ (११-१३-६)
माला माँगा सिख दुइ गरबाणी रस रसिक बिलासी॥ (११-१३-७)
सनमुख कालू आस धार गुरबाणी दरगह शाबासी॥ (११-१३-८)
गुरमति भाउ भगति परगासी ॥१३॥ (११-१३-९)

भगत जो भगता ओहरी जापू वंसी सेव कमावै॥ (११-१४-१)
शीहाँ उळपल जाणीऐ गजन उपल सतिगुर भावै॥ (११-१४-२)
मैलसीआँ विच आखीऐ भागीरथ काली गुण गावै॥ (११-१४-३)
जिता रंधावा भला बूड़ा बुढा इक मन धिआवै॥ (११-१४-४)
फिरणा खहरा जोध सिख जीवाई गुरु सेव कमावै॥ (११-१४-५)
गुजर जात लुहार है गुर सिखी गुर सिख सुनावै॥ (११-१४-६)
नाई धिंङ वखाणीऐ सतिगुर सेव कुटम्ब तरावै॥ (११-१४-७)
गुरमुख सुख फल अलख लखावै ॥१४॥ (११-१४-८)

पारो जुलका परमहंस पूरे सतिगुर किरपा धारी॥ (११-१५-१)
मलूशाही सूरमा वडा भगत भाई केदारी॥ (११-१५-२)
दीपा देउ नरैण दास बुले दे जाईए बलिहारी॥ (११-१५-३)
लाल सुलालू बुदवार दुरगा जीवण परउपकारी॥ (११-१५-४)
जगा बाणीआ जाणीऐ संसारू नालै निरंकारी॥ (११-१५-५)
खानू माईआँ पुत पिउ गुण गाहक गोबिंद भंडारी॥ (११-१५-६)
जोध रसोईआ देवता गुर सेवा कर दुतर तारी॥ (११-१५-७)
पूरे सतिगुर पैज सवारी ॥१५॥ (११-१५-८)

पृथीमल तुलसा भला मलण गुर सेवा हितकारी॥ (११-१६-१)
रामू दीपा उग्रसैण नागउरी गुर शबद वीचारी॥ (११-१६-२)
मोहण रूप महितीआ अमरू गोपी हउमैं मारी॥ (११-१६-३)
सहारू गंगू भले भागू भगति भगति है पिआरी॥ (११-१६-४)
खानू छुरा तारू तरे तेगा पासी करणी सारी॥ (११-१६-५)
उगरू नंदू सूदना पूरो झटा पार उतारी॥ (११-१६-६)
मलीआँ सहारू भले छींबे गुर दरगह दरबारी॥ (११-१६-७)
पाँधा बूला जाणीऐ गुर बाणी गाइण लेखारी॥ (११-१६-८)
डले वासी संगति भारी ॥१६॥ (११-१६-९)

सनमुख भाई तीरथा सब्रवाल सभे सिरदारा॥ (११-१७-१)
पूरो मानक चंद है बिशन दास परवार सधारा॥ (११-१७-२)
पुरक पदार्थ जाणीऐ तारू भारू दास दुआरा॥ (११-१७-३)
महाँ पुरख है महाँ नंद बिधी चंद बुध बिमल वीचारा॥ (११-१७-४)
बरम दास है खोटड़ा डूंगर दास भले तकिआरा॥ (११-१७-५)
दीपा जेठा तीरथा सैंसारू बूला सचिआरा॥ (११-१७-६)
माईआ जापा जाणीअन नईआ खुलर गुरू पिआरा॥ (११-१७-७)
तुलसा वहुरा जाणीऐ गुर उपदेश अवेश अचारा॥ (११-१७-८)
सतिगुर सच सवारन हारा ॥१७॥ (११-१७-९)

पुरीआ चूहड़ चउधरी पैड़ा दरगह दाता भारा॥ (११-१८-१)
बाला किशना झिंगरणि पंडतराइ सभा सींगारा॥ (११-१८-२)
सुहड़ तिलोका सूरमा सिख समुदा सनमुखा सारा॥ (११-१८-३)
कुला भुला झंडीआ भागीरथ सुइनी सचिआरा॥ (११-१८-४)
लालू बालू विज हन हरखवंत हरदास पिआरा॥ (११-१८-५)
धीरू निहालू तुलसीआ बूला चंडीआ बहु गुणिआरा॥ (११-१८-६)
गोखू टोडा महितिआ गोता मदू शबद वीचारा॥ (११-१८-७)
झाँझू अते मुकंद है कीर्तन करे हज़ूर किदारा॥ (११-१८-८)
साध संगति परगट पाहारा ॥१८॥ (११-१८-९)

गंगू नाऊ सरगला रामा धरमा ऊदा भाई॥ (११-१९-१)
जटू,त्टू वंतिआ फिरना सूद वडा सत भाई॥ (११-१९-२)
भोलू भटू जाणीअनि सनमुख तेवाड़ी सुखदाई॥ (११-१९-३)
डला भागी भगति है जापुन वेला गुर सरणाई॥ (११-१९-४)
मूला सूजा धावणे चंदू चउझड़ सेव कमाई॥ (११-१९-५)

रामदास भंडारीआ बाला सांई दास धिआई॥ (११-१६-६)
गुरमुख बिशनू बीबड़ा माछी सुंदर गुरमति पाई॥ (११-१६-७)
साध संगति वडी वडिआई ॥१६॥ (११-१६-८)

जटू भानू तीरथा चाई चलीए चढे चारे॥ (११-२०-१)
सणे निहाले जाणीअनि सनमुख सेवक गुरू पिआरे॥ (११-२०-२)
सेखड़ साध वखाणीअहि नाऊ भुलू सिख सुचारे॥ (११-२०-३)
जटू जीवा जाणीअनि महाँ पुरख मूला परवारे॥ (११-२०-४)
चतुरदास मूला कपूर हाड़ू गाड़ू विज विचारे॥ (११-२०-५)
फिरना बहिल वखाणीअहि जेठा चंगा कुल निसतारे॥ (११-२०-६)
विसा गोपी तुलसीआ भारदुआजी सनमुख सारे॥ (११-२०-७)
वडा भगत है भाईअड़ा गोबिंद घेई गुरू दुआरे॥ (११-२०-८)
सतिगुरु पूरे पार उतारे २०॥ (११-२०-६)

कालू चउहड़ बम्मीआ मूले नों गुर शबद पिआरा॥ (११-२१-१)
होमाँ विच कमाहीआँ गोइंद घेई गुरु निसतारा॥ (११-२१-२)
भिखा टोडा भट दुइ धारो सूद महल तिस भारा॥ (११-२१-३)
गुरमुख रामू कोहली नाल निहालू सेवक सारा॥ (११-२१-४)
छजू भला जाणीऐ माई दिता साध विचारा॥ (११-२१-५)
तुलसा बहुरा भगत है दामोदर दो कुल बलिहारा॥ (११-२१-६)
भाना आवल विग मल बुधू छींबा गुर दरबारा॥ (११-२१-७)
सुलतान पुर भगत भंडारा ॥२१॥ (११-२१-८)

दीपकु दीपा कासरा गुरू दुआरे हुकमी बंदा॥ (११-२२-१)
पटी अंदर चउधरी ढिलों लाल लंगाह सुहंदा॥ (११-२२-२)
अजब अजाइब संङिआ उमर शाह गुर सेव करंदा॥ (११-२२-३)
पैड़ा छजल जाणीऐ कंदू संघर मिलै हसंदा॥ (११-२२-४)
पुत सपुत कपूर देउ सिखै मिलिआ मन विगसंदा॥ (११-२२-५)
सम्मण है शाहबाज़ पुर गुर सिखाँ दी सार लहंदा॥ (११-२२-६)
जोधा जल तुलसपुर मोहण आलम जंग रहंदा॥ (११-२२-७)
गुरमुख वडिआ वडे मसंदा ॥२२॥ (११-२२-८)

ढेसी जोधहु संग है गोबिंद गोला हस मिलंदा॥ (११-२३-१)
मोहण कुक वखाणीऐ धुटे जोधे जाम सहंदा॥ (११-२३-२)
मंजू पन्नू परवाण है पीराणा गुर भाइ चलंदा॥ (११-२३-३)

हमजा ज्जा जाणीऐ बाला मरवाहा विगसंदा॥ (११-२३-४)
निर्मल नानो ओहरी नाल सूरी चउधरी रहंदा॥ (११-२३-५)
पर्बत काला मेहरा नाल निहालू सेव करंदा॥ (११-२३-६)
कका कालउ सूरमा कद रामदास बचन मनंदा॥ (११-२३-७)
सेठ सभागा चूहणीअहु आरोड़े भारा उगवंदा॥ (११-२३-८)
सनमुख इकदूं इक चड़ंदा ॥२३॥ (११-२३-९)

पैड़ा जाति चंडालीआ जेठे सेठी कार कमाई॥ (११-२४-१)
लटकण घूरा जाणीऐ गुरदिता गुरमति गुरभाई॥ (११-२४-२)
कादारा सराफ है भगत वडा भगवान सुभाई॥ (११-२४-३)
सिख भला रवतास विच धउण मुरारी गुर सरणाई॥ (११-२४-४)
आडित सुइनी सूरमा चरण सरण चूहड़ जेसाई॥ (११-२४-५)
लाला सेती जाणीऐ जाणु रिहाणु शबद लिवलाई॥ (११-२४-६)
रामा झंझी आखीऐ हेमूं सोनी गुरमति पाई॥ (११-२४-७)
ज्टू भंडारी भला शाहदरे संगत सुखदाई॥ (११-२४-८)
पंजाबै गुर दी वडिआई ॥२४॥ (११-२४-९)

सनमुख सिख लाहौर विच सोढी आइण ताया सहारी॥ (११-२५-१)
साईं दिता झंझीआ सैदो जट शबद वीचारी॥ (११-२५-२)
बुधू महता जाणीअहि कुल कुमिआर भगत निरंकारी॥ (११-२५-३)
लखू विच पटोलीआ भाई ल्धा परउपकारी॥ (११-२५-४)
कालू नानो राज दुइ हाड़ी कोहलीआ विच भारी॥ (११-२५-५)
सूद कलिआना सूरमा भानू भगत शबद वीचारी॥ (११-२५-६)
मूला बेरी जाणीऐ तीर्थ अते मुकंद अपारी॥ (११-२५-७)
कहु किशना मोजंगीआ सेठ मंगीणे नों बलिहारी॥ (११-२५-८)
सनमुख सुनिआरा भला नाउं निहालू सपरवारी॥ (११-२५-९)
गुरमुख सुख फल करणी सारी ॥२५॥ (११-२५-१०)

भाना मूलण जाणीऐ काबल रेख राउ गुरभाई॥ (११-२६-१)
माधो सोढी कशमीर गुरसिखी दी चाल चलाई॥ (११-२६-२)
भाई भीवा शींहचंद रूपचंद सनमुख सत भाई॥ (११-२६-३)
परतापू सिख सूरमा नंदे विठड़ सेव कमाई॥ (११-२६-४)
सामी दास वछेरे है थानेसर संगत बहिलाई॥ (११-२६-५)
गोपी महिता जाणीऐ तीर्थ न्था गुर सरणाई॥ (११-२६-६)
भाउ मोलक आखीअहि द्ली मंडल गुरमति पाई॥ (११-२६-७)

जीवंद जगसी फते पुर सेठ तलोके सेव कमाई॥ (११-२६-८)
सतिगुर दी वडी वडिआई ॥२६॥ (११-२६-९)

महिता शकता आगरै चढा होआ निहाल निहाला॥ (११-२७-१)
गड़हीअल मथरा दास है सूपरवारा लाल गुलाला॥ (११-२७-२)
गंगा सहिगल सूरमा हरवंस तपे टाहल धरमसाला॥ (११-२७-३)
अणद मुरारी महाँ पुरख कूलयाणा कुल कवल रसाला॥ (११-२७-४)
नानो लटकण बिंदराउ सेवा संगति पूरण घाला॥ (११-२७-५)
हाँडा आलम चंद है सैंसारा तलवाड़ सुखाला॥ (११-२७-६)
जगना नंदा साध है बानू सुहड़ हंसाँ दी चाला॥ (११-२७-७)
गुरभाई रतनाँ दी माला ॥२७॥ (११-२७-८)

सींगारू जैता भला सूरबीर मनि परउपकारा॥ (११-२८-१)
जैता नंदा जाणीऐ पुरख पिरागा शबद अधारा॥ (११-२८-२)
तिलक तिलोका पाठका साध संगति सेवा हितकारा॥ (११-२८-३)
तातो महिता महा पुरख गुरसिख सुख फल शबद पिआरा॥ (११-२८-४)
जड़ीआ साईं दास है सभ कुल हीरे लाल अपारा॥ (११-२८-५)
मलक पैड़ा है कोहली दरगाह भंडारी अति भारा॥ (११-२८-६)
मीआँ जमाल निहाल है भगतू भगत कमावे कारा॥ (११-२८-७)
पूरा गुर पूरा वरतारा ॥२८॥ (११-२८-८)

अनंता कूको भले सभ वधावण हन सिरदारा॥ (११-२९-१)
इटा रोड़ा जाणीऐ नवल निहालू शबद विचारा॥ (११-२९-२)
तखतू धीर गम्भीर है दरगह तली जपै निरंकारा॥ (११-२९-३)
मनसा धार अथाह है तीर्थ उपल सेवक सारा॥ (११-२९-४)
किशना झंझी आखीऐ पम्मू पुरी गुरू का पिआरा॥ (११-२९-५)
धिंगड़ मंदू जाणीअनि वडे सुजाण तखाण अपारा॥ (११-२९-६)
बनवाली ते परसराम बाल वैद हउं तिन बलिहारा॥ (११-२९-७)
सतिगुर पुरख सवारन हारा ॥२९॥ (११-२९-८)

लशकर भाई तीरथा गुआलीएर सुइनी हरिदास॥ (११-३०-१)
भावाधीर उजैण विच साध संगति गुर शबद निवास॥ (११-३०-२)
मेल वडा बुरहान पुर सनमुख सिख सहज परगास॥ (११-३०-३)
भगत भईआ भगवानदास नाल बोलदा घरे उदास॥ (११-३०-४)
मलक कटारू जाणीऐ पिरथी मूल दराई खास॥ (११-३०-५)

भगतू छुरा वखाणीऐ डलू रिहाणे साबास॥ (११-३०-६)
सुंदर सुआमी दास दुइ वंस वधावण कवल विगास॥ (११-३०-७)
गुजराते विच जाणीऐ भेखारी भाबड़ा सुलास॥ (११-३०-८)
गुजराते भाउ भगति रहिरास ॥३०॥ (११-३०-९)

सुहंडै माईअे लम्ब है साध संत गावै गुरबाणी॥ (११-३१-१)
चूहड़ चउझड़ लखनऊ गुरमुख अनदिन नाम वखाणी॥ (११-३१-२)
सनमुख सिख परगास विच भाई भाना विरती हाणी॥ (११-३१-३)
जटू तपा सुजोण पुर गुरमति निहचल सेव कमाणी॥ (११-३१-४)
पटणै सभरवाल है नवल निहाला सुध पराणी॥ (११-३१-५)
जैता सेठ वखाणीऐ विण गुर सेवा होर न जाणी॥ (११-३१-६)
राजमहल भानू बहल भाउ भगत गुरमति मन भाणी॥ (११-३१-७)
सनमुख सोढी बदली सेठ गुपालै गुरमति जाणी॥ (११-३१-८)
सुंदर चढा आगरे ढाके मोहण सेव कमाणी॥ (११-३१-९)
साध संगत विटहु कुरबाणी ॥३१॥११॥ (११-३१-१०)

Vaar 12

ੴ सतिगुरप्रसादि॥ (१२-१-१)

बलिहारी तिनाँ गुरसिखाँ जाइ जिना गुरदरशन डिठा॥ (१२-१-२)
बलिहारी तिनाँ गुरसिखाँ पैरीं पै गुर सभा बहिठा॥ (१२-१-३)
बलिहारी तिनाँ गुरसिखाँ गुरमति बोल बोलदे मिठा॥ (१२-१-४)
बलिहारी तिनाँ गुरसिखाँ पुत्र मित्र गुरभाई इठा॥ (१२-१-५)
बलिहारी तिनाँ गुरसिखांगुरसेवा जाणनि अभरिठा॥ (१२-१-६)
बलिहारी तिनाँ गुरसिखां आप तरे तारेनि सरिठा॥ (१२-१-७)
गुरमुख मिलिआ पाप पणिठा ॥१॥ (१२-१-८)

कुरबाणी तिनाँ गुरसिखाँ पिछल रातीं उठ बहंदे॥ (१२-२-१)
कुरबाणी तिनाँ गुरसिखाँ अमृत वाला सर न्यावंदे॥ (१२-२-२)
कुरबाणी तिनाँ गुरसिखां इक मन होइ गुर जाप जपंदे॥ (१२-२-३)
कुरबाणी तिनाँ गुरसिखाँ साध संगति चल जाइ जुड़ंदे॥ (१२-२-४)
कुरबाणी तिनाँ गुरसिखाँ गुरबाणीनित गाइ सुणंदे॥ (१२-२-५)
कुरबाणी तिनाँ गुरसिखाँ मन मेली कर मैल मिलंदे॥ (१२-२-६)
कुरबाणी तिनाँ गुरसिखाँभाइ भगति गुरपुरब करंदे॥ (१२-२-७)
गुर सेवा फल सुफल फलंदे ॥२॥ (१२-२-८)

हउं तिस विटहु वारिआ होंदे ताण जो होइ निताणा॥ (१२-३-१)
हउं तिस विटहु वारिआ होंदे माण जो होइ निमाणा॥ (१२-३-२)
हउं तिस विटहु वारिआ छड सिआनप होइ इआणा॥ (१२-३-३)
हउं तिस विटहु वारिआ खसमे दा भावै जिस भाणा॥ (१२-३-४)
हउं तिस विटहु वारिआ गुरमुख मारग देख लुभाणा॥ (१२-३-५)
हउं तिस विटहु वारिआ चलण जाण जुगति मिहमाणा॥ (१२-३-६)
दीन दुनी दरगह परवाणा ॥३॥ (१२-३-७)

हउं तिस घोल घुमाइआ गुरमति रिदे गरीबी आवै॥ (१२-४-१)
हउं तिस घोल घुमाइआ पर नारी दे नेड़ न जावै॥ (१२-४-२)
हउं तिस घोल घुमाइआ परदरबे नूं हथ न लावै॥ (१२-४-३)
हउं तिस घोल घुमाइआ परनिंदा सुण आप हटावै॥ (१२-४-४)
हउं तिस घोल घुमाइआ सतिगुर दा उपदेश कमावै॥ (१२-४-५)
हउं तिस घोल घुमाइआ थोड़ा सवें थोड़ा ही खावै॥ (१२-४-६)

गुरमुख सोई सहज समावै ॥४॥ (१२-४-७)

हउं तिसदे चउखन्नीऐ गुर परमेशर एको जाणै॥ (१२-५-१)
हउं तिसदे चउखन्नीऐ दूजा भाउ न आणै॥ (१२-५-२)
हउं तिसदे चउखन्नीऐ अउगण कीते गुण परवाणै॥ (१२-५-३)
हउं तिसदे चउखन्नीऐ मंदा किसै न आख वखाणै॥ (१२-५-४)
हउं तिसदे चउखन्नीऐ आप ठगाए लोकाँ भाणै॥ (१२-५-५)
हउं तिसदे चउखन्नीऐ परउपकार करै रंग माणै॥ (१२-५-६)
लउ बाली दरगाह विच माण निमाणामाण निमाणै॥ (१२-५-७)
गुर पूरा गुर शबद सिञाणै ॥५॥ (१२-५-८)

हउं सदके तिन गुरसिखाँ सतिगुर नों मिल आप गवाया॥ (१२-६-१)
हउं सदके तिन गुरसिखाँ करन उदासी अंदर माया॥ (१२-६-२)
हउं सदके तिन गुरसिखाँ गुरमत गुरचरनी चित लाया॥ (१२-६-३)
हउं सदके तिन गुरसिखाँ गुरसिख दे गुरसिख मिलाया॥ (१२-६-४)
हउं सदके तिन गुरसिखाँ बाहर जाँदा वरज रहाया॥ (१२-६-५)
हउं सदके तिन गुरसिखाँ आसा विच निरास वलाया॥ (१२-६-६)
सतिगुर दा उपदेश दृड़ाया ॥६॥ (१२-६-७)

ब्रहमाँ वडा अखाइंदा नाभ कवल दी नालि समाणा॥ (१२-७-१)
आवागउण अनेक जुग ओड़क विच होया हैराणा॥ (१२-७-२)
ओड़क कीतोसु आपणा आप गणाइऐ भर्म भूलाणा॥ (१२-७-३)
चारे वेद वखाणदा चतर मुखी होइ खरा सिआणा॥ (१२-७-४)
लोकाँ नों समझाइदा वेख सरसती रूप लुभाणा॥ (१२-७-५)
चारे वेद गवाइकै गरब गरूरी कर पछताणा॥ (१२-७-६)
अकथ कथा नेत नेत वखाणा ॥७॥ (१२-७-७)

बिशन लए अवतार दस वैर विरोध विरोध जोध संघारे॥ (१२-८-१)
मछ कछ वैराह रूप नर सिंघ होइ बावन बंधारे॥ (१२-८-२)
परसराम राम कृशन हो किलकि कलंकी अति अहंकारे॥ (१२-८-३)
खत्री मार इकीह वार रामाइण करि भारथ भारे॥ (१२-८-४)
काम क्रोध न साधिओ लोभ मोह अहंकार न मारे॥ (१२-८-५)
सतिगुर पुरख न भेटिआ साध संगति सहलंघन सारे॥ (१२-८-६)
हउमैं अंदर कार विकारे ॥८॥ (१२-८-७)

महाँदेउ अउधूत होइ तामस अंदर जोग न जाणै॥ (१२-९-१)
भैरों भूत न सूत विच खेतर पाल बैताल धिङाणै॥ (१२-९-२)
अक ढधतूरा खावणा रातीं वासा मड़ही मसाणै॥ (१२-९-३)
पैनै हाथी शींह खल डउरू वाइ करै हराणै॥ (१२-९-४)
नाथाँ नाथ सदाइंदा होइ अनाथ न हर रंग माणै॥ (१२-९-५)
सिरठ संघारै तामसी जोग न भोग न जुगति पछाणै॥ (१२-९-६)
गुरमुखि सुख फल साध संगाणै ॥९॥ (१२-९-७)

वडी आरजा इंद्र दी इमद्र पुरी विच राज कमावै॥ (१२-१०-१)
चउदह इंद्र विणास काल ब्रह्मे दा इक दिवस विहावै॥ (१२-१०-२)
धंधै ही ब्रह्मा मरै लोमस दा इक रोम छिजावै॥ (१२-१०-३)
शेश महेश वखाणीअनि चिरंजीव होइ शाँत न आवै॥ (१२-१०-४)
जग भोग जप तप घने लोक वेद सिमरण न सुहावै॥ (१२-१०-५)
आप गणाइ न सहिज समावै ॥१०॥ (१२-१०-६)

नारद मुनी अखाइंदा आगम जानण धीरज आणै॥ (१२-११-१)
सुण सुण मसलत मजलसै कर कर चुगली आख वखाणै॥ (१२-११-२)
बाल बुध सनकादका बाल सुभाउ न विरती हाणै॥ (१२-११-३)
जाइ बैकुंठ करोध कर दे सराप जै बिजै धिङाणै॥ (१२-११-४)
अहम्मेउ सुकदेउ कर गरभ वास हउमैं हैराणै॥ (१२-११-५)
चंद सूरज अउलंघ भरै उदै असत विच आवण जाणै॥ (१२-११-६)
शिव शकती विच गरब गुमाणै ॥११॥ (१२-११-७)

जती सती संतोखीआँ जत सत जुगति संतोख न जाती॥ (१२-१२-१)
सिध नाथ बहु पंथ कर हउमैं विच करन करमाती॥ (१२-१२-२)
चार वरन संसार विच खहि खहि मरदे भर्म भराती॥ (१२-१२-३)
छिअदरशन होइ वरतिआ बाहर बाट उचाट जमाती॥ (१२-१२-४)
गुरमुख वरन अवरन होइ रंग सुरंग तम्बोल सुहाती॥ (१२-१२-५)
छे रुत बारहमाह विच गुरमुख दरशन सुझ सुझाती॥ (१२-१२-६)
गुरमुख सुख फल पिर्म पिराती ॥१२॥ (१२-१२-७)

पंज तत परवाण कर धरमसाल धरती मन भाणी॥ (१२-१३-१)
पाणी अंदर धरत धर धरती अंदर धरिआ पाणी॥ (१२-१३-२)
सिर तलवाए रुख हुइ निहचल चित निवास बिबाणी॥ (१२-१३-३)
परउपकारी सुफल फल वट वगाइ सृशटि वरसाणी॥ (१२-१३-४)

चंदण वास वणासपति चंदन होइ वास महकाणी॥ (१२-१३-५)
शबद सुरति लिव साध संग गुरमुख सुखफल अमृत बाणी॥ (१२-१३-६)
अवगति गति अति अकथ कहाणी ॥१३॥ (१२-१३-७)

ध्रू प्रहिलाद विभीखणो अम्बरीक बल जनक वखाणा॥ (१२-१४-१)
राज कुआर होइ राजसी आसा बंधी चोज विडाणा॥ (१२-१४-२)
ध्रू मतरेई चंडिआ पीऊ फड़ प्रहिलाद रज़ाणा॥ (१२-१४-३)
भेद बिभीछण लंक लै अम्बरीक लै चक्र लुभाणा॥ (१२-१४-४)
पर कड़ाहे जनक दा कर पाखंड धर्म धिङाणा॥ (१२-१४-५)
आप गणाइ विगुचणा दरगह पाए माण निमाणा॥ (१२-१४-६)
गुरमुख सुखफल पति परवाणा ॥१४॥ (१२-१४-७)

कलिजुग नामा भगति हिंदू मुसलमान फेर देहुरा गाइ जीवाई॥ (१२-१५-१)
भगति कबीर वखाणीऐ बंदीखाने ते उठ जाई॥ (१२-१५-२)
धन्ना जूट उबारिआ सधना जाति अजाति कसाई॥ (१२-१५-३)
जन रविदास चमार होए चहुं वरनाँ विच कर वडिआई॥ (१२-१५-४)
बेणी होआ अधिआतमी सैण नीच कुल अंदर नाई॥ (१२-१५-५)
पैरीं पै पाखाक हुइ गुरसिखाँ विच वडी समाई॥ (१२-१५-६)
अलख लखाइ न अलख लखाई ॥१५॥ (१२-१५-७)

सतजुग उतम आखीऐ इक फेड़ै सभ देस दुहेला॥ (१२-१६-१)
त्रेतै नगरी पीड़ीऐ दुआपर वंस विधुंस कुवेला॥ (१२-१६-२)
कलिजुग स्च निआउं है जो बीजै सु लुणै इकेला॥ (१२-१६-३)
पारब्रह्म पूरन ब्रह्म शबद सुरत सतिगुर गुर चेला॥ (१२-१६-४)
नाम दान इशनान दृड़ह साध संगति मिल अमृत वेला॥ (१२-१६-५)
मि्ठा बोलण निव चलण हथहुं देणा सहिज सुहेला॥ (१२-१६-६)
गुरमुख सुख फल नेहु नवेला ॥१६॥ (१२-१६-७)

निरंकार आकार कर जोति सरूप अनूप दिखाइआ॥ (१२-१७-१)
वेद कतेब अगोचरा वाहिगुरू गुरु शबद सुणाया॥ (१२-१७-२)
चार वरन चार मज़हबा चरण कवल शरनागति आया॥ (१२-१७-३)
पारस परस अपरस जग अशटधात इक धात कराया॥ (१२-१७-४)
पैरीं पाइ निवाइकै हउमैं रोग असाध मिटाया॥ (१२-१७-५)
हुकम रजाई चलणा गुरमुख गाडी राहु चलाया॥ (१२-१७-६)
पूरे पूरा थाट बणाया ॥१७॥ (१२-१७-७)

जम्मण मरनहु बाहरे परउपकारी जग विच आए॥ (१२-१८-१)
भाउ भगति उपदेश कर साध संगत सचखंड वसाए॥ (१२-१८-२)
मान सरोवर परमहंस गुरमुख शबद सुरत लिवलाए॥ (१२-१८-३)
चंदन वास वणासपति अफल सफल चंदन महिकाए॥ (१२-१८-४)
भवजल अंदर बोहिथै होइ परवार सु पार लंघाए॥ (१२-१८-५)
लहिर तरंग न विआपई माया विच उदास रहाए॥ (१२-१८-६)
गुरमुख सुख फल सहिज समाए ॥१८॥ (१२-१८-७)

धन्न गुरू गुरसिख धन्न आदि पुरख आदेश कराया॥ (१२-१९-१)
सतिगुर दरशन धन्न है धन्न दृशटि गुर धिआन धराया॥ (१२-१९-२)
धन्न धन्न सतिगुर शबद धन्न सुरति गुर गिआन सुणाया॥ (१२-१९-३)
चरन कवल गुर धन्न धन्न धन्न मसतक गुर चरणी लाया॥ (१२-१९-४)
धन्न धन्न गुर उपदेश है दन्न रिदा गुर मंत्र वसाया॥ (१२-१९-५)
धन्न धन्न गुर चरनामृतो धन्न मुहत जित अपिओ पीआया॥ (१२-१९-६)
गुरमुख सुख फल अजर जराया ॥१९॥१२॥ (१२-१९-७)

सुख सागर है साध संग सोबा लहिर तरंग अतोले॥ (१२-२०-१)
माणक मोती हीरिआँ गुर उपदेश अवेस अमोले॥ (१२-२०-२)
राग रतन अनहद धुनी शबद सुरत लिव अगम अलोले॥ (१२-२०-३)
रिध सिध निध सभ गोलीआँ चार पदार्थ गोइल गोले॥ (१२-२०-४)
लख लख चंद चरागची लख लख अमृत पीचन झोले॥ (१२-२०-५)
कामधेनु लख पारजात जंगल अंदर चरनि अडोले॥ (१२-२०-६)
गुरमुख सुखफल बोल अबोले ॥२०॥१२॥ (१२-२०-७)

Vaar 13

ੴ सतिगुरप्रसादि ॥ (१३-१-१)

पीर मुरीदाँ गाखड़ी को विरला जाणै॥ (१३-१-२)
पीराँ पीर वखाणीऐ गुरु गुराँ वखाणै॥ (१३-१-३)
गुर चेला चेला गुरू कर चोज विडाणै॥ (१३-१-४)
सो गुरु सोई सिख है जोती जोति समाणै॥ (१३-१-५)
इक गुरू इक सिख है गुरु शबद सिञाणै॥ (१३-१-६)
मिहर मुहबत मेल कर भउ भाउ सु भाणै ॥१॥ (१३-१-७)

गुर सिखहु गुर सिख है पीर पीरहुं कोई॥ (१३-२-१)
शबद सुरत चेला गुरू परमेशर सोई॥ (१३-२-२)
दरशन दृशटि धिआन धर गुरु मूरति होई॥ (१३-२-३)
शबद सुरति कर कीर्तन सतसंग विलोई॥ (१३-२-४)
वाहिगुरू गुरू मंत्र है जप हउमैं खोई॥ (१३-२-५)
आप गवाए आप है गुण गुणी परोई ॥२॥ (१३-२-६)

दरसन दिशटि संजोग है भै भाइ संजोई॥ (१३-३-१)
शबद सुरति बैराग है सुख सहज अरोगी॥ (१३-३-२)
मन बच कर्म न भर्म है जोगीशर जोगी॥ (१३-३-३)
पिर्म पिआला पीवणा अमृत रस भोगी॥ (१३-३-४)
ज्ञान ध्यान सिमरण मिलै पी अपिओ असोगी ॥३॥ (१३-३-५)

गुरमुख सुख फल पिरमरस किउं आख वखाणै॥ (१३-४-१)
सुण सुण आखण आखणा ओह साउ न जाणै॥ (१३-४-२)
ब्रह्मा बिशन महेश मिल कथि वेद पुराणै॥ (१३-४-३)
चार कतेबाँ आखीअनि दीन मुसलमाणै॥ (१३-४-४)
शधेशनाग सिमरण करै साँगीत सुहाणै॥ (१३-४-५)
अनहद नाद असंख सुण होए हैराणै॥ (१३-४-६)
अकथ कथा कर नेति नेति पीलाए भाणै॥ (१३-४-७)
गुरमुख सूख फल पिर्म रस छिअ रस हैराणै ॥४॥ (१३-४-८)

छतीह अमृत तरसदे विसमाद विडाणा॥ (१३-५-१)
नि्झर धारि हज़ार होइ भै चकित लुभाणा॥ (१३-५-२)

इड़ा पिंगुला सुखमना सोहं न समाणा॥ (१३-५-३)
वीह इकीह चड़हाउ चड़ह परचा परवाणा॥ (१३-५-४)
पीते बोल न हंघई आखाण वखाणा ॥५॥ (१३-५-५)

गलीं साद न आवई जिचर मुह खाली॥ (१३-६-१)
मुहु भरीऐ किउं बोलीऐ रस जीभ रसाली॥ (१३-६-२)
शबद सुरत सिम्रण उलंघ नहि नदर निहाली॥ (१३-६-३)
पंथ कुपंथ न सुझई अलमसत खिआली॥ (१३-६-४)
डगमग चतल सुढाल है गुरमति निराली॥ (१३-६-५)
चड़िहआ चंद न लुकई ढक जोति कुनाली ॥६॥ (१३-६-६)

लख लख बावन चंदना लख अगर मिलंदे॥ (१३-७-१)
लख कपूर कथूरीआ अम्बर महकंदे॥ (१३-७-२)
लख लख गउड़े मेद मिल केसर चमकंदे॥ (१३-७-३)
सभ सुगंध रलाइकै अरगजा करंदे॥ (१३-७-४)
लख अरगजे फुलेल फुल फुलवाड़ी संदे॥ (१३-७-५)
गुरमुख सुख फल पिर्म रस वासू न लहंदे ॥७॥ (१३-७-६)

रूप सरूप अनूप लख इंद्र पुरी वसंदे॥ (१३-८-१)
रंग बिरंग सुरंग लख बैकुंठ रहंदे॥ (१३-८-२)
लख जोबन सींगार लख लख वेस करंदे॥ (१३-८-३)
लख दीवे लख तारिआँ जोति सूरज चंदे॥ (१३-८-४)
रतन जवाहर लख मणी जग मग टहकंदे॥ (१३-८-५)
गुरमुख सुख फल पिर्म रस जोती न पुजंदे ॥८॥ (१३-८-६)

चार पदार्थ रिधि सिधि निध लख करोड़ी॥ (१३-९-१)
लख पारस लख पारजात लख लखमी जोड़ी॥ (१३-९-२)
लख चिंतामणि कामधेनु चतरंग चमोड़ी॥ (१३-९-३)
माणक मोती हीरिआँ निरमोल महोड़ी॥ (१३-९-४)
लख कवला ससि मेरु लख लख राज बहोड़ी॥ (१३-९-५)
गुरमुख सुख फल पिर्म रस मुल अमुल सुथोड़ी ॥९॥ (१३-९-६)

गुरमुख सुख फल लख लख लहिर तरंगा॥ (१३-१०-१)
लख दरीआउ समाउ करि लख लहिरीं अंगा॥ (१३-१०-२)
लख दरीआउ समुंद विच लख तीर्थ गंगा॥ (१३-१०-३)

लख समुंद गड़ाड़ह विच बहु रंग बिरंगा॥ (१३-१०-४)
लख गड़ाड़ह तरंग विच लख अझुकिणंगा॥ (१३-१०-५)
पिर्म पिआला पीवणा को बुरा न चंगा ॥१०॥ (१३-१०-६)

इक कवाउ पसाउ करि ओअंकार सुणाया॥ (१३-११-१)
ओअंकार अकार लख ब्रहमंड बणाया॥ (१३-११-२)
पंज तत उतपति लख त्रै लोअ सुहाया॥ (१३-११-३)
जल थल गिर तरवर सुफल दरीआउ चलाया॥ (१३-११-४)
लख दरीआउ समाउ कर तिल तुल न तुलाया॥ (१३-११-५)
कुदरत इक अतोलवीं लेखा नाँ लिखाया॥ (१३-११-६)
कुदरत कीम न जाणीऐ कादर किनि पाया ॥११॥ (१३-११-७)

गुरमुख सुखफल प्रेम रस अविगत गत भाई॥ (१३-१२-१)
पारावार अपार है को आइ न जाई॥ (१३-१२-२)
आदि अंत परजंत नाहि परमाद वडाई॥ (१३-१२-३)
हाथ न पाइ अथाह थीं असगाह समाई॥ (१३-१२-४)
पिर्म पिआले बूंद इक किन कीमत पाई॥ (१३-१२-५)
अगमहु अगम अगाध बोध गुरु अलख लखाई ॥१२॥ (१३-१२-६)

गुरमुख सुखफल प्रेमरस तिल अलख अलेखै॥ (१३-१३-१)
लख चउरासीह जूनि विच जीअजंत विसेखै॥ (१३-१३-२)
सभनाँ दी रोमावली बहु बिध बहु रेखै॥ (१३-१३-३)
रोम रोम लख लख् सिर मुह लख सरेखै॥ (१३-१३-४)
लख लख मुहि मुहि जीभ कर गुणबोलै देखै॥ (१३-१३-५)
संख असंख इकीह वीह समसर न निमेखै ॥१३॥ (१३-१३-६)

गुरमुख सुखफल प्रेम रस होइ गुरसिख मेला॥ (१३-१४-१)
शबद सुरत परचाइकै नित नेहु नवेला॥ (१३-१४-२)
वीह इकीह चड़ाउ चड़ह सिख गुर गुर चेला॥ (१३-१४-३)
अपिउ पीऐ अजर जरै गुर सेव सुहेला॥ (१३-१४-४)
जीवंदिआँ मर चलना हार जिणै वहेला॥ (१३-१४-५)
सिल अलूणी चटणी लख अमृत पेला ॥१४॥ (१३-१४-६)

पाणी काठ न डोबई पालै दी लजै॥ (१३-१५-१)
सिर कलवत धराइकै सिर चड़िहआ भजै॥ (१३-१५-२)

लोहे जड़ीए बोहिथा भार भरे न तजै॥ (१३-१५-३)
पेट अंदर अग रखके तिस पड़दा कजै॥ (१३-१५-४)
अगरै डोबै जाणकै निरमोलक धजै॥ (१३-१५-५)
गुरमुख मारग चलणा छड खबे सजै ॥१५॥ (१३-१५-६)

खाणउ कढ कध आणदे निरमोलक हीरा॥ (१३-१६-१)
जउहरीआँ हथ आँवदा उइ गहिर गम्भीरा॥ (१३-१६-२)
मजलस अंदर देखदे पातशाह वजीरा॥ (१३-१६-३)
मुल करन अज़माइकै शाहाँ मन धीरा॥ (१३-१६-४)
अहिरण उते रखकै घन घाउ सरीरा॥ (१३-१६-५)
विरला ही ठहिरांवदा दरगह गुर पीरा॥१६॥ (१३-१६-६)

तर डुबै डुबा तरै पी पिर्म पिआला॥ (१३-१७-१)
जिणहारै हारै जिणै एह गुरमुख चाला॥ (१३-१७-२)
मारग खंडे धार है भवजल भर नाला॥ (१३-१७-३)
वालहुं निका आखीऐ गुर पंथ निराला॥ (१३-१७-४)
हउमैं ब्जर भार है दुरमति दुराला॥ (१३-१७-५)
गुरमति आप गवाइकै सिख जाइ सुखाला ॥१७॥ (१३-१७-६)

धरति आप वड़ बीउ होइ जड़ह अंदर जम्मै॥ (१३-१८-१)
होइ बरूटा चुहचुहा मूल डाल धरम्मै॥ (१३-१८-२)
बिरख अकार बिथार कर बहु जटा पलम्मै॥ (१३-१८-३)
जटा लटा मिल धरति विच जोइ मूल अगम्मै॥ (१३-१८-४)
छाँव घणी पूत सोहणे फल लख लखम्मै॥ (१३-१८-५)
फल फल अंदर बीज बहु गुरसिक मरम्मै ॥१८॥ (१३-१८-६)

इक सिख दुइ साध संग पंजी परमेशुर॥ (१३-१९-१)
नउ अंग नील अनील सुन्न अवतार महेशुर॥ (१३-१९-२)
वीह इकीह असंख संख मुकते मुकतेशुर॥ (१३-१९-३)
नगर नगर सै सहंस सिख देस देस लखेशुर॥ (१३-१९-४)
इकदूं बिरखहुं लख फल फल बीअ लुमेशुर॥ (१३-१९-५)
भोग भुगत राजेसुरा जोग जुगति जोगेशुर ॥१९॥ (१३-१९-६)

पीर मुरीदाँ पिरहड़ी वनजारे शाहै॥ (१३-२०-१)
सउदा इकत हट है सैंसार विसाहै॥ (१३-२०-२)

कोई वेचै कउडीआँ को दम्म उगाहै॥ (१३-२०-३)
कोई रुप्ये विकने सुनईये को डाहै॥ (१३-२०-४)
कोई रतन वणंजदा कर सिफत सलाहै॥ (१३-२०-५)
वणज सप्ता शाह नाल वेसाहु निबाहै ॥२०॥ (१३-२०-६)

सउदा इकत हट है शाह सतिगुर पूरा॥ (१३-२१-१)
अउगुण लै गुण विकणे वचनै दा सूरा॥ (१३-२१-२)
सफल करे सिम्मल बिरख सोवरन मनूरा॥ (१३-२१-३)
वास सुवास निवास कर काउं हंस न ऊरा॥ (१३-२१-४)
घुघू सुझ सुझाइंदा संत मोती चूरा॥ (१३-२१-५)
वेद कतेबहुं बाहरा गुर शबद हजूरा ॥२१॥ (१३-२१-६)

लख उपमाँ उपमाँ करै उपमाँ न वखाणै॥ (१३-२२-१)
लख महिमाँ महिमाँ करै महिमाँ हैराणै॥ (१३-२२-२)
लख महातम महातमा न महातम जाणै॥ (१३-२२-३)
ख उसतत उसतत करै उसतत न सिञाणै॥ (१३-२२-४)
आदि पुरख आदेस है मैं माण निमाणै ॥२२॥ (१३-२२-५)

लख मति लख बुध सुध लख लख चतुराई॥ (१३-२३-१)
लख लख उकत सिआणपाँ लख सुरत समाई॥ (१३-२३-२)
लख गिआन धिआन लख लख सिमरण राई॥ (१३-२३-३)
लख विद्या लख इसट जप तंत मंत कमाई॥ (१३-२३-४)
लख भुगत लख लख भगत लख मुकत मिलाई॥ (१३-२३-५)
जिउं तारे दिहु उळगवै आनश्रेर गवाई॥ (१३-२३-६)
गुरमुख सुखफल अगम है होइ पिर्म सखाई ॥२३॥ (१३-२३-७)

लख अचरज अचरज होइ अचरज हैराणा॥ (१३-२४-१)
विसम होइ विसमाद लख लख चोज विडाणा॥ (१३-२४-२)
लख अदभुत परमद भुती परमट भुत भाणा॥ (१३-२४-३)
अवगति गति अगाध बोध अपरम्पर बाणा॥ (१३-२४-४)
अकथ कथा अजपा जपण नेति नेति वखाणा॥ (१३-२४-५)
आदि पुरख आदेस है कुदरति कुरबाणा ॥२४॥ (१३-२४-६)

पारब्रह्म पूरण ब्रह्म गुर नानक देउ॥ (१३-२५-१)
गुर अंगद गुर अंग ते सच शबद समेउ॥ (१३-२५-२)

अमरा पद गुरु अंगदहुं अति अलख अभेउ॥ (१३-२५-३)
गुर अमरहुं गुरु रामदास गति अछल छलेउ॥ (१३-२५-४)
रामदास अरजन गुरू अबिचल अरखेउ॥ (१३-२५-५)
हरिगोविंद गोविंद गुरु कारण करणेउ ॥२५॥१३॥ (१३-२५-६)

Vaar 14

ੴ सतिगुरप्रसादि॥ (१४-१-१)

सतिगुर सचा नाउं गुरमुख जाणीऐ॥ (१४-१-२)
साध संगति सच नाउं शबद वखाणीऐ॥ (१४-१-३)
दरगह सच निआउं जल दुध छाणीऐ॥ (१४-१-४)
गुर सरणी असराउ सेव कमाणीऐ॥ (१४-१-५)
शबद सुरति सुण जाउ अंदर आणीऐ॥ (१४-१-६)
तिस कुरबानी जाउं माण निमाणीऐ १॥ (१४-१-७)

चार वरन गुरु सिख संगति आवणा॥ (१४-२-१)
गुरमुख मारग विख अंत न पावणा॥ (१४-२-२)
तुल न अमृत इख कीर्तन गावणा॥ (१४-२-३)
चार पदार्थ भिख भिखारी पावणा॥ (१४-२-४)
लेख अलेख अलिख शबद कमावणा॥ (१४-२-५)
सुझनि भूह भविख न आप जणावणा ॥२॥ (१४-२-६)

आदि पुरख आदेश अलख लखाइआ॥ (१४-३-१)
अनहद शबद अवेश अघड़ घड़ाइआ॥ (१४-३-२)
साध संगति परवेश अपिउ पीआइआ॥ (१४-३-३)
गुर पूरे उपदेश सच दृड़हाइआ॥ (१४-३-४)
गुरमुख भूपति भेस न विआपै माइआ॥ (१४-३-५)
ब्रह्मे बिशन महेश न दरशन पाइआ ॥३॥ (१४-३-६)

बिशनू दस अवतार नाव गणाइआ॥ (१४-४-१)
कर कर असुर संघार वाद वधाइआ॥ (१४-४-२)
ब्रह्मै वेद वीचार आख सुणाइआ॥ (१४-४-३)
मन अंदर अहंकार जगत उपाइआ॥ (१४-४-४)
महाँदिउ लाइ तार तामस ताइआ॥ (१४-४-५)
नारद मुन अखाइ गल सुणिआइआ ॥४॥ (१४-४-६)

लाइ तबारी खाइ चुगल सदाइआ॥ (१४-५-१)
सनकादिक दर जाइ तामस आइआ॥ (१४-५-२)
दस अवतार कराइ जनम गलाइआ॥ (१४-५-३)

जिन सुख जणिआ माइ दुख सहाइआ॥ (१४-५-४)
गुरमुख सुख फल खाइ अजर जराइआ ॥५॥ (१४-५-५)

धरती नीवीं होइ चरन चित लाइआ॥ (१४-६-१)
चरण कवल रस भोइ आप गवाइआ॥ (१४-६-२)
चरण रेणु तेहु लोइ इछ इछआइआ॥ (१४-६-३)
धीरज धर्म समोइ संतोख समाइआ॥ (१४-६-४)
जीवण जगत परोइ रिज़क पुजाइआ॥ (१४-६-५)
मन्नै हुकम रजाइ गुरमुखि जाइआ ॥६॥ (१४-६-६)

पाणी धरती विच धरति विच पाणीऐ॥ (१४-७-१)
नीचहुं नीच नहिच निर्मल जाणीऐ॥ (१४-७-२)
सहिंदा बाहली खिच निवै नवाणीऐ॥ (१४-७-३)
मनमेली घुलघिच सभ रंग माणीऐ॥ (१४-७-४)
विचरे नाहि वरिच दर परवाणीऐ॥ (१४-७-५)
परउपकार सरिच भगति नीसाणीऐ ॥७॥ (१४-७-६)

धरती उ्ते रुख सिर तलवाइआ॥ (१४-८-१)
आप सहंदे दुख जग वरसाइआ॥ (१४-८-२)
फल दे लाहन भुख वट वगाइआ॥ (१४-८-३)
छाँव घणी बहु सुख मन परचाइआ॥ (१४-८-४)
वढन आइ मनुख आप तछाइआ॥ (१४-८-५)
विरले ही सनमुख भाणा भाइआ ॥८॥ (१४-८-६)

रुखहुं घर छावाइ थम्म थम्हाइआ॥ (१४-९-१)
सिर करवत धराइ देड़ घड़ाइआ॥ (१४-९-२)
लोहे नाल जड़ाइ पूर तराइआ॥ (१४-९-३)
लख लहिर दरीआइ पार लंघाइआ॥ (१४-९-४)
गुर सिखाँ भै भाइ शबद कमाइआ॥ (१४-९-५)
इकस पिछै लाइ लख छडाइआ ॥९॥ (१४-९-६)

घाणी तिल पीड़ाइ तेल कढाइआ॥ (१४-१०-१)
दीवा तेल जलाइ अनश्रेर गवाइआ॥ (१४-१०-२)
मसु मसवाणी पाइ शबद लिखाइआ॥ (१४-१०-३)
सुण सिख लिख लिखाइ अलेख सुणाइआ॥ (१४-१०-४)

गुरमुख आप गवाइ शबद कमाइआ॥ (१४-१०-५)
गिआन अंजन लिवलाइ सहजि समाइआ ॥१०॥ (१४-१०-६)

दुध देइ खड़ खाइ न आप गणाइआ॥ (१४-११-१)
दुधहुं दहीं जमाइ घिउ निपजाइआ॥ (१४-११-२)
गोहा मूत लिम्बाइ पूज कराइआ॥ (१४-११-३)
छतीह अमृत खाइ कुचील कराइआ॥ (१४-११-४)
साध संगत चल जाइ सतिगुर धिआइआ॥ (१४-११-५)
सफल जनम जग आइ सुख फल पाइआ ॥११॥ (१४-११-६)

दुख सहै कापाहि भाणा भाइआ॥ (१४-१२-१)
वेलण वेल वलाइ तुम्ब तुम्बाइआ॥ (१४-१२-२)
पिंञन पिंञ फिराइ सूत कताइआ॥ (१४-१२-३)
नलां जुलाहे वाहि चीर वुणाइआ॥ (१४-१२-४)
खुम्ब चड़हाइनि बाहि नीरि धुवाइआ॥ (१४-१२-५)
पैनिश्र शाह पातिशाह सभा सुहाइआ॥१२॥ (१४-१२-६)

जाण मजीठै रंग आप पीहाइआ॥ (१४-१३-१)
कदै न छडै संग बणत बणाइआ॥ (१४-१३-२)
कट कमाद निसंग आप पीड़ाइआ॥ (१४-१३-३)
करै न मनरस भंग अमिउ चुआइआ॥ (१४-१३-४)
गुड़ शकर खंड अचंग भोग भुगाइआ॥ (१४-१३-५)
साध न मोड़न अंग जग परचाइआ ॥१३॥ (१४-१३-६)

लोहा अहिरण पाइ तावण ताइआ॥ (१४-१४-१)
घण अहिरण हणवाइ दुख सहाइआ॥ (१४-१४-२)
आरसीआँ घड़वाइ मुल कराइआ॥ (१४-१४-३)
खहुरी साण दराइ अंग हछाइआ॥ (१४-१४-४)
पैराँ हेठ रखाइ सिकल कराइआ॥ (१४-१४-५)
गुरमुख आपि गवाइ आप दिखाइआ॥१४॥ (१४-१४-६)

चंगा रुक वढाइ रबाब घड़ाइआ॥ (१४-१५-१)
छेली होइ कुहाइ मास वंडाइआ॥ (१४-१५-२)
आँद्रहु तार बणाइ चम्म मड़ाइआ॥ (१४-१५-३)
साध संगति विच आइ नाद वजाइआ॥ (१४-१५-४)

राग रंग उपजाइ शबद सुणाइआ॥ (१४-१५-५)
सतिगुर पुरख धिआइ सहज समाइआ ॥१५॥ (१४-१५-६)

चन्नण रुख उपाइ वण खंड चखिआ॥ (१४-१६-१)
पवण गवण करजाइ अलख न लखिआ॥ (१४-१६-२)
वासू बिरख बुहाइ सच परखिआ॥ (१४-१६-३)
सभे वरन गवाइ भख अभखिआ॥ (१४-१६-४)
साध संगति भै भाइ अमिओ पी चखिआ॥ (१४-१६-५)
गुरमुख सहजि सुभाइ प्रेम प्रतखिआ ॥१६॥ (१४-१६-६)

गुर सिखाँ गुर सिख सेव कमावणी॥ (१४-१७-१)
चार पदार्थ भिख फकीराँ पावणी॥ (१४-१७-२)
लेख अलेख अलख बाणी गावणी॥ (१४-१७-३)
भाइ भगत रस बिख अमिउ चुआवणी॥ (१४-१७-४)
तुल न भूतभविख न कीमत पावणी॥ (१४-१७-५)
गुरमुख मारग विख लवै न लावणी॥१७॥ (१४-१७-६)

इंद्र पुरी लख राज नीर भरावणी॥ (१४-१८-१)
लख सुरग सिरताज गला पीहावणी॥ (१४-१८-२)
रिध सिध निध लख साज चुल झकावणी॥ (१४-१८-३)
साध गरीब निवाज गरीबी आवणी॥ (१४-१८-४)
अनहद शबद अगाजबाणी गावणी ॥१८॥ (१४-१८-५)

होम जग लख भोग चणे चबावणी॥ (१४-१९-१)
तीर्थ पुरब संजोग पूर धुहावणी॥ (१४-१९-२)
ज्ञान ध्यान लख जोग शबद सुहावणी॥ (१४-१९-३)
रहै न सहसा सोग झाती पावणी॥ (१४-१९-४)
भउजल विच अरोग न लहिर डरावणी॥ (१४-१९-५)
लंघ संजोग विजोग गुरमति आवणी ॥१९॥ (१४-१९-६)

धरती बीउ बीजाइ सहस फलाइआ॥ (१४-२०-१)
गुरसिख मुख पवाइ न लेख लिखाइआ॥ (१४-२०-२)
धरती देइ फलाइ जोई फल पाइआ॥ (१४-२०-३)
गुरसिख मुख समाइ सभ फल लाइआ॥ (१४-२०-४)
बीजे बाझ न खाइ न धरति जमाइआ॥ (१४-२०-५)

गुरमुख चित वसाइ इछ पुजाइआ ॥२०॥१४॥ (१४-२०-६)

Vaar 15

ੴ सतिगुरप्रसादि॥ (१५-१-१)

सतिगुर सचा पातशाह कूड़े बादशाह दुनीआवे॥ (१५-१-२)
सतिगुर नाथाँ नाथ है होइ नउं नाथ अनाथ निथावे॥ (१५-१-३)
सतिगुर सच दातार है होर दाते फिरदे पाछावे॥ (१५-१-४)
सतिगुर करता पुरख है कर करतूत न नावश्रन नावे॥ (१५-१-५)
सतिगुर सचा शाह है होर शाह वेसाह उचावे॥ (१५-१-६)
सतिगुर सचा वैद है होर वैद सभ कैद कुड़ावे॥ (१५-१-७)
विण सतिगुर सभ निगोसावे ॥१॥ (१५-१-८)

सतिगुर तीर्थ जाणीऐ अठिसठि तीर्थ सरणी आए॥ (१५-२-१)
सतिगुर देउ अभेउ है होर देव गुर सेव तराए॥ (१५-२-२)
सतिगुर पारस परसिऐ लख पारस पाखाक सुहाए॥ (१५-२-३)
सतिगुर पूरा पारजात पारजात लख सफल धिआए॥ (१५-२-४)
सुखसागर सतिगुर पुरख है रतन पदार्थ सिख सुणाए॥ (१५-२-५)
चिंतामणि सतिगुर चरण चिंतामणी अचिंत कराए॥ (१५-२-६)
विण सतिगुर सभ दूजै भाए ॥२॥ (१५-२-७)

लख चउरासीह जूनि विच उतम जूनि सु माणस देही॥ (१५-३-१)
अखीं देखै नदर कर जिहबा बोलै बचन बिदेही॥ (१५-३-२)
कन्नी सुणदा सुरति कर वास लए कर नक सनेही॥ (१५-३-३)
हथीं किरत कमावणी पैरीं चलन जोति इवेही॥ (१५-३-४)
गुरमुख जनम सकारथा मनमुख मूरति मति किनेही॥ (१५-३-५)
करता पुरख विसारकै माणस दी मन आस धरेही॥ (१५-३-६)
पसू परेतहुं बुरी बुरेही ॥३॥ (१५-३-७)

सतिगुर साहिब छड कै मनमुख होइ बंदे दा बंदा॥ (१५-४-१)
हुकमी बंदा होइकै नित उठ जाइ सलाम करंदा॥ (१५-४-२)
अळठ पहिर हथ जोड़कै होइ हजूरी खड़ा रहंदा॥ (१५-४-३)
नींद न भुख न सुख तिस सूली चड़िहआ रहै डरंदा॥ (१५-४-४)
पाणी पाला धुप छाउं सिर उते झल दुख सहंदा॥ (१५-४-५)
आतशबाज़ी सार वेख रण विच घाइल होइ मरंदा॥ (१५-४-६)
गुरु पूरे विण जूनि भवंदा ॥४॥ (१५-४-७)

नाथाँ नाथ न सेवई होइ अनाथ गुरू बहु चेले॥ (१५-५-१)
कन्न पड़ाइ बिभूति लाइ खिंथा खळपर डंडा हेले॥ (१५-५-२)
घर घर टुकर मंगदे सिंङी नाद वजाइनि भेले॥ (१५-५-३)
भुगति पिआला वंडीऐ सिध साधिक शिवराती मेले॥ (१५-५-४)
बारह पंथ चलाइंदे बाहर वाटी खरे दुहेले॥ (१५-५-५)
विण गुर शबद न सिझनी बाजीगर कर बाजी खेले॥ (१५-५-६)
अन्नश्रै अन्नश्रा खूहे ठेले ॥५॥ (१५-५-७)

सच दातार विसार कै मंगतिआँ नों मंगण जाहीं॥ (१५-६-१)
ढाढी वाराँ गाँवदे वैर विरोध जोध सालाहीं॥ (१५-६-२)
नाई गावन सदड़े कर करतूत मुए बदराहीं॥ (१५-६-३)
पड़दे भट कबित कर कूड़ कुसत मुखहुं आलाहीं॥ (१५-६-४)
होइ असरीत परोहताँ प्रीत प्रीतै विरति मंगाहीं॥ (१५-६-५)
छुरीआँ मारन पंखीए हट हट मंगदे भिख भवाहीं॥ (१५-६-६)
गुर पूरे विण रोवण धाहीं ॥६॥ (१५-६-७)

करता पुरख न चेतिओ कीते नोंकरता कर जाणै॥ (१५-७-१)
नारि भतार पिआर कर पुत पोते पिउ दाद वखाणै॥ (१५-७-२)
धीआँ भैणाँ माण कर तुसनि रुसनि साक बबाणै॥ (१५-७-३)
सीहरु पीहरु नानके परवारै साधार धिङाणै॥ (१५-७-४)
चज अचार वीचार विच पंचा अंदर पति परवाणै॥ (१५-७-५)
अंत काल जम जाल विच साथी कोइ न होइ सिञाणै॥ (१५-७-६)
गुर पूरे विण जाइ समाणे ॥७॥ (१५-७-७)

सतिगुर शाह अथाह छड कूड़े शाह कूड़े वणजारे॥ (१५-८-१)
सउदागर सउदागरी घोड़े वणज करन अति भारे॥ (१५-८-२)
रतनाँ परख जवाहरी हीरे मानक वणज पसारे॥ (१५-८-३)
होइ सराफ बजाज़ बहु सुइनां रुपा कपड़ भारे॥ (१५-८-४)
किरसाणी किरसाण कर बीज लुणन बोहल विसथारे॥ (१५-८-५)
लाहा तोटा वर सराप कर संजोग विजोग विचारे॥ (१५-८-६)
गुरपूरे विण दुक सैंसारे ॥८॥ (१५-८-७)

सतिगुर वैद न सेविओ रोगी वैद न रोग मिटावै॥ (१५-९-१)
काम क्रोध विच लोभ मोह दुबिधा कर कर ध्रोह वधावै॥ (१५-९-२)

आधि बिआधि उपाधि विच मर मर जम्मै दुख विहावै॥ (१५-९-३)
आवै जाइ भवाईऐ भवजल अंदर पार न पावै॥ (१५-९-४)
आसा मनसा मोहणी तामस तृशनां शाँति न आवै॥ (१५-९-५)
बलदी अंदर तेल पाइ किउं मन मूरख अ्ग बुझावै॥ (१५-९-६)
गुर पूरे विण कउेण छडावै॥९॥ (१५-९-७)

सतिगुर तीर्थ छडकै अठसठि तीर्थ नावण जाहीं॥ (१५-१०-१)
बगल समाध लगाइके जिउं जल जंताँ घुट घुट खाहीं॥ (१५-१०-२)
हसती नीर नवालीअनि बाहर निकल खेह उडाहीं॥ (१५-१०-३)
नदी न डुबै तूम्बड़ी तीर्थ विस निवारै नाहीं॥ (१५-१०-४)
पळथर नीर पखालीऐ चिळत कठोर न भिजै काहीं॥ (१५-१०-५)
मनमुख भर्म न उतरै भम्भल भूसे खाइ भवाहीं॥ (१५-१०-६)
गुर पूरे विण पार न पाहीं ॥१०॥ (१५-१०-७)

सतिगुर पारस परहरै पळथर पारस ढूंढण जाए॥ (१५-११-१)
अशटधात इक धात कर लुकदा फिरे न प्रगटी आए॥ (१५-११-२)
लै वणवास उदास होइ माइआ धारी भर्म भुलाए॥ (१५-११-३)
हथीं कालख छुथिआँ अंदर कालख लोभ लुभाए॥ (१५-११-४)
राज दंड जिम पकड़िआ जमपुर भी जम दंड सहाए॥ (१५-११-५)
मनमुख जनम अकारथा दुजै भाइ कुदाइ हराए॥ (१५-११-६)
गुरु पूरै विण भर्म न जाए ॥११॥ (१५-११-७)

पारजात गुर छडके मंगन कलपतरों फल कचे॥ (१५-१२-१)
पारजात लख सुरगसण आवागवण भवण विच पचे॥ (१५-१२-२)
मरदे कर कर कामनाँ द्रित भगत विच रच विर्चे॥ (१५-१२-३)
तारे होइ अगाश छड़ह ओड़क तुट तुट थाँ न हल्चे॥ (१५-१२-४)
माँ पिओ होइ केतड़े केतड़िआँ दे होइ ब्चे॥ (१५-१२-५)
पाप पुन्न बीउ बीजदे दुख सुख फल अंदर चहम्चे॥ (१५-१२-६)
गुर पूरे विण हरि न पर्चे ॥१२॥ (१५-१२-७)

सुख सागर दुख छडकै भवजल अंदर भम्भल भूसे॥ (१५-१३-१)
लहिरीं नाल पछाड़ीअनि हउमै अगनी अंदर लूसै॥ (१५-१३-२)
जम दर ब्धे मारीअनि जम दूताँ दे ध्के धूसे॥ (१५-१३-३)
गोइल वासा चार दिन नाउं धराइन ईसे मूसे॥ (१५-१३-४)
घट न खोइ अखाइंदा आपो धापी हैर त हूसे॥ (१५-१३-५)

साइर दे मर जीवड़े करन मजूरी खेचल खूसे॥ (१५-१३-६)
गुर पूरे विण डाँग डंगूसे ॥१३॥ (१५-१३-७)

चिंतामणि गुरू छड कै चिंतामणि चिंता न गवाए॥ (१५-१४-१)
चितवणीआँ लख रात दिहु त्रास न तृशना अगन बुझाए॥ (१५-१४-२)
सुइना रुपा अगला माणक मोती अंग हंढाए॥ (१५-१४-३)
पाट पटम्बर पहिन कै चोआ चंदन मह महकाए॥ (१५-१४-४)
हाथी घोड़े पाखरे महल बगीचे सुफल फलाए॥ (१५-१४-५)
सुंदर नारी सेज सुख माया मोह धोह लपटाए॥ (१५-१४-६)
बलदी अंदर तेल जिउं आस मनसा दुख विहाए॥ (१५-१४-७)
गुर पूरे विण जम पुर जाए ॥१४॥ (१५-१४-८)

लख तीर्थ लख देवते पारस लख रसाइण जाणै॥ (१५-१५-१)
लख चिंतामणि पारजात कामधेन लख अमृत आणै॥ (१५-१५-२)
रतनाँ सण साइर घणे रिध सिध निध सोभा सुलताणै॥ (१५-१५-३)
लख पदार्थ लख फल लख निधान अंदर फुरमाणै॥ (१५-१५-४)
लख शाह पाति शाह लख लख नाथ अवतार सुहाणै॥ (१५-१५-५)
दानै कीमति न पवै दातै कउण सुमार वखाणै॥ (१५-१५-६)
कुदरत कादर नों कुरबाणै ॥१५॥ (१५-१५-७)

रतनाँ देखै सभ को रतन पारखू विरला कोई॥ (१५-१६-१)
राग नाद सभ को सुणै शबद सुरति समझै विरलोई॥ (१५-१६-२)
गुरसिख रतन पदारथाँ साध संगत मिल माल परोई॥ (१५-१६-३)
हीरे हीरा बेधिआ शबद सुरति मिल परचा होई॥ (१५-१६-४)
पारब्रह्म पूरन ब्रह्म गुर गोविंद सिञाणे सोई॥ (१५-१६-५)
गुरमुख सुख फल सहज घर प्रेम पिआला जाण जाणोई॥ (१५-१६-६)
गुरु चेला चेला गुरु होई ॥१६॥ (१५-१६-७)

माणस जनम अमोल है होइ अमोलि साध संग पाए॥ (१५-१७-१)
अखीं दुइ निरमोलका सतिगुर दरस ध्यान लिवलाए॥ (१५-१७-२)
मसतक सीस अमोल है चरण सरण गुरु धूड़ सुहाए॥ (१५-१७-३)
जिहबा स्रवण अमोलका शबद सुरति सुण समझ सुणाए॥ (१५-१७-४)
हसत चरन निरमोलका गुरमुख मारग सेव कमाए॥ (१५-१७-५)
गुरमुख रिदा अमोल है अंदर गुरु उपदेश वसाए॥ (१५-१७-६)
पति परवाणै तोल तोलाए ॥१७॥ (१५-१७-७)

रक्त बिंद कर निंमिआ चित्र चलित्र बचित्र बणाया॥ (१५-१८-१)
गरभ कुंड विच रखिआ जीउ पाइ तनु साह सुहाया॥ (१५-१८-२)
मूंह अखीं तै नक कन्न हथ पैर दंद वाल गणाया॥ (१५-१८-३)
दिश शबद गत सुरत लिव रागरंग रस परस लुभाया॥ (१५-१८-४)
उतम कुल उतम जनम रोम रोम गुण अंग सबाया॥ (१५-१८-५)
बाल बुधि मुहिं दुध दे मल मूतर सूतर विच आया॥ (१५-१८-६)
होइ सिआणा समझिआ करता छड कीते लपटाया॥ (१५-१८-७)
गुर पूरे विण मोहया माया ॥१८॥ (१५-१८-८)

मनमुख मानस देह तै पसू परेत अचेत चंगेरे॥ (१५-१९-१)
होइ सुचेत अचेत होइ माणस माणस देवल हेरे॥ (१५-१९-२)
पसू न मंगे पसू ते पंखेरू पंखेरू गेरे॥ (१५-१९-३)
चउरासी लख जून विच उतम माणस जूनि भलेरे॥ (१५-१९-४)
उतम मन बच कर्म कर जनम मरण भवजल लख फेरे॥ (१५-१९-५)
राजा परजा होइ सुख सुख विच दुख होइ भले भलेरे॥ (१५-१९-६)
कुता राज बहालीऐ चकी चटण जाहि अनथ्रेरे॥ (१५-१९-७)
हुर पुरे विण गरभ वसेरे ॥१९॥ (१५-१९-८)

वण वणवास बणासपति चंदन बाझ न चंदन होई॥ (१५-२०-१)
पर्बत पर्बत अशटधात पारस बाझ न कंचन सोई॥ (१५-२०-२)
चार वरन छिअ दरशना साध संगति विण साध न कोई॥ (१५-२०-३)
गुरु उपदेश अवेस कर गुरमुख साध संगत जाणोई॥ (१५-२०-४)
शबद सुरत लिवलीण हो प्रेम पिआला अपिउ पीओई॥ (१५-२०-५)
मन उनमन तन दुबले देह बिदेह सनेहु सथोई॥ (१५-२०-६)
गुरमुख सुखफल अलख लखोई ॥२०॥ (१५-२०-७)

गुरमुख सुखफल साध संग माया अंदर करन उदासी॥ (१५-२१-१)
जिउं जल अंदर कवल है सूरज ध्यान अगास निवासी॥ (१५-२१-२)
चंदन सर्पीं वेड़िआ सीतल शाँति सुगंध विगासी॥ (१५-२१-३)
साध संगत संसार विच शबद सुरत लिव सहज बिलासी॥ (१५-२१-४)
जोग जुगति भोग भगत जिन जीवण मुकत अछल अबिनासी॥ (१५-२१-५)
पार ब्रह्म पूरन ब्रह्म गुर परमेशर आस निरासी॥ (१५-२१-६)
अकथ कथा अबिगति परगासी ॥२१॥१५॥ (१५-२१-७)

Vaar 16

ੴ सतिगुरप्रसादि ॥ (१६-१-१)

सभदूं नीवीं धरति होइ दरगह अंदर मिली वडाई॥ (१६-१-२)
कोई गोडै वाहि हल को मल मूत कसूत कराई॥ (१६-१-३)
लिम्ब रसोई को करै चोआ चंदन पूज चड़हाई॥ (१६-१-४)
जेहा बीजै सो लुणै जेहा बीउ तेहो फल पाई॥ (१६-१-५)
गुरमुख सुख फल सहज घण आप गवाइ न आप गनाई॥ (१६-१-६)
जाग्रत सुपन सखोपती उनमन मगन रहे लिव लाई॥ (१६-१-७)
साध संगत गुर शबद कमाई ॥१॥ (१६-१-८)

धरती अंदर जल वसे जल बहुरंगी रसीं मिलंदा॥ (१६-२-१)
जिउं जिउं कोइ चलाइंदा नीवाँ होइ नीवाण रलंदा॥ (१६-२-२)
धुपै तता होइकै छाँवै ठंढा होइ चहंदा॥ (१६-२-३)
नश्रावण जीवदिआँ मुइआँ पीतै शाँति संतोख होवंदा॥ (१६-२-४)
निर्मल करदा मैलिआँ नीव सरवर जाइ टिकंदा॥ (१६-२-५)
गुरमुख सुख फल भाउ भउ सहज बैराग सदा विगसंदा॥ (१६-२-६)
पूरण पर उपकार करंदा ॥२॥ (१६-२-७)

जल विच कवल अलिपत है संग दोख निरदोख रहंदा॥ (१६-३-१)
राती भवर लुभाइंदा सीतल होइ सुगंध मिलंदा॥ (१६-३-२)
भलके सूरज धिआन धर परफुलत होइ मिलै हसंदा॥ (१६-३-३)
गुरमुख सुक फल सहज घर वरतमान अंदर वरतंदा॥ (१६-३-४)
लोकाचारी लोक विच वेद वीचारी कर्म करंदा॥ (१६-३-५)
सावधान गुर गिआन विच जीवन मुकति जुगत विचरंदा॥ (१६-३-६)
साध संगति गुर शबद वसंदा ॥३॥ (१६-३-७)

धरती अंदर बिरख होइ पहिलोंदे जड़ पैर टिकाई॥ (१६-४-१)
उपर झूलै झूटला जंडी छाउन सु थाउं सुहाई॥ (१६-४-२)
पवण पाणी पाला सहै सिर तलवाया निहचल जाई॥ (१६-४-३)
फल दे वट वटाइआ सिर कलवत लै लोह तराई॥ (१६-४-४)
गुरमुख जनम सकारथा परउपकारी सहजि सुभाई॥ (१६-४-५)
मित्र न सत्र न मोह धोह समदरसी गुर शबद समाई॥ (१६-४-६)
साध संगति गुरमुख वडिआई ॥४॥ (१६-४-७)

सागर अंदर बोहिथा विच मुहाणा पर उपकारी॥ (१६-५-१)
भार अथबण लदीऐ लै वापार चड़हन वापारी॥ (१६-५-२)
साइर लहर न वयापई अत असगाह अथाह अपारी॥ (१६-५-३)
बाहले पूर लंघाइदा सही सलामति पार उतारी॥ (१६-५-४)
गुरमुख सुखफल साध संग भवजल अंदर दुतर तारी॥ (१६-५-५)
जीवन मुकति जुगति निरंकारी ॥५॥ (१६-५-६)

बावन चंदन बिरख होइ वणखंड अंदर वसै उजाड़ी॥ (१६-६-१)
पास निवास वणासपत निहचल लाइ उरध तपताड़ी॥ (१६-६-२)
पवन गवन सनबंध कर गंध सुगंध उलास उघाड़ी॥ (१६-६-३)
अफल सफल समदरस होइ करे बनसपत चंदन वाड़ी॥ (१६-६-४)
गुरमुख सुखफल साध संग पतित पुनीत करै देहाड़ी॥ (१६-६-५)
अउगण कीते गुण करे कच पकाई उपर वाड़ी॥ (१६-६-६)
नीर न डोबै अ्ग न साड़ी ॥६॥ (१६-६-७)

रात अनश्रेरी अंधकार लख करोड़ च्मकन तारे॥ (१६-७-१)
घर घर दीवै बालीअन परघर तकन चोर चकारे॥ (१६-७-२)
हट पटण घर बारीए दे दे ताक सवण नर नारे॥ (१६-७-३)
सूरज जोति उदोत कर तारे रात अनश्रेर निवारे॥ (१६-७-४)
बंधन मुकति कराइदा नाम दान इशनान वीचारे॥ (१६-७-५)
गुरमुख सुखफल साध संग पसू परेत पतित निसतारे॥ (१६-७-६)
पर उपकारी गुरू पिआरे ॥७॥ (१६-७-७)

मानसरोवर आखीऐ उळपर हंस सुवंस वसंदे॥ (१६-८-१)
मोती माणक मानसर चुण चुण हंस अमोल चुगंदे॥ (१६-८-२)
खीर नीर निरवारदे लहिरीं अंदर फिरन तरंदे॥ (१६-८-३)
मानसरोवर छड कै होरत थाइ न जाइ बहंदे॥ (१६-८-४)
गुरमुख सुखफल साध संग पर्म हंस गुर सिख सुहंदे॥ (१६-८-५)
इक मन इक धिआइंदे दूजे भाइ न जाइ फिरंदे॥ (१६-८-६)
शबद सुरति लिव अलख लखंदे ॥८॥ (१६-८-७)

पारस पथर आखीऐ लुकिआ रहे न आप जणाए॥ (१६-९-१)
विरला होइ सिञाणदा खोजी खोज लए सो पाए॥ (१६-९-२)
पारस परस अपरस होइ अशटधात इक धात कराए॥ (१६-९-३)

बारह वन्नी होइकै कंचन मुल अमुल विकाए॥ (१६-९-४)
गुरमुख सुखफल साध संग शबद सुरत लिव अघड़ घड़ाए॥ (१६-९-५)
चरण सरण लिवलीण होइ सैंसारी निरंकारी भाए॥ (१६-९-६)
घरबारी होइ निज घर जाए ॥९॥ (१६-९-७)

चिंतामणि चिंता हरे कामधेन कामना पुजाए॥ (१६-१०-१)
फुल फल देंदा पारजात रिध सिध निध नवनाथ लुभाए॥ (१६-१०-२)
दस अवतार अकार कर पुरखारथ कर नाँव गणाए॥ (१६-१०-३)
गुरमुख सुखफल साध संग चार पदार्थ सेवा लाए॥ (१६-१०-४)
शबद सुरत लिव प्रेम रस अकथ कहाणी कथा न जाए॥ (१६-१०-५)
पारब्रह्म पूरन ब्रह्म भगत वछल होइ अछल छलाए॥ (१६-१०-६)
लेख अलेख न कीमत पाए ॥१०॥ (१६-१०-७)

इक कवाउ पसाउ कर निरंकार आकार बणाया॥ (१६-११-१)
तोल अतोल न तोलीऐ तुल न तुला धार तोलाया॥ (१६-११-२)
लेख अलेख न लिखीऐ अंग न अखर लेख लखाया॥ (१६-११-३)
मुल अमुल न मोलीऐ लख पदार्थ लवै न लाया॥ (१६-११-४)
बोल अबोल न बोलीऐ सुण सुण आखण आख सुणाया॥ (१६-११-५)
अगम अथाह अगाधि बोध अंत न पारावार न पाया॥ (१६-११-६)
कुदरत कीम न जाणीअ केवड कादर कित घर आया॥ (१६-११-७)
गुरमुख सुखफल साध संग शबद सुरति लिव अलख लखाया॥ (१६-११-८)
पिर्म पिआला अजर जराया ॥११॥ (१६-११-९)

सादहुं शबदहुं बाहिरा अकथ कथा इउं जिहबा जाणै॥ (१६-१२-१)
उसतति निंदा बाहिरा कथनी बदनी विच न आणै॥ (१६-१२-२)
गंध सपरस अगोचरा नास सास हरत हैराणै॥ (१६-१२-३)
वरनहुं चिहनहुं बाहरा दिशट अदिशट धयान धिगाणै॥ (१६-१२-४)
निरालम्ब अवलम्ब विण धरति अकाश निवास विडाणै॥ (१६-१२-५)
साध संगत सच खंड है निरंकार गुरु शबद सिञाणै॥ (१६-१२-६)
कुदरति कादर नों कुरबाणै ॥१२॥ (१६-१२-७)

गुरमुख पंथ अगम्म है जिउं जल अमदर मीन चलंदा॥ (१६-१३-१)
गुरमुख खोज अलख है जिउं पंखी आकाश उडंदा॥ (१६-१३-२)
साध संगति रहिरास है हरि चंदउरी नगर वसंदा॥ (१६-१३-३)
चार वरन तम्बोल रस पिर्म पिआलै रंग चड़ंदा॥ (१६-१३-४)

शबद सुरति लिवलीन होइ चंदनवास निवास करंदा॥ (१६-१३-५)
गयान धियान सिमरन जुगति कूंज कुकरम हंसवंस वधंदा॥ (१६-१३-६)
गुरमुख सुखफल अलख लखंदा ॥१३॥ (१६-१३-७)

ब्रहमादिक वेदाँ सणे नेति नेति कर भेद न पाया॥ (१६-१४-१)
महादेव अवधूत होए नमो नमो कर धयान न आया॥ (१६-१४-२)
दस अवतार अकार कर एकंकार न अलख लखाया॥ (१६-१४-३)
रिध सिध निध लै नाथनउं आदि पुरख आदेश कराया॥ (१६-१४-४)
सहसनाँव ले सहस मुख सिमरन संख न नाउं धिआया॥ (१६-१४-५)
लोमस तपकर साधना हउमै साधि न साधु सदाया॥ (१६-१४-६)
चिरजीवण बहुहंढणा गुरमुख सुखफल अलख चखाया॥ (१६-१४-७)
कुदरति अंदर भर्म भुलाया ॥१४॥ (१६-१४-८)

गुरमुख सुखफल साध संग भगत वछल होइ वसगति आया॥ (१६-१५-१)
कारण करते वस है साध संगत विच करे कराया॥ (१६-१५-२)
पारब्रह्म पूरन ब्रह्म साध संगति विच भाणा भाया॥ (१६-१५-३)
रोम रोम विच रखिओन कर ब्रहमंड करोड़ समाया॥ (१६-१५-४)
बीअहुंकर बिसथार वड फल अंदर फिर बीउ वसाया॥ (१६-१५-५)
अपिउ पीवण अजरजरण आप गवाइ न आप जणाया॥ (१६-१५-६)
निरंजन विच निरंजन पाया ॥१५॥ (१६-१५-७)

महिमाँ महि महिकार विच महिमा लख न महिमा जाणै॥ (१६-१६-१)
लख महातम महातमाँ तिल न महातम आख वखाणै॥ (१६-१६-२)
उसतति विच लख उसततीं पल उसतति अंदर हैराणै॥ (१६-१६-३)
अवरज विच लख अचरजा अचरज अचरज चोज विडाणै॥ (१६-१६-४)
विसमादी विसमाद ल्ख विसमादहुं विसमाद वखाणै॥ (१६-१६-५)
अब गति गति अत अगम है अकथ कथा आखाण वखाणै॥ (१६-१६-६)
लख परवाण परै परवाणै ॥१६॥ (१६-१६-७)

अगमहुं अगम अगम्म है अगमहुं अत अगम सुणाए॥ (१६-१७-१)
अगमहुं अलख अलख है अलख अलख लख अलख धयाए॥ (१६-१७-२)
अपरम्पर अपरम्परेहुं अपरम्पर अपरम्पर भाए॥ (१६-१७-३)
आगोचर आगोचरहुं आगोचर आगोचर जाए॥ (१६-१७-४)
पारब्रह्म पूरन ब्रह्म साध संगति आगाधि अलाए॥ (१६-१७-५)
गुरमुख सुखफल प्रेम रस भगत वछल हो अछल छलाए॥ (१६-१७-६)

वीह इकीह चड़हाउ चड़हाए ॥१७॥ (१६-१७-७)

पारब्रह्म पूरन ब्रह्म निरंकार आकार बनाया॥ (१६-१८-१)
अबगतगत अगाध बोध गुर मूरत हुइ अलख लखाया॥ (१६-१८-२)
साध संगति सचखंड विच भगतवछल हो अछल छलाया॥ (१६-१८-३)
चारवरन इक वरन होइ आदि पुरख आदेश कराया॥ (१६-१८-४)
धयान मूल दरशन गुरू छिअ दरशन दरशन विच आया॥ (१६-१८-५)
आपे आप न आप जणाया ॥१८॥ (१६-१८-६)

चरन कवल सरनागती साध संगत मिल गुरसिख आए॥ (१६-१६-१)
अमृत दृशट निहाल कर दिब दृशटदे पैरीं पाए॥ (१६-१६-२)
चरणरेण मसतकि तिलक भर्म कर्म दा लेख मिटाए॥ (१६-१६-३)
चरणोदक लै आचमन हउमैं दुबिधा रोग गवाए॥ (१६-१६-४)
पैरीं पै पाखाक होइ जीवन मुकति सहिज घर आए॥ (१६-१६-५)
चरण कवल विच भवर होइ सुखसम्पट मकरंद लुभाए॥ (१६-१६-६)
पूज मूल सतिगुरु चरण दुतीआ नासत लवे न लाए॥ (१६-१६-७)
गुरमुख सुखफल गुर सरणाए ॥१६॥ (१६-१६-८)

शासतर सिमृत वेद लख महा भारथ रामायण मेले॥ (१६-२०-१)
सार गीता लख भागवत जोतक वैद चलंती खेले॥ (१६-२०-२)
चउदह विदया साअंगीत ब्रह्मे बिसन महेसुर भेले॥ (१६-२०-३)
सनकादिक लख नारदा सुक बिआस लख सेख नवेले॥ (१६-२०-४)
ज्ञान ध्यान सिमरन घणे दरशन वरन गुरू बहुचेले॥ (१६-२०-५)
पूरा सतिगुरु गुराँ गुर मंत्र मूल गुर बचन सुहेले॥ (१६-२०-६)
अकथ कथा गुर शबद है नेति नेति नमु नमो सकेले॥ (१६-२०-७)
गुरमुख सुखफल अमृत वेले ॥२०॥ (१६-२०-८)

चार पदार्थ आखीअनि लख पदार्थ हुकमी बंदे॥ (१६-२१-१)
रिधि सिधि निधि लख सेवकीं कामधेन लख वग चरंदे॥ (१६-२१-२)
लख पारस पथरोलीआँ पारजात लख बाग फलंदे॥ (१६-२१-३)
चितवण लख चिंतामणी लख रसाइण करदे छंदे॥ (१६-२१-४)
लख रतन रतनागराँ सभ निधान सभ फल सिमरंदे॥ (१६-२१-५)
लख भगती लख भगत होइ करामात परचे परचंदे॥ (१६-२१-६)
शबद सुरत लिव साध संग प्रेम पिआला अजर जरंदे॥ (१६-२१-७)
गुर किरपा सतसंग मिलंदे ॥२१॥१६॥ (१६-२१-८)

Vaar 17

ੴसितिगुरप्रसादि ॥ (१७-१-१)

सागर अगम अथाह मथ चउदह रतन अमोल कढाए॥ (१७-१-२)
ससीअर सारंग धनुख मद कौस क लछ धनंतर पाए॥ (१७-१-३)
आरम्भा कामधेनु लै पारजात अस अमिउ पीआए॥ (१७-१-४)
ऐराप गज संख बिख देव दान मिल वंड दिवाए॥ (१७-१-५)
माणक मोती हीरिआँ बहु मुले सभ को वरसाए॥ (१७-१-६)
संख समुंदहु सखणा धाहाँ दे दे रोइ सुणाए॥ (१७-१-७)
साध संगत गुर शबद सुण गुर उपदेश न रिदे वसाए॥ (१७-१-८)
निहफल अहिला जनम गवाए ॥१॥ (१७-१-९)

निर्मल नीर सुहावणा सुभर सरवर कवल फुलंदे॥ (१७-२-१)
रूप अनूप सरूप अति गंधसुगंध होइ महकंदे॥ (१७-२-२)
भवरा वासा मंझ वण खोजहिं एको खोज लहंदे॥ (१७-२-३)
लोभ लुभत मकरंद रस दूर दिसंतर आइ मिलंदे॥ (१७-२-४)
सूरज सगन उदोत होइ सरवर कवल धिआन धरंदे॥ (१७-२-५)
डडू चिकड़ वास है कवल सिञान न माण सकंदे॥ (१७-२-६)
साध संगत गुर शबद सुण गुर उपदेश रहित न रहंदे॥ (१७-२-७)
मसतक भाग जिनश्राँ दे मंदे ॥२॥ (१७-२-८)

तीर्थ पुरब संजोग लोग चहुं कुंटा दे आइ जुड़ंदे॥ (१७-३-१)
चार वरन छिअ दरशना नाम दान इशनान करंदे॥ (१७-३-२)
जप तप संजम होम जग वरत नेम कर देव सुणंदे॥ (१७-३-३)
गिआन धिआन सिमरन जुगत देवी देव सथान पुजंदे॥ (१७-३-४)
बगाँ बगे कपड़े कर समाधि अपराधि निवंदे॥ (१७-३-५)
साध संगत गुरशबद सुण गुरमुख पंथ न चाल चलंदे॥ (१७-३-६)
कपट सनेही फल न लहंदे ॥३॥ (१७-३-७)

सावण वण हरीआवले वुठे सुकै अ्क जवाहा॥ (१७-४-१)
तृपतिबबीहे शाँति बूंद सि्प अंदर मोती ओमाहा॥ (१७-४-२)
कदली वणहुं कपूर होइ क्लर कवल न होइ समाहा॥ (१७-४-३)
बिसीअर मुह कालकूट होइ धात सुपात्र कुपात्र दुराहा॥ (१७-४-४)
साध संगति गुरु शबद सुण शाँति न आवै उभे साहा॥ (१७-४-५)

गुरमुख सुखफल पिरमरस मनमुख बदराही बदराहा॥ (१७-४-६)
मनमुख टोटा गुरमुख लाहा ॥४॥ (१७-४-७)

वण वण विच वणासपति इको धरती इको पाणी॥ (१७-५-१)
रंग बरंगी फुल फल साद सुगंध सनबंध विडाणी॥ (१७-५-२)
उळचा सिम्मल झाटला निहफल चील चड़हे असमाणी॥ (१७-५-३)
जलदा वाँस वढाईऐ वंझलीआँ व्जन बेबाणी॥ (१७-५-४)
चंदन वास वणासपति वाँस रहै निरगंध रवाणी॥ (१७-५-५)
साध संगति गुर शबद सुण रिदै न वसै अभाग पराणी॥ (१७-५-६)
हउमैं अंदर भर्म भुलाणी ॥५॥ (१७-५-७)

सूरज जोत उदोत कर चानण करै अनश्रेर गवाए॥ (१७-६-१)
किरत विरत जग वरतमान सभनाँ बंधन मुकत कराए॥ (१७-६-२)
पसु पंखी मिरगावली भाखिआ भाउ अलाउ सुणाए॥ (१७-६-३)
बागी बुरगू सिंङीआँ नाद बाद नीसाण सुणाए॥ (१७-६-४)
घुघू सुझ न सुझई जाइ उजाड़ीं झूत वलाए॥ (१७-६-५)
साध संगत गुरशबद सुण भाउभगत मन भउ न वसाए॥ (१७-६-६)
मनमुख बिरथा जनम गवाए ॥६॥ (१७-६-७)

चंद चकोर परीति है जगमग जोति उदोत करंदा॥ (१७-७-१)
कृख बृखहुइ सफल फल सीतल सीत अमिउ वरसंदा॥ (१७-७-२)
नारि भतार पिआर कर सिहजा भोग संजोग वणंदा॥ (१७-७-३)
सभनाँ रात मिलावड़ा चकवी चकवा मिल विछड़ंदा॥ (१७-७-४)
साध संगति गुरशबद सुण कपट सनेह न थेह लहंदा॥ (१७-७-५)
मजलस आवे लसण खाइ गंधी वासु मचाए गंधा॥ (१७-७-६)
दूजा भाउ मंदी हूं मंदा ॥७॥ (१७-७-७)

खट रस मिठ रस मेलकै छती भोजन होन रसोई॥ (१७-८-१)
जेवणहार जिवालीऐ चार वरन छिअ दरशन लोई॥ (१७-८-२)
तृपति भगति कहि होइ जिस जिहबा साउसिञाणै सोई॥ (१७-८-३)
कड़छी साउ न सम्भलै छतीह बिंजन विच संजोई॥ (१७-८-४)
रती रतक नार लै रतनाँ अंदर हार परोई॥ (१७-८-५)
साध संगत गुरशबद सुण गुर उपदेश अवेस न होई॥ (१७-८-६)
कपट सनेह न दरगह ढोई ॥८॥ (१७-८-७)

नदीआँ नाले वाहड़े गंग संग मिल गंग हुवंदे॥ (१७-९-१)
अठ सठ तीर्थ सेंवदे देवी देवा सेव करंदे॥ (१७-९-२)
लोक देव गुण गिआन विच पतित उधारण नाँउ सुणंदे॥ (१७-९-३)
हसती नीर नवालीअनि बाहरि निकल छार छरंदे॥ (१७-९-४)
साध संग गुर शबद सुण गुरु उपदेश न चित धरंदे॥ (१७-९-५)
तुम्मे अमृत संजीऐ बीजै अमृत फल न फलंदे॥ (१७-९-६)
कपट सनेह न थेह पूजंदे ॥९॥ (१७-९-७)

राजे दे सउ राणीआँ सेजै आवै वारो वारी॥ (१७-१०-१)
सळभे ही पटराणीआँ राजे इक दूं इक पिआरी॥ (१७-१०-२)
सभना राजा रावणा सुंदर मंदर सेज सवारी॥ (१७-१०-३)
संतत सभना राणीआँ इक अध का संढ विचारी॥ (१७-१०-४)
दोस न राजे राणीऐ पूरब लिखत न मिटे लिखारी॥ (१७-१०-५)
साध संगत गुरु शबद सुण गुरु उपदेश न मन उरधारी॥ (१७-१०-६)
कर्म हीण दुरमति हितकारी ॥१०॥ (१७-१०-७)

अशट धात इक धात होइ सभ को कंचन आख वखाणै॥ (१७-११-१)
रूप अनूप सरूप होइ मुल अमुल पंच परवाणै॥ (१७-११-२)
पथर पारस परसीऐ पारस होइ न कुल अभमाणै॥ (१७-११-३)
पाणी अंदर सदीऐ तड़भड़ डुबै भार भुलाणै॥ (१७-११-४)
चित कठोर न भिजई रहै निकोर घड़े भन्न जाणै॥ (१७-११-५)
अगीं अंदर फुट जाइ अहिरण घन अंदर हैराणै॥ (१७-११-६)
साध संगत गुरु शबद सुण गुर उपदेश न अंदर आणै॥ (१७-११-७)
कपट सनेह न होइ धिङाणै ॥११॥ (१७-११-८)

माणक मोती मानसर निहचल नीर सुथाउं सुहंदा॥ (१७-१२-१)
हंस वंस निहचल मती संगति पंगति साथ बहंदा॥ (१७-१२-२)
माणक मोती चोग चुग माण महत अनंद वधंदा॥ (१७-१२-३)
काउं निथाउं निनाउ है हंसाँ विच उदास होवंदा॥ (१७-१२-४)
भख अभख अभख भख वण वण अंदर भर्म भवंदा॥ (१७-१२-५)
साध संगत गुरु शबद सुण तन अंदर मन थिर न रहंदा॥ (१७-१२-६)
बजर कपाट न खुलै जंदा ॥१२॥ (१७-१२-७)

रोगी माणस होइकै फिरदा बाहले वैद पुछंदा॥ (१७-१३-१)
कचे वैद न जाणनी वेदन दारू रोगी संदा॥ (१७-१३-२)

होरो दारू रोग होर होइ पचाइड़ दुख सहंदा॥ (१७-१३-३)
आवै वैद सुवैद घरि दारू दस रोग लाहंदा॥ (१७-१३-४)
संजम रहै न खाइ पथ खळटा मिठा साउ चखंदा॥ (१७-१३-५)
दोस न दारू वैद नों विण संजम नित रोग वधंदा॥ (१७-१३-६)
कपट सनेही होइकै साध संगति विच आइ बहंदा॥ (१७-१३-७)
दुरमति दूजै भाइ पचंदा ॥१३॥ (१७-१३-८)

चोआ चंदन मेद लै मेल कपूर कथूरी संदा॥ (१७-१४-१)
सभ सुगंध रलाइकै गुर गाँधी अरगजा करंदा॥ (१७-१४-२)
मजलस आवे साहिबा गुण अंदर होइ गुण महकंदा॥ (१७-१४-३)
गदहा देही खउलीऐ सार न जाणै नरक भवंदा॥ (१७-१४-४)
साध संगति गुरशबद सुण भाउ भगत हिरदे न धरंदा॥ (१७-१४-५)
अन्नाँ अखीं होवई बोला कन्नी सुण न सुणंदा॥ (१७-१४-६)
बधा चटी जाइ भरंदा ॥१४॥ (१७-१४-७)

धोते होवन उजले पाट पटम्बर खरे अमोले॥ (१७-१५-१)
रंग बरंगी रंगीअनि सभे रंग सुरंग अडोले॥ (१७-१५-२)
साहिब लै लै पहिन दे रूप रंग रसवस निकोले॥ (१७-१५-३)
सोभावंत सुहावणे चज अचार सींगार विचोले॥ (१७-१५-४)
काला कम्बल उजला होइ न धोते रंग निरोले॥ (१७-१५-५)
साध संगति गुर शबद सुण झाकै अंदर नीर विरोले॥ (१७-१५-६)
कपट सनेही उजड़ खोले ॥१५॥ (१७-१५-७)

खेते अंदर जम्मकै सभदूं उतम होइ विखाले॥ (१७-१६-१)
बुट वडा कर फैलदा होइ चुह चहा आप समाले॥ (१७-१६-२)
खेत सफल होइ लावणी छुटन तिल बूआड़ निराले॥ (१७-१६-३)
निहफल सारे खेत विच जिउं सरवाड़ कमाद विचाले॥ (१७-१६-४)
साध संगत गुर शबद सुण कपट सनेह करन बेताले॥ (१७-१६-५)
निहफल जनम अकारथा हलत पलत होवहि मुहकाले॥ (१७-१६-६)
जमपुर जम जंदार हवाले ॥१६॥ (१७-१६-७)

उजल कैहाँ चिलकणा थाली जेवण जूठी होवै॥ (१७-१७-१)
जूठि सुआहूं माँजीऐ गंगा जल अंदर लै धोवै॥ (१७-१७-२)
बाहरि सुचा धोतिआँ अंदर कालख अंत विगोवै॥ (१७-१७-३)
मन जूठे तन जूठ है थुक पवै मूंहि वजे रोवै॥ (१७-१७-४)

साध संगति गुर शबद सुण कपट सनेही ग्लाँ गोवै॥ (१७-१७-५)
गलीं तृपति न होवई खंड खंड कर साउ न भोवै॥ (१७-१७-६)
मखण खाइ न नीर विलोवै ॥१७॥ (१७-१७-७)

रुखाँ विच कुरुख हन दोवें अरंड कनेर दुआले॥ (१७-१८-१)
अरंड फलै अरडोलीआँ फल अंदर बी चित मिताले॥ (१७-१८-२)
निबहै नाहीं निजड़ा हर वरिआई होइ उचाले॥ (१७-१८-३)
कलीआँ पवन कनेर नों दुरमति विच दुरगंध दिखाले॥ (१७-१८-४)
बाहर लाल गुलाल होइ अंदर चिटा दुबिधा नाले॥ (१७-१८-५)
साध संगत गुर शबद सुण गणती विच भवै भर नाले॥ (१७-१८-६)
कपट सनेह खेह मुहि काले ॥१८॥ (१७-१८-७)

वण विच फलै वणासपति बहु रस गंध सुगंध सुहंदे॥ (१७-१६-१)
अम्ब सदा फल सोहिने आड़ू सेब अनार फलंदे॥ (१७-१६-२)
दाख बिजउरी जामणू खिरणी तूत खजूर अनंदे॥ (१७-१६-३)
पीलूं पेंझू बेर बहु केले ते अखरोट बणंदे॥ (१७-१६-४)
मूल न भावन अ्क टिड अमृत फल तज अक वसंदे॥ (१७-१६-५)
जे थण जोक लवाईऐ दुध न पीऐ लोहू गंदे॥ (१७-१६-६)
साध संगति गुर शबद सुण गणती अंदर झाक झखंदे॥ (१७-१६-७)
कपट सनेह न थेह चड़हंदे ॥१६॥ (१७-१६-८)

ड्डू बगुले संख लख अक जवाहें बिसीअर काले॥ (१७-२०-१)
सिम्बल घुघू चकवीआँ कड़छ हसत लख संढी नाले॥ (१७-२०-२)
प्थर काँव रोगी घणे गदहा काले कम्बल भाले॥ (१७-२०-३)
कैहै तिल बूआड़ लख अक टिड अरंड तुम्मे चितराले॥ (१७-२०-४)
कली कनेर वखाणीऐ सब अवगुण मैं तन भीहाले॥ (१७-२०-५)
साध संगति गुर शबद सुण गुर उपदेश न रिदे सम्हाले॥ (१७-२०-६)
ध्रिग जीवण बेमुख बेताले ॥२०॥ (१७-२०-७)

लख निंदक लख बेमुखाँ दूत दुशट लख लूण हरामी॥ (१७-२१-१)
स्वाम ध्रोही अकिरतघण चोर जार लख लख पहिनामी॥ (१७-२१-२)
बाम्हण गाईं वंस घात लाइतबार हज़ार असामी॥ (१७-२१-३)
कूड़िआर गुरु गोप लख गुनहगार लख लख बदनामी॥ (१७-२१-४)
अपराधी बहु पतित लख अवगुणिआर खुआर खुनामी॥ (१७-२१-५)
लख लिबासी दगा बाज़ लख शैतान सलाम सलामी॥ (१७-२१-६)

तूं वेखहि हउ मुकराँ हउं कपटी तूं अंतरजामी॥ (१७-२१-७)
पतित उधारण बिरद सुआमी ॥२१॥१७॥ (१७-२१-८)

Vaar 18

ੴ सतिगुरप्रसादि॥ (१८-१-१)

इक कवाउ पसाउ कर ओअंकार अनेक अकारा॥ (१८-१-२)
पउण पाणी बैसंतरो धरति अगास निवास विथारा॥ (१८-१-३)
जल थल तरवर परबताँ जीअ तंत आगणत अपारा॥ (१८-१-४)
इक वरभंड अखंड है लख वरभंड पलक परवारा॥ (१८-१-५)
कुदरति कीम न जाणीऐ केवड कादर सिरजणहारा॥ (१८-१-६)
अंत बिअंत न पारावारा ॥१॥ (१८-१-७)

केवड वडा आखीऐ वडे दी वडी वडिआई॥ (१८-२-१)
वडी हूं वडा वखाणीऐ सुण सुण आखन आख सुणाई॥ (१८-२-२)
रोम रोम विच रखिओन कर वरभंड करोड़ समाई॥ (१८-२-३)
इक कवाउ पसाउ जिस तोलि अतोल न तुल तुलाई॥ (१८-२-४)
वेद कतेबहुं बाहरा अकथ कहाणी कथी न जाई॥ (१८-२-५)
अबगति गत किव अलख लखाई ॥२॥ (१८-२-६)

जीउ पाइ तनु साजिआ मूंह अ्खीं नक कन्न सवारे॥ (१८-३-१)
हथ पैर दे दात कर शबद सुरति सुभ दिशट दुआरे॥ (१८-३-२)
किरत विरत परकिरत बहु सास गिरास निवास संजारे॥ (१८-३-३)
राग रंग रस परस दे गंध सुगंध संध परकारे॥ (१८-३-४)
छादन भोजन बुधि बल टेक बिबेक वीचार वीचारे॥ (१८-३-५)
दातै कीमति ना पवै बेशुमार दातार पिआरे॥ (१८-३-६)
लेख अलेख असंख अपार ॥३॥ (१८-३-७)

पंज तत परवाण कर खाणीं चार जगत उपाया॥ (१८-४-१)
लख चउरासी जूनि विच आवा गवण चलित वरताया॥ (१८-४-२)
इकस इकस जूनि विच जीअजंत अणगणत वधाइआ॥ (१८-४-३)
लेखे अंदर सभ को सभनाँ मसतक लेख लिखाया॥ (१८-४-४)
लेखै सास गिरास दे लेख लिखारी अंत न पाया॥ (१८-४-५)
आप अलख न अलख लखाया ॥४॥ (१८-४-६)

भै विच धरति अगास है निराधार भै भार धराया॥ (१८-५-१)
पउण पाणी बैसंतरो भै विच रखै मेल मिलाया॥ (१८-५-२)

पाणी अंदर धरति धर विण थम्माँ आगास रहाया॥ (१८-५-३)
काठै अंदर अगनि धर कर परफुलत सुफल फलाया॥ (१८-५-४)
नवीं दुआरीं पवण धर भै विच सूरज चंद चलाया॥ (१८-५-५)
निरभउ आप निरंजन राया ॥५॥ (१८-५-६)

लख असमाण उचाण चड़ह उळचा होइ न अम्बड़ सकै॥ (१८-६-१)
उची हूं उळचा घणा थाउं गिराउं न नाउं अथकै॥ (१८-६-२)
लख पाताल नीवाण जाइ नीवाँ होइ न नीवें तकै॥ (१८-६-३)
पूरब पछम उतराधि दखन फेर चउफेर न ढकै॥ (१८-६-४)
ओड़क मूल न लभई ओपत परलउ अखि फरकै॥ (१८-६-५)
फुलाँ अंदर वास महकै ॥६॥ (१८-६-६)

ओअंकार अकार कर थित न वार न माहु जणाया॥ (१८-७-१)
निरंकार अकार विण एकंकार न अलख लखाया॥ (१८-७-२)
आपे आप उपाइकै आपे अपणा नाउं धराया॥ (१८-७-३)
आदि पुरख अदेस है हैभी होसी होंदा आया॥ (१८-७-४)
आदि न अंत बिअंत है आपे आप न आप गणाया॥ (१८-७-५)
आपे आप उपाइ समाया ॥७॥ (१८-७-६)

रोम रोम विच रखिओन कर वरभंड करोड़ समाई॥ (१८-८-१)
केवड वडा आखीऐ कित घर वसै केवड जाई॥ (१८-८-२)
इककवाउ अमाउ है लख दरीआउ न कीमति पाई॥ (१८-८-३)
परवदगार अपार है पारावार न अलख लखाई॥ (१८-८-४)
एवड वडा होइकै किथे रहिआ आप लुकाई॥ (१८-८-५)
सुर नर नाथ रहै लिवलाई ॥८॥ (१८-८-६)

लख दरियाउ कवाउ विच अति असगाह अथाह वहंदे॥ (१८-९-१)
आदि न अंत बिअंत है अगम अगोचर फेर फिरंदे॥ (१८-९-२)
अलख अपार वखाणीऐ पारावार न पार लहंदे॥ (१८-९-३)
लहिर तरंग निसंग लख सागर संगम रंग रवंदे॥ (१८-९-४)
रतन पदार्थ लख लख मुल अमुल न तुल तुलंदे॥ (१८-९-५)
सदके सिरजण हार सिरंदे ॥९॥ (१८-९-६)

परवदगार सलाहीऐ सिरठि उपाई रंग बिरंगी॥ (१८-१०-१)
राज़क रिज़क सम्बाहदा सभना दात करे अणमंगी॥ (१८-१०-२)

किसै जिवेहा नाहि को दुबिधा अंदर मंदी चंगी॥ (१८-१०-३)
पारब्रह्म निरलेप है पूरन ब्रह्म सदा सहलंगी॥ (१८-१०-४)
वरना चिहना बाहिरा सभना अंदर है सरबंगी॥ (१८-१०-५)
पउण पाणी बैसंतर संगी ॥१०॥ (१८-१०-६)

ओअंकार अकार कर मखी इक उपाई माया॥ (१८-११-१)
तिन्न लोअ चौदाँ भवन जल थल महीअल छल कर छाया॥ (१८-११-२)
ब्रह्मा बिशन महेश त्रै दस अवतार बज़ार नचाया॥ (१८-११-३)
जती सती संतोखीआँ सिध नथ बहु पंथ भवाया॥ (१८-११-४)
काम करोध विरोध विच लोभ मोह कर ध्रोह लड़ाया॥ (१८-११-५)
हउमै अंदर सभको सेरहूं घट न किनै अखाया॥ (१८-११-६)
कारण करते आप लुकाया ॥११॥ (१८-११-७)

पातिशाहाँ पतिशाह है अबिचल राज वडी वडिआई॥ (१८-१२-१)
केवड तखत वखाणीऐ केवड महल केवड दरगाही॥ (१८-१२-२)
केवड सिफत सलाहीऐ केवड माल मुलख अवगाही॥ (१८-१२-३)
केवड माण महत है केवड लसकर सेव सिपाही॥ (१८-१२-४)
हुकमै अंदर सभ को केवड हुकम न बेपरवाही॥ (१८-१२-५)
होरस पुछ न मता निबाही ॥१२॥ (१८-१२-६)

लख लख ब्रह्मै वेद पड़ह इकस अखर भेद न जाता॥ (१८-१३-१)
जोग धिआन महेश लख रूप न रेख न भेख पछाता॥ (१८-१३-२)
लख अवतार अकार कर तिल वीचार न बिशन पछाता॥ (१८-१३-३)
लख लख नउतन नाउं लै लख लख शेख विशेख न ताता॥ (१८-१३-४)
चिर जीवन बहु हंढणे दरसन पंथ न सबद सिञाता॥ (१८-१३-५)
दात लुभाइ विसारन दाता ॥१३॥ (१८-१३-६)

निरंकार आकरकर गुर मूरति होइ धिआन धराया॥ (१८-१४-१)
चार वरन गुरसिख कर साध संगत सच खंड वसाया॥ (१८-१४-२)
वेद कतेबहुं बाहरा अकथ कथा गुर सबद सुणाया॥ (१८-१४-३)
वीहाँ अंदर वरतमान गुरमुख होइ अकीह लखाया॥ (१८-१४-४)
माया विच उदास कर नाम दान इशनान दिड़ाया॥ (१८-१४-५)
बारह पंथ इकत्र कर गुरमुख गाडी राह चलाया॥ (१८-१४-६)
पति पउड़ी चड़ निज घर आया ॥१४॥ (१८-१४-७)

गुरमुख मारग पैर धर दुबिधा वाट कुवाट न धाया॥ (१८-१५-१)
सतिगुर दरशन देखके मरदा जाँदा नदर न आया॥ (१८-१५-२)
कन्नी सतिगुर शबद सुण अनहद रुण झुणकार सुणाया॥ (१८-१५-३)
सतिगुर सरणी आइकै निहचल साधू संग मिलाया॥ (१८-१५-४)
चरन कवल मकरंद रस सुख सम्पट विच सहज समाया॥ (१८-१५-५)
पिर्म पिआला अपिओ पिआया ॥१५॥ (१८-१५-६)

साध संगति कर साधना पिर्म पिआला अ्जर जरणा॥ (१८-१६-१)
पैरी पै पाखाक होइ आप गवाइ जीवंदिआँ मरणा॥ (१८-१६-२)
जीवन मुकति वखाणीऐ मर मर जीवन डुब डुब तरणा॥ (१८-१६-३)
शबद सुरत लिवलीण होइ अपिओ पीअणभैऔचर चरणा॥ (१८-१६-४)
अनहद नाद अवेस कर अमृत बाणी निझर झरणा॥ (१८-१६-५)
करन कारन सम्रथ होइ कारन करण न कारण करणा॥ (१८-१६-६)
पतित उधारण असरण सरणा ॥१६॥ (१८-१६-७)

गुरमुख भै विच जम्मणा भै विच रहिणा भै विच चलणा॥ (१८-१७-१)
साध संगत भै भाइ विच भग वछल कर अछल छलणा॥ (१८-१७-२)
जल विच कौल अलिप होइ आस निरास वलेवे वलणा॥ (१८-१७-३)
अहिरण घण हीरे जुग गुरमत निहचल अटल न टलणा॥ (१८-१७-४)
पर उपकार वीचार विच जीअ दया मोम वाँगी ढलणा॥ (१८-१७-५)
चार वरन तम्बोल रस आप गवाइ रलाया रलणा॥ (१८-१७-६)
व्टी तेल दीवा होइ बलणा ॥१७॥ (१८-१७-७)

सत संतोख दइआ धर्म अर्थ करोड़ न ओड़क जाणै॥ (१८-१८-१)
चार पदार्थ आखीअनि होइ लखूण न पल परवाणै॥ (१८-१८-२)
रिधी सिधी लख लख निधान लख तिल न तुलाणै॥ (१८-१८-३)
दरशन दिशटसंजोग लख शबद सुरति लिवलख हैराणै॥ (१८-१८-४)
गिआन धिआन सिमरन असंख भगत जुगत लख नेत वखाणै॥ (१८-१८-५)
पिर्म पिआला सहज घर गुरमुख सुखफल चोज विडाणै॥ (१८-१८-६)
मत बुधि सुधि ल्ख मेल मिलाणै ॥१८॥ (१८-१८-७)

जप तप संजम ल्ख ल्ख होम जग नईवेद करोड़ी॥ (१८-१९-१)
वरत नेम संजम घणे कर्म धर्म लख तंद मरोड़ी॥ (१८-१९-२)
तीर्थ पुरब संजोग लख पुन्न दान उपकारन ओड़ी॥ (१८-१९-३)
देवी देव सरेवणे वर सराप लख जोड़ विछोड़ी॥ (१८-१९-४)

दरशन वरन अवरण लख पूजा अरचा बंधन तोड़ी॥ (१८-१६-५)
लोक वेद गुण गिआन लख जोग भोग लख झाड़ पछोड़ी॥ (१८-१६-६)
सचहुं ओरै सभ किहु लख सिआणप सभा थोड़ी॥ (१८-१६-७)
उपर सच अचार चमोड़ी ॥१६॥ (१८-१६-८)

सतिगुर सचा पातिशाह साध संगति सचु तखत सुहेला॥ (१८-२०-१)
सच शबद टकसाल सच अशटधात इक पारस मेला॥ (१८-२०-२)
सचा अबिचल राज है सच महल नवहाण नवेला॥ (१८-२०-३)
सचा हुकम वरतदा सचा अमर सचो रस केला॥ (१८-२०-४)
सची सिफत सलाह सच सच सलाहण अमृत वेला॥ (१८-२०-५)
सचा गुरमुख पंथ है सच उपदेश न गरब गहेला॥ (१८-२०-६)
आसा विच निरास गति सूचा खेल मेल सचु खेला॥ (१८-२०-७)
गुरमुख सिख गुरू गुर चेला ॥२०॥ (१८-२०-८)

गुरमुख हउमै परहरै मन भावै खसमै दा भाणा॥ (१८-२१-१)
पैरीं पै पाखाक होइ दरगह पावै माण निमाणा॥ (१८-२१-२)
वरतमान विच वरतदा होवणहार सोई परवाणा॥ (१८-२१-३)
कारण करता जो करै सिर धर मन्न करै शुकराणा॥ (१८-२१-४)
राजी होइ रज़ाइ विच दुनीआ अंदर जिउं मिहमाणा॥ (१८-२१-५)
विसमादी विसमाद विच कुदरत कादर नों कुरबाणा॥ (१८-२१-६)
लेप अलेप सदा निरबाणा ॥२१॥ (१८-२१-७)

हुकमै बंदा होइकै साहिब दे हुकमै विच रहिणा॥ (१८-२२-१)
हुलञकमै अंदर सभको सभनाँ अवटण है सहिणा॥ (१८-२२-२)
दिल दरयाउ समाउ कर गरब गवाइ ग्रीबी वहिणा॥ (१८-२२-३)
वीह इकीह उलंघकै साध संगति सिंघासण बहिणा॥ (१८-२२-४)
शबद सुरत लिवलीण होइ अनभउ अघड़ अड़ाए गहिणा॥ (१८-२२-५)
सिदक सबूरी साबता शाकर शुकर न देणा लहिणा॥ (१८-२२-६)
नीर न डुबण अह न दहिणा ॥२२॥ (१८-२२-७)

मिहर मुहबत आशकी इशक मुशक किउं लुकै लुकाया॥ (१८-२३-१)
चंदन वास वणासपत होइ सुगंध न आप गणाया॥ (१८-२३-२)
नदीआँ नाले गंग मिल होइ पवित न आख सुणाया॥ (१८-२३-३)
हीरे हीरा बेधिआ अणी कणी होइ रिदै समाया॥ (१८-२३-४)
साध संगति मिल साध होइ पारस मिल पारस हुइ आया॥ (१८-२३-५)

नेहचल नेहचल गुरमती भगत वछल हुइ अछल छलाया॥ (१८-२३-६)
गुरमुख सुखफल अलख लखाया ॥२३॥१८॥ (१८-२३-७)

Vaar 19

ੴ सतिगुरप्रसादि ॥ (१६-१-१)

गुरमुख एकंकार आप उपाइआ॥ (१६-१-२)
ओअंकार आकार परगटी आइआ॥ (१६-१-३)
पंच त्त विसथार चलित रचाइआ॥ (१६-१-४)
थाणी बाणी चार जगत उपाइआ॥ (१६-१-५)
कुदरत अगम अपारअंत न पाइआ॥ (१६-१-६)
सच नाउं करतार सच समाइआ ॥१॥ (१६-१-७)

लख चोरासीह जूनि फेर फिराइआ॥ (१६-२-१)
मानस जनम दुलम्भ करमी पाइआ॥ (१६-२-२)
उळतम गुरमुख पंथ आप गवाइआ॥ (१६-२-३)
साध संगत रहिरास पैरीं पाइआ॥ (१६-२-४)
नामु दान इशनान सचु दिड़ाइआ॥ (१६-२-५)
शबद सुरति लिवलीण भाणा भाइआ ॥२॥ (१६-२-६)

गुरमुख सुघड़ सुजाण गुर समझाइआ॥ (१६-३-१)
मिहमाणी मिहमाण मजलस आइआ॥ (१६-३-२)
खावाले सो खाण पीऐ पीआइआ॥ (१६-३-३)
करै न गरब गुमानहसै हसाइआ॥ (१६-३-४)
पाहुनड़ा परवाण काज सुहाइआ॥ (१६-३-५)
मजलस कर हैरान उठ सिधाइआ ॥३॥ (१६-३-६)

गोइलड़ा दिन चार गुरमुख जाणीऐ॥ (१६-४-१)
मंझी लै मिहरवान चोज विडाणीऐ॥ (१६-४-२)
वरसै निझरधार अमृत वाणीऐ॥ (१६-४-३)
वंझलीआँ झींगारमजलस माणीऐ॥ (१६-४-४)
गावन माझ मलार सुघड़ सुजाणीऐ॥ (१६-४-५)
हउमै गरब निवार मन वस जाणीऐ॥ (१६-४-६)
गुरमुख शबद विचारसच सिञाणीऐ ॥४॥ (१६-४-७)

वाट वटाऊ रात सराईं वसिआ॥ (१६-५-१)
उठ चलिआ परभात मारग दसिआ॥ (१६-५-२)

नाहि पराई तात न चित रहसिआ॥ (१६-५-३)
मुए न पुछै जात विवाहि न हसिआ॥ (१६-५-४)
दाता करै जु दात न भुखा तसिआ॥ (१६-५-५)
गुरमुख सिमरण वात कवल विगसिआ ॥५॥ (१६-५-६)

दीवाली दी रात दीवे बालीअनि॥ (१६-६-१)
तारे जात सनात अम्बर भालीअनि॥ (१६-६-२)
फुलाँ दी बागात चुण चुण चालीअनि॥ (१६-६-३)
तीरथि जाती जात नैण निहालीअनि॥ (१६-६-४)
हरि चंदुरी झात वसाइ उचालीअनि॥ (१६-६-५)
गुरमुख सुखफल दात शबद सम्हालीअनि ॥६॥ (१६-६-६)

गुरमुख मन परगास गुरू उपदेसिआ॥ (१६-७-१)
पेईअड़ै घर वासु मिटे अंदेसिआ॥ (१६-७-२)
आवा विच निरास गिआन अवेसिआ॥ (१६-७-३)
साध संगति रहिरास शबद संदेसिआ॥ (१६-७-४)
गुरमुख दासनि दास मति परवेसिआ॥ (१६-७-५)
सिमरण सास गिरास देस विदेसिआ ॥७॥ (१६-७-६)

नदी नाव संजोग मेल मिलाइआ॥ (१६-८-१)
सुहणे अंदरि भोग राज कमाइआ॥ (१६-८-२)
कदे हरख कदे सोग तरवर छाइआ॥ (१६-८-३)
कटै हउमैं रोग न आपि गणाइआ॥ (१६-८-४)
घर ही अंदर जोग गुरमुख पाइआ॥ (१६-८-५)
होवण हार सु होग गुर समझाइआ ॥८॥ (१६-८-६)

गुरमुख साधू संग चलण जाणिआ॥ (१६-६-१)
चेत बसंत सु रंग सभ रंग माणिआ॥ (१६-६-२)
सावण लहर तरंग नीर निवाणिआ॥ (१६-६-३)
सजण मेल सु ढंग चोज विडाणिआ॥ (१६-६-४)
गुरमुख पंथ निपंग दर खरवाणिआ॥ (१६-६-५)
गुरमति मेल अभंग सति सुहाणिआ ॥६॥ (१६-६-६)

गुरमुख सफल जनम्म जग विच आइआ॥ (१६-१०-१)
गुरमति पूर करम्म आप गवाइआ॥ (१६-१०-२)

भाउ भगति कर कम्म सुखफल पाइआ॥ (१६-१०-३)
गुर उपदेश अगम्म रिद वसाइआ॥ (१६-१०-४)
धीरज धुजा धरम्म सहिज सुभाइआ॥ (१६-१०-५)
सहै न दुख सहम्म भाणा भाइआ ॥१०॥ (१६-१०-६)

गुरमुख दुरलभ देह अउसर जाणदे॥ (१६-११-१)
साध संगत असनेह सभ रंग माणदे॥ (१६-११-२)
शबद सुरति लिव लेह आख अखाणदे॥ (१६-११-३)
देही विच बिदेह सच सिञाणदे॥ (१६-११-४)
दुबिधा ओह न एह इक पछाणदे॥ (१६-११-५)
चार दिहाड़े थेह मन विच आणदे ॥११॥ (१६-११-६)

गुरमुख पर उपकारी विरला आइआ॥ (१६-१२-१)
गुरमुख सुख फल पाइ आप गवाइआ॥ (१६-१२-२)
गुरमुख साखी शबद सिख सुणाइआ॥ (१६-१२-३)
गुरमुख शबद वीचार सूच कमाइआ॥ (१६-१२-४)
सच रिदै मुहि सच सच सुहाइआ॥ (१६-१२-५)
गुरमुख जनम सवार जगत तराइआ ॥१२॥ (१६-१२-६)

गुरमुख आप गवाइ आप पछाणिआ॥ (१६-१३-१)
गुरमुख सत संतोख सहिज समाणिआ॥ (१६-१३-२)
गुरमुख धीरज धर्म दइआ सुख माणिआ॥ (१६-१३-३)
गुरमुख अर्थ वीचार शबद वखाणिआ॥ (१६-१३-४)
गुरमुख होंदे ताण रहे निताणिआ॥ (१६-१३-५)
गुरमुख दरगह माण होइ निमाणिआ ॥१३॥ (१६-१३-६)

गुरमुख जनम सवार दरगह चलिआ॥ (१६-१४-१)
सची दरगह जाइ सचा पिड़ मलिआ॥ (१६-१४-२)
गुरमुख भोजन भाउ चाउ अललिआ॥ (१६-१४-३)
गुरमुख निहचल चित न हलै हलिआ॥ (१६-१४-४)
गुरमुख सच अलाउ भली हूं भलिआ॥ (१६-१४-५)
गुरमुख सदे जान आवन घलिआ ॥१४॥ (१६-१४-६)

गुरमुख साध असाध साध वखाणीऐ॥ (१६-१५-१)
गुरमुख बुधि बिबेक बिबेकी जाणीऐ॥ (१६-१५-२)

गुरमुख भाउ भगति भगत पछाणीऐ॥ (१६-१५-३)
गुरमुख ब्रह्म गिआन गिआनी बाणीऐ॥ (१६-१५-४)
गुरमुख पूरण मति शबद नीसाणीऐ॥ (१६-१५-५)
गुरमुख पउड़ी पति पिर्म रस माणीऐ ॥१५॥ (१६-१५-६)

सच नाउं करतार गुरमुख पाईऐ॥ (१६-१६-१)
गुरमुख ओअंकार शबद धिआईऐ॥ (१६-१६-२)
गुरमुख शबद वीचार शबद लिव लाईऐ॥ (१६-१६-३)
गुरमुख सच अचार सच कमाईऐ॥ (१६-१६-४)
गुरमुख मोख दुआर सहज समाईऐ॥ (१६-१६-५)
गुरमुख नाम अधार न पछोताईऐ ॥१६॥ (१६-१६-६)

गुरमुख पारस परस पारस होईऐ॥ (१६-१७-१)
गुरमुख होइ अपरस दरस अलोईऐ॥ (१६-१७-२)
गुरमुख ब्रह्म धिआन दुबिधा खोईऐ॥ (१६-१७-३)
गुरमुख पर धन रूप निंद न गोईऐ॥ (१६-१७-४)
गुरमुख अमृत नाउ शबद विलोईऐ॥ (१६-१७-५)
गुरमुख हसदा जाइ अंत न रोईऐ ॥१७॥ (१६-१७-६)

गुरमुख पंडित होइ जग परबोधीऐ॥ (१६-१८-१)
गुरमुख सत संतोख न काम विरोधीऐ॥ (१६-१८-२)
गुरमुख आप गवाइ अंदर सोधीऐ॥ (१६-१८-३)
गुरमुख है निरवैर न वैर विरोधीऐ॥ (१६-१८-४)
चहुं वरना उपदेस सहिज समोधीऐ॥ (१६-१८-५)
धन्न जणेंदी माउं जोधा जोधीऐ ॥१८॥ (१६-१८-६)

गुरमुख सतिगुर वाह शबद सलाहीऐ॥ (१६-१६-१)
गुरमुख सिफत सलाह सची पातिशाहीऐ॥ (१६-१६-२)
गुरमुख सच सनाहदात इलाहीऐ॥ (१६-१६-३)
गुरमुख गाडी राह सच निबाहीअ॥ (१६-१६-४)
गुरमुख मति अगाह न गहण गहाईऐ॥ (१६-१६-५)
गुरमुख बेपरवाह न बेपरवाहीऐ ॥१६॥ (१६-१६-६)

गुरमुख पूरा तोल न तोलण तोलीऐ॥ (१६-२०-१)
गुरमुख पूरा बोल न बोलन बोलीऐ॥ (१६-२०-२)

गुरमुख मति अडोल न डोलण डोलीऐ॥ (१६-२०-३)
गुरमुख पिर्म अमोल न मोलण मोलीऐ॥ (१६-२०-४)
गुरमुख पंथ निरोल न रोलण रोलीऐ॥ (१६-२०-५)
गुरमुख शबद अलोल पी अमृत झोलीऐ ॥२०॥ (१६-२०-६)

गुरमुख सुखफल पाइ सभ फल पाइआ॥ (१६-२१-१)
रंग सुरंग चड़हाइ सभ रंग लाइआ॥ (१६-२१-२)
गंध सुगंध समाइ बोहि बोहाइआ॥ (१६-२१-३)
अमृत रस तृपताइ सभ रस आइआ॥ (१६-२१-४)
शबद सुरति लिवलाइ अनहद वाइआ॥ (१६-२१-५)
निज घर निहचल जाइ न दहदिस धाइआ ॥२१॥१६॥ (१६-२१-६)

Vaar 20

ੴ सतिगुरप्रसादि ॥ (२०-१-१)

सतिगुर नानक देउ आप उपाइआ॥ (२०-१-२)
गुर अंदर गुरसिखु बबाणै आइआ॥ (२०-१-३)
गुरसिखु है गुर अमर सतिगुर भाइआ॥ (२०-१-४)
रामदासु गुरसिखु गुरु सदवाइआ॥ (२०-१-५)
गुरु अरजनु गुरसिखु परगटी आइआ॥ (२०-१-६)
गुरसिखु हर गोविंद न लुकै लुकाइआ ॥१॥ (२०-१-७)

गुरमुखि पारसु होइ पूज कराइआ॥ (२०-२-१)
असट धात इक धात जोति जगाइआ॥ (२०-२-२)
बावन चंदन होइ बिरख बोहाइआ॥ (२०-२-३)
गुरसिखु सिखु गुर होइ अचरजु दिखाइआ॥ (२०-२-४)
जोती जोति जगाइ दीपु दीपाइआ॥ (२०-२-५)
नीरै अंदरि नीरु मिलै मिलाइआ ॥२॥ (२०-२-६)

गुरमुखि सुख फलु जनमु सतिगुरु पाइआ॥ (२०-३-१)
गुरमुखि पूर करम्मु सरणी आइआ॥ (२०-३-२)
सतिगुर पैरी पाइ नाउं दिड़ाइआ॥ (२०-३-३)
घर ही विचि उदासु न विआपै माइआ॥ (२०-३-४)
गुर उपदेसु कमाइ अलख लखाइआ॥ (२०-३-५)
गुरमुखि जीवन मुकतु आप गवाइआ ॥३॥ (२०-३-६)

गुरमुखि आपु गवाइ न आप गणाइआ॥ (२०-४-१)
दूजा भाउ मिटाइ इकु धिआइआ॥ (२०-४-२)
गुर परमेसरु जाणि सबदु कमाइआ॥ (२०-४-३)
गुरमुखि कार कमाइ सुख फलु पाइआ॥ (२०-४-४)
पिर्म पिआला पाइ अजरु जराइआ ॥४॥ (२०-४-५)

अमृत वेले उठि जाग जगाइआ॥ (२०-५-१)
गुरमुखि तीर्थ नाइ भर्म गवाइआ॥ (२०-५-२)
गुरमुखि मंतु सम्हालि जपु जपाइआ॥ (२०-५-३)
गुरमुखि निहचलु होइ इक मनि धिआइआ॥ (२०-५-४)

मथै टिका लालु नीसाणु सुहाइआ॥ (२०-५-५)
पैरी पै गुर सिख पैरी पाइआ ॥५॥ (२०-५-६)

पैरी पै गुरसिख पैर धुआइआ॥ (२०-६-१)
अमृत वाणी चखि मनु वसि आइआ॥ (२०-६-२)
पाणी पखा पीहि भठु झुकाइआ॥ (२०-६-३)
गुरबाणी सुणि सिखि लिखि लिखाइआ॥ (२०-६-४)
नामु दानु इसनानु कर्म कमाइआ॥ (२०-६-५)
निव चलणु मिठ बोल घालि खवाइआ ॥६॥ (२०-६-६)

गुरसिखाँ गुरसिख मेलि मिलाइआ॥ (२०-७-१)
भाइ भगति गुरपुरब करै कराइआ॥ (२०-७-२)
गुरसिख देवी देव जठेरे भाइआ॥ (२०-७-३)
गुरसिख माँ पिउ वीर कुटम्ब सबाइआ॥ (२०-७-४)
गुरसिख खेती वणजु लाहा पाइआ॥ (२०-७-५)
हंस वंस गुरसिख गुरसिख जाइआ ॥७॥ (२०-७-६)

सजा खबा सउणु न मंनि वसाइआ॥ (२०-८-१)
नारि पुरख नो वेखि न पैरु हटाइआ॥ (२०-८-२)
भाख सुभाख वीचारि न छिक मनाइआ॥ (२०-८-३)
देवी देव न सेवि न पूज कराइआ॥ (२०-८-४)
भम्भल भूसे खाइ न मनु भरमाइआ॥ (२०-८-५)
गुरसिख सचा खेतु बीज फलाइआ ॥८॥ (२०-८-६)

किरति विरति मनु धरमु सचु दिड़ाइआ॥ (२०-९-१)
सचु नाउ करतारु आपु उपाइआ॥ (२०-९-२)
सतिगुर पुरखु दइआलु दइआ करि आइआ॥ (२०-९-३)
निरंकार आकारु सबदु सुणाइआ॥ (२०-९-४)
साध संगति सचु खंड थेहु वसाइआ॥ (२०-९-५)
सचा तखतु बणाइ सलामु कराइआ ॥९॥ (२०-९-६)

गुरसिखा गुरसिख सेवा लाइआ॥ (२०-१०-१)
साध संगति करि सेव सुख फलु पाइआ॥ (२०-१०-२)
तपड़ु झाड़ि विछाइ धूड़ी नाइआ॥ (२०-१०-३)
कोरे मट अणाइ नीरु भराइआ॥ (२०-१०-४)

आणि महा परसादु वंडि खुआइआ ॥१०॥ (२०-१०-५)

होइ बिरख संसारु सिर तलवाइआ॥ (२०-११-१)
निहचलु होइ निवासु सीसु निवाइआ॥ (२०-११-२)
होइ सुफल फलु सफलु वट सहाइआ॥ (२०-११-३)
सिरि करवतु धराइ जहाजु बणाइआ॥ (२०-११-४)
पाणी दे सिरि वाट राहु चलाइआ॥ (२०-११-५)
सिरि करवतु धराइ सीस चड़ाइआ ॥११॥ (२०-११-६)

लोहे तछि तछाइ लोहि जड़ाइआ॥ (२०-१२-१)
लोहा सीसु चड़ाइ नीरि तराइआ॥ (२०-१२-२)
आपनड़ा पुतु पालि न नीरि डुबाइआ॥ (२०-१२-३)
अगरै डोबै जाणि डोबि तराइआ॥ (२०-१२-४)
गुण कीते गुण होइ जगु पतीआइआ॥ (२०-१२-५)
अवगुण सहि गुणु करै घोलि घुमाइआ ॥१२॥ (२०-१२-६)

मन्नै सतिगुर हुकमु हुकमि मनाइआ॥ (२०-१३-१)
भाणा मन्नै हुकमि गुर फुरमाइआ॥ (२०-१३-२)
पिर्म पिआला पीवि अलखु लखाइआ॥ (२०-१३-३)
गुरमुखि अलखु लखाइ न अलखु लखाइआ॥ (२०-१३-४)
गुरमुखि आपु गवाइ न आपु गणाइआ॥ (२०-१३-५)
गुरमुखि सुख फलु पाइ बीज फलाइआ ॥१३॥ (२०-१३-६)

सतिगुर दरसनु देखि धिआन धराइआ॥ (२०-१४-१)
सतिगुर सबदु वीचारि गिआनु कमाइआ॥ (२०-१४-२)
चरण कवल गुर मंतु चिति वसाइआ॥ (२०-१४-३)
सतिगुर सेव कमाइ सेव कराइआ॥ (२०-१४-४)
गुर चेला परचाइ जग परचाइआ॥ (२०-१४-५)
गुरमुखि पंथु चलाइ निज घरि छाइआ ॥१४॥ (२०-१४-६)

जोग जुगति गुरसिख गुर समझाइआ॥ (२०-१५-१)
आसा विचि निरासि निरासु वलाइआ॥ (२०-१५-२)
थोड़ा पाणी अन्नु खाइ पीआइआ॥ (२०-१५-३)
थोड़ा बोलण बोलि न झखि झखाइआ॥ (२०-१५-४)
थोड़ी राती नीद न मोहि फहाइआ॥ (२०-१५-५)

सुहणे अंदरि जाइ न लोभ लुभाइआ ॥१५॥ (२०-१५-६)

मुंद्रा गुर उपदेसु मंत्र सुणाइआ॥ (२०-१६-१)
खिंथा खिमा सिवाइ झोली पति माइआ॥ (२०-१६-२)
पैरी पै पाखाक बिभूत बणाइआ॥ (२०-१६-३)
पिर्म पिआला पत भोजनु भाइआ॥ (२०-१६-४)
डंडा गिआन विचारु दूत सधाइआ॥ (२०-१६-५)
सहज गुफा सतिसंगु समाधि समाइआ ॥१६॥ (२०-१६-६)

सिंङी सुरति विसेखु सबदु वजाइआ॥ (२०-१७-१)
गुरमुखि आई पंथु निज घरु पाइआ॥ (२०-१७-२)
आदि पुरखु आदेसु अलखु लखाइआ॥ (२०-१७-३)
गुर चेले रहरासि मनु परचाइआ॥ (२०-१७-४)
वीह इकीह चड़हाइ सबदु मिलाइआ ॥१७॥ (२०-१७-५)

गुर सिख सुणि गुरसिख सिखु सदाइआ॥ (२०-१८-१)
गुरसिखी गुरसिख सिख सुणाइआ॥ (२०-१८-२)
गुर सिख सुणि करि भाउ मंनि वसाइआ॥ (२०-१८-३)
गुरसिखा गुर सिख गुरसिख भाइआ॥ (२०-१८-४)
गुर सिख गुरसिख संगु मेलि मिलाइआ॥ (२०-१८-५)
चउपड़ि सोलह सार जुग जिणि आइआ ॥१८॥ (२०-१८-६)

सतरंज बाजी खेलु बिसाति बणाइआ॥ (२०-१९-१)
हाथी घोड़े रथ पिआदे आइआ॥ (२०-१९-२)
हुइ पतिसाह वजीर दुइ दल छाइआ॥ (२०-१९-३)
होइ गडावडि जोध जुधु मचाइआ॥ (२०-१९-४)
गुरमुखि चाल चलाइ हाल पुजाइआ॥ (२०-१९-५)
पाइक होइ वजीरु गुरि पहुचाइआ ॥१९॥ (२०-१९-६)

भै विचि निमणि निमि भै विचि जाइआ॥ (२०-२०-१)
भै विचि गुरमुखि पंथि सरणी आइआ॥ (२०-२०-२)
भै विचि संगति साध सबदु कमाइआ॥ (२०-२०-३)
भै विचि जीवनु मुकति भाणा भाइआ॥ (२०-२०-४)
भै विचि जनमु वसारि सहजि समाइआ॥ (२०-२०-५)
भै विचि निज घरि जाइ जाइ पूरा पाइआ ॥२०॥ (२०-२०-६)

गुर परमेसरु जाइ सरणी आइआ॥ (२०-२१-१)
गुर चरणी चितु लाइ न चलै चलाइआ॥ (२०-२१-२)
गुरमति निहचलु होइ निज पद पाइआ॥ (२०-२१-३)
गुरमुखि कार कमाइ भाणा भाइआ॥ (२०-२१-४)
गुरमुखि आपु गवाइ सचि समाइआ॥ (२०-२१-५)
सफलु जनमु जगि आइ जगतु तराइआ ॥२१॥२०॥ (२०-२१-६)

Vaar 21

ੴ सतिगुरप्रसादि॥ (२१-१-१)

पातिसाहा पातिसाहु सति सुहाणीऐ॥ (२१-१-२)
वडा बे परवाह अंतु न जाणीऐ॥ (२१-१-३)
लउबाली दरगह आखि वखाणीऐ॥ (२१-१-४)
कुदरत अगमु अथाहु चोज विडाणीऐ॥ (२१-१-५)
सची सिफति सलाह अकथ कहाणीऐ॥ (२१-१-६)
सतिगुर सचे वाहु सद कुरबाणीऐ ॥१॥ (२१-१-७)

ब्रह्मे बिसन महेस लख धिआइदे॥ (२१-२-१)
नारद सारद सेस कीरति गाइदे॥ (२१-२-२)
गण गंधरब गणेस नाद वजाइदे॥ (२१-२-३)
छिअ दरसन करि वेस साँग बणाइदे॥ (२१-२-४)
गुर चेले उपदेस कर्म कमाइदे॥ (२१-२-५)
आदि पुरखु आदेसु पारु न पाइदे ॥२॥ (२१-२-६)

पीर पैकम्बर होइ करदे बंदगी॥ (२१-३-१)
सेख मसाइक होइ करि मुहछंदगी॥ (२१-३-२)
गउस कुतब कई लोइ दर बखसंदगी॥ (२१-३-३)
दर दरवेस खलोइ मसत मसंदगी॥ (२१-३-४)
वली-उलह सुणि सोइ करनि पसंदगी॥ (२१-३-५)
दरगह विरला कोइ बखत बिलंदगी ॥३॥ (२१-३-६)

सुणि आखाणि वखाणु आखि वखाणिआ॥ (२१-४-१)
हिंदू मुसलमाणु न सचु सिञाणिआ॥ (२१-४-२)
दरगह पति परवाणु माणु निमाणिआ॥ (२१-४-३)
वेद कतेब कुराणु न अखर जाणिआ॥ (२१-४-४)
दीन दुनी हैराणु चोज विडाणिआ॥ (२१-४-५)
कादर नो कुरबाणु कुदरति माणिआ ॥४॥ (२१-४-६)

लख लख रूप सरूप अनूप सिधावही॥ (२१-५-१)
रंग बिरंग सुरंग तरंग बणावही॥ (२१-५-२)
राग नाद विसमाद गुण निधि गावही॥ (२१-५-३)

रस कस लख सुआद चखि चखावही॥ (२१-५-४)
गंध सुगंध करोड़ि महि महकावई॥ (२१-५-५)
गैर महलि सुलतान महलु न पावही ॥५॥ (२१-५-६)

सिव सकती दा मेलु दुबिधा होवई॥ (२१-६-१)
त्रै गुण माइआ खेलु भरि भरि धोवई॥ (२१-६-२)
चारि पदार्थ भेलु हार परोवई॥ (२१-६-३)
पंजि तत परवेल अंति विगोवई॥ (२१-६-४)
छिअ रुति बारह माह हसि हसि रोवई॥ (२१-६-५)
रिधि सिधि नव निधि नीद न सोवई ॥६॥ (२१-६-६)

सहस सिआणप लख कंमि न आवही॥ (२१-७-१)
गिआन धिआन उनमानु अंतु ना पावही॥ (२१-७-२)
लख ससीअर लख भानु अहिनिसि ध्यावही॥ (२१-७-३)
लख परकिरति पराण कर्म कमावही॥ (२१-७-४)
लख लख गरब गुमान लळज लजावही॥ (२१-७-५)
लख लख दीन ईमान ताड़ी लावही॥ (२१-७-६)
भाउ भगति भगवान सचि समावही ॥७॥ (२१-७-७)

लख पीर पतिसाह परचे लावही॥ (२१-८-१)
जोग भोग लख राह संगि चलावही॥ (२१-८-२)
दीन दुनी असगाह हाथि न पावही॥ (२१-८-३)
कटक मुरीद पनाह सेव कमावही॥ (२१-८-४)
अंतु न सिफति सलाह आखि सुणावही॥ (२१-८-५)
लउबाली दरगाह खड़े धिआवही ॥८॥ (२१-८-६)

लख साहिबि सिरदार आवण जावणे॥ (२१-९-१)
लख वडे दरबार बणत बणावणे॥ (२१-९-२)
दरब भरे भंडार गणत गणावणे॥ (२१-९-३)
परवारै साधार बिरद सदावणे॥ (२१-९-४)
लोभ मोह अहंकार धोह कमावणे॥ (२१-९-५)
करदे चारु वीचारि दहदिसि धावणे॥ (२१-९-६)
लख लख बुजरकवार मन परचावणे ॥९॥ (२१-९-७)

लख दाते दातार मंगि मंगि देवही॥ (२१-१०-१)

अउतरि लख अवतार कार करेवही॥ (२१-१०-२)
अंतु न पारावारु खेवट खेवही॥ (२१-१०-३)
वीचारी विचारि भेतु न देवही॥ (२१-१०-४)
करतूती आवारि करि जसु लेवही॥ (२१-१०-५)
लख लख जेवणहार जेवण जेवही॥ (२१-१०-६)
लख दरगह दरबार सेवक सेवही ॥१०॥ (२१-१०-७)

सूर वीर वरीआम जोरु जणावही॥ (२१-११-१)
सुणि सुणि सुरत लख आखि सुणावही॥ (२१-११-२)
खोजी खोजनि खोजि दहि दिसि धावही॥ (२१-११-३)
चिर जीवै लख होइ न ओड़कु पावही॥ (२१-११-४)
खरे सिआणै होइ न मनु समुचावही॥ (२१-११-५)
लउबाली दरगाह चोटाँ खावही ॥११॥ (२१-११-६)

हिकमति लख हकीम चलत बणावही॥ (२१-१२-१)
आकल होइ फहीम मते मतावही॥ (२१-१२-२)
गाफल होइ गनीम वाद वधावही॥ (२१-१२-३)
लड़ि लड़ि करनि मुहीम आपु जणावही॥ (२१-१२-४)
होइ जदीद कदीम न खुदी मिटावही॥ (२१-१२-५)
साबरु होइ हलीम आपु गवावही ॥१२॥ (२१-१२-६)

लख लख पीर मुरीद मेल मिलावही॥ (२१-१३-१)
सुहदे लख सहीद जारत लावही॥ (२१-१३-२)
लख रोजे लख ईद निवाज करावही॥ (२१-१३-३)
करि करि गुफत सुनीद मन परचावही॥ (२१-१३-४)
हुजरे कुलफ कलीद जुहद कमावही॥ (२१-१३-५)
दरि दरवेस रसीद आपु जणावही ॥१३॥ (२१-१३-६)

उचे महल उसारि विछाइ विछावणे॥ (२१-१४-१)
वडे दुनीआदार नाउ गणावणे॥ (२१-१४-२)
करि गड़ कोट हजार राज कमावणे॥ (२१-१४-३)
लख लख मनसबदार वजह वधावणे॥ (२१-१४-४)
पूर भरे अहंकार आवन जावणे॥ (२१-१४-५)
तितु सचे दरबार खरे डरावणे ॥१४॥ (२१-१४-६)

तीर्थ लख करोड़ि पुरबी नावणा॥ (२१-१५-१)
देवी देव सथान सेव करावणा॥ (२१-१५-२)
जप तप संजम लख साधि सधावणा॥ (२१-१५-३)
होम जग नईवेद भोग लगावणा॥ (२१-१५-४)
वरत नेम लख दान कर्म कमावणा॥ (२१-१५-५)
लउबाली दरगाह पखंड न जावणा ॥१५॥ (२१-१५-६)

पोपलीआँ भरनालि लख तरंदीआँ॥ (२१-१६-१)
ओड़क ओड़क भालि सुधि न लहंदीआँ॥ (२१-१६-२)
अनल मनल करि खिआल उमगि उडंदीआँ॥ (२१-१६-३)
उछलि करनि उछाल न उभि चड़हंदीआँ॥ (२१-१६-४)
लख अगास पताल करि मुहछंदीआँ॥ (२१-१६-५)
दरगह इक रवाल बंदे बंदीआँ ॥१६॥ (२१-१६-६)

त्रै गुण माइआ खेलु करि देखालिआ॥ (२१-१७-१)
खाणी बाणी चारि चलतु उठालिआ॥ (२१-१७-२)
पंजि तत उतपति बंधि बहालिआ॥ (२१-१७-३)
छिअ रुति बारह माह सिरजि सम्हालिआ॥ (२१-१७-४)
अहिनिसि सूरज चंदु दीवे बालिआ॥ (२१-१७-५)
इकु कवाउ पसाउ नदरि निहालिआ ॥१७॥ (२१-१७-६)

कुदरति इकु कवाउ थाप उथापदा॥ (२१-१८-१)
तिदू लख दरीआउ न ओड़कु जापदा॥ (२१-१८-२)
लख ब्रहमंड समाउ न लहरि विआपदा॥ (२१-१८-३)
करि करि वेखै चाउ लख परतापदा॥ (२१-१८-४)
कउणु करै अरथाउ वर न सराप दा॥ (२१-१८-५)
लहै न पछोताउ पुन्नु न पाप दा ॥१८॥ (२१-१८-६)

कुदरति अगमु अथाहु अंतु न पाईऐ॥ (२१-१९-१)
कादरु बेपरवाहु किन परचाईऐ॥ (२१-१९-२)
केवडु है दरगाह आखि सुणाईऐ॥ (२१-१९-३)
कोइ न दसै राहु कितु बिधि जाईऐ॥ (२१-१९-४)
केवडु सिफति सलाह किउ करि धिआईऐ॥ (२१-१९-५)
अबिगति गति असगाहु न अलखु लखाईऐ ॥१९॥ (२१-१९-६)

आदि पुरखु परमादि अचरजु आखीऐ॥ (२१-२०-१)
आदि अनीलु अनादि सबदु न साखीऐ॥ (२१-२०-२)
वरतै आदि जुगादि न गली गाखीऐ॥ (२१-२०-३)
भगति वछलु अछलादि सहजि सुभाखीऐ॥ (२१-२०-४)
उनमनि अनहदि नादि लिव अभिलाखीऐ॥ (२१-२०-५)
विसमादै विसमाद पूरन पाखीऐ॥ (२१-२०-६)
पूरै गुर परसादि केवल काखीऐ ॥२०॥२१॥ (२१-२०-७)

Vaar 22

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२२-१-१)

निराधार निरंकारु न अलखु लखाइआ॥ (२२-१-२)
होआ एकंकारु आपु उपाइआ॥ (२२-१-३)
ओअंकारि अकारु चलितु रचाइआ॥ (२२-१-४)
सचु नाउ करतारु बिरदु सदाइआ॥ (२२-१-५)
सचा परवदगारु त्रै गुण माइआ॥ (२२-१-६)
सिरठी सिरजणहारु लेखु लिखाइआ॥ (२२-१-७)
सभसै दे आधारु न तोलि तुलाइआ॥ (२२-१-८)
लखिआ थिति न वारु न माहु जणाइआ॥ (२२-१-९)
वेद कतेब वीचारु न आखि सुणाइआ ॥१॥ (२२-१-१०)

निरालम्बु निरबाणु बाणु चलाइआ॥ (२२-२-१)
उडै हंस उचाण किनि पहुचाइआ॥ (२२-२-२)
खम्भी चोज विडाणु आणि मिलाइआ॥ (२२-२-३)
ध्रू चड़िआ असमाणि न टलै टलाइआ॥ (२२-२-४)
दरगह पति परवाणु गुरमुखि धिआइआ ॥२॥ (२२-२-५)

ओड़कु ओड़कु भालि न ओड़कु पाइआ॥ (२२-३-१)
ओड़कु भालणि गए सि फेर न आइआ॥ (२२-३-२)
ओड़कु लख करोड़ि भरमि भुलाइआ॥ (२२-३-३)
आदु वडा विसमादु न अंत सुणाइआ॥ (२२-३-४)
हाथि न पारावारु लहरी छाइआ॥ (२२-३-५)
इकु कवाउ पसाउ न अलखु लखाइआ॥ (२२-३-६)
कादरु नो कुरबाणु कुदरति माइआ॥ (२२-३-७)
आपे जाणै आपु गुरि समझाइआ ॥३॥ (२२-३-८)

सचा सिरजणिहारु सचि समाइआ॥ (२२-४-१)
सचहु पउणु उपाइ घटि घटि छाइआ॥ (२२-४-२)
पवणहु पाणी साजि सीसु निवाइआ॥ (२२-४-३)
तुलहा धरति बणाइ नीर तराइआ॥ (२२-४-४)
नीरहु उपजी अगि वणखंड छाइआ॥ (२२-४-५)
अगी होदी बिरखु सुफल फलाइआ॥ (२२-४-६)

पउण पाणी बैसंतरु मेलि मिलाइआ॥ (२२-४-७)
आदि पुरखु आदेसु खेल रचाइआ ॥४॥ (२२-४-८)

केवडु आखा सचु सचे भाइआ॥ (२२-५-१)
केवडु होआ पउणु फिरै चउवाइआ॥ (२२-५-२)
चंदण वासु निवासु बिरख बोहाइआ॥ (२२-५-३)
खहि खहि वंसु गवाइ वाँसु जलाइआ॥ (२२-५-४)
सिव सकती सहलंगु अंगु जणाइआ॥ (२२-५-५)
कोइल काउ निआउ बचन सुणाइआ॥ (२२-५-६)
खाणी बाणी चारि साह गणाइआ॥ (२२-५-७)
पंजि सबद परवाणु नीसाणु बजाइआ ॥५॥ (२२-५-८)

राग नाद सम्बाद गिआनु चेताइआ॥ (२२-६-१)
नउ दरवाजे साधि साधु सदाइआ॥ (२२-६-२)
वीह इकीह उलंघि निज घरि आइआ॥ (२२-६-३)
पूरक कुम्भक रेचक त्राटक धाइआ॥ (२२-६-४)
निउली कर्म भुयंगु आसण लाइआ॥ (२२-६-५)
इड़ा पिंगुला झाग सुखमनि छाइआ॥ (२२-६-६)
खेचर भूचर चाचर साधि सधाइआ॥ (२२-६-७)
साध अगोचर खेलु उनमनि आइआ ॥६॥ (२२-६-८)

त्रै सतु अंगुल लै मनु पवणु मिलाइआ॥ (२२-७-१)
सोहं सहजि सुभाइ अलख लखाइआ॥ (२२-७-२)
निझरि धारि चुआइ अपिउ पीआइआ॥ (२२-७-३)
अनहद धुनि लिव लाइ नाद वजाइआ॥ (२२-७-४)
अजपा जापु जपाइ सुन्न समाइआ॥ (२२-७-५)
सुंनि समाधि समाइ आपु गवाइआ॥ (२२-७-६)
गुरमुखि पिरमु चखाइ निज घरु छाइआ॥ (२२-७-७)
गुरसिखि संधि मिलाइ पूरा पाइआ ॥७॥ (२२-७-८)

जोती जोति जगाइ दीवा बालिआ॥ (२२-८-१)
चंदन वासु निवासु वणासपति फालिआ॥ (२२-८-२)
सललै सललि संजोगु तृबेणी चालिआ॥ (२२-८-३)
पवणै पवणु समाइ अनहदु भालिआ॥ (२२-८-४)
हीरै हीरा बेधि परोइ दिखालिआ॥ (२२-८-५)

पथरु पारसु होइ पारसु पालिआ॥ (२२-८-६)
अनल पंखि पुतु होइ पिता सम्हालिआ॥ (२२-८-७)
ब्रह्मौ ब्रह्मु मिलाइ सहजि सुखालिआ ॥८॥ (२२-८-८)

केवडु इकु कवाउ पसाउ कराइआ॥ (२२-९-१)
केवडु कंडा तोलु तोलि तुलाइआ॥ (२२-९-२)
करि ब्रहमंड करोड़ि कवाउ वधाइआ॥ (२२-९-३)
लख लख धरति अगासि अधर धराइआ॥ (२२-९-४)
पउणु पाणी बैसंतरु लख उपाइआ॥ (२२-९-५)
लख चउरासीह जोनि खेलु रचाइआ॥ (२२-९-६)
जोनि जोनि जीअ जंत अंत न पाइआ॥ (२२-९-७)
सिरि सिरि लेखु लिखाइ अलेख धिआइआ ॥९॥ (२२-९-८)

सतिगुर सचा नाउ आखि सुणाइआ॥ (२२-१०-१)
गुर मूरति सचु थाउ धिआनु धराइआ॥ (२२-१०-२)
साधसंगति असराउ सचि सुहाइआ॥ (२२-१०-३)
दरगह सचु निआउ हुकमु चलाइआ॥ (२२-१०-४)
गुरमुखि सचु गिराउ सबद वसाइआ॥ (२२-१०-५)
मिटिआ गरबु गुआउ गरीबी छाइआ॥ (२२-१०-६)
गुरमति सचु हिआउ अजरु जराइआ॥ (२२-१०-७)
तिसु बलिहारै जाउ सु भाणा भाइआ ॥१०॥ (२२-१०-८)

सची खसम रजाइ भाणा भावणा॥ (२२-११-१)
सतिगुर पैरी पाइ आपु गुवावणा॥ (२२-११-२)
गुर चेला परचाइ मनु पतीआवणा॥ (२२-११-३)
गुरमुखि सहजि सुभाइ न अलख लखावणा॥ (२२-११-४)
गुरसिख तिल न तमाइ कार कमावणा॥ (२२-११-५)
सबद सुरति लिव लाइ हुकमु मनावणा॥ (२२-११-६)
वीह इकीह लंघाइ निज घरि जावणा॥ (२२-११-७)
गुरमुखि सुख फल पाइ सहजि समावणा ॥११॥ (२२-११-८)

इकु गुरू इकु सिखु गुरमुखि जाणिआ॥ (२२-१२-१)
गुर चेला गुर सिखु सचि समाणिआ॥ (२२-१२-२)
सो सतिगुर सो सिखु सबदु वखाणिआ॥ (२२-१२-३)
अचरज भूर भविख सचु सुहाणिआ॥ (२२-१२-४)

लेखु अलेखु अलिखु माणु निमाणिआ॥ (२२-१२-५)
समसरि अम्मृतु विखु न आवण जाणिआ॥ (२२-१२-६)
नीसाणा होइ लिखु हद नीसाणिआ॥ (२२-१२-७)
गुर सिखहु गुर सिखु होइ हैराणिआ ॥१२॥ (२२-१२-८)

पिर्म पिआला पूरि अपिओ पीआवणा॥ (२२-१३-१)
महरमु हकु हजूरि अलखु लखावणा॥ (२२-१३-२)
घट अवघट भरपूरि रिदै समावणा॥ (२२-१३-३)
बीअहु होइ अंगूरु सुफलि समावणा॥ (२२-१३-४)
बावन होइ ठरूर महि महिकावणा॥ (२२-१३-५)
चंदन चंद कपूर मेलि मिलावणा॥ (२२-१३-६)
ससीअर अंदरि सूर तपति बुझावणा॥ (२२-१३-७)
चरण कवल दी धूरि मसतकि लावणा॥ (२२-१३-८)
कारण लख अंकूर करणु करावणा॥ (२२-१३-९)
वजनि अनहद तूर जोति जगावणा ॥१३॥ (२२-१३-१०)

इकु कवाउ अतोलु कुदरति जाणीऐ॥ (२२-१४-१)
ओअंकारु अबोलु चोज विडाणीऐ॥ (२२-१४-२)
लख दरीआव अलोलु पाणी आणीऐ॥ (२२-१४-३)
हीरे लाल अमोलु गुरसिख जाणीऐ॥ (२२-१४-४)
गुरमति अचल अडोल पति परवाणीऐ॥ (२२-१४-५)
गुरमुखि पंथु निरोलु सचु सुहाणीऐ॥ (२२-१४-६)
साइर लख ढंढोल सबदु नीसाणीऐ॥ (२२-१४-७)
चरण कवल रज घोलि अमृत वाणीऐ॥ (२२-१४-८)
गुरमुखि पीता रजि अकथ कहाणीऐ ॥१४॥ (२२-१४-९)

कादरु नो कुरबाणु कीम न जाणीऐ॥ (२२-१५-१)
केवड वडा हाणु आखि वखाणीऐ॥ (२२-१५-२)
केवडु आखा ताणु माणु निमाणीऐ॥ (२२-१५-३)
लख जिमी असमाणु तिलु न तुलाणीऐ॥ (२२-१५-४)
कुदरति लख जहानु होइ हैराणीऐ॥ (२२-१५-५)
सुलताना सुलतान हुकमु नीसाणीऐ॥ (२२-१५-६)
लख साइर नैसाण बूंद समाणीऐ॥ (२२-१५-७)
कूड़ अखाण वखाण अकथ कहाणीऐ ॥१५॥ (२२-१५-८)

चलणु हुकमु रजाइ गुरमुखि जाणिआ॥ (२२-१६-१)
गुरमुखि पंथि चलाइ चलणु भाणिआ॥ (२२-१६-२)
सिदकु सबूरी पाइ करि सकिराणिआ॥ (२२-१६-३)
गुरमुखि अलखु लखाइ चोज विडाणिआ॥ (२२-१६-४)
वरतण बाल सुभाइ आदि वखाणिआ॥ (२२-१६-५)
साधसंगति लिव लाइ सचु सुहाणिआ॥ (२२-१६-६)
जीवन मुकति कराइ सबदु सिञाणिआ॥ (२२-१६-७)
गुरमुखि आपु गवाइ आपु पछाणिआ ॥१६॥ (२२-१६-८)

अबिगति गति असगाह आखि वखाणीऐ॥ (२२-१७-१)
गहिर गम्भीर अथाह हाथि न आणीऐ॥ (२२-१७-२)
बूंद लख परवाह हुलड़ वाणीऐ॥ (२२-१७-३)
गुरमुखि सिफति सलाह अकथ कहाणीऐ॥ (२२-१७-४)
पारावारु न राहु बिअंतु सुहाणीऐ॥ (२२-१७-५)
लउबाली दरगाह न आवण जाणीऐ॥ (२२-१७-६)
वडा वेपरवाहु ताणु निताणीऐ॥ (२२-१७-७)
सतिगुर सचे वाहु होइ हैराणीऐ ॥१७॥ (२२-१७-८)

साधसंगति सच खंडु गुरमुखि जाईऐ॥ (२२-१८-१)
सचु नाउ बलवंडु गुरमुखि धिआईऐ॥ (२२-१८-२)
पर्म जोति परचंडु जुगति जगाईऐ॥ (२२-१८-३)
सोधि डिठा ब्रहमंडु लवै न लाईऐ॥ (२२-१८-४)
तिसु नाही जम डंडु सरणि समाईऐ॥ (२२-१८-५)
घोर पाप करि खंडु नरकि न पाईऐ॥ (२२-१८-६)
चावल अंदरि वंडु उबरि जाईऐ॥ (२२-१८-७)
सचहु सचु अखंडु कूड़ु छुडाईऐ ॥१८॥ (२२-१८-८)

गुरसिखा साबास जनमु सवारिआ॥ (२२-१९-१)
गुरसिखाँ रहरासि गुरू पिआरिआ॥ (२२-१९-२)
गुरमुखि सासि गिरासि नाउ चितारिआ॥ (२२-१९-३)
माइआ विचि उदासु गरबु निवारिआ॥ (२२-१९-४)
गुरमुखि दासनि दास सेव सुचारिआ॥ (२२-१९-५)
वरतनि आस निरास सबदु वीचारिआ॥ (२२-१९-६)
गुरमुखि सहजि निवासु मन हठ मारिआ॥ (२२-१९-७)
गुरमुखि मनि परगासु पतित उधारिआ ॥१९॥ (२२-१९-८)

गुरसिखा जैकारु सतिगुर पाइआ॥ (२२-२०-१)
परवारै साधारु सबदु कमाइआ॥ (२२-२०-२)
गुरमुखि सचु आचारु भाणा भाइआ॥ (२२-२०-३)
गुरमुखि मोख दुआरु आप गवाइआ॥ (२२-२०-४)
गुरमुखि परउपकार मनु समझाइआ॥ (२२-२०-५)
गुरमुखि सचु आधारु सचि समाइआ॥ (२२-२०-६)
गुरमुखा लोकारु लेपु न लाइआ॥ (२२-२०-७)
गुरमुखि एकंकारु अलखु लखाइआ ॥२०॥ (२२-२०-८)

गुरमुखि ससीअर जोति अमृत वरसणा॥ (२२-२१-१)
असट धातु इक धातु पारसु परसणा॥ (२२-२१-२)
चंदन वासु निवासु बिरख सुदरसणा॥ (२२-२१-३)
गंग तरंग मिलापु नदीआँ सरसणा॥ (२२-२१-४)
मान सरोवर हंस न तृसना तरसणा॥ (२२-२१-५)
पर्म हंस गुरसिख दरस अदरसणा॥ (२२-२१-६)
चरण सरण गुरदेव परस अपरसणा॥ (२२-२१-७)
साधसंगति सच खंडु अमर न मरसणा ॥२१॥२२॥ (२२-२१-८)

Vaar 23

ੴ सतिगुरप्रसादि॥ (२३-१-१)

सति रूप गुरु दरसनो पूरन ब्रह्मु अचरजु दिखाइआ॥ (२३-१-२)
सति नामु करता पुरखु पारब्रह्मु परमेसरु धिआइआ॥ (२३-१-३)
सतिगुर सबद गिआनु सचु अनहद धुनि विसमादु सुणाइआ॥ (२३-१-४)
गुरमुखि पंथु चलाइओनु नामु दानु इसनानु दृड़ाइआ॥ (२३-१-५)
गुर सिखु दे गुरसिख करि साधसंगति सचु खंडु वसाइआ॥ (२३-१-६)
सचु रास रहरासि दे सतिगुर गुरसिख पैरी पाइआ॥ (२३-१-७)
चरण कवल परतापु जणाइआ ॥१॥ (२३-१-८)

तीर्थ नश्रातै पाप जानि पतित उधारण नाउं धराइआ॥ (२३-२-१)
तीर्थ होन सकारथे साध जनाँ दा दरसन पाइआ॥ (२३-२-२)
साध होए मन साधि कै चरण कवल गुर चिति वसाइआ॥ (२३-२-३)
उपमा साध अगाधि बोध कोट मधे को साधु सुणाइआ॥ (२३-२-४)
गुरसिख साध असंख जगि धरमसाल थाइ थाइ सुहाइआ॥ (२३-२-५)
पैरी पै पैर धोवणे चरणोदकु लै पैरु पुजाइआ॥ (२३-२-६)
गुरमुखि सुख फलु अलखु लखाइआ ॥२॥ (२३-२-७)

पंजि तत उतपति करि गुरमुखि धरती आपु गवाइआ॥ (२३-३-१)
चरण कवल सरणागती सभ निधान सभे फल पाइआ॥ (२३-३-२)
लोक वेद गुर गिआन विचि साधू धूड़ि जगत तराइआ॥ (२३-३-३)
पतित पुनीत कराइ कै पावन पुरख पवित्र कराइआ॥ (२३-३-४)
चरणोदक महिमा अमित सेख सहस मुखि अंतु न पाइआ॥ (२३-३-५)
धूड़ी लेखु मिटाइआ चरणोदक मनु वसगति आइआ॥ (२३-३-६)
पैरी पै जगु चरनी लाइआ ॥३॥ (२३-३-७)

चरणोदकु होइ सुरसरी तजि बैकुंठ धरति विचि आई॥ (२३-४-१)
नउ सै नदी नड़िन्नवै अठसठि तीरथि अंगि समाई॥ (२३-४-२)
तिहु लोई परवाणु है महादेव लै सीस चड़हाई॥ (२३-४-३)
देवी देव सरेवदे जै जै कार वडी वडिआई॥ (२३-४-४)
सणु गंगा बैकुंठ लख लख बैकुंठ नाथि लिव लाई॥ (२३-४-५)
साधू धूड़ि दुलम्भ है साधसंगति सतिगुरु सरणाई॥ (२३-४-६)
चरन कवल दल कीम न पाई ॥४॥ (२३-४-७)

चरण सरणि जिसु लखमी लख कला होइ लखी न जाई॥ (२३-५-१)
रिधि सिधि निधि सभ गोलीआँ साधिक सिध रहे लपटाई॥ (२३-५-२)
चारि वरन छिअ दरसनाँ जती सती नउ नाथ निवाई॥ (२३-५-३)
तिन्न लोअ चौदह भवन जलि थलि महीअल छलु करि छाई॥ (२३-५-४)
कवला सणु कवलापती साधसंगति सरणागति आई॥ (२३-५-५)
पैरी पै पै खाक होइ आपु गवाइ न आपु गवाई॥ (२३-५-६)
गुरमुखि सुखफलु वडी वडिआई ॥५॥ (२३-५-७)

बावन रूपी होइ कै बलि छलि अछलि आपु छलाइआ॥ (२३-६-१)
करौं अढाई धरति मंगि पिछों दे वड पिंडु वधाइआ॥ (२३-६-२)
दुइ करुवा करि तिंनि लोअ बलि राजे फिरि मगरु मिणाइआ॥ (२३-६-३)
सुरगहु चंगा जाणि कै राजु पताल लोक दा पाइआ॥ (२३-६-४)
ब्रह्मा बिसनु महेस त्रै भगति वछल दरवान सदाइआ॥ (२३-६-५)
बावन लख सु पावना साधसंगति रज इछ इछाइआ॥ (२३-६-६)
साधसंगति गुर चरन धिआइआ ॥६॥ (२३-६-७)

सहस बाहु जमदगनि घरि होइ पराहणु चारी आइआ॥ (२३-७-१)
कामधेणु लोभाइ कै जमदगनै दा सिरु वढवाइआ॥ (२३-७-२)
पिटदी सुणि कै रेणुका परसराम धाई करि धाइआ॥ (२३-७-३)
इकीह वार करोध करि खत्री मारि निखत्र गवाइआ॥ (२३-७-४)
चरण सरणि फड़ि उबरे दूजै किसै न खड़गु उचाइआ॥ (२३-७-५)
हउमै मारि न सकीआ चिरंजीव हुइ आपु जणाइआ॥ (२३-७-६)
चरण कवल मकरंदु न पाइआ ॥७॥ (२३-७-७)

रंग महल रंग रंग विचि दसरथु कउसलिआ रलीआले॥ (२३-८-१)
मता मताइनि आप विचि चाइ चईले खरे सुखाले॥ (२३-८-२)
घरि असाड़ै पुतु होइ नाउ कि धरीऐ बालक बाले॥ (२३-८-३)
राम चंदु नाउ लैंदिआँ तिंनि हतिआ ते होइ निराले॥ (२३-८-४)
राम राज परवाण जगि सत संतोख धर्म रखवाले॥ (२३-८-५)
माइआ विचि उदास होइ सुणै पुराणु बसिसटु बहाले॥ (२३-८-६)
रामाइणु वरताइआ सिला तरी पग छुहि ततकाले॥ (२३-८-७)
साधसंगति पग धूड़ि निहाले ॥८॥ (२३-८-८)

किसन लैआ अवतारु जगि महमा दसम सकंधु वखाणै॥ (२३-९-१)

लीला चलत अचरज करि जोगु भोगु रस रलीआ माणै॥ (२३-९-२)
महा भारथु करवाइओनु कैरो पाडो करि हैराणै॥ (२३-९-३)
इंद्रादिक ब्रहमादिका महिमा मिति मिरजाद न जाणै॥ (२३-९-४)
मिलीआ टहला वंडि कै जगि राजसू राजे राणै॥ (२३-९-५)
मंग लई हरि टहल एह पैर धोइ चरणोदकु माणै॥ (२३-९-६)
साधसंगति गुर सबदु सिञाणै ॥९॥ (२३-९-७)

मछ रूप अवतारु धरि पुरखारथु करि वेद उधारे॥ (२३-१०-१)
कछु रूप हुइ अवतरे सागरु मथि जगि रतन पसारे॥ (२३-१०-२)
तीजा करि बैराह रूपु धरति उधारी दैत संघारे॥ (२३-१०-३)
चउथा करि नरसिंघ रूपु असुरु मारि प्रहिलादि उबारे॥ (२३-१०-४)
इकसै ही ब्रहमंड विचि दस अवतार लए अहंकारे॥ (२३-१०-५)
करि ब्रहमंड करोड़ि जिनि लूंअ लूंअ अंदरि संजारे॥ (२३-१०-६)
लख करोड़ि इवेहिआ ओअंकार अकार सवारे॥ (२३-१०-७)
चरण कमल गुर अगम अपारे ॥१०॥ (२३-१०-८)

सासत्र वेद पुराण सभ सुणि सुणि आखणु आख सुणावहि॥ (२३-११-१)
राग नाद संगति लख अनहद धुनि सुणि सुणि गुण गावहि॥ (२३-११-२)
सेख नाग लख लोमसा अबिगति गति अंदरि लिव लावहि॥ (२३-११-३)
ब्रह्मे बिसनु महेस लख गिआनु धिआनु तिलु अंतु न पावहि॥ (२३-११-४)
देवी देव सरेवदे अलख अभेव न सेव पुजावहि॥ (२३-११-५)
गोरख नाथ मछंद्र लख साधिक सिधि नेत करि धिआवहि॥ (२३-११-६)
चरन कमल गुरु अगम अलावहि ॥११॥ (२३-११-७)

मथै तिवड़ी बामणै सउहे आए मसलति फेरी॥ (२३-१२-१)
सिरु उचा अहंकार करि वल दे पग वलाए डेरी॥ (२३-१२-२)
अखीं मूलि न पूजीअनि करि करि वेखनि मेरी तेरी॥ (२३-१२-३)
नकु न कोई पूजदा खाइ मरोड़ी मणी घनेरी॥ (२३-१२-४)
उचे कन्न न पूजीअनि उसतति निंदा भली भलेरी॥ (२३-१२-५)
बोलहु जीभ न पूजीऐ रस कस बहु चखी दंदि घेरी॥ (२३-१२-६)
नीवें चरण पूज हथ केरी ॥१२॥ (२३-१२-७)

हसति अखाजु गुमान करि सीहु सताणा कोइ न खाई॥ (२३-१३-१)
होइ निमाणी बकरी दीन दुनी वडिआई पाई॥ (२३-१३-२)
मरणै परणै मन्नीऐ जगि भोगि परवाणु कराई॥ (२३-१३-३)

मासु पवित्रु गृहसत नो आँदहु तार वीचारि वजाई॥ (२३-१३-४)
चमड़े दीआँ करि जुतीआ साधू चरण सरणि लिव लाई॥ (२३-१३-५)
तूर पखावज मड़ीदे कीरतनु साधसंगति सुखदाई॥ (२३-१३-६)
साधसंगति सतिगुर सरणाई ॥१३॥ (२३-१३-७)

सभ सरीर सकारथे अति अपवित्रु सु माणस देही॥ (२३-१४-१)
बहु बिंजन मिसटान पान हुइ मल मूत्र कुसूत्र इवेही॥ (२३-१४-२)
पाट पटम्बर विगड़दे पान कपूर कुसंग सनेही॥ (२३-१४-३)
चोआ चंदनु अरगजा हुइ दुरगंध सुगंध हुरेही॥ (२३-१४-४)
राजे राज कमाँवदे पातिसाह खहि मुए सभे ही॥ (२३-१४-५)
साधसंगति गुरु सरणि विणु निहफलु माणस देह इवेही॥ (२३-१४-६)
चरन सरणि मसकीनी जेही ॥१४॥ (२३-१४-७)

गुरमुखि सुख फलु पाइआ साधसंगति गुर सरणी आए॥ (२३-१५-१)
ध्रू प्रहिलादु वखाणीअनि अम्बरीकु बलि भगति सबाए॥ (२३-१५-२)
जनकादिक जैदेउ जगि बालमीकु सतिसंगि तराए॥ (२३-१५-३)
बेणु तिलोचनु नामदेउ धन्ना सधना भगत सदाए॥ (२३-१५-४)
भगतु कबीरु वखाणीऐ जन रविदासु बिदर गुरु भाए॥ (२३-१५-५)
जाति अजाति सनाति विचि गुरमुखि चरण कवल चितु लाए॥ (२३-१५-६)
हउमै मारी प्रगटी आए ॥१५॥ (२३-१५-७)

लोक वेद सुणि आखदा सुणि सुणि गिआनी गिआनु वखाणै॥ (२३-१६-१)
सुरग लोक सणु मात लोक सुणि सुणि सात पतालु न जाणै॥ (२३-१६-२)
बूत भविख न वरतमान आदि मधि अंत होए हैराणै॥ (२३-१६-३)
उतम मधम नीच होइ समझि न सकणि चोज विडाणै॥ (२३-१६-४)
रज गुण तम गुण आखीऐ सति गुण सुण आखाण वखाणै॥ (२३-१६-५)
मन बच कर्म सि भरमदे साध संगति सतिगुर न सिञाणै॥ (२३-१६-६)
फकड़ु हिंदू मुसलमाणै ॥१६॥ (२३-१६-७)

सतिजुगि इकु विगाड़दा तिसु पिछै फड़ि देसु पीड़ाए॥ (२३-१७-१)
त्रेतै नगरी वगलीऐ दुआपुरि वंसु नरकि सहमाए॥ (२३-१७-२)
जो फेड़ै सो फड़ीदा कलिजुगि सचा निआउ कराए॥ (२३-१७-३)
सतिजुग सतु त्रेतै जुगा दुआपुरि पूजा चारि दिड़ाए॥ (२३-१७-४)
कलिजुगि नाउ अराधणा होर कर्म करि मुकति न पाए॥ (२३-१७-५)
जुगि जुगि लुणीऐ बीजिआ पापु पुन्नु करि दुख सुख पाए॥ (२३-१७-६)

कलिजुगि चितवै पुन्न फल पापहु लेपु अधरम कमाए॥ (२३-१७-७)
गुरमुखि सुखिफलु आपु गवाए ॥१७॥ (२३-१७-८)

सतजुग दा अनिआउ वेखि धउल धरमु होआ उडीणा॥ (२३-१८-१)
सुरपति नरपति चक्रवै रखि न हंघनि बल मति हीणा॥ (२३-१८-२)
त्रेते खिसिआ पैरु इकु होम जग जगु थापि पतीणा॥ (२३-१८-३)
दुआपुरि दुइ पग धर्म दे पूजा चार पखंडु अलीणा॥ (२३-१८-४)
कलिजुग रहिआ पैर इकु होइ निमाणा धर्म अधीणा॥ (२३-१८-५)
माणु निमाणै सतिगुरू साधसंगति परगट परबीणा॥ (२३-१८-६)
गुरमुख धर्म सपूरणु रीणा ॥१८॥ (२३-१८-७)

चारि वरनि इक वरनि करि वरन अवरन साधसंगु जापै॥ (२३-१९-१)
छिअ रुती छिअ दरसना गुरमुखि दरसनु सूरजु थापै॥ (२३-१९-२)
बारह पंथ मिटाइ कै गुरमुखि पंथ वडा परतापै॥ (२३-१९-३)
वेद कतेबहु बाहरा अनहद सबदु अगम्म अलापै॥ (२३-१९-४)
पैरी पै पा खाक होइ गुरसिखा रहरासि पछापै॥ (२३-१९-५)
माइआ विचि उदासु करि आपु गवाए जपै अजापै॥ (२३-१९-६)
लंघ निकथै वरै सरापै ॥१९॥ (२३-१९-७)

मिलदे मुसलमान दुइ मिलि मिलि सलामालेकी॥ (२३-२०-१)
जोगी करनि अदेस मिलि आदि पुरखु आदेसु विसेखी॥ (२३-२०-२)
संनिआसी करि ओनमो ओनम नाराइण बहु भेखी॥ (२३-२०-३)
बाम्हण नो करि नमस्कार करि आसीर वचन मुहु देखी॥ (२३-२०-४)
पैरी पवणा सतिगुरू गुर सिखा रहिरास सरेखी॥ (२३-२०-५)
राजा रंक बराबरी बालक बिरधि न भेदु निमेखी॥ (२३-२०-६)
चंदन भगता रूप न रेखी ॥२०॥ (२३-२०-७)

नीचहु नीच सदावणा गुर उपदेसु कमावै कोई॥ (२३-२१-१)
त्रै वीहाँ दे दम्म लै इकु रुपईआ होछा होई॥ (२३-२१-२)
दसी रुपयीं लईदा इक सुनईआ हउला सोई॥ (२३-२१-३)
सहस सुनईए मुलु करि लळयै हीरा हार परोई॥ (२३-२१-४)
पैरी पै पाखाक होइ मन बच कर्म भर्म भउ खोई॥ (२३-२१-५)
होइ पंचाइण पंजि मार बाहरि जाँदा रखि सगोई॥ (२३-२१-६)
बोल अबोल साध जन ओोई ॥२१॥२३॥ (२३-२१-७)

Vaar 24

नाराइण निज रूपि धरि नाथा नाथ सनाथ कराइआ॥ (२४-१-१)
नरपति नरह नरिंदु है निरंकारि आकारु बणाइआ॥ (२४-१-२)
करता पुरखु वखाणीऐ कारणु करणु बिरदु बिरदाइआ॥ (२४-१-३)
देवी देव देवाधि देव अलख अभेव न अलखु लखाइआ॥ (२४-१-४)
सति रूपु सति नामु करि सतिगुर नामक देउ जपाइआ॥ (२४-१-५)
धरमसाल करतार पुरु साधसंगति सच खंडु वसाइआ॥ (२४-१-६)
वाहिगुरू गुर सबदु सुणाइआ ॥१॥ (२४-१-७)

निहचल नीउ धराईओनु साधसंगति सच खंड समेउ॥ (२४-२-१)
गुरमुखि पंथु चलाइओनु सुख सागरु बेअंतु अमेउ॥ (२४-२-२)
सचि सबदि आराधीऐ अगम अगोचरु अलख अभेउ॥ (२४-२-३)
चहु वरनाँ उपदेसदा छिअ दरसन सभि सेवक सेउ॥ (२४-२-४)
मिठा बोलणु निव चलणु गुरमुखि भाउ भगति अरथेउ॥ (२४-२-५)
आदि पुरखु आदेसु है अबिनासी अति अछल अछेउ॥ (२४-२-६)
जगतु गुरू गुरु नानक देउ ॥२॥ (२४-२-७)

सतिगुर सचा पातिसाहु बेपरवाहु अथाहु सहाबा॥ (२४-३-१)
नाउ गरीब निवाजु है बेमुहताज न मोहु मुहाबा॥ (२४-३-२)
बेसुमारु निरंकारु है अलख अपारु सलाह सिञाबा॥ (२४-३-३)
काइमु दाइमु साहिबी हाजरु नाजरु वेद किताबा॥ (२४-३-४)
अगमु अडोलु अतोलु है तोलणहारु न डंडी छाबा॥ (२४-३-५)
इकु छति राजु कमाँवदा दुसमणु दूतु न सोर सराबा॥ (२४-३-६)
आदलु अदलु चलाइदा जालमु जुलमु न जोर जराबा॥ (२४-३-७)
जाहर पीर जगतु गुरु बाबा ॥३॥ (२४-३-८)

गंग बनारस हिंदूआँ मुसलमाणाँ मका काबा॥ (२४-४-१)
घरि घरि बाबा गावीऐ वजनि ताल मृदंगु रबाबा॥ (२४-४-२)
भगति वछलु होइ आइआ पतित उधारणु अजबु अजाबा॥ (२४-४-३)
चारि वरन इक वरन होइ साधसंगति मिलि होइ तराबा॥ (२४-४-४)
चंदनु वासु वणासपति अवलि दोम न सेम खराबा॥ (२४-४-५)
हुकमै अंदरि सभ को कुदरति किस दी करै जवाबा॥ (२४-४-६)
जाहर पीरु जगतु गुर बाबा ॥४॥ (२४-४-७)

अंगहु अंगु उपाइओनु गंगहु जाणु तरंगु उठाइआ॥ (२४-५-१)
गहिर गम्भीरु गहीरु गुणु गुरमुखि गुरु गोबिंदु सदाइआ॥ (२४-५-२)
दुख सुख दाता देणिहारु दुख सुख समसरि लेपु न लाइआ॥ (२४-५-३)
गुर चेला चेला गुरू चेले परचा परचाइआ॥ (२४-५-४)
बिरखहु फलु फल ते बिरखु पिउ पुतहु पुतु पिउ पतीआइआ॥ (२४-५-५)
पारब्रह्मु पूरनु ब्रह्मु सबदु सुरति लिव अलख लखाइआ॥ (२४-५-६)
बाबाणे गुर अंगदु आइआ ॥५॥ (२४-५-७)

पारसु होआ पारसहु सतिगुर परचे सतिगुरु कहणा॥ (२४-६-१)
चंदनु होइआ चंदनहु गुर उपदेस रहत विचि रहणा॥ (२४-६-२)
जोति समाणी जोति विचि गुरमति सुखु दुरमति दुख दहणा॥ (२४-६-३)
अचरज नो अचरजु मिलै विसमादै विसमादु समहणा॥ (२४-६-४)
अपिउ पीअण निझणु अजरु जटणु असीअणु सहणा॥ (२४-६-५)
सचु समाणा सचु विचि गाडी राहु साधसंगि वहणा॥ (२४-६-६)
बाबाणै घरि चानणु लहणा ॥६॥ (२४-६-७)

सबदै सबदु मिलाइआ गुरमुखि अघड़ु घड़ाए गहणा॥ (२४-७-१)
भाइ भगति भै चलणा आपु गणाइ न खलहलु खहणा॥ (२४-७-२)
दीन दुनी दी साहिबी गुरमुखि गोस नसीनी बहणा॥ (२४-७-३)
कारण करण समरथ है होइ अछलु छल अंदरि छहणा॥ (२४-७-४)
सतु संतोखु दइआ धर्म अर्थ वीचारि सहजि घरि घहणा॥ (२४-७-५)
काम क्रोधु विरोधु छडि लोभ मोहु अहंकारहु तहणा॥ (२४-७-६)
पुतु सपुतु बबाणे लहणा ॥७॥ (२४-७-७)

गुरु अंगदु गुरु अंगुते अमृत बिरखु अमृत फल फलिआ॥ (२४-८-१)
जोती जोति जगाईअनु दीवे ते जिउ दीवा बलिआ॥ (२४-८-२)
हीरै हीरा बेधिआ छलु करि अछुली अछलु छलिआ॥ (२४-८-३)
कोइ बुझि न हंघई पाणी अंदरि पाणी रलिआ॥ (२४-८-४)
सचा सचु सुहावड़ा सचु अंदरि सचु सचहु ढलिआ॥ (२४-८-५)
निहचलु सचा तखतु है अबिचल राज न हलै हलिआ॥ (२४-८-६)
सच सबदु गुरि सउपिआ सच टकसालहु सिका चलिआ॥ (२४-८-७)
सिध नाथ अवतार सभ हथ जोड़ि कै होए खलिआ॥ (२४-८-८)
सचा हुकमु सु अटलु न टलिआ ॥८॥ (२४-८-९)

अछलु अछेदु अभेदु है भगति वछल होइ अछल छलाइआ॥ (२४-९-१)

महिमा मिति मिरजाद लंघि परमिति पारावारु न पाइआ॥ (२४-९-२)
रहरासी रहरासि है पैरी पै जगु पैरी पाइआ॥ (२४-९-३)
गुरमुखि सुखफलु अमरपदु अमृत बृखि अम्मृतफल लाइआ॥ (२४-९-४)
गुर चेला चेला गुरू पुरखहु पुरख उपाइ समाइआ॥ (२४-९-५)
वरतमान वीहि विसवे होइ इकीह सहजि घरि आइआ॥ (२४-९-६)
सचा अमरु अमरि वरताइआ ॥९॥ (२४-९-७)

सबदु सुरति परचाइ कै चेले ते गुरु गुरु ते चेला॥ (२४-१०-१)
वाणा ताणा आखीऐ सूतु इकु हुइ कपड़ु मेला॥ (२४-१०-२)
दुधहु दही वखाणीऐ दहीअहु मखणु काजु सुहेला॥ (२४-१०-३)
मिसरी खंडु घिउ मेलि करि अति विसमादु साद रस केला॥ (२४-१०-४)
पान सुपारी कथु मिलि चूने रंगु सुरंग सुहेला॥ (२४-१०-५)
पोता परवाणीकु नवेला ॥१०॥ (२४-१०-६)

तिलि मिलि फुल अमुल जिउ गुरसिख संधि सुगंध फुलेला॥ (२४-११-१)
खासा मलमलि सिरीसाफु साह कपाह चलत बहु खेला॥ (२४-११-२)
गुर मूरति गुर सबदु है साधसंगति मिलि अमृत वेला॥ (२४-११-३)
दुनीआ कूड़ी साहिबी सच मणी सच गरबि गहेला॥ (२४-११-४)
देवी देव दुड़ाइअनु जिउ मिरगावलि देखि बघेला॥ (२४-११-५)
हुकमि रजाई चलणा पिछे लगे नकि नकेला॥ (२४-११-६)
गुरमुखि सचा अमरि सुहेला ॥११॥ (२४-११-७)

सतिगुर होआ सतिगुरहु अचरजु अमर अमरि वरताइआ॥ (२४-१२-१)
सो टिका सो बैहणा सोई सचा हुकमु चलाइआ॥ (२४-१२-२)
खोलि खजाना सबदु दा साधसंगति सचु मेलि मिलाइआ॥ (२४-१२-३)
गुर चेला परवाणु करि चारि वरन लै पैरी पाइआ॥ (२४-१२-४)
गुरमुखि इकु धिआईऐ दुरमति दूजा भाउ मिटाइआ॥ (२४-१२-५)
कुला धर्म गुरसिख सभ माइआ विचि उदासु रहाइआ॥ (२४-१२-६)
पूरे पूरा थाटु बणाइआ ॥१२॥ (२४-१२-७)

आदि पुरखु आदेसु करि आदि जुगादि सबद वरताइआ॥ (२४-१३-१)
नामु दानु इसनानु दिड़ु गुरु सिख दे सैंसारु तराइआ॥ (२४-१३-२)
कलीकाल इक पैर हुइ चार चरन करि धरमु धराइआ॥ (२४-१३-३)
भला भला भलिआईअहु पिउ दादे दा राहु चलाइआ॥ (२४-१३-४)
अगम अगोचर गहण गति सबद सुरति लिव अलखु लखाइआ॥ (२४-१३-५)

अपरम्पर आगाधि बोधि परमिति पारावार न पाइआ॥ (२४-१३-६)
आपे आपि न आपु जणाइआ ॥१३॥ (२४-१३-७)

राग दोख निरदोखु है राजु जोग वरतै वरतारा॥ (२४-१४-१)
मनसा वाचा करमणा मरमु न जापै अपर अपारा॥ (२४-१४-२)
दाता भुगता दैआ दानि देवसथलु सतिसंगु उधारा॥ (२४-१४-३)
सहज समाधि अगाधि बोधि सतिगुरु सचा सवारणहारा॥ (२४-१४-४)
गुरु अमरहु गुरु रामदासु जोती जोति जगाइ जुहारा॥ (२४-१४-५)
सबद सुरति गुर सिखु होइ अनहद बाणी निझरधारा॥ (२४-१४-६)
तखतु बखतु परगटु पाहारा ॥१४॥ (२४-१४-७)

पीऊ दादे जेवेहा पड़दादे परवाणु पड़ोता॥ (२४-१५-१)
गुरमति जागि जगाइदा कलिजुग अंदरि कौड़ सोता॥ (२४-१५-२)
दीन दुनी दा थम्मु हुइ भारु अथरबण थंम्हि खलोता॥ (२४-१५-३)
भउजलु भउ न विआपई गुर बोहिथ चड़ि खाइ न गोता॥ (२४-१५-४)
अवगुण लै गुण विकणै गुर हट नालै वणज सओता॥ (२४-१५-५)
मिलिआ मूलि न विछुड़ै रतन पदार्थ हारु परोता॥ (२४-१५-६)
मैला कदे न होवई गुर सरवरि निर्मल जल धोता॥ (२४-१५-७)
बाबाणै कुलि कवलु अछोता ॥१५॥ (२४-१५-८)

गुरमुखि मेला सच दा सचि मिलै सचिआर संजोगी॥ (२४-१६-१)
घरबारी परवार विचि भोग भुगति राजे रसु भोगी॥ (२४-१६-२)
आसा विचि निरास हुइ जोग जुगति जोगीसरु जोगी॥ (२४-१६-३)
देदा रहै न मंगीऐ मरै न होइ विजोग विजोगी॥ (२४-१६-४)
आधि बिआधि उपाधि है वाइ पित कफु रोग अरोगी॥ (२४-१६-५)
दुखु सुखु समसरि गुरमती सम्पै हरख न अपदा सोगी॥ (२४-१६-६)
देह बिदेही लोग अलोगी ॥१६॥ (२४-१६-७)

सभना साहिबु इकु है दूजी जाइ न होइ न होगी॥ (२४-१७-१)
सहज सरोवरि परमहंसु गुरमति मोती माणक चोगी॥ (२४-१७-२)
खीर नीर जिउ कूड़ु सचु तजणु भजणु गुर गिआन अधोगी॥ (२४-१७-३)
इक मनि इकु अराधना परिहरि दूजा भाउ दरोगी॥ (२४-१७-४)
सबदसुरति लिव साधसंगि सहजि समाधि अगाधि घरोगी॥ (२४-१७-५)
जम्मणु मरणहु बाहरे परउपकार परमपर जोगी॥ (२४-१७-६)
रामदास गुर अमर समोगी ॥१७॥ (२४-१७-७)

अलख निरंजनु आखीऐ अकल अजोनि अकाल अपारा॥ (२४-१८-१)
रवि ससि जोति उदोति लंघि पर्म जोति परमेसरु पिआरा॥ (२४-१८-२)
जग मग जोति निरंतरी जग जीवन जग जै जै कारा॥ (२४-१८-३)
नमस्कार संसार विचि आदि पुरख आदेसु उधारा॥ (२४-१८-४)
चारि वरन छिअ दरसनाँ गुरमुखि मारगि सचु अचारा॥ (२४-१८-५)
नामु दानु इसनानु दिड़ि गुरमुखि भाइ भगति निसतारा॥ (२४-१८-६)
गुरू अरजनु सचु सिरजणहारा ॥१८॥ (२४-१८-७)

पिउ दादा पड़दादिअहु कुल दीपक अजरावर नता॥ (२४-१६-१)
तखतु बखतु लै मलिआ सबद सुरति वापारि सपता॥ (२४-१६-२)
गुरबाणी भंडारु भरि कीर्तन कथा रहै रंग रता॥ (२४-१६-३)
धुनि अनहदि निझरु झरै पूरन प्रेमि अमिओ रस मता॥ (२४-१६-४)
साधसंगति है गुरु सभा रतन पदार्थ वणज सहता॥ (२४-१६-५)
सचु नीसाणु दीबाणु सचु ताणु सचु माण महता॥ (२४-१६-६)
अबचलु राजु होआ सणखता ॥१६॥ (२४-१६-७)

चारे चक निवाइओनु सिख संगति आवै अगणता॥ (२४-२०-१)
लंगरु चलै गुर सबदि पूरे पूरी बणी बणता॥ (२४-२०-२)
गुरमुखि छत्र निरंजनी पूरन ब्रह्म परमपद पता॥ (२४-२०-३)
वेद कतेब अगोचरा गुरमुखि सबदु साध संगु सता॥ (२४-२०-४)
माइआ विचि उदासु करि गुर सिख जनक असंख भगता॥ (२४-२०-५)
कुदरति कीम न जाणीऐ अकथ कथा अबिगत अबिगता॥ (२४-२०-६)
गुरमुखि सुख फलु सहज जुगता ॥२०॥ (२४-२०-७)

हरखहु सोगहु बाहरा हरण भरण समरथु सरंदा॥ (२४-२१-१)
रस कस रूप न रेखि विचि राग रंग निरलेपु रहंदा॥ (२४-२१-२)
गोसटि गिआन अगोचरा बुधि बल बचन बिबेक न छंदा॥ (२४-२१-३)
गुर गोविंदु गोविंदु गुरु हरिगोविंदु सदा विगसंदा॥ (२४-२१-४)
अचरज नो अचरज मिलै विसमादै विसमाद मिलंदा॥ (२४-२१-५)
गुरमुखि मारगि चलणा खंडे धार कार निबहंदा॥ (२४-२१-६)
गुर सिख लै गुर सिखु चलंदा ॥२१॥ (२४-२१-७)

हंसहु हंस गिआन करि दुधै विचहु कढै पाणी॥ (२४-२२-१)
कछहु कछु धिआनि धरि लहरि न विआपै घुम्मणवाणी॥ (२४-२२-२)

कूंजहु कूंजु वखाणीऐ सिमरणु करि उडै असमाणी॥ (२४-२२-३)
गुर परचै गुर जाणीऐ गिआनि धिआनि सिमरणि गुरबाणी॥ (२४-२२-४)
गुर सिख लै गुरसिख होणि साधसंगति जग अंदरि जाणी॥ (२४-२२-५)
पैरी पै पाखाक होइ गरबु निवारि गरीबी आणी॥ (२४-२२-६)
पी चरणोदकु अमृति वाणी ॥२२॥ (२४-२२-७)

रहिदे गुरु दरीआउ विचि मीन कुलीन हेतु निरबाणी॥ (२४-२३-१)
दरसनु देखि पतंग जिउ जोती अंदरि जोति समाणी॥ (२४-२३-२)
सबद सुरति लिव मिरग जिउ सुख सम्पट विचि रैणि विहाणी॥ (२४-२३-३)
गुरु उपदेसु न विसरै बाबीहे जिउ आख वखाणी॥ (२४-२३-४)
गुरमुखि सुखफलु पिर्म रसु सहज समाधि साध संगि जाणी॥ (२४-२३-५)
गुर अरजन विटहु कुरबाणी ॥२३॥ (२४-२३-६)

पारब्रह्मु पूरन ब्रहमि सतिगुर आपे आपु उपाइआ॥ (२४-२४-१)
गुरु गोबिंदु गोविंदु गुरु जोति इक दुइ नाव धराइआ॥ (२४-२४-२)
पुतु पिअहु पिउ पुत ते विसमादहु विसमादु सुणाइआ॥ (२४-२४-३)
बिरखहु फलु फल ते बिरखु आचरजहु आचरजु सुहाइआ॥ (२४-२४-४)
नदी किनारे आखीअनि पुछे पारवारु न पाइआ॥ (२४-२४-५)
होरनि अलखु न लखीऐ गुरु चेले मिलि अलखु लखाइआ॥ (२४-२४-६)
हरि गोविंदु गुरू गुरु भाइआ ॥२४॥ (२४-२४-७)

निरंकारु नानक देउ निरंकारि आकार बणाइआ॥ (२४-२५-१)
गुरु अंगदु गुरु अंग ते गंगहु जाणु तरंग उठाइआ॥ (२४-२५-२)
अमरदासु गुरु अंगदहु जोति सरूप चलतु वरताइआ॥ (२४-२५-३)
गुरु अमरहु गुरु रामदासु अनहद नादहु सबदु सुणाइआ॥ (२४-२५-४)
रामदासहु अरजनु गुरू दरसनु दरपनि विचि दिखाइआ॥ (२४-२५-५)
हरिगोबिंद गुर अरजनहु गुरु गोबिंद नाउ सदवाइआ॥ (२४-२५-६)
गुर मूरति गुर सबदु है साधसंगति विचि परगटी आइआ॥ (२४-२५-७)
पैरी पाइ सभ जगतु तराइआ ॥२५॥२४॥ (२४-२५-८)

Vaar 25

ੴ सतिगुरप्रसादि ॥ (२५-१-१)

आदि पुरखु आदेसु करि आदि पुरख आदेसु कराइआ॥ (२५-१-२)
एकंकार अकारु करि गुरु गोविंदु नाउ सदवाइआ॥ (२५-१-३)
पारब्रह्मु पूरन ब्रह्मु निरगुण सरगुण अलखु लखाइआ॥ (२५-१-४)
साधसंगति आराधिआ भगति वछलु होइ अछलु छलाइआ॥ (२५-१-५)
ओअंकार अकार करि इकु कवाउ पसाउ पसाइआ॥ (२५-१-६)
रोम रोम विचि रखिओनु करि ब्रहमंडु करोड़ि समाइआ॥ (२५-१-७)
साध जना गुर चरन धिआइआ ॥१॥ (२५-१-८)

गुरमुखि मारगि पैरु धरि दहिदिसि बारहवाट न धाइआ॥ (२५-२-१)
गुर मूरति गुर धिआनु धरि घटि घटि पूरन ब्रह्मु दिखाइआ॥ (२५-२-२)
शबद सुरति उपदेसु लिव पारब्रह्म गुर गिआनु जणाइआ॥ (२५-२-३)
सिला अलूणी चटणी चरण कवल चरणोदकु पिआइआ॥ (२५-२-४)
गुरमति निहचलु चितुकरि सुखसम्पट विचि निज घरु छाइआ॥ (२५-२-५)
पर तन पर धन परहरे पारसि परसि अपरसु रहाइआ॥ (२५-२-६)
साध असाधि साध संगि आइआ ॥२॥ (२५-२-७)

जिउ वड़ बीउ सजीउ होइ करि विसथारु बिरखु उपजाइआ॥ (२५-३-१)
बिरखहु होइ सहंस फल फल फल विचि बहु बीअ समाइआ॥ (२५-३-२)
दुतीआ चंदु अगास जिउ आदि पुरख आदेसु कराइआ॥ (२५-३-३)
तारे मंडलु संत जन धरमसाल सच खंड वसाइआ॥ (२५-३-४)
पैरी पै पाखाक होइ आपु गवाइ न आपु जणाइआ॥ (२५-३-५)
गुरमुखि सुख फलु ध्रू जिवै निहचल वासु अगासु चड़हाइआ॥ (२५-३-६)
सभ तारे चउफेर फिराइआ ॥३॥ (२५-३-७)

नामा छींबा आखीऐ गुरमुखि भाइ भगति लिव लाई॥ (२५-४-१)
खत्री ब्राहमण देहुरै उतम जाति करनि वडिआई॥ (२५-४-२)
नामा पकड़ि उठालिआ बहि पछवाड़ै हरि गुण गाई॥ (२५-४-३)
भगत वछलु आखाइदा फेरि देहुरा पैजि रखाई॥ (२५-४-४)
दरगह माणु निमाणिआ साधसंगति सतिगुर सरणाई॥ (२५-४-५)
उतमु पदवी नीच जाति चारे वरण पए पगि आई॥ (२५-४-६)
जिउ नीवानि नीरु चलि जाई ॥४॥ (२५-४-७)

असुर भभीखणु भगतु है बिदरु सु विखली पत सरणाई॥ (२५-५-१)
धन्ना जटु वखाणीऐ सधना जाति अजाति कसाई॥ (२५-५-२)
भगतु कबीरु जुलाहड़ा नामा छींबा हरि गुण गाई॥ (२५-५-३)
कुलि रविदासु चमारु है सैणु सनाती अंदरि नाई॥ (२५-५-४)
कोइल पालै कावणी अंति मिलै अपणे कुल जाई॥ (२५-५-५)
किसनु जसोधा पालिआ वासदेव कुल कवल सदाई॥ (२५-५-६)
घिअ कवल सतिगुर सरणाई ॥५॥ (२५-५-७)

डेमूं खखरि मिसरी मखी मेलु मखीरु उपाइआ॥ (२५-६-१)
पाट पटम्बर कीड़िअहु कुटि कटि सणु किरतासु बणाइआ॥ (२५-६-२)
मलमल होइ वड़ेविअहु चिकड़ि कवलु भवरु लोभाइआ॥ (२५-६-३)
जिउ मणि काले सप सिरि पथरु हीरे माणक छाइआ॥ (२५-६-४)
जाणु कथूरी मिरग तनि नाउ भगउती लोहु घड़ाइआ॥ (२५-६-५)
मुसकु बिलीअहु मेदु करि मजलस अंदरि मह महकाइआ॥ (२५-६-६)
नीच जोनि उतमु फलु पाइआ ॥६॥ (२५-६-७)

बलि पोता प्रहिलाद दा इंदर पुरी दी इछ इछंदा॥ (२५-७-१)
करि सम्पूरणु जगु सउ इक इकोतरु जगु करंदा॥ (२५-७-२)
बावन रूपी आइ कै गरबु निवारि भगत उधरंदा॥ (२५-७-३)
इंद्रासण नो परहरै जाइ पतालि सु हुकमी बंदा॥ (२५-७-४)
बलि छलि आपु छलाइओनु दरवाजे दरवान होवंदा॥ (२५-७-५)
स्वाति बूंद लै सिप जिउ मोती चुभी मारि सुहंदा॥ (२५-७-६)
हीरै हीरा बेधि मिलंदा ॥७॥ (२५-७-७)

नीचहु नीच सदावणा कीड़ी होइ न आपु गणाए॥ (२५-८-१)
गुरमुखि मारगि चलणा इकतु खडु सहंस समाए॥ (२५-८-२)
घिअ सकर दी वासु लै जिथै धरी तिथै चलि जाए॥ (२५-८-३)
डुलै खंडु जु रेतु विचि खंडू दाणा चुणि चुणि खाए॥ (२५-८-४)
भ्रिंगी दे भै जाइ मरि होवै भ्रिंगी मारि जीवाए॥ (२५-८-५)
अंडा कछू कूंज दा आसा विचि निरासु वलाए॥ (२५-८-६)
गुरमुखि गुरसिखु सुख फलु पाए ॥८॥ (२५-८-७)

सूरज पासि बिआसु जाइ होइ भुणहणा कंनि समाणा॥ (२५-९-१)
पड़ि विदिआ घरि आइआ गुरमुखि बालमीक मनि भाणा॥ (२५-९-२)

आदि बिआस वखाणीऐ कथि कथि सासत्र वेद पुराणा॥ (२५-९-३)
नारदि मुनि उपदेसिआ भगति भागवतु पड़िह पतीआणा॥ (२५-९-४)
चउदह विदिआ सोधि कै परउपकारु अचारु सुखाणा॥ (२५-९-५)
परउपकारी साधसंगु पतित उधारणु बिरदु वखाणा॥ (२५-९-६)
गुरमुखि सुख फलु पति परवाणा ॥९॥ (२५-९-७)

बारह वरहे गरभासि वसि जमदे ही सुकि लई उदासी॥ (२५-१०-१)
माइआ विचि अतीत होइ मन हठ बुधि न बंदि खलासी॥ (२५-१०-२)
पिआ बिआस परबोधिआ गुर करि जनक सहज अभिआसी॥ (२५-१०-३)
तजि दुरमति गुरमति लई सिर धरि जूठि मिली साबासी॥ (२५-१०-४)
गुर उपदेसु अवेसु करि गरबि निवारि जगति गुरदासी॥ (२५-१०-५)
पैरी पै पा खाक होइ गुरमति भाउ भगति परगासी॥ (२५-१०-६)
गुरमुखि सुख फलु सहज निवासी ॥१०॥ (२५-१०-७)

राज जोगु है जनक दे वडा भगतु करि वेदु वखाणै॥ (२५-११-१)
सनकादिक नारद उदास बाल सुभाइ अतीतु सुहाणै॥ (२५-११-२)
जोग भोग लख लंघि कै गुरसिख साधसंगति निरबाणै॥ (२५-११-३)
आपु गणाइ विगुचणा आपु गवाए आपु सिञाणै॥ (२५-११-४)
गुरमुखि मारगि सच दा पैरी पवणा राजे राणै॥ (२५-११-५)
गरबु गुमानु विसारि कै गुरमति रिदै गरीबी आणै॥ (२५-११-६)
सची दरगह माणु निमाणै ॥११॥ (२५-११-७)

सिरु उचा अभिमानु विचि कालख भरिआ काले वाला॥ (२५-१२-१)
भरवटे कालख भरे पिपणीआ कालख सूराला॥ (२५-१२-२)
लोइण कइले जाणीअनि दाड़ी मुछा करि मुह काला॥ (२५-१२-३)
नक अंदरि नक वाल बहु लूंइ लूंइ कालख बेताला॥ (२५-१२-४)
उचै अंग न पूजीअनि चरण धूड़ि गुरमुखि धरमसाला॥ (२५-१२-५)
पैरा नख मुख उजले भारु उचाइनि देहु दुराला॥ (२५-१२-६)
सिर धोवणु अपवित्र है गुरमुखि चरणोगक जगि भाला॥ (२५-१२-७)
गुरमुखि सुख फलु सहजु सुखाला ॥१२॥ (२५-१२-८)

जल विचि धरती धरमसाल धरती अंदरि नीर निवासा॥ (२५-१३-१)
चरन कवल सरणागती निहचल धीरजु धरमु सुवासा॥ (२५-१३-२)
किरख बिरख कुसमावली बूटी जड़ी घाह अबिनासा॥ (२५-१३-३)
सर साइर गिरि मेरु बहु रतन पदार्थ भोग बिलासा॥ (२५-१३-४)

देव सथल तीर्थ घणे रंग रूप रस कस परगासा॥ (२५-१३-५)
गुर चेले रहरासि करि गुरमुखि साधसंगति गुणतासा॥ (२५-१३-६)
गुरमुखि सुख फलु आस निरासा ॥१३॥ (२५-१३-७)

रोम रोम विचि रखिओनु करि ब्रहमंड करोड़ि समाई॥ (२५-१४-१)
पारब्रह्मु पूरन ब्रह्मु सति पुरख सतिगुरु सुखदाई॥ (२५-१४-२)
चारि वरन गुरसिख होइ साधसंगति सतिगुर सरणाई॥ (२५-१४-३)
गिआन धिआन सिमरणि सदा गुरमुखि सबदि सुरति लिव लाई॥ (२५-१४-४)
भाइ भगति भउ पिर्म रस सतिगुरु मूरति रिदे वसाई॥ (२५-१४-५)
एवडु भारु उचाइदे साध चरण पूजा गुर भाई॥ (२५-१४-६)
गुरमुखि सुख फलु कीम न पाई ॥१४॥ (२५-१४-७)

वसै छहबर लाइ कै परनाली हुइ वीही आवै॥ (२५-१५-१)
लख नाले उछल चलनि लख परवाही वाह वहावै॥ (२५-१५-२)
लख नाले लख वाहि वहि नदीआ अंदरि रले रलावै॥ (२५-१५-३)
नउ सै नदी नड़िन्नवै पूरबि पछमि होइ चलावै॥ (२५-१५-४)
नदीआ जाइ समुंद विचि सागर संगमु होइ मिलावै॥ (२५-१५-५)
सति समुंद गड़ाड़ महि जाइ समाहि न पेटु भरावै॥ (२५-१५-६)
जाइ गड़ाड़ु पताल हेठि होइ तवे दी बूंद समावै॥ (२५-१५-७)
सिर पतिसाहाँ लख लख इन्नणु जालि तवे नो तावै॥ (२५-१५-८)
मरदे खहि खहि दुनीआ दावै ॥१५॥ (२५-१५-९)

इकतु थेकै दुइ खड़गु दुइ पतिसाह न मुलकि समाणै॥ (२५-१६-१)
वीह फकीर मसीति विचि खिंथ खिंधोली हेठि लुकाणै॥ (२५-१६-२)
जंगल अंदरि सीह दुइ पोसत डोडे खसखस दाणै॥ (२५-१६-३)
सूली उपरि खेलणा सिरि धरि छत्र बजार विकाणै॥ (२५-१६-४)
कोलू अंदरि पीड़ीअनि पोसति पीहि पिआले छाणै॥ (२५-१६-५)
लउबाली दरगाह विचि गरबु गुनाही माणु निमाणै॥ (२५-१६-६)
गुरमुखि होंदे ताणि निताणै ॥१६॥ (२५-१६-७)

सीह पजूती बकरी मरदी होई हड़ हड़ हसी॥ (२५-१७-१)
सीहु पुछै विसमादु होइ इतु अउसरि कितु रहसि रहसी॥ (२५-१७-२)
बिनउ करेंदी बकरी पुत्र असाडे कीचनि खसी॥ (२५-१७-३)
अक धतूरा खाधिआँ कुहि कुहि खल उखलि विणसी॥ (२५-१७-४)
मासु खानि गल वढि कै हालु तिनाड़ा कउणु होवसी॥ (२५-१७-५)

गरबु गरीबी देह खेह खाजु अखाजु अकाजु करसी॥ (२५-१७-६)
जगि आइआ सभ कोइ मरसी ॥१७॥ (२५-१७-७)

चरण कवल रहरासि करि गुरमुखि साधसंगति परगासी॥ (२५-१८-१)
पैरी पै पाखाक होइ लेख अलेख अमर अबिनासी॥ (२५-१८-२)
करि चरणोदकु आचमान आधि बिआधि उपाधि खलासी॥ (२५-१८-३)
गुरमति आपु गवाइआ माइआ अंदरि करनि उदासी॥ (२५-१८-४)
सबद सुरति लिवलीणु होइ निरंकार सच खंडि निवासी॥ (२५-१८-५)
अबिगति गति अगाधि बोधि अकथ कथा अचरज गुरदासी॥ (२५-१८-६)
गुरमुखि सुख फलु आस निरासी ॥१८॥ (२५-१८-७)

सण वण वाड़ी खेतु इकु परउपकारु विकारु जणावै॥ (२५-१६-१)
खल कढाहि वटाइ सण रसा बंधनु होइ बनश्रावै॥ (२५-१६-२)
खासा मलमल सिरीसाफु सूतु कताइ कपाह वुणावै॥ (२५-१६-३)
लजणु कजणु होइ इक साधु असाधु बिरदु बिरदावै॥ (२५-१६-४)
संग दोख निरदोख मोख संग सुभाउ न साधु मिटावै॥ (२५-१६-५)
त्रपड़ु होवै धरमसाल साधसंगति पग धूड़ि धुमावै॥ (२५-१६-६)
कटि कुटि सण किरतासु करि हरि जसु लिखि पुराण सुणावै॥ (२५-१६-७)
पतित पुनीत करै जन भावै ॥१६॥ (२५-१६-८)

पथर चितु कठोरु है चूना होवै अगीं दधा॥ (२५-२०-१)
अग बुझै जलु छिड़किऐ चूना अगि उठे अति वधा॥ (२५-२०-२)
पाणी पाइ विहु न जाइ अगनि न छुटै अवगुन बधा॥ (२५-२०-३)
जीभै उतै रखिआ छाले पवनि संगि दुख लधा॥ (२५-२०-४)
पान सुपारी कथु मिलि रंगु सुरंगु सम्पूरणु सधा॥ (२५-२०-५)
साधसंगति मिलि साधु होइ गुरमुखि महा असाध समधा॥ (२५-२०-६)
आपु गवाइ मिलै पलु अधा ॥२०॥२५॥ (२५-२०-७)

Vaar 26

ੴ सतिगुरप्रसादि ॥ (२६-१-१)

सतिगुर सचा पातिशाहु पातिसाहा पातिसाहु सिरंदा॥ (२६-१-२)
सचै तथति निवासु है साधसंगति सच खंडि वसंदा॥ (२६-१-३)
सचु फुरमाणु नीसाणु सचु सचा हुकमु न मूलि फिरंदा॥ (२६-१-४)
सचु सबदु टकसाल सचु गुर ते गुर हुइ सबद मिलंदा॥ (२६-१-५)
सची भगति भंडार सचु राग रतन कीरतनु भावंदा॥ (२६-१-६)
गुरमुखि सचा पंथु है सचु दोही सचु राजु करंदा॥ (२६-१-७)
वीह इकीह चड़हाउ चड़हंदा ॥१॥ (२६-१-८)

गुर परमेसरु जाणीऐ सचे सचा नाउ धराइआ॥ (२६-२-१)
निरंकारु आकारु होइ एकंकारु अपारु सदाइआ॥ (२६-२-२)
एकंकारहु सबद धुनि ओअंकारि अकारु बणाइआ॥ (२६-२-३)
इकदू होइ तिनि देव तिहु मिलि दस अवतार गणाइआ॥ (२६-२-४)
आदि पुरखु आदेसु है ओहु वेखै ओनश्रा नदरि न आइआ॥ (२६-२-५)
सेख नाग सिमरणु करै नावा अंतु बिअंतु न पाइआ॥ (२६-२-६)
गुरमुखि सचु नाउ मनि भाइआ ॥२॥ (२६-२-७)

अम्बरु धरति विछोड़िअनु कुदरति करि करतार कहाइआ॥ (२६-३-१)
धरती अंदरि पाणीऐ विणु थम्माँ आगासु रहाइआ॥ (२६-३-२)
इन्नश्रण अंदरि अगि धरि अहिनिसि सूरजु चंदु उपाइआ॥ (२६-३-३)
छिअ रुति बारह माह करि खाणी बाणी चलतु रचाइआ॥ (२६-३-४)
माणस जनमु दुलम्भु है सफलु जनमु गुरु पूरा पाइआ॥ (२६-३-५)
साधसंगति मिलि सहजि समाइआ ॥३॥ (२६-३-६)

सतिगुरु सचु दातारु है माणस जनमु अमोलु दिवाइआ॥ (२६-४-१)
मूहु अखी नकु कन्नु करि हथ पैर दे चलै चलाइआ॥ (२६-४-२)
भाउ भगति उपदेसु करि नामु दानु इसनानु दिड़ाइआ॥ (२६-४-३)
अमृत वेलै नावणा गुरमुखि जपु गुरमंतु जपाइआ॥ (२६-४-४)
राति आरती सोहिला माइआ विचि उदासु रहाइआ॥ (२६-४-५)
मिठा बोलणु निवि चलणु हथहु देइ न आपु गणाइआ॥ (२६-४-६)
चारि पदार्थ पिछै लाइआ ॥४॥ (२६-४-७)

सतिगुरु वडा आखीऐ वडे दी वडी वडिआई॥ (२६-५-१)
ओअंकारि अकारु करि लख दरीआउ न कीमति पाई॥ (२६-५-२)
इक वरभंडु अखंडु है जीअ जंत करि रिजकु दिवाई॥ (२६-५-३)
लूंअ लूंअ विचि रखिओनु करि वरभंड करोड़ि समाई॥ (२६-५-४)
केवडु वडा आखीऐ कवण थाउ किसु पुछाँ जाई॥ (२६-५-५)
अपड़ि कोइ न हंघई सुणि सुणि आखण आखि सुणाई॥ (२६-५-६)
सतिगुरु मूरति परगटी आई ॥५॥ (२६-५-७)

धिआनु मूलु गुर दरसनो पूरन ब्रह्मु जाणि जाणोई॥ (२६-६-१)
पूज मूल सतिगुरु चरण करि गुरदेव सेव सुख होई॥ (२६-६-२)
मंत्र मूलु सतिगुरु बचन इक मनि होइ अराधै कोई॥ (२६-६-३)
मोख मूलु किरपा गुरू जीवनु मुकति साध संगि सोई॥ (२६-६-४)
आपु गणाइ न पाईऐ आपु गवाइ मिलै विरलोई॥ (२६-६-५)
आपु गवाए आप है सभ को आपि आपे सभु कोई॥ (२६-६-६)
गुरु चेला चेला गुरु होई ॥६॥ (२६-६-७)

सतिजुगि पाप कमाणिआ इकस पिछै देसु दुखाला॥ (२६-७-१)
त्रेतै नगरी पीड़ीऐ दुआपुरि पापु वंसु को दाला॥ (२६-७-२)
कलिजुगि बीजै सो लुणै वरतै धर्म निआउ सुखाला॥ (२६-७-३)
फलै कमाणा तिहु जुगीं कलिजुगि सफलु धरमु ततकाला॥ (२६-७-४)
पाप कमाणै लेपु है चितवै धर्म सुफलु फल वाला॥ (२६-७-५)
भाइ भगति गुरपुरब करि बीजनि बीजु सची धरमसाला॥ (२६-७-६)
सफल मनोरथ पूरण घाला ॥७॥ (२६-७-७)

सतिजुगि सति त्रेतै जुगा दुआपुरि पूजा बहली घाला॥ (२६-८-१)
कलि जुगि गुरमुखि नाउं लै पारि पवै भवजल भरनाला॥ (२६-८-२)
चारि चरण सतिजुगै विचि त्रेतै चउथै चरण उकाला॥ (२६-८-३)
दुआपुरि होए पैर दुइ इकतै पैर धरम्मु दुखाला॥ (२६-८-४)
माणु निमाणै जाणि कै बिनउ करै करि नदरि निहाला॥ (२६-८-५)
गुर पूरै परगासु करि धीरजु धर्म सची धरमसाला॥ (२६-८-६)
आपे खेतु आपे रखवाला ॥८॥ (२६-८-७)

जिनश्राँ भाउ तिन नाहि भउ मुचु भउ अगै निभविआहा॥ (२६-९-१)
अगि ततो जल सीअला निव चलै सिरु करै उताहा॥ (२६-९-२)
भरि डुबै खाली तरै वजि न वजै घड़ै जिवाहा॥ (२६-९-३)

अम्ब सुफल फलि झुकि लहै दुख फलु अरंडु न निवै तलाहा॥ (२६-९-४)
मनु पंखेरू धावदा संगि सुभाइ जाइ फल खाहा॥ (२६-९-५)
धरि ताराजू तोलीऐ हउला भारा तोलु तुलाहा॥ (२६-९-६)
जिणि हारै हारै जिणै पैरा उते सीसु धराहा॥ (२६-९-७)
पैरी पै जग पैरी पाहा ॥९॥ (२६-९-८)

सचु हुकमु सचु लेखु है सचु कारणु करि खेलु रचाइआ॥ (२६-१०-१)
कारणु करते वसि है विरलै दा ओहु करै कराइआ॥ (२६-१०-२)
सो किहु होरु न मंगई खसमै दा भाणा तिसु भाइआ॥ (२६-१०-३)
खसमै एवै भावदा भगति वछलु हुइ बिरदु सदाइआ॥ (२६-१०-४)
साधसंगति गुर सबदु लिव कारणु करता करदा आइआ॥ (२६-१०-५)
बाल सुभाइ अतीत जगि वर सराप दा भरमु चुकाइआ॥ (२६-१०-६)
जेहा भाउ तेहो फलु पाइआ ॥१०॥ (२६-१०-७)

अउगुण कीते गुण करै सहजि सुभाउ तरोवर हंदा॥ (२६-११-१)
वढण वाला छाउ बहि चंगे दा मंदा चितवंदा॥ (२६-११-२)
फल दे वट वगाइआँ वढण वाले तारि तरंदा॥ (२६-११-३)
बेमुख फल ना पाइदे सेवक फल अणगणत फलंदा॥ (२६-११-४)
गुरमुखि विरला जाणीऐ सेवकु सेवक सेवक संदा॥ (२६-११-५)
जगु जोहारे चंद नो साइर लहरि अनंदु वधंदा॥ (२६-११-६)
जो तेरा जगु तिस दा बंदा ॥११॥ (२६-११-७)

जिउ विसमादु कमादु है सिर तलवाइआ होइ उपन्ना॥ (२६-१२-१)
पहिले खल उकलिकै टोटे करि करि भन्नणि भंन्ना॥ (२६-१२-२)
कोलू पाइ पीड़ाइआ रस टटरि कस इन्नण वंन्ना॥ (२६-१२-३)
दुख सुख अंदरि सबरु करि खाए अवटणु जग धन्न धंन्ना॥ (२६-१२-४)
गुड़ु सकरु खंडु मिसरी गुरमुख सुख फलु सभ रस बंन्ना॥ (२६-१२-५)
पिर्म पिआला पीवणा मरि मरि जीवणु थीवणु गंन्ना॥ (२६-१२-६)
गुरमुखि बोल अमोल रतंन्ना ॥१२॥ (२६-१२-७)

गुरु दरीआउ अमाउ है लख दरीआउ समाउ करंदा॥ (२६-१३-१)
इकस इकस दरीआउ विचि लख तीर्थ दरीआउ वहंदा॥ (२६-१३-२)
इकतु इकतु वाहड़ै कुदरति लख तरंग उठंदा॥ (२६-१३-३)
साइर सणु रतनावली चारि पदारथु मीन तरंदा॥ (२६-१३-४)
इकतु लहिर न पुजनी कुदरति अंतु न अंत लहंदा॥ (२६-१३-५)

पिर्म पिआले इक बूंद गुरमुख विरला अजरु जरंदा॥ (२६-१३-६)
अलख लखाइ न अलखु लखंदा ॥१३॥ (२६-१३-७)

ब्रह्मे थके बेद पड़ि इंद्र इंदासण राजु करंदे॥ (२६-१४-१)
महाँदेव अवधूत होइ दस अवतारी बिसनु भवंदे॥ (२६-१४-२)
सिध नाथ जोगीसराँ देवी देव न भेव लहंदे॥ (२६-१४-३)
तपे तपीसुर तीरथाँ जती सती देह दुख सहंदे॥ (२६-१४-४)
सेख नाग सभ राग मिलि सिमरणु करि निति गुण गावंदे॥ (२६-१४-५)
वडभागी गुरसिख जगि सबदु सुरति सतसंगि मिलंदे॥ (२६-१४-६)
गुरमुखि सुख फलु अलखु लखंदे ॥१४॥ (२६-१४-७)

सिर तल वाइआ बिरखु है होइ सहस फल सुफल फलंदा॥ (२६-१५-१)
निरमलु नीरु वखाणीऐ सिरु नीवाँ नीवाणि चलंदा॥ (२६-१५-२)
सिरु उचा नीवें चरण गुरमुखि पैरी सीसु पवंदा॥ (२६-१५-३)
सभदू नीवी धरति होइ अनु धनु सभु सै सारु सहंदा॥ (२६-१५-४)
धन्नु धरती ओहु थाउ धन्नु गुरु सिख साधू पैरु धरंदा॥ (२६-१५-५)
चरण धूड़ि प्रधान करि संत वेद जसु गावि सुणंदा॥ (२६-१५-६)
वडभागी पाखाक लहंदा ॥१५॥ (२६-१५-७)

पूरा सतिगुरु जाणीऐ पूरे पूरा ठाटु बणाइआ॥ (२६-१६-१)
पूरे पूरा तोलु है घटै न वधै घटाइ वधाइआ॥ (२६-१६-२)
पूरे पूरी मति है होर सु पुछि न मता पकाइआ॥ (२६-१६-३)
पूरे पूरा मंतु है पूरा बचनु न टलै टलाइआ॥ (२६-१६-४)
सभे इछा पूरीआ साधसंगति मिलि पूरा पाइआ॥ (२६-१६-५)
वीह इकीह उलंघिकै पति पउड़ी चड़िह निज घरि आइआ॥ (२६-१६-६)
पूरे पूरा होइ समाइआ ॥१६॥ (२६-१६-७)

सिध साधिक मिलि जागदे करि सिवराती जाती मेला॥ (२६-१७-१)
महादेउ अउधूतु है कवलासणि आसणि रसकेला॥ (२६-१७-२)
गोरखु जोगी जागदा गुरि माछिंद्र धरी सु धरेला॥ (२६-१७-३)
सतिगुरु जागि जगाइदा साधसंगति मिलि अमृत वेला॥ (२६-१७-४)
निज घरि ताड़ी लाईअनु अनहद सबद पिर्म रस खेला॥ (२६-१७-५)
आदि पुरख आदेसु है अलख निरंजन नेहु नवेला॥ (२६-१७-६)
चेले ते गुरु गुरु ते चेला ॥१७॥ (२६-१७-७)

ब्रह्मा बिसनु महेसु त्रै सैसारी भंडारी राजे॥ (२६-१८-१)
चारि वरन घरबारीआ जाति पाति माइआ मुहताजे॥ (२६-१८-२)
छिअ दरसन छिअ सासत्रा पाखंडि कर्म करनि देवाजे॥ (२६-१८-३)
संनिआसी दस नाम धरि जोगी बारह पंथ निवाजे॥ (२६-१८-४)
दहदिसि बारह वाट होइ पर घर मंगनि खाज अखाजे॥ (२६-१८-५)
चारि वरन गुरु सिख मिलि साधसंगति विचि अनहद वाजे॥ (२६-१८-६)
गुरमुखि वरन अवरन होइ दरसनु नाउं पंथु सुख साजे॥ (२६-१८-७)
सचु सचा कूड़ि कूड़े पाजे ॥१८॥ (२६-१८-८)

सतिगुर गुणी निधानु है गुण करि बखसै अवगुणिआरे॥ (२६-१६-१)
सतिगुरु पूरा वैदु है पंजे रोग असाध निवारे॥ (२६-१६-२)
सुख सागरु गुरुदेउ है सुख दे मेलि लए दुखिआरे॥ (२६-१६-३)
गुर पूरा निरवैरु है निंदक दोखी बेमुख तारे॥ (२६-१६-४)
गुरु पूरा निरभउ सदा जनम मरण जम डरै उतारे॥ (२६-१६-५)
सतिगुरु पुरखु सुजाणु है वडे अजाण मुगध निसतारे॥ (२६-१६-६)
सतिगुरु आगू जाणीऐ बाह पकड़ि अंधले उधारे॥ (२६-१६-७)
माणु निमाणे सद बलिहारे ॥१६॥ (२६-१६-८)

सतिगुरु पारसि परसिऐ कंचनु करै मनूर मलीणा॥ (२६-२०-१)
सतिगुरु बावनु चंदनो वासु सुवासु करै लाखीणा॥ (२६-२०-२)
सतिगुरु पूरा पारिजातु सिम्मलु सफलु करै संगि लीणा॥ (२६-२०-३)
मान सरोवरु सतिगुरू कागहु हंसु जलहु दुधु पीणा॥ (२६-२०-४)
गुर तीरथु दरीआउ है पसू परेत करै परबीणा॥ (२६-२०-५)
सतिगुर बंदीछोड़ु है जीवण मुकति करै ओडीणा॥ (२६-२०-६)
गुरमुखि मन अपतीजु पतीणा ॥२०॥ (२६-२०-७)

सिध नाथ अवतार सभ गोसटि करि करि कन्न फड़ाइआ॥ (२६-२१-१)
बाबर के बाबे मिले निवि निवि सभ नबाबु निवाइआ॥ (२६-२१-२)
पतिसाहा मिलि विछुड़े जोग भोग छडि चलितु रचाइआ॥ (२६-२१-३)
दीन दुनीआ दा पातिसाहु बेमुहताजु राजु घरि आइआ॥ (२६-२१-४)
कादर होइ कुदरति करे एह भी कुदरति साँगु बणाइआ॥ (२६-२१-५)
इकना जोड़ि विछोड़िदा चिरी विछुन्ने आणि मिलाइआ॥ (२६-२१-६)
साधसंगति विचि अलखु लखाइआ ॥२१॥ (२६-२१-७)

सतिगुरु पूरा साहु है तृभवण जगु तिस दा वणजारा॥ (२६-२२-१)

रतन पदार्थ बेसुमार भाउ भगति लख भरे भंडारा॥ (२६-२२-२)
पारिजात लख बाग विचि कामधेणु दे वग हजारा॥ (२६-२२-३)
लखमीआँ लख गोलीआँ पारस दे परबतु अपारा॥ (२६-२२-४)
लख अमृत लख इंद्र लै हुइ सकै छिड़कनि दरबारा॥ (२६-२२-५)
सूरज चंद चराग लख रिधि सिधि निधि बोहल अम्बारा॥ (२६-२२-६)
सभे वंडि दितीओनु भाउ भगति करि सचु पिआरा॥ (२६-२२-७)
भगति वछलु सतिगुरु निरंकारा ॥२२॥ (२६-२२-८)

खीर समुंदु विरोलि कै कढि रतन चउदह वंडि लीते॥ (२६-२३-१)
मणि लखमी पारिजात संखु सारंग धणखु बिसनु वसि कीते॥ (२६-२३-२)
कामधेणु ते अपछराँ ऐरापति इंद्रासणि सीते॥ (२६-२३-३)
कालकूट ते अर्ध चंद महाँदेव मसतकि धरि पीते॥ (२६-२३-४)
घोड़ा मिलिआ सूरजै मदु अम्मृतु देव दानव रीते॥ (२६-२३-५)
करे धनंतरु वैदगी डसिआ तृछकि मति बिपरीते॥ (२६-२३-६)
गुर उपदेसु अमोलका रतन पदार्थ निधि अगणीते॥ (२६-२३-७)
सतिगुर सिखाँ सचु परीते ॥२३॥ (२६-२३-८)

धरमसाल करि बहीदा इकत थाउं न टिकै टिकाइआ॥ (२६-२४-१)
पातिसाह घरि आवदे गड़ि चड़िआ पातिसाह चड़ाइआ॥ (२६-२४-२)
उमति महलु न पावदी नठा फिरै न डरै डराइआ॥ (२६-२४-३)
मंजी बहि संतोखदा कुते रखि सिकारु खिलाइआ॥ (२६-२४-४)
बाणी करि सुणि गाँवदा कथै न सुणै न गावि सुणाइआ॥ (२६-२४-५)
सेवक पास न रखीअनि दोखी दुसट आगू मुहि लाइआ॥ (२६-२४-६)
सचु न लुकै लुकाइआ चरण कवल सिख भवर लुभाइआ॥ (२६-२४-७)
अजरु जरै न आपु जणाइआ ॥२४॥ (२६-२४-८)

खेती वाड़ि सु ढिंगरी किकर आस पास जिउ बागै॥ (२६-२५-१)
सप पलेटे चन्नणै बूहे जंदा कुता जागै॥ (२६-२५-२)
कवलै कंडे जाणीअनि सिआणा इकु कोई विचि फागै॥ (२६-२५-३)
जिउ पारसु विचि पथराँ मणि मसतकि जिउ कालै नागै॥ (२६-२५-४)
रतनु सोहै गलि पोत विचि मैगलु बधा कचै धागै॥ (२६-२५-५)
भाव भगति भुख जाइ घरि बिदरु खवालै पिन्नी सागै॥ (२६-२५-६)
चरण कवल गुरु सिख भउर साधसंगति सहलंगु सभागै॥ (२६-२५-७)
पिर्म पिआले दुतरु झागै ॥२५॥ (२६-२५-८)

भवजल अंदरि मानसरु सत समुंदी गहिर गम्भीरा॥ (२६-२६-१)
ना पतणु ना पातणी पारावारु न अंतु न चीरा॥ (२६-२६-२)
ना बेड़ी ना तुलहड़ा वंझी हाथि न धीरक धीरा॥ (२६-२६-३)
होरु न कोई अपड़ै हंस चुगंदे मोती हीरा॥ (२६-२६-४)
सतिगुरु साँगि वरतदा पिंडु वसाइआ फेरि अहीरा॥ (२६-२६-५)
चंदु अमावस राति जिउ अलखु न लखीऐ मछुली नीरा॥ (२६-२६-६)
मुए मुरीद गोरि गुर पीरा ॥२६॥ (२६-२६-७)

मछी दे परवार वाँगि जीवणि मरणि न विसरै पाणी॥ (२६-२७-१)
जिउ परवारु पतंग दा दीपक बाझु न होर सु जाणी॥ (२६-२७-२)
जिउ जल कवलु पिआरु है भवर कवल कुल प्रीति वखाणी॥ (२६-२७-३)
बूंद बबीहे मिरग नाद कोइल जिउ फल अंबि लुभाणी॥ (२६-२७-४)
मान सरोवरु हंसुला ओहु अमोलक रतना खाणी॥ (२६-२७-५)
चकवी सूरज हेतु है चंद चकोरै चोज विडाणी॥ (२६-२७-६)
गुरसिख वंसी पर्म हंस सतिगुर सहजि सरोवरु जाणी॥ (२६-२७-७)
मुरगाई नीसाणु नीसाणी ॥२७॥ (२६-२७-८)

कछू अंडा सेंवदा जल बाहरि धरि धिआनु धरंदा॥ (२६-२८-१)
कूंज करेंदी सिमरणो पूरण बचा होइ उडंदा॥ (२६-२८-२)
कुकड़ी बचा पालदी मुरगाई नो जाइ मिलंदा॥ (२६-२८-३)
कोइल पालै कावणी लोहू लोहू रलै रलंदा॥ (२६-२८-४)
चकवी अते चकोर कुल सिव शकती मिलि मेलु करंदा॥ (२६-२८-५)
चंद सूरजु से जाणीअनि छिअ रुति बारह माह दिसंदा॥ (२६-२८-६)
गुरमुखि मेला सच दा कवीआँ कवल भवरु विगसंदा॥ (२६-२८-७)
गुरमुखि सुख फलु अलखु लखंदा ॥२८॥ (२६-२८-८)

पारसवंसी होइ कै सभना धातू मेलि मिलंदा॥ (२६-२९-१)
चंदन वासु सुभाउ है अफल सफल विचि वासु धरंदा॥ (२६-२९-२)
लख तरंगी गंग होइ नदीआ नाले गंग होवंदा॥ (२६-२९-३)
दावा दुधु पीआलिआ पातिसाहा कोका भावंदा॥ (२६-२९-४)
लूण खाइ पातिसाह दा कोका चाकर होइ वलंदा॥ (२६-२९-५)
सतिगुर वंसी पर्म हंसु गुरु सिख हंस वंसु निबहंदा॥ (२६-२९-६)
पिअ दादे दे राहि चलंदा ॥२९॥ (२६-२९-७)

जिउ लख तारे चमकदे नेड़ि न दिसै राति अनेरे॥ (२६-३०-१)

सूरजु बदल छाइआ राति न पुजै दिहसै फेरे॥ (२६-३०-२)
जे गुर साँगि वरतदा दुबिधा चिति न सिखाँ केरे॥ (२६-३०-३)
छिअ रुती इकु सुझु है घुघू सुझ न सुझै हेरे॥ (२६-३०-४)
चंदमुखी सूरजमुखी कवलै भवर मिलनि चउफेरे॥ (२६-३०-५)
सिव सकती नो लंघि कै साधसंगति जाइ मिलनि सवेरे॥ (२६-३०-६)
पैरी पवणा भले भलेरे ॥३०॥ (२६-३०-७)

दुनीआवा पातिसाहु होइ देइ मरै पुतै पातिसाही॥ (२६-३१-१)
दोही फेरै आपणी हुकमी बंदे सभ सिपाही॥ (२६-३१-२)
कुतबा जाइ पड़ाइदा काजी मुलाँ करै उगाही॥ (२६-३१-३)
टकसालै सिका पवै हुकमै विचि सुपेदी सिआही॥ (२६-३१-४)
मालु मुलकु अपणाइदा तखत बखत चड़िह बेपरवाही॥ (२६-३१-५)
बाबाणै घरि चाल है गुरमुखि गाडी राहु निबाही॥ (२६-३१-६)
इक दोही टकसाल इक कुतबा तखतु सचा दरगाही॥ (२६-३१-७)
गुरमुखि सुख फलु दादि इलाही ॥३१॥ (२६-३१-८)

जे को आपु गणाइ कै पातिसाहा त आकी होवै॥ (२६-३२-१)
हुइ कतलामु हरामखोरु काठु न खफणु चिता न टोवै॥ (२६-३२-२)
टकसालहु बाहरि घड़ै खोटैहारा जनमु विगोवै॥ (२६-३२-३)
लिबासी फुरमाणु लिखि होइ नुकसानी अंझू रोवै॥ (२६-३२-४)
गिदड़ दी करि साहिबी बोलि कुबोलु न अबिचलु होवै॥ (२६-३२-५)
मुहि कालै गदहि चड़ै राउ पड़े वी भरिआ धोवै॥ (२६-३२-६)
दूजै भाइ कुथाइ खलोवै ॥३२॥ (२६-३२-७)

बाल जती है सिरीचंदु बाबाणा देहुरा बणाइआ॥ (२६-३३-१)
लखमीदासहु धरमचंद पोता हुइ कै आपु गणाइआ॥ (२६-३३-२)
मंजी दासु बहालिआ दाता सिधासण सिखि आइआ॥ (२६-३३-३)
मोहण कमला होइआ चउबारा मोहरी मनाइआ॥ (२६-३३-४)
मीणा होआ पिरथीआ करि करि तोंढक बरलु चलाइआ॥ (२६-३३-५)
महादेउ अहम्मेउ करि करि बेमुखु पुताँ भउकाइआ॥ (२६-३३-६)
चंदन वासु न वास बोहाइआ ॥३३॥ (२६-३३-७)

बाबाणी पीड़ी चली गुर चेले परचा परचाइआ॥ (२६-३४-१)
गुरु अंगदु गुरु अंगु ते गुरु चेला चेला गुरु भाइआ॥ (२६-३४-२)
अमरदासु गुर अंगदहु सतिगुरु ते सतिगुरू सदाइआ॥ (२६-३४-३)

गुरु अमरहु गुरु रामदासु गुर सेवा गुरु होइ समाइआ॥ (२६-३४-४)
रामदासहु अरजणु गुरू अमृत बृखि अमृत फलु लाइआ॥ (२६-३४-५)
हरि गोविंदु गुरु अरजनहु आदि पुरख आदेसु कराइआ॥ (२६-३४-६)
सुझै सुझ न लुकै लुकाइआ ॥३४॥ (२६-३४-७)

इक कवाउ पसाउ करि ओअंकारि कीआ पासारा॥ (२६-३५-१)
कुदरति अतुल न तोलीऐ तुलि न तोल न तोलणहारा॥ (२६-३५-२)
सिरि सिरि लेखु अलेख दा दाति जोति वडिआई कारा॥ (२६-३५-३)
राग नाद अनहदु धुनी ओअंकार न गावणहारा॥ (२६-३५-४)
खाणी बाणी जीअ जंतु नाव थाव अणगणत अपारा॥ (२६-३५-५)
इकु कवाउ अमाउ है केवडु वडा सिरजणहारा॥ (२६-३५-६)
साधसंगति सतिगुर निरंकारा ॥३५॥२६॥ (२६-३५-७)

Vaar 27

ੴ सतिगुरप्रसादि॥ (२७-१-१)

लेलै मजनूं आसकी चहु चकी जाती॥ (२७-१-२)
सोरठि बीजा गावीऐ जसु सुघड़ा वाती॥ (२७-१-३)
ससी पुन्नूं दोसती हुइ जाति अजाती॥ (२७-१-४)
मेहीवाल नो सोहणी नै तरदी राती॥ (२७-१-५)
राँझा हीर वखाणीऐ ओहु पिर्म पराती॥ (२७-१-६)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी गावनि परभाती ॥१॥ (२७-१-७)

अमली अमलु न छडनी हुइ बहनि इकठे॥ (२७-२-१)
जिउ जूए जूआरीआ लगि दाव उपठे॥ (२७-२-२)
चोरी चोर न पलरहिदुख सहनि गरठे॥ (२७-२-३)
रहनि न गणिका वाड़िअहु वेकरमी लठे॥ (२७-२-४)
पापी पापु कमावदे होइ फिरदे नठे॥ (२७-२-५)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी सभ पाप पणठे ॥२॥ (२७-२-६)

भवरै वासु विणासु है फिरदा फुलवाड़ी॥ (२७-३-१)
जलै पतंगु निसंगु होइ करि अखि उघाड़ी॥ (२७-३-२)
मिरग नादि बिसमादु होइ फिरदा उजाड़ी॥ (२७-३-३)
कुंडी फाथे मछ जिउ रसि जीभ विगाड़ी॥ (२७-३-४)
हाथणि हाथी फाहिआ दुख सहै दिहाड़ी॥ (२७-३-५)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी लाइ निज घरि ताड़ी ॥३॥ (२७-३-६)

चंद चकोर परीत है लाइ तार निहाले॥ (२७-४-१)
चकवी सूरज हेत है मिलि होनि सुखाले॥ (२७-४-२)
नेहु कवल जल जाणीऐ खिड़ि मुह वेखाले॥ (२७-४-३)
मोर बबीहे बोलदे पिआरु वेखि बदल काले॥ (२७-४-४)
नारि भतार पिआरु है माँ पुत सम्हाले॥ (२७-४-५)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी ओहु निबहै नाले ॥४॥ (२७-४-६)

रूपै कामै दोसती जग अंदरि जाणी॥ (२७-५-१)
भुखै सादै गंढु है ओहु विरती हाणी॥ (२७-५-२)
घुलि मिलि मिचलि लबि मालि इतु भर्म भुलाणी॥ (२७-५-३)

ऊघै सउड़ि पलंघ जिउ सभि रैणि विहाणी॥ (२७-५-४)
सुहणे सभ रंग माणीअणि करि चोज विडाणी॥ (२७-५-५)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी ओहु अकथ कहाणी ॥५॥ (२७-५-६)

मान सरोवर हंसला खाइ माणक मोती॥ (२७-६-१)
कोइल अम्ब परीति है मिल बोल सरोती॥ (२७-६-२)
चंदन वासु वणासुपति होइ पास खलोती॥ (२७-६-३)
लोहा पारसि भेटिऐ होइ कंचन जोती॥ (२७-६-४)
नदीआ नाले गंग मिलि होनि छोत अछोती॥ (२७-६-५)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी इह खेप सओती ॥६॥ (२७-६-६)

साहुरु पीहरु पख त्रै घर नानेहाला॥ (२७-७-१)
सहुरा ससु वखाणीऐ साली तै साला॥ (२७-७-२)
मा पिउ भैणा भाइरा परवारु दुराला॥ (२७-७-३)
नाना नानी मासीआ मामे जंजाला॥ (२७-७-४)
सुइना रुपा संजीऐ हीरा परवाला॥ (२७-७-५)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी एहु साकु सुखाला ॥७॥ (२७-७-६)

वणजु करै वापारीआतितु लाहा तोटा॥ (२७-८-१)
किरसाणी किरसाणु करिहोइ दुबला मोटा॥ (२७-८-२)
चाकरु लगै चाकरी रणि खाँदा चोटाँ॥ (२७-८-३)
राजु जोगु संसारु विचि वण खंड गड़ कोटा॥ (२७-८-४)
अंति कालि जम जालु पै पाए फल फोटा॥ (२७-८-५)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी हुइ कदे न तोटा ॥८॥ (२७-८-६)

अखी वेख न रजीआ बहु रंग तमासे॥ (२७-९-१)
उसतति निंदा कंनि सुणि रोवणि तै हासे॥ (२७-९-२)
सादीं जीभ न रजीआ करि भोग बिलासे॥ (२७-९-३)
नक न रजा वासु लै दुरगंध सुवासे॥ (२७-९-४)
रजि न कोई जीविआ कूड़े भरवासे॥ (२७-९-५)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी सची रहरासे ॥९॥ (२७-९-६)

ध्रिग सिरु जो गुर न निवै गुर लगै न चरनी॥ (२७-१०-१)
ध्रिगु लोइणि गुर दरस विणु वाखै पर तरणी॥ (२७-१०-२)
ध्रिग सरवणि उपदेस विणु सुणि सुरति न धरणी॥ (२७-१०-३)

ध्रिग जिहबा गुर सबद विणु होर मंत्र सिमरणी॥ (२७-१०-४)
विणु सेवा ध्रिगु हथ पैर होर निहफल करणी॥ (२७-१०-५)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी सुख सतिगुर सरणी ॥१०॥ (२७-१०-६)

होरतु रंगि न रचीऐ सभु कूड़ु दिसंदा॥ (२७-११-१)
होरतु सादि न लगीऐ होइ विसु लगंदा॥ (२७-११-२)
होरतु राग न रीझीऐसुणि सुख न लहंदा॥ (२७-११-३)
होरु बुरी करतूति है लगै फलु मंदा॥ (२७-११-४)
होरतु पंथि न चलीऐ ठगु चोरु मुहंदा॥ (२७-११-५)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी सचु सचि मिलंदा ॥११॥ (२७-११-६)

दूजी आस विणासु है पूरी किउ होवै॥ (२७-१२-१)
दूजा मोह सु ध्रोह सभु ओहु अंति विगोवै॥ (२७-१२-२)
दूजा करमु सुभरम है करि अवगुण रोवै॥ (२७-१२-३)
दूजा संगु कुधंगु है किउ भरिआ धोवै॥ (२७-१२-४)
दूजा भाउ कुदाउ है हार जनमु खलोवै॥ (२७-१२-५)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी गुण गुणी परोवै ॥१२॥ (२७-१२-६)

अमिओ दिसटि करि कछु वाँगि भवजल विचि रखै॥ (२७-१३-१)
गिआन अंस दे हंस वाँगि बुझि भख अभखै॥ (२७-१३-२)
सिमरण करदे कूंज वाँगि उडि लखै अलखै॥ (२७-१३-३)
माता बालक हेतु करि ओहु साउ न चखै॥ (२७-१३-४)
सतिगुर पुरख दइआलु है गुरसिख परखै॥ (२७-१३-५)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी लख मुलीअनि कखै ॥१३॥ (२७-१३-६)

दरसनु देखि पतंग जिउ जोती जोति समावै॥ (२७-१४-१)
सबद सुरति लिव मिरग जिउ अनहद लिव लावै॥ (२७-१४-२)
साधसंगति विचि मीनु होइ गुरमति सुख पावै॥ (२७-१४-३)
चइण कवल विचि भवरु होइ सुख रैणि विहावै॥ (२७-१४-४)
गुर उपदेस न विसरै बाबीहा धिआवै॥ (२७-१४-५)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी दुबिधा ना सुखावै ॥१४॥ (२७-१४-६)

दाता ओहु न मंगीऐ फिरि मंगणि जाईऐ॥ (२७-१५-१)
होछा साहु न कीचई फिरि पछोताईऐ॥ (२७-१५-२)
साहिबु ओहु न सेवीऐ जम डंडु सहाईऐ॥ (२७-१५-३)

हउमै रोगु न कटई ओहु वैदु न लाईऐ॥ (२७-१५-४)
दुरमति मैलु न उतरै किउं तीरथि नाईऐ॥ (२७-१५-५)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी सुख सहजि समाईऐ ॥१५॥ (२७-१५-६)

मालु मुलकु चतुरंग दलदुनीआ पतिसाही॥ (२७-१६-१)
रिधि सिधि निधि बहु करामाति सभ खलक उमाही॥ (२७-१६-२)
चिरु जीवणु बहु हंढणा गुण गिआन उगाही॥ (२७-१६-३)
होरसु किसै न जाणई चिति बेपरवाही॥ (२७-१६-४)
दरगह ढोई न लहै दुबिधा बदराही॥ (२७-१६-५)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी परवाणु सु घाही ॥१६॥ (२७-१६-६)

विणु गुरु होरु धिआनु है सभ दूजा भाउ॥ (२७-१७-१)
विणु गुरु सबद गिआनु है फिका आलाउ॥ (२७-१७-२)
विणु गुरु चरणाँ पूजणा सभ कूड़ा सुआउ॥ (२७-१७-३)
विणु गुरु बचनु जु मन्नणा ऊरा परथाउ॥ (२७-१७-४)
साधसंगति विणु संग है सभ कचा चाउ॥ (२७-१७-५)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी जिणि जाणनि दाउ ॥१७॥ (२७-१७-६)

लख सिआणप सुरति लख लख गुण चतुराई॥ (२७-१८-१)
लख मति बुधि सुधि गिआन धिआन लख पति वडिआई॥ (२७-१८-२)
लख जप तप लख संजमाँ लख तीर्थ नश्राई॥ (२७-१८-३)
कर्म धर्म लख जोग भोग लख पाठ पड़हाई॥ (२७-१८-४)
आपु गणाइ विगुचणा ओहु थाइ न पाई॥ (२७-१८-५)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी होइ आपु गवाई ॥१८॥ (२७-१८-६)

पैरी पै पा खाक होइ ड़डि मणी मनूरी॥ (२७-१९-१)
पाणी पखा पीहणा नित करै मजूरी॥ (२७-१९-२)
त्रपड़ झाड़ विछाइंदा चुलि झोकि न झूरी॥ (२७-१९-३)
मुरदे वाँगि मुरीदु होइ करि सिदक सबूरी॥ (२७-१९-४)
चंदनु होवै सिम्मलहु फलु वासु हजूरी॥ (२७-१९-५)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी गुरमुखि मति पूरी ॥१९॥ (२७-१९-६)

गुर सेवा दा फलु घणा किनि कीमति होई॥ (२७-२०-१)
रंगु सुरंगु अचरजु है वेखाले सोई॥ (२७-२०-२)
सादु वडा विसमादु है रसु गुंगे गोई॥ (२७-२०-३)

उतभुज वासु निवासु है करि चलतु समोई॥ (२७-२०-४)
तोलु अतोलु अमोलु है जरै अजरु कोई॥ (२७-२०-५)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी जाणै जाणोई ॥२०॥ (२७-२०-६)

चन्नणु होवै चन्नणहु को चलितु न जाणै॥ (२७-२१-१)
दीवा बलदा दीविअहुं समसरि परवाणै॥ (२७-२१-२)
पाणी रलदा पाणीऐ तिसु को न सिञाणै॥ (२७-२१-३)
भ्रिंगी होवै कीड़िअहु किव आखि वखाणै॥ (२७-२१-४)
सपु छुडंदा कुंज नो करि चोज विडाणै॥ (२७-२१-५)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी हैराणु हैराण ॥२१॥ (२७-२१-६)

फुली वासु निवासु है कितु जुगति समाणी॥ (२७-२२-१)
फुलाँ अंदरि जिउ सादु बहु सिंजे इक पाणी॥ (२७-२२-२)
घिउ दुधु विचि वखाणीऐ को मरमु न जाणी॥ (२७-२२-३)
जिउ बैसंतरु काठ विचि ओहु अलख विडाणी॥ (२७-२२-४)
गुरमुखि संजमि निकलै परगट परवाणी॥ (२७-२२-५)
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी संगति गुरबाणी ॥२२॥ (२७-२२-६)

दीपक जलै पतंग वंसु फिरि देख न हटै॥ (२७-२३-१)
जल विचहु फड़ि कढीऐ मछ नेहु न घटै॥ (२७-२३-२)
घंडा हेड़ै मिरग जिउ सुणि नाद पलटै॥ (२७-२३-३)
भवरै वासु विणासु है फड़ि कवलु संघटै॥ (२७-२३-४)
गुरमुखि सुखफलु पिर्म रसु बहु बंधन कटै॥ (२७-२३-५)
धन्नु धन्नु गुरसिळख वंसु है धन्नु गुरमति निधि खटै ॥२३॥२७॥ (२७-२३-६)

Vaar 28

ੴ सतिगुरप्रसादि ॥ (२८-१-१)

वालहु निकी आखीऐ खंडे धारहु सुणीऐ तिखी॥ (२८-१-२)
आखणि आखि न सकीऐ लेख अलेख न जाई लिखी॥ (२८-१-३)
गुरमुखि पंथु वखाणीऐ अपड़ि न सकै इकतु विखी॥ (२८-१-४)
सिल अलूणी चटणी तुलि न लख अमिअ रस इखी॥ (२८-१-५)
गुरमुखि सुख फलु पाइआ भाइ भगति विरली जु बिरखी॥ (२८-१-६)
सतिगुर तुठै पाईऐ साधसंगति गुरमति गुरसिखी॥ (२८-१-७)
चारि पदार्थ भिखक भिखी ॥१॥ (२८-१-८)

चारि पदार्थ आखीअनि सतिगुर देइ न गुरसिखु मंगै॥ (२८-२-१)
अठ सिधी निधी नवै रिधि न गुरु सिखु ढाकै टंगै॥ (२८-२-२)
कामधेणु लख लखमी पहुंच न हंघै ढंगि सुढंगै॥ (२८-२-३)
लख पारस लख पारिजात हथि न छुहदा फल न अभंगै॥ (२८-२-४)
तंत मंत पाखंड लख बाजीगर बाजारी नंगै॥ (२८-२-५)
पीर मुरीदी गाखड़ी इकस अंगि न अंगणि अंगै॥ (२८-२-६)
गुरसिखु दूजे भावहु संगै ॥२॥ (२८-२-७)

गुर सिखी दा सिखणा नादु न वेद न आखि वखाणै॥ (२८-३-१)
गुर सिखी दा लिखणा लख न चित्र गुपति लिखि जाणै॥ (२८-३-२)
गुर सिखी दा सिमरणों सेख असंख न रेख सिञाणै॥ (२८-३-३)
गुर सिखी दा वरतमानु वीह इकीह उलंघि पछाणै॥ (२८-३-४)
गुर सिखी दा बुझणा गिआन धिआन अंदरि किव आणै॥ (२८-३-५)
गुर परसादी साधसंगि सबद सुरति होइ माणु निमाणै॥ (२८-३-६)
भाइ भगति विरला रंगु माणै ॥३॥ (२८-३-७)

गुर सिखी दा सिखणा गुरमुखि साधसंगति दी सेवा॥ (२८-४-१)
दस अवतार न सिखिआ गीता गोसटि अलख अभेवा॥ (२८-४-२)
वेद न जाणन भेद किहु लिखि पड़ि सुणि सणु देवी देवा॥ (२८-४-३)
सिध नाथ न समाधि विचि तंत न मंत लंघाइनि खेवा॥ (२८-४-४)
लख भगति जगत विचि लिखि न गए गुरु सिखी टेवा॥ (२८-४-५)
सिला अलूणी चटणी सादि न पुजै लख लख मेवा॥ (२८-४-६)
साधसंगति गुर सबद समेवा ॥४॥ (२८-४-७)

गुर सिखी दा सिखणा शबद सुरति सतिसंगति सिखै॥ (२८-५-१)
गुर सिखी दा लिखणा गुरबाणी सुणि समझै लिखै॥ (२८-५-२)
गुर सिखी दा सिमरणो सतिगुरु मंतु कोलू रसु इखै॥ (२८-५-३)
गुर सिखी दा वरतमानु चंदन वासु निवासु बिरिखै॥ (२८-५-४)
गुर सिखी दा बुझणा बुझि अबुझि होवै लै भिखै॥ (२८-५-५)
साधसंगति गुर सबदु सुणि नामु दानु इसनानु सरिखै॥ (२८-५-६)
वरतमानु लंघि भूत भविखै ॥५॥ (२८-५-७)

गुर सिखी दा बोलणा हुइ मिठ बोला लिखै न लेखै॥ (२८-६-१)
गुर सिखी दा चलणा चलै भै विचि लीते भेखै॥ (२८-६-२)
गुर सिखी दा राह एहु गुरमुखि चाल चलै सो देखै॥ (२८-६-३)
घालि खाइ सेवा करै गुर उपदेसु अवेसु विसेखै॥ (२८-६-४)
आपु गणाइ न अपड़ै आपु गवाए रूप न रेखै॥ (२८-६-५)
मुरदे वाँगु मुरीद होइ गुर गोरी वड़ि अलख अलेखै॥ (२८-६-६)
अंतु न मंतु न सेख सरेखै ॥६॥ (२८-६-७)

गुर सिखी दा सिखणा गुरु सिख सिखण बजरु भारा॥ (२८-७-१)
गुर सिखी दा लिखणा लेखु अलेखु न लिखणहारा॥ (२८-७-२)
गुर सिखी दा तोलणा तुलि न तोलि तुलै तुलधारा॥ (२८-७-३)
गुर सिखी दा देखणा गुरमुखि साधसंगति गुरदुआरा॥ (२८-७-४)
गुर सिखी दा चखणा साधसंगति गुरु सबदु वीचारा॥ (२८-७-५)
गुर सिखी दा समझणा जोती जोति जगावणहारा॥ (२८-७-६)
गुरमुखि सुखफल पिरमु पिआरा ॥७॥ (२८-७-७)

गुर सिखी दा रूप देखि इकस बाझु न होरसु देखै॥ (२८-८-१)
गुर सिखी दा चखणा लख अमृत फल फिकै लेखै॥ (२८-८-२)
गुर सिखी दा नादु सुणि लख अनहद विसमाद अलेखै॥ (२८-८-३)
गुर सिखी दा परसणा ठंढा तता भेख अभेखै॥ (२८-८-४)
गुर सिखी दी वासु लै हुइ दुरगंध सुगंध सरेखै॥ (२८-८-५)
गुर सिखी मर जीवणा भाइ भगति भै निमख नमेखै॥ (२८-८-६)
अलपि रहै गुर सबदि विसेखै ॥८॥ (२८-८-७)

गुरमुखि सचा पंथु है सिखु सहज घरि जाइ खलोवै॥ (२८-९-१)
गुरमुखि सचु रहरासि है पैरीं पै पा खाकु जु होवै॥ (२८-९-२)

गुर सिखी दा नावणा गुरमति लै दुरमति मलु धोवै॥ (२८-९-३)
गुर सिखी दा पूजणा गुरसिख पूज पिर्म रसु भोवै॥ (२८-९-४)
गुर सिखी दा मन्नणा गुर बचनी गलि हार परोवै॥ (२८-९-५)
गुर सिखी दा जीवणा जींवदिआँ मरि हउमै खोवै॥ (२८-९-६)
साधसंगति गुरु सबद विलोवै ॥९॥ (२८-९-७)

गुरमुखि सुखफलु खावणा दुखु सुखु समकरि अउचर चरणा॥ (२८-१०-१)
गुर सिखी दा गावणा अमृत बाणी निझरु झरणा॥ (२८-१०-२)
गुर सिखी धीरजु धरमु पिर्म पिआला अजरु जरणा॥ (२८-१०-३)
गुर सिखी दा संजमो डरि निडरु निडर मुच डरणा॥ (२८-१०-४)
गुर सिखी मिलि साधसंगि शबद सुरति जगु दुतरु तरणा॥ (२८-१०-५)
गुर सिखी दा कर्म एहु गुर फुरमाए गुरसिख करणा॥ (२८-१०-६)
गुर किरपा गुरु सिखु गुरु सरणा ॥१०॥ (२८-१०-७)

वासि सुवासु निवासु करि सिम्मलि गुरमुखि सुखफल लाए॥ (२८-११-१)
पारस होइ मनूरु मलु कागहु पर्म हंसु करवाए॥ (२८-११-२)
पसू परेतहु देव करि सतिगुर देव सेव भै पाए॥ (२८-११-३)
सभ निधान रखि संख विचि हरि जी लै लै हथि वजाए॥ (२८-११-४)
पतित उधारणु आखीऐ भगति वछल होइ आपु छलाए॥ (२८-११-५)
गुण कीते गुण करे जग अवगुण कीते गुण गुर भाए॥ (२८-११-६)
परउपकारी जग विचि आए ॥११॥ (२८-११-७)

फल दे वट वगाइआँ तछणहारे तारि तरंदा॥ (२८-१२-१)
तछे पुत न डोबई पुत वैरु जल जी न धरंदा॥ (२८-१२-२)
वरसै होइ सहंसधार मिलि गिल जलु नीवाणि चलंदा॥ (२८-१२-३)
डोबै डबै अगर नो आपु छडि पुत पैज रखंदा॥ (२८-१२-४)
तरि डुबै डुबा तरै जिणि हारै हारै सु जिणंदा॥ (२८-१२-५)
उलटा खेलु पिरम्म दा पैराँ उपरि सीसु निवंदा॥ (२८-१२-६)
आपहु किसै न जाणै मंदा ॥१२॥ (२८-१२-७)

धरती पैराँ हेठि है धरती हेठि वसंदा पाणी॥ (२८-१३-१)
पाणी चलै नीवाण नो निरमलु सीतलु सुधु पराणी॥ (२८-१३-२)
बहु रंगी इक रंगु है सभनाँ अंदरि इको जाणी॥ (२८-१३-३)
तता होवै धुप विचि छावै ठंढा विरती हाणी॥ (२८-१३-४)
तपदा परउपकार नो ठंढे परउपकार विहाणी॥ (२८-१३-५)

अगनि बुझाए तपति विचि ठंढा होवै बिलमु न आणी॥ (२८-१३-६)
गुरु सिखी दी एहु नीसाणी ॥१३॥ (२८-१३-७)

पाणी अंदरि धरति है धरती अंदरि पाणी वसै॥ (२८-१४-१)
धरती रंगु न रंग सभ धरती साउ न सभ रस रसै॥ (२८-१४-२)
धरती गंधु न गंध बहु धरति न रूप अनूप तरसै॥ (२८-१४-३)
जेहा बीजै सो लुणै करमि भूमि सभ कोई दसै॥ (२८-१४-४)
चंदन लेपु न लेपु है करि मल मूत कसूतु न धसै॥ (२८-१४-५)
वुठे मीह जमाइदे डवि लगै अंगूरु विगसै॥ (२८-१४-६)
दुखि न रोवै सुखि न हसै ॥१४॥ (२८-१४-७)

पिछल रातीं जागणा नामु दानु इसनानु दिड़ाए॥ (२८-१५-१)
मिठा बोलणु निव चलणु हथहु दे कै भला मनाए॥ (२८-१५-२)
थोड़ा सवणा खावणा थोड़ा बोलनु गुरमति पाए॥ (२८-१५-३)
घालि खाइ सुकृतु करै वडा होइ न आपु गणाए॥ (२८-१५-४)
साधसंगति मिलि गाँवदे राति दिहैं नित चलि चलि जाए॥ (२८-१५-५)
सबद सुरति परचा करै सतिगुरु परचै मनु परचाए॥ (२८-१५-६)
आसा विचि निरासु वलाए ॥१५॥ (२८-१५-७)

गुर चेला चेला गुरू गुरु सिख सुणि गुरसिखु सदावै॥ (२८-१६-१)
इक मनि इकु अराधणा बाहरि जाँदा वरजि रहावै॥ (२८-१६-२)
हुकमी बंदा होइ कै खसमै दा भाणातिसु भावै॥ (२८-१६-३)
मुरदा होइ मुरीद सोइ को विरला गुरि गोरि समावै॥ (२८-१६-४)
पैरी पै पा खाकु होइ पैराँ उपरि सीसु धरावै॥ (२८-१६-५)
आपु गवाए आपु होइ दूजा भाउ न नदरी आवै॥ (२८-१६-६)
गुरु सिखी गुरु सिखु कमावै ॥१६॥ (२८-१६-७)

ते विरलैसैंसार विचि दरसन जोति पतंग मिलंदे॥ (२८-१७-१)
ते विरलैसैंसार विचि सबद सुरति होइ मिरग मरंदे॥ (२८-१७-२)
ते विरलैसैंसार विचि चरण कवल होइ भवर वसंदे॥ (२८-१७-३)
ते विरलैसैंसार विचि पिर्म सनेही मीन तरंदे॥ (२८-१७-४)
ते विरलैसैंसार विचि गुर सिख गुर सिख सेव करंदे॥ (२८-१७-५)
भै विचि जम्मनि भै रहनि भै विचि मरि गुरु सिख जीवंदे॥ (२८-१७-६)
गुरमुख सुख फलु पिरमु चखंदे ॥१७॥ (२८-१७-७)

लख जप तप लख संजमाँ होम जग लख वरत करंदे॥ (२८-१८-१)
लख तीर्थ लख ऊलखा लख पुरीआ लख पुरब लगंदे॥ (२८-१८-२)
देवी देवल देहुरे लख पुजारी पूज करंदे॥ (२८-१८-३)
जल थल महीअल भरमदे कर्म धर्म लख फेरि फिरंदे॥ (२८-१८-४)
लख पर्बत वणखंड लख लख उदासी होइ भवंदे॥ (२८-१८-५)
अगनी अंगु जलाइंदे लख हिमंचलि जाइ गलंदे॥ (२८-१८-६)
गुरु सिखी सुखु तिलु न लहंदे ॥१८॥ (२८-१८-७)

चारि वरण करि वरतिआँ वरनु चिहनु किहु नदरि न आइआ॥ (२८-१६-१)
छिअ दरसनु भेखदारीआँ दरसन विचि न दरसनु पाइआ॥ (२८-१६-२)
संनिआसी दस नाव धरि नाउ गणाइ न नाउ धिआइआ॥ (२८-१६-३)
रावल बारह पंथ करि गुरमुख पंथ न अलखु लखाइआ॥ (२८-१६-४)
बहु रूपी बहु रूपीए रूप न रेख न लेखु मिटाइआ॥ (२८-१६-५)
मिलि मिलि चलदे संग लख साधू संगि न रंग रंगाइआ॥ (२८-१६-६)
विण गुरु पूरे मोहे माइआ ॥१६॥ (२८-१६-७)

किरसाणी किरसाण करि खेत बीजि सुखफलु न लहंदे॥ (२८-२०-१)
वणजु करनि वापारीए लै लाहा निज घरि न वसंदे॥ (२८-२०-२)
चाकर करि करि चाकरी हउमै मारि न सुलह करंदे॥ (२८-२०-३)
पुन्न दान चंगिआईआँ करि करि करतब थिरु न रहंदे॥ (२८-२०-४)
राजे परजे होइ कै करि करि वादु न पाइ पवंदे॥ (२८-२०-५)
गुर सिख सुणि गुर सिख होइ साधसंगति करि मेल मिलंदे॥ (२८-२०-६)
गुरमति चलदे विरले बंदे ॥२०॥ (२८-२०-७)

गुंगा गावि न जाणई बोला सुणै न अंदरि आणै॥ (२८-२१-१)
अन्नश्रै दिसि न आवई राति अनश्रेरी घरु न सिञाणै॥ (२८-२१-२)
चलि न सकै पिंगुला लूल्हा गलि मिलि हेतु न जाणै॥ (२८-२१-३)
संढि सुपुती न थीऐ खुसरै नालि न रलीआँ माणै॥ (२८-२१-४)
जणि जणि पुताँ माईआँ दले नाँव धरेनि धिङाणै॥ (२८-२१-५)
गुरसिखी सतिगुरू विणु सूरजु जोति न होइ टटाणै॥ (२८-२१-६)
शबद सुरति गुर सबदु वखाणै ॥२१॥ (२८-२१-७)

लख धिआन समाधि लाइ गुरमुखि रूपि न अपड़ि सकै॥ (२८-२२-१)
लख गिआन वखाणि कर सबद सुरति उडारी थकै॥ (२८-२२-२)
बुधि बल बचन बिबेक लख ढहिढहि पवनि पिरमदरिधकै॥ (२८-२२-३)

लख अचरज अचरज होइ अबिगति गति अबिगति विचि अकै॥ (२८-२२-४)
विसमादी विसमादु लख अकथ कथा विचि सहमि महकै॥ (२८-२२-५)
गुरसिखी दै अखि फरकै ॥२२॥२८॥ (२८-२२-६)

Vaar 29

ੴ सतिगुरप्रसादि॥ (२९-१-१)

आदि पुरख आदेसु है सतिगुरु सचु नाउ सदवाइआ॥ (२९-१-२)
चारि वरन गुरसिख करि गुरमुखि सचा पंथु चलाइआ॥ (२९-१-३)
साधसंगति मिलि गाँवदे सतिगुरु सबदु अनाहदु वाइआ॥ (२९-१-४)
गुर साखी उपदेसु करि आपि तरे सैसारु तराइआ॥ (२९-१-५)
पान सुपारी कथि मिलि चूने रंगु सुरंग चड़हाइआ॥ (२९-१-६)
गिआनु धिआनु सिमरणि जुगति गुरमति मिलि गुर पूरा पाइआ॥ (२९-१-७)
साधसंगति सच खंडु वसाइआ ॥१॥ (२९-१-८)

परतन परधन परनिंद मेटि नामु दानु इसनानु दिड़ाइआ॥ (२९-२-१)
गुरमति मनु समझाइ कै बाहरि जाँदा वरजि रहाइआ॥ (२९-२-२)
मनि जितै जगु जिणि लइआ असटधातु इक धातु कराइआ॥ (२९-२-३)
पारस होए पारसहु गुर उपदेसु अवेसु दिखाइआ॥ (२९-२-४)
जोग भोग जिणि जुगति करि भाइ भगति भै आपु गवाइआ॥ (२९-२-५)
आपु गइआ आपि वरतिआ भगति वछल होइ वसगति आइआ॥ (२९-२-६)
साधसंगति विचि अलखु लखाइआ ॥२॥ (२९-२-७)

सबद सुरति मिलि साधसंगि गुरमुखि दुख सुख समकरि साधे॥ (२९-३-१)
हउमै दुरमति परहरी गुरमति सतिगुर पुरखु आराधे॥ (२९-३-२)
सिव सकती नो लंघि कै गुरमुखि सुख फलु सहज समाधे॥ (२९-३-३)
गुरु परमेसरु एकु जाणि दूजा भाउ मिटाइ उपाधे॥ (२९-३-४)
जम्मण मरणहु बाहरे अजरावरि मिलि अगम अगाधे॥ (२९-३-५)
आस न त्रास उदास घरि हरख सोग विहु अमृत खाधे॥ (२९-३-६)
महा असाध साधसंग साधे ॥३॥ (२९-३-७)

पउण पाणी बैसंतरो रजु गुणु तम गुण सत गुणु जिता॥ (२९-४-१)
मन बच कर्म संकलप करि इक मनि होइ विगोइ दुचिता॥ (२९-४-२)
लोक वेद गुर गिआन लिव अंदरि इकु बाहरि बहु भिता॥ (२९-४-३)
मात लोक पाताल जिणि सुरग लोक विचि होइ अथिता॥ (२९-४-४)
मिठा बोलणु निवि चलणु हथहु दे करि पतित पविता॥ (२९-४-५)
गुरमुखि सुख फलु पाइआ अतुलु अडोलु अमेलु अमिता॥ (२९-४-६)
साधसंगति मिलि पीड़ि नपिता ॥४॥ (२९-४-७)

चारि पदार्थ हथ जोड़ि हुकमी बंदे रहनि खड़ोते॥ (२६-५-१)
चारे चक निवाइआ पैरी पै इक सूति परोते॥ (२६-५-२)
वेद पाइनि भेदु किहु पड़ि पड़ि पंडित सुणि सुणि स्रोते॥ (२६-५-३)
चहु जुगि अंदर जागदी ओति पोति मिलि जगमग जोते॥ (२६-५-४)
चारि वरन इक वरन होइ गुरसिख वड़ीअनि गुरमुखि गोते॥ (२६-५-५)
धरमसाल विचि बीजदे करि गुरपुरब सु वणज सओते॥ (२६-५-६)
साधसंगति मिलि दादे पोते ॥५॥ (२६-५-७)

कामु क्रोधु अहंकार साधि लोभ मोह दी जोह मिटाई॥ (२६-६-१)
सतु संतोखु दइआ धरमु अर्थु समरथु सुगरथु समाई॥ (२६-६-२)
पंजे तत उलंघिआ पंजि सबद वजी वाधाई॥ (२६-६-३)
पंजे मुद्रा वसि करि पंचाइणु हुइ देस दुहाई॥ (२६-६-४)
परमेसर है पंज मिलि लेख अलेख न कीमति पाई॥ (२६-६-५)
पंज मिले परपंच तजि अनहद सबद सबदि लिव लाई॥ (२६-६-६)
साधसंगति सोहनि गुर भाई ॥६॥ (२६-६-७)

छिअ दरसन तरसनि घणे गुरमुखि सतिगुरु दरसनु पाइआ॥ (२६-७-१)
छिअ सासत्र समझावणी गुरमुखि गुरु उपदेसु दिड़ाइआ॥ (२६-७-२)
राग नाद विसमाद विचि गुरमति सतिगुर सबदु सुणाइआ॥ (२६-७-३)
छिअ रुती करि वरतमान सूरजु इकु चलतु वरताइआ॥ (२६-७-४)
छिअ रस साउ न पाइनी गुरमुखि सुखु फलु पिरमु चखाइआ॥ (२६-७-५)
जती सती चिरु जीवणे चक्रवरति होइ मोहे माइआ॥ (२६-७-६)
साधसंगति मिलि सहजि समाइआ ॥७॥ (२६-७-७)

सत समुंद समाइ लै भवजल अंदरि रहे निराला॥ (२६-८-१)
सते दीप अनश्रेरु है गुरमुखि दीपकु सबद उजाला॥ (२६-८-२)
सते पुरीआ सोधीआ सहज पुरी सची धरमसाला॥ (२६-८-३)
सते रोहणि सत वार साधे फड़ि फड़ि मथे वाला॥ (२६-८-४)
त्रै सते ब्रहमंडि करि वीह इकीह उलंघि सुखाला॥ (२६-८-५)
सते सुर भरपूरु करि सती धारी पारि पिआला॥ (२६-८-६)
साधसंगति गुर सबद समाला ॥८॥ (२६-८-७)

अठ खंडि पाखंड मति गुरमति इक मनि इक धिआइआ॥ (२६-६-१)
असट धातु पारस मिली गुरमुखि कंचनु जोति जगाइआ॥ (२६-६-२)

रिधि सिधि सिध साधिकाँ आदि पुरख आदेसु कराइआ॥ (२६-६-३)
अठै पहर अराधीऐ सबद सुरति लिव अलखु लखाइआ॥ (२६-६-४)
असट कुली विहु उतरी सतिगुर मति न मोहे माइआ॥ (२६-६-५)
मनु असाधु न साधीऐ गुरमुखि सुख फलु साधि सधाइआ॥ (२६-६-६)
साधसंगति मिलि मन वसि आइआ ॥६॥ (२६-६-७)

नउ परकारी भगति करि साधै नवै दुआर गुरमती॥ (२६-१०-१)
गुरमुखि पिरमु चखाइआ गावै जीभ रसाइणि रती॥ (२६-१०-२)
नवी खंडी जाणाइआ राजु जोग जिणि सती असती॥ (२६-१०-३)
नउ करि नउ घर साधिआ वरतमान परलउ उतपती॥ (२६-१०-४)
नव निधि पिछल गणी नाथ अनाथ सनाथ जुगती॥ (२६-१०-५)
नउ उखल विचि उखली मिठी कउड़ी ठंढी ततती॥ (२६-१०-६)
साध संगति गुरमति सणखती ॥१०॥ (२६-१०-७)

दाखि पराईआँ चंगीआँ मावाँ भैणाँ धीआँ जाणै॥ (२६-११-१)
उसु सूअरु उसु गाइ है पर धन हिंदू मुसलमाणै॥ (२६-११-२)
पुत्र कलत्र कुटम्बु देखि मोहे मोहि न धोहि धिङाणै॥ (२६-११-३)
उसतति निंदा कंनि सुणि आपहु बुरा न आखि वखाणै॥ (२६-११-४)
वड परतापु न आपु गणि करि अहम्मेउ न किसै रञाणै॥ (२६-११-५)
गुरमुखि सुख फल पाइआ राजु जोगु रस रलीआ माणै॥ (२६-११-६)
साधसंगति विटहु कुरबाणै ॥११॥ (२६-११-७)

गुरमुखि पिरमु चखाइआ भुख न खाणु पीअणु अन्नु पाणी॥ (२६-१२-१)
सबद सुरति नींद उघड़ी जागदिआँ सुख रैणि विहाणी॥ (२६-१२-२)
साहे बधे सोंहदे मैलापड़ परवाणु पराणी॥ (२६-१२-३)
चलणु जाणि सुजाण होइ जग मिहमान आए मिहमाणी॥ (२६-१२-४)
सचु वणजि खेप लै चले गुरमुखि गाडी राहु नीसाणी॥ (२६-१२-५)
हलति पलति मुख उजले गुर सिख गुरसिखाँ मनि भाणी॥ (२६-१२-६)
साधसंगति विचि अखथ कहाणी ॥१२॥ (२६-१२-७)

हउमै गरबु निवारीऐ गुरमुखि रिदै गरीबी आवै॥ (२६-१३-१)
गिआन मती घटि चानणा भर्म अगिआनु अंधेर मिटावै॥ (२६-१३-२)
होइ निसाणा ढहि पवै दरगहि माणु निमाणा पावै॥ (२६-१३-३)
खसमै सोई भाँवदा खसमै दा जिसु भाणा भावै॥ (२६-१३-४)
भाणा मन्नै मन्नीऐ अपणा भाणा आपि मनावै॥ (२६-१३-५)

दुनीआ विचि पराहुणा दावा छडि रहे ला दावै॥ (२६-१३-६)
साधसंगति मिलि हुकमि कमावै ॥१३॥ (२६-१३-७)

गुर परमेसरु इकु जानि गुरमुखि दूजा भाउ मिटाइआ॥ (२६-१४-१)
हउमै पालि ढहाइ कै ताल नदी दा नीरु मिलाइआ॥ (२६-१४-२)
नदी किनारै दहु वली इक दू पारावारु न पाइआ॥ (२६-१४-३)
रुखहु फलु तै फलु रुखु इकु नाउ फलु रुखु सदाइआ॥ (२६-१४-४)
छिअ रुती इकु सुझ है सुझै सुझु न होरु दिखाइआ॥ (२६-१४-५)
रातीं तारे चमकदे दिह चड़ीऐ किनि आखु लुकाइआ॥ (२६-१४-६)
साधसंगति इकु मनि इकु धिआइआ ॥१४॥ (२६-१४-७)

गुरसिख जोगी जागदे माइआ अंदरि करनि उदासी॥ (२६-१५-१)
कन्नीं मुंदराँ मंत्र गुर संताँ धूड़ि बिभूत सु लासी॥ (२६-१५-२)
खिंथा खिमा हंढावणी प्रेम पत्र भाउ भुगति बिलासी॥ (२६-१५-३)
सबद सुरति सिंङी वजै डंडा गिआनु धिआनु गुर दासी॥ (२६-१५-४)
साधसंगति गुर गुफै बहि सहजि समाधि अगाधि निवासी॥ (२६-१५-५)
हउमै रोग अरोग होइ करि संजोगु विजोग खलासी॥ (२६-१५-६)
साधसंगति दुरमति साबासी ॥१५॥ (२६-१५-७)

लख ब्रह्मे लख वेद पड़ि नेत नेत करि करि सभ थके॥ (२६-१६-१)
महादेव अवधूत लख जोग धिआन उणीदै अके॥ (२६-१६-२)
लख बिसन अवतार लै गिआन खड़गु फड़ि पहुचि न सके॥ (२६-१६-३)
लख लोमसु चिर जीवणे आदि अंति विचि धीरक धके॥ (२६-१६-४)
तिनि लोअ जुग चारि करि लख ब्रहमंड खंड कर ढके॥ (२६-१६-५)
लख परलउ उतपति लख हरहट माला अखि फरके॥ (२६-१६-६)
साधसंगति आसकु होइ तके ॥१६॥ (२६-१६-७)

पारब्रह्म पूरन ब्रह्मु आदि पुरखु है सतिगुरु सोई॥ (२६-१७-१)
जोग धिआनु हैरानु होइ वेद गिआन परवाह न होई॥ (२६-१७-२)
देवी देव सरेवदे जल थल महीअल भवदे लोई॥ (२६-१७-३)
जोम जग जप तप घणे करि करि कर्म धर्म दुख रोई॥ (२६-१७-४)
वसि न आवै धाँवदा अठु खंडि पाखंड विगोई॥ (२६-१७-५)
गुरमुखि मनु जिणि जगु जिणै आपु गवाइ आपे सभ कोई॥ (२६-१७-६)
साधसंगति गुण हारु परोई ॥१७॥ (२६-१७-७)

अलख निरंजन आखीऐ रूप न रेख अलेख अपारा॥ (२६-१८-१)
अबिगति गति अबिगति घणी सिमरणि सेख न आवै वारा॥ (२६-१८-२)
अकथ कथा किउ जाणीऐ कोइ न आख सुणावणहारा॥ (२६-१८-३)
अचरजु नो अचरजु होइ विसमादै विसमादु सुमारा॥ (२६-१८-४)
चारि वरन गुरु सिख होइ घर बारी बहु वणज वपारा॥ (२६-१८-५)
साधसंगति अराधिआभगति वछल गुरु रूपु मुरारा॥ (२६-१८-६)
भव सागरु गुरि सागर तारा ॥१८॥ (२६-१८-७)

निरंकारु एकंकारु पीर मुरीदा पिरहड़ी ओअंकारि अकारु अपारा॥ (२६-१६-१)
रोम रोम विचि रखिओनु करि भ्रहमंड करोड़ि पसारा॥ (२६-१६-२)
केतड़िआँ जुग वरतिआ अगम अगोचरु धुंधूकारा॥ (२६-१६-३)
केतड़िआँ जुग वरतिआ करि करि केतड़िआँ अवतारा॥ (२६-१६-४)
भगति वछलु होइ आइआ कली काल परगट पाहारा॥ (२६-१६-५)
साधसंगति वसगति होआ ओति पोति करि पिर्म पिआरा॥ (२६-१६-६)
गुरमुखि सुझै सिरजणहारा ॥१६॥ (२६-१६-७)

सतिगुर मूरति परगटी गुरमुखि सुखफलु सबद विचारा॥ (२६-२०-१)
इकदू होइ सहस फलु गुरु सिख साधसंगति ओअंकारा॥ (२६-२०-२)
डिठा सुणिआ मंनिआ सनमुखि से विरले सैसारा॥ (२६-२०-३)
पहिलो दे पा खाक होइ पिछहु जगु मंगै पग छारा॥ (२६-२०-४)
गुरमुखि मारग चलिआ सचु वणजु करि पारि उतारा॥ (२६-२०-५)
कीमति कोइ न जाणई आखणि सुणनि न लिखणिहारा॥ (२६-२०-६)
साधसंगति गुर सबदु पिआरा ॥२०॥ (२६-२०-७)

साधसंगति गुरु सबद लिव गुरमुखि सुखफलु पिरमु चखाइआ॥ (२६-२१-१)
सभ निधान कुरबान करि सभे फल बलिहार कराइआ॥ (२६-२१-२)
तृसना जलणि बुझाईआँ साँति सहज संतोखु दिड़ाइआ॥ (२६-२१-३)
सभे आसा पूरीआ आसा विचि निरास वलाइआ॥ (२६-२१-४)
मनसा मनहि समाइ लै मन कामन निहकाम न धाइआ॥ (२६-२१-५)
कर्म काल जम जाल कटि कर्म करे निहकरम रहाइआ॥ (२६-२१-६)
गुर उपदेसु अवेस करि पैरी पै जगु पैरी पाइआ॥ (२६-२१-७)
गुर चेले परचा परचाइआ ॥२१॥२६॥ (२६-२१-८)

Vaar 30

ੴ सतिगुरप्रसादि॥ (३०-१-१)

सतिगुर सचा पातिसाहु गुरमुखि सचा पंथु सुहेला॥ (३०-१-२)
मनमुख कर्म कमाँवदे दुरमति दूजा भाउ दुहेला॥ (३०-१-३)
गुरमुखि सुख फलु सादसंगु भाइ भगति करि गुरमुख मेला॥ (३०-१-४)
कूड़ु कुसतु असाध संगु मनमुख दुख फलु है विहु वेला॥ (३०-१-५)
गुरमुखि आपु गवावणा पैरी पउणा नेहु नवेला॥ (३०-१-६)
मनसुख आपु गवावणा गुरमति गुर ते उकड़ु चेला॥ (३०-१-७)
कैड़ु सचु सीह बकर खेला ॥१॥ (३०-१-८)

गुरमुखि सुखफलु सचु है मनमुख दुख फलु कूड़ु कूड़ावा॥ (३०-२-१)
गुरमुखि सचु संतोखु रुखु दुरमति दूजा भाउ पछावा॥ (३०-२-२)
गुरमुखि सचु अडोलु है मनमुख फेरि फिरंदी छावाँ॥ (३०-२-३)
गुरमुखि कोइल अम्ब वण मनमुख वणि वणि हंढनि कावाँ॥ (३०-२-४)
साधसंगति सचु बाग है शबद सुरति गुर मंत सचावाँ॥ (३०-२-५)
विहु वणु वलि असाध संगि बहुतु सिआणप निगोसावाँ॥ (३०-२-६)
जिउ करि वेसुआ वंसु निनावाँ ॥२॥ (३०-२-७)

गुरमुखि होइ वीआहीऐ दुही वली मिलि मंगल चारा॥ (३०-३-१)
दुहु मिलि जम्मै जाणीऐ पिता जाति परवार सधारा॥ (३०-३-२)
जम्मदिआँ रुणझुंझणा वंसि वधाई रुण झुणकारा॥ (३०-३-३)
नानक दादक सोहिले विरतीसर बहु दान दतारा॥ (३०-३-४)
बहु मिती होइ वेसुआ ना पिउ नाउं निनाउं पुकारा॥ (३०-३-५)
गुरमुखि वंसी पर्म हंस मनमुखि ठग बग वंस हतिआरा॥ (३०-३-६)
सचि सचिआर कूड़हु कूड़िआरा ॥३॥ (३०-३-७)

मान सरोवरु साधसंगु माणक मोती रतन अमोला॥ (३०-४-१)
गुरमुखि वंसी पर्म हंस शबद सुरति गुरमति अडोला॥ (३०-४-२)
खीरहु नीर निकालदे गुरमुखि गिआनु धिआनु निरोला॥ (३०-४-३)
गुरमुखि सचु सलाहीऐ तोलु न तोलणहारु अतोला॥ (३०-४-४)
मनमुख बगुल समाधि है घुटि घुटि जीआँ खाइ अबोला॥ (३०-४-५)
होइ लखाउ टिकाउ जाइ छपड़ि ऊहु पड़ै मुहचोला॥ (३०-४-६)
सचु साउ कूड़ु गहिला गोला ॥४॥ (३०-४-७)

गुरमुख सचु सुलखणा सभि सुलखण सचु सुहावा॥ (३०-५-१)
मनमुख कूड़ु कुलखणा सभ कुलखण कूड़ु कुदावा॥ (३०-५-२)
सचु सुइना कूड़ु कचु है कचु न कंचन मुलि मुलावा॥ (३०-५-३)
सचु भारा कूड़ु हउलड़ा पवै न रतक रतन भुलावा॥ (३०-५-४)
सचु हीरा कूड़ु फटकु है जड़ै जड़ाव न जुड़ै जुड़ावा॥ (३०-५-५)
सच दाता कूड़ु मंगता दिहु राती चोर साह मिलावा॥ (३०-५-६)
सचु साबतु कूड़ि फिरदा फावा ॥५॥ (३०-५-७)

गुरमुखि सचु सुरंगु मूलु मजीठ न टले टलंदा॥ (३०-६-१)
मनमुख कूड़ु कुरंग है फुल कुसम्भै थिर न रहंदा॥ (३०-६-२)
थोम कथूरी वासु लै नकु मरोड़ै मन भावंदा॥ (३०-६-३)
कूड़ु सचु अक अम्ब फल कउड़ा मिठा साउ लहंदा॥ (३०-६-४)
साह चोर सचु कूड़ु है साहु सवै चोरु फिरै भवंदा॥ (३०-६-५)
साह फड़ै उठि चोर नो तिसु नुकसानु दीबाणु करंदा॥ (३०-६-६)
सचु कूड़ै लै निहणि बंदा ॥६॥ (३०-६-७)

सचु सोहै सिर पग जिउ कोझा कूड़ु कथाइ कछोटा॥ (३०-७-१)
सचु सताणा सारदूलु कूड़ु जिवै हीणा हरणोटा॥ (३०-७-२)
लाहा सचु वणंजीऐ कूड़ु कि वणजहु आवै तोटा॥ (३०-७-३)
सचु खरा साबासि है कूड़ु न चलै दमड़ा खोटा॥ (३०-७-४)
तारे लख अमावसै घेरि अनेरि चनाइअणु होटा॥ (३०-७-५)
सूरज इकु चड़हंदिआ होइ अठ खंड पवै फलफोटा॥ (३०-७-६)
कूड़ु सचु जिउं वटु घरोटा ॥७॥ (३०-७-७)

सुहणे सामरतख जिउ कूड़ु सचु वरतै वरतारा॥ (३०-८-१)
हरि चंदउरी नगर वाँगु कूड़ु सचु परगटु पाहारा॥ (३०-८-२)
नदी पछावाँ माणसा सिर तलवाइआ अम्बरु तारा॥ (३०-८-३)
धूअरु धुंधूकारु होइ तुलि न घणहरि वरसणहारा॥ (३०-८-४)
साउ न सिमरणि संकरै दीपक बाझु न मिटै अंधारा॥ (३०-८-५)
लड़ै न कागलि लिखिआ चितु चितेरे सै हथीआरा॥ (३०-८-६)
सचु कूड़ु करतूति वीचारा ॥८॥ (३०-८-७)

सचु समाइणु दुध विचि कूड़ विगाड़ु काँजी दी चुखै॥ (३०-९-१)
सचु भोजनु मुहि खावणा इकु दाणा नकै वलि दुखै॥ (३०-९-२)

फलहु रुख रुखहु सु फलु अंति कालि खउ लाखहु रुखै॥ (३०-९-३)
सउ वरिआ अगि रुख विचि भसम करै अगि बिंदकु धुखै॥ (३०-९-४)
सचु दारू कूड़ु रोगु है गुर वैद वेदनि मनमुखै॥ (३०-९-५)
सचु सथोई कूड़ु ठगु लगै दुखु न गुरमुखि सुखै॥ (३०-९-६)
कूड़ु पचै सचै दी भुखै ॥९॥ (३०-९-७)

कूड़ु कपट हथिआर जिउ सचु रखवाला सिलह संजोआ॥ (३०-१०-१)
कूड़ु वैरी नित जोहदा सचु सुमितु हिमाइति होआ॥ (३०-१०-२)
सूरवीरु वरीआमु सचु कूड़ु कुड़ावा करदा ढोआ॥ (३०-१०-३)
निहचलु सचु सुथाइ है लरजै कूड़ु कुथाइ खड़ोआ॥ (३०-१०-४)
सचि फड़ि कूड़ु पछाड़िआ चारि चक वैखन त्रै लोआ॥ (३०-१०-५)
कूड़ु कपटु रोगी सदा सचु सदा ही नवाँ निरोआ॥ (३०-१०-६)
सचु सचा कूड़ु कूड़ु विखोआ ॥१०॥ (३०-१०-७)

सचु सूरजु परगासु है कूड़हु घुघू कुझु न सुझै॥ (३०-११-१)
सच वणसपति बोहीऐ कूड़हु वास न चंदन बुझै॥ (३०-११-२)
सचहु सफल तरोवरा सिम्मलु अफलु वडाई लुझै॥ (३०-११-३)
सावणि वण हरीआवले सुकै अकु जवाहाँ रुझै॥ (३०-११-४)
माणक मोती मानसरि संखि निसखण हसतन दुझै॥ (३०-११-५)
सचु गंगोदकु निरमला कूड़ि रलै मद परगटु गुझै॥ (३०-११-६)
सचु सचा कूड़ु कूड़हु खुझै ॥११॥ (३०-११-७)

सचु कूड़ दुइ झागड़ू झगड़ा करदा चउतै आइआ॥ (३०-१२-१)
अगे सचा सचि निआइ आप हजूरि दोवै झगड़ाइआ॥ (३०-१२-२)
सचु सचा कूड़ि कूड़िआरु पंचा विचिदो करि समझाइआ॥ (३०-१२-३)
सचि जिता कूड़ि हारिआ कूड़ु कूड़ा करि सहरि फिराइआ॥ (३०-१२-४)
सचिआरै साबासि है कूड़िआरै फिटु फिटु कराइआ॥ (३०-१२-५)
सच लहणा कूड़ि देवणा खतु सतागलु लिखि देवाइआ॥ (३०-१२-६)
आप ठगाइ न ठगीऐ ठगणहारै आपु ठगाइआ॥ (३०-१२-७)
विरला सचु विहाझण आइआ ॥१२॥ (३०-१२-८)

कूड़ु सुता सचु जागदा सचु साहिब दे मनि भाइआ॥ (३०-१३-१)
सचु सचै करि पाहरू सच भंडार उते बहिलाइआ॥ (३०-१३-२)
सचु आगू आनश्रेर कूड़ उझड़ि दूजा भाउ चलाइआ॥ (३०-१३-३)
सचु सचे करि फउजदारु राहु चलावणु जोगु पठाइआ॥ (३०-१३-४)

जग भवजलु मिलि साधसंगि गुर बोहिथै चाड़िह तराइआ॥ (३०-१३-५)
कामु क्रोधु लोभु मोहु फड़ि अहंकारु गरदनि मरवाइआ॥ (३०-१३-६)
पारि पए गुरु पूरा पाइआ ॥१३॥ (३०-१३-७)

लूणु साहिब दा खाइ कै रण अंदरि लड़ि मरै सु जापै॥ (३०-१४-१)
सिर वढै हथीआरु करि वरीआमा वरिआमु सिञापै॥ (३०-१४-२)
तिसु पिछै जो इसतरी थपि थेई दे वरै सरापै॥ (३०-१४-३)
पोतै पुत वडीरीअनि परवारै साधारु परापै॥ (३०-१४-४)
वखतै उपरि लड़ि मरै अमृत वेलै सबदु अलापै॥ (३०-१४-५)
साधसंगति विचि जाइ कै हउमै मारि मरै आपु आपै॥ (३०-१४-६)
लड़ि मरणा तै सती होणु गुरमुखि पंथु पूरण परतापै॥ (३०-१४-७)
सचि सिदक सच पीरु पछापै ॥१४॥ (३०-१४-८)

निहचलु सचा थेहु है साधसंगु पंजे परधाना॥ (३०-१५-१)
सति संतोखु दइआ धरमु अर्थु समरथु सभो बंधाना॥ (३०-१५-२)
गुर उपदासु कमावणा गुरमुखि नामु दानु इसनाना॥ (३०-१५-३)
मिठा बोलणु निवि चलणु हथहु देण भगति गुर गिआना॥ (३०-१५-४)
दुही सराई सुरखरू सचु सबदु वजै नीसाना॥ (३०-१५-५)
चलणु जिन्नश्री जाणिआ जग अंदरि विरले मिहमाना॥ (३०-१५-६)
आप गवाए तिसु कुरबाना ॥१५॥ (३०-१५-७)

कूड़ु अहीराँ पिंडु है पंज दूत वसनि बुरिआरा॥ (३०-१६-१)
काम करोधु विरोधु नित लोभ मोह ध्रोहु अहंकारा॥ (३०-१६-२)
खिंजोताणु असाधु संगु वरतै पापै दा वरतारा॥ (३०-१६-३)
पर धन पर निंदा पिआरु पर नारी सिउ वडे विकारा॥ (३०-१६-४)
खलुहलु मूलि न चुकई राज डंडु जम डंडु करारा॥ (३०-१६-५)
दुही सराई जरदरू जम्मण मरण नरकि अवतारा॥ (३०-१६-६)
अगी फल होवनि अंगिआरा ॥१६॥ (३०-१६-७)

सचु सपूरण निरमला तिसु विचि कूड़ु न रलदा राई॥ (३०-१७-१)
अखी कतु न संजरै तिण अउखा दुखि रैणि विहाई॥ (३०-१७-२)
भोजण अंदरि मखि जिउ होइ दुकुधा फेरि कढाई॥ (३०-१७-३)
रूई अंदरि चिणग वाँग दाहि भसमंतु करे दुखदाई॥ (३०-१७-४)
काँजी दुधु कुसुधु होइ फिटै सादहु वन्नहु जाई॥ (३०-१७-५)
महुरा चुखकु चखिआ पातिसाहा मारै सहमाई॥ (३०-१७-६)

सचि अंदरि किउ कूड़ु समाई ॥१७॥ (३०-१७-७)

गुरमुखि सचु अलिपतु है कूड़हु लेपु न लगै भाई॥ (३०-१८-१)
चंसन सर्पी वेड़िआ चड़है न विसु न वासु घटाई॥ (३०-१८-२)
पारसु अंदरि पथराँ असट धातु मिलि विगड़ि न जाई॥ (३०-१८-३)
गंग संगि अपवित्र जलु करि न सकै अपवित्र मिलाई॥ (३०-१८-४)
साइर अगि न लगई मेरु सुमेरु न वाउ डुलाई॥ (३०-१८-५)
बाणु न धुरि असमाणि जाइ वाहेंदड़ु पिछै पछुताई॥ (३०-१८-६)
ओड़कि कूड़ु कूड़ो हुइ जाई ॥१८॥ (३०-१८-७)

सचु सुहावा माणु है कूड़ कूड़ावी मणी मनूरी॥ (३०-१६-१)
कूड़े कूड़ी पाइ है सचु सचावी गुरमति पूरी॥ (३०-१६-२)
कूड़े कूड़ा जोरि है सचि सताणी गरब गरूरी॥ (३०-१६-३)
कूड़ु न दरगह मन्नीऐ सचु सुहावा सदा हजूरी॥ (३०-१६-४)
सुकराना है सचु घरि कूड़ु कुफर घरि न साबूरी॥ (३०-१६-५)
हसति चाल है सच दी कूड़ि कुढंगी चाल भेडूरी॥ (३०-१६-६)
मूली पान डिकार जिउ मुलि न तुलि लसणु कसतूरी॥ (३०-१६-७)
बीजै विसु न खावै चूरी ॥१६॥ (३०-१६-८)

सचु सुभाउ मजीठ दा सहै अवटण रंगु चड़हाए॥ (३०-२०-१)
सण जिउ कूड़ु सुभाउ है खल कढाइ वटाइ बनाए॥ (३०-२०-२)
चन्नण परउपकारु करि अफल सफल विचि वास वसाए॥ (३०-२०-३)
वडा विकारी वाँसु है हउमै जलै गवाँढ जलाए॥ (३०-२०-४)
जाण अमिओ रसु कालकूटु खाधै मरै मुए जीवाए॥ (३०-२०-५)
दरगह सचु कबूलु है कूड़हु दरगह मिलै सजाए॥ (३०-२०-६)
जो बीजै सोई फलु खाए ॥२०॥३०॥ (३०-२०-७)

Vaar 31

ੴ सतिगुरप्रसादि ॥ (३१-१-१)

साइर विचहु निकलै कालकूटु तै अमृत वाणी॥ (३१-१-२)
उत खाधै मरि मुकीऐ उतु खाधै होइ अमरु पराणी॥ (३१-१-३)
विसु वसै मुहि सप दै गरड़ दुगारि अमिअ रस जाणी॥ (३१-१-४)
काउ न भावै बोलिआ कोइल बोली सभनाँ भाणी॥ (३१-१-५)
बुर बोला न सुखावई मिठ बोला जगि मितु विडाणी॥ (३१-१-६)
बुरा भला सैसार विचि परउपकार विकार निसाणी॥ (३१-१-७)
गुण अवगुण गति आखि वखाणी ॥१॥ (३१-१-८)

सुझहु सुझनि तिनि लोअ अन्नश्रे घुघू सुझु न सुझै॥ (३१-२-१)
चकवी सूरज हेतु है कंतु मिलै विरतंतु सु बुझै॥ (३१-२-२)
राति अनश्रेरा पंखीआँ चकवी चितु अनश्रेरि न रुझै॥ (३१-२-३)
बिम्ब अंदरि प्रतिबिम्बु देखि भरता जाणि सुजाणि समुझै॥ (३१-२-४)
देखि पछावा पवे खूहि डुबि मरै सीहु लोइन लुझै॥ (३१-२-५)
खोजी खोजै खोजु लै वादी वादु करेंदड़ खुझै॥ (३१-२-६)
गोरसु गाईं हसतिनि दुझै ॥२॥ (३१-२-७)

सावण वण हरीआवले वुठे सुकै अकु जवाहा॥ (३१-३-१)
चेति वणसपति मउलीऐ अपत करीर न करै उसाहा॥ (३१-३-२)
सुफल फलंदे बिरख सभ सिम्मलु अफलु रहै अविसाहा॥ (३१-३-३)
चन्नण वासु वणासपति वाँस निवासि न उभे साहा॥ (३१-३-४)
संखु समुंदहु सखणा दुखिआरा रोवै दे धाहा॥ (३१-३-५)
बगुल समाधी गंग विचि झीगै चुणि खाइ भिछाहा॥ (३१-३-६)
साथ विछुन्ने मिलदा फाहा ॥३॥ (३१-३-७)

आपि भला सभु जगु भला भला भला सभना करि देखै॥ (३१-४-१)
आपि बुरा सभु जगु बुरा सभ को बुरा बुरे दे लेखै॥ (३१-४-२)
किसनु सहाई पाँडवा भाइ भगति करतूति विसेखै॥ (३१-४-३)
वैर भाउ चिति कैरवाँ गणती गणनि अंदरि कालेखै॥ (३१-४-४)
भला बुरा परवंनिआ भालण गए न दिसटि सरेखै॥ (३१-४-५)
बुरा न कोई जुधिसटरै दुरजोधन को भला न भेखै॥ (३१-४-६)
करवै होइ सु टोटी रेखै ॥४॥ (३१-४-७)

सूरजु घरि अवतारु लै धर्म वीचारणि जाइ बहिठा॥ (३१-५-१)
मूरति इका नाउ दुइ धर्म राइ जम देखि सरिठा॥ (३१-५-२)
धरमी डिठा धर्म राइ पापु कमाइ पापी जम डिठा॥ (३१-५-३)
पापी नो पछड़ाइदा धरमी नालि बुलेंदा मिठा॥ (३१-५-४)
वैरी देखनि वैर भाइ मित्र भाइ करि देखनि इठा॥ (३१-५-५)
नरक सुरग विचि पुन्न पाप वर सराप जाणनि अभरिठा॥ (३१-५-६)
दरपणि रूप जिवेही पिठा ॥५॥ (३१-५-७)

जिउं करि निर्मल आरसी सभा सुध सभ कोई देखै॥ (३१-६-१)
गोरा गोरे दिसदा काला कालो वन्नु विसेखै॥ (३१-६-२)
हसि हसि देखै हसत मुख रोंदा रोवणहारु सुलेखै॥ (३१-६-३)
लेपु न लगै आरसी छिअ दरसनु दिसनि बहु भेखै॥ (३१-६-४)
दुरमति दूजा भाउ है वैरु विरोधु करोधु कुलेखै॥ (३१-६-५)
गुरमति निरमलु निरमला समदरसी समदरस सरेखै॥ (३१-६-६)
भला बुरा हुइ रूपु न रेखै ॥६॥ (३१-६-७)

इकतु सूरजि आथवै राति अनेरी चमकनि तारे॥ (३१-७-१)
साह सवनि घरि आपणै चोर फिरनि घरि मुहणैहारै॥ (३१-७-२)
जागनि विरले पाहरू रूआइनि हुसीआर बिदारे॥ (३१-७-३)
जागि जगाइनि सुतिआँ साह फड़ंदे चोर चगारे॥ (३१-७-४)
जागदिआँ घरु रखिआ सुते घर मुसनि वेचारे॥ (३१-७-५)
साह आए घरि आपणै चोर जारि लै गरदनि मारे॥ (३१-७-६)
भले बुरे वरतनि सैसारे ॥७॥ (३१-७-७)

मउले अम्ब बसंत रुति अउड़ी अकु सु फुली भरिआ॥ (३१-८-१)
अंबि न लगै खखड़ी अकि न लगै अम्बु अफरिआ॥ (३१-८-२)
काली कोइल अम्ब वणि अकितिडु चितु मिताला हरिआ॥ (३१-८-३)
मन पंखेरू बिरद भेदु संग सुभाउ सोई फलु धरिआ॥ (३१-८-४)
गुरमति डरदा साधसंगि दुरमति संगि असाध न डरिआ॥ (३१-८-५)
भगति वछलु भी आखीऐ पतित उधारणि पतित उधरिआ॥ (३१-८-६)
जो तिसु भाणा सोई तरिआ ॥८॥ (३१-८-७)

जे करि उधरी पूतना विहु पीआलणु कम्म न चंगा॥ (३१-९-१)
गनिका उधरी आखीऐ पर घरि जाइ न लईऐ पंगा॥ (३१-९-२)

बालमीकु निसतारिआ मारै वाट न होइ निसंगा॥ (३१-९-३)
फंधकि उधरै आखीअनि फाही पाइ न फड़ीऐ टंगा॥ (३१-९-४)
जे कासाई उधरिआ जीआ घाइ न खाईऐ भंगा॥ (३१-९-५)
पारि उतारै बोहिथा सुइना लोहु नाही इक रंगा॥ (३१-९-६)
इतु भरवासै रहणु कुढंगा ॥९॥ (३१-९-७)

पै खाजूरी जीवीऐ चड़िह खाजूरी झड़उ न कोई॥ (३१-१०-१)
उझड़ि पइआ न मारीऐ उझड़ राहु न चंगा होई॥ (३१-१०-२)
जे सप खाधा उबरे सपु न फड़ीऐ अंति विगोई॥ (३१-१०-३)
वहणि वहंदा निकलै विणु तुलहे डुबि मरै भलोई॥ (३१-१०-४)
पतित उधारणु आखीऐ विरतीहाणु जाणु जाणोई॥ (३१-१०-५)
भाउ भगति गुरमति है दुरमति दरगह लहै न ढोई॥ (३१-१०-६)
अंति कमाणा होइ सथोई ॥१०॥ (३१-१०-७)

थोम कथूरी वासु जिउं कंचनु लोहु नहीं इक वन्ना॥ (३१-११-१)
फटक न हीरे तुलि है समसरि नड़ी न वड़ीऐ गन्ना॥ (३१-११-२)
तुलि न रतना रतकाँ मुलि न कचु विकावै पन्ना॥ (३१-११-३)
दुरमति घुम्मण वाणीऐ गुरमति सुकृत बोहिथु बन्ना॥ (३१-११-४)
निंदा होवै बुरे दी जै जै कार भले धन्नु धन्ना॥ (३१-११-५)
गुरमुखि परगटु जाणीऐ मनमुख सचु रहै परछन्ना॥ (३१-११-६)
कंमि न आवै भाँडा भन्ना ॥११॥ (३१-११-७)

इक वेचनि हथीआर घड़ि इक सवारनि सिला संजोआ॥ (३१-१२-१)
रण विचि घाउ बचाउ करि दुइ दल निति उठि करदे ढोआ॥ (३१-१२-२)
घाइलु होइ नंगासणा बखतर वाला नवाँ निरोआ॥ (३१-१२-३)
करनि गुमानु कमानगर खानजरादी बहुतु बखोआ॥ (३१-१२-४)
जग विचि साध असाध संगु संग सुभाइ जाइ फलु भोआ॥ (३१-१२-५)
कर्म सु धर्म अधरम करि सुख दुख अंदरि आइ परोआ॥ (३१-१२-६)
भले बुरे जसु अपजसु होआ ॥१२॥ (३१-१२-७)

सतु संतोखु दइआ धरमु अर्थ सुगरथु साधसंगि आवै॥ (३१-१३-१)
कामु करोधु असाध संगि लोभि मोहु अहंकार मचावै॥ (३१-१३-२)
दुकृतु सुकृतु कर्म करि बुरा भला हुइ नाउं धरावै॥ (३१-१३-३)
गोरसु गाई खाइ खड़ु इकु इकु जणदी वगु वधावै॥ (३१-१३-४)
दुधि पीतै विहु देइ सप जणि जणि बहले बचे खावै॥ (३१-१३-५)

संग सुभाउ असाध साधु पापु पुन्नु दुखु सुखु फलु पावै॥ (३१-१३-६)
परउपकार विकारु कमावै ॥१३॥ (३१-१३-७)

चन्नणु बिरखु सुबासु दे चन्नणु करदा बिरख सबाए॥ (३१-१४-१)
खहदे वाँसहु अगि धुखि आपि जलै परवारु जलाए॥ (३१-१४-२)
मुलह जिवै पंखेरूआ फासै आपि कुटम्ब फहाए॥ (३१-१४-३)
असट धातु हुइ परबतहु पारसु करि कंचनु दिखलाए॥ (३१-१४-४)
गणिका वाड़ै जाइ कै होवनि रोगी पाप कमाए॥ (३१-१४-५)
दुखीए आवनि वैद घर दारू दे दे रोगु मिटाए॥ (३१-१४-६)
भला बुरा दुइ संग सुभाए ॥१४॥ (३१-१४-७)

भला सुभाउ मजीठ दा सहै अवटणु रंगु चड़हाए॥ (३१-१५-१)
गन्ना कोलू पीड़ीऐ टटरि पइआ मिठासु वधाए॥ (३१-१५-२)
तुम्मे अम्मृतु सिंजीऐ कउड़तण दी बाणि न जाए॥ (३१-१५-३)
अवगुण कीते गुण करै भला न अवगणु चिति वसाए॥ (३१-१५-४)
गुणु कीते अउगुणु करै बुरा न मन्न अंदरि गुण पाए॥ (३१-१५-५)
जो बीजै सोई फलु खाए ॥१५॥ (३१-१५-६)

पाणी पथरु लीक जिउं भला बुरा परकिरति सुभाए॥ (३१-१६-१)
वैर न टिकदा भले चिति हेतु न टिकै बुरै मनि आए॥ (३१-१६-२)
भला न हेतु विसारदा बुरा न वैरु मनहु विसराए॥ (३१-१६-३)
आस न पुजै दुहाँ दी दुरमति गुरमति अंति लखाए॥ (३१-१६-४)
भलिअहु बुरा न होवई बुरिअहु भला न भला मनाए॥ (३१-१६-५)
विरतीहाणु वखाणिआ सई सिआणी सिख सुणाए॥ (३१-१६-६)
परउपकारु विकारु कमाए ॥१६॥ (३१-१६-७)

विरतीहाणु वखाणिआ भले बुरे दी सुणी कहाणी॥ (३१-१७-१)
भला बुरा दुइ चले राहि उस थै तोसा उस थै पाणी॥ (३१-१७-२)
तोसा अगै रखिआ भले भलाई अंदरि आणी॥ (३१-१७-३)
बुरा बुराई करि गइआ हथीं कढि न दितो पाणी॥ (३१-१७-४)
भला भलाईअहु सिझिआ बुरे बुराईअहु वैणि विहाणी॥ (३१-१७-५)
सचा साहिबु निआउ सचु जीआँ दा जाणोई जाणी॥ (३१-१७-६)
कुदरति कादर नो कुरबाणी ॥१७॥ (३१-१७-७)

भला बुरा सैसार विचि जो आइआ तिसु सरपर मरणा॥ (३१-१८-१)

रावण तै रामचंद वाँगि महाँ बली लड़ि कारणु करणा॥ (३१-१८-२)
जरु जरवाणा वसि करि अंति अधरम रावणि मन धरणा॥ (३१-१८-३)
रामचंदु निरमलु पुरखु धरमहु साइर पथर तरणा॥ (३१-१८-४)
बुरिआईअहु रावणु गइआ काला टिका पर तृअ हरणा॥ (३१-१८-५)
रामाइणु जुगि जुगि अटलु से उधरे जो आए सरणा॥ (३१-१८-६)
जस अपजस विचि निडर डरणा ॥१८॥ (३१-१८-७)

सोइन लंका वडा गड़ु खार समुंद जिवेही खाई॥ (३१-१९-१)
लख पुतु पोते सवा लखु कुम्भकरणु महिरावणु भाई॥ (३१-१९-२)
पवणु बुहारी देइ निति इंद्र भरै पाणी वरिहआई॥ (३१-१९-३)
बैसंतुर रासोईआ सूरजु चंदु चराग दीपाई॥ (३१-१९-४)
बहु खूहणि चतुरंग दल देस न वेस न कीमति पाई॥ (३१-१९-५)
महादेव दी सेव करि देव दानव रहदे सरणाई॥ (३१-१९-६)
अपजसु लै दुरमति बुरिआई ॥१९॥ (३१-१९-७)

रामचंदु कारण करण कारण वसि होआ देहिधारी॥ (३१-२०-१)
मंनि मतेई आगिआ लै वणवासु वडाई चारी॥ (३१-२०-२)
परसरामु दा बलु हरै दीन दइआलु गरब परहारी॥ (३१-२०-३)
सीता लखमण सेव करि जती सती सेवा हितकारी॥ (३१-२०-४)
रामाइणु वरताइआ राम राजु करि सृसटि उधारी॥ (३१-२०-५)
मरणु मुणसा सचु है साधसंगति मिलि पैज सवारी॥ (३१-२०-६)
भलिआई सतिगुर मति सारी ॥२०॥३१॥ (३१-२०-७)

Vaar 32

ੴ सतिगुरप्रसादि॥ (३२-१-१)

पहिला गुरमुखि जनमु लै भै विचि वरतै होइ इआणा॥ (३२-१-२)
गुर सिख लै गुरसिखु होइ भाइ भगति विचि खरा सिआणा॥ (३२-१-३)
गुर सिख सुणि मन्नै समझि माणि महति विचि रहै निमाणा॥ (३२-१-४)
गुर सिख गुरसिखु पूजदा पैरी पै रहिरासि लुभाणा॥ (३२-१-५)
गुरसिख मनहु न विसरै चलणु जाणि जुगति मिहमाणा॥ (३२-१-६)
गुरसिख मिठा बोलणा निवि चलणा गुरसिख परवाणा॥ (३२-१-७)
घालि खाइ गुरसिख मिलि खाणा ॥१॥ (३२-१-८)

दिसटि दरस लिव सावधानु सबद सुरति चेतन्नु सिआणा॥ (३२-२-१)
नामु दानु इसनानु दिड़ु मन बच कर्म करै मेलाणा॥ (३२-२-२)
गुरसिख थोड़ा बोलणा थोड़ा सउणा थोड़ा खाणा॥ (३२-२-३)
पर तन पर धन परहरै पर निंदा सुणि मनि सरमाणा॥ (३२-२-४)
गुर मूरति सतिगुर सबदु साधसंगति समसरि परवाणा॥ (३२-२-५)
इक मनि इकु अराधणा दुतीआ नासति भावै भाणा॥ (३२-२-६)
गुरमुखि होदै ताणि निताणा ॥२॥ (३२-२-७)

गुरमुखि रंगु न दिसई होंदी अखीं अन्नश्रा सोई॥ (३२-३-१)
गुरमुखि समझि न सकई होंदी कन्नीं बोला होई॥ (३२-३-२)
गुरमुखि सबदु न गावई होंदी जीभै गुंगा गोई॥ (३२-३-३)
चरण कवल दी वास विणु नकटा होंदे नकि अलोई॥ (३२-३-४)
गुरमुखि कार विहूणिआ होंदी करी लुंजा दुख रोई॥ (३२-३-५)
गुरमति चिति न वसई सो मति हीणु न लहदा ढोई॥ (३२-३-६)
मूरख नालि न कोइ सथोई ॥३॥ (३२-३-७)

घुघू सुझु न सुझई वसदी छडि रहै ओजाड़ी॥ (३२-४-१)
इलि पड़हाई न पड़है चूहे खाइ उडे देहाड़ी॥ (३२-४-२)
वासु न आवै वाँस नो हउमै अंगि न चन्नण वाड़ी॥ (३२-४-३)
संखु समुंदहु सखणा गुरमति हीणा देह विगाड़ी॥ (३२-४-४)
सिम्मलु बिरखु न सफलु होइ आपु गणाए वडा अनाड़ी॥ (३२-४-५)
मूरखु फकड़ि पवै रिहाड़ी ॥४॥ (३२-४-६)

अन्नश्रे अगै आरसी नाई धरि न वधाई पावै॥ (३२-५-१)
बोलै अगै गावीऐ सूमु न डूमु कवाइ पैनश्रावै॥ (३२-५-२)
पुछै मसलति गुंगिअहु विगड़ै कम्मु जवाबु न आवै॥ (३२-५-३)
फुलवाड़ी वड़ि गुणगुणा माली नो न इनामु दिवावै॥ (३२-५-४)
लूले नालि विआहीऐ किव गलि मिलि कामणि गलि लावै॥ (३२-५-५)
सभना चाल सुहावणी लंगड़ा करे लखाउ लंगावै॥ (३२-५-६)
लुकै न मूरखु आपु लखावै ॥५॥ (३२-५-७)

पथरु मूलि न भिजई सउ वरिहआ जलि अंदरि वसै॥ (३२-६-१)
पथर खेतु न जम्मई चारि महीने इंदरु वरसै॥ (३२-६-२)
पथरि चन्नणु रगड़ीए चन्नण वाँगि न पथरु घसै॥ (३२-६-३)
सिल वटे नित पीसदे रस कस जाणे वासु न रसै॥ (३२-६-४)
चकी फिरैसहंस वार खाइ न पीऐ भुख न तसै॥ (३२-६-५)
पथर घड़ै वरतणा हेठि उते होइ घड़ा विणसै॥ (३२-६-६)
मूरख सुरति न जस अपजसै ॥६॥ (३२-६-७)

पारस पथर संगु है पारस परसि न कंचनु होवै॥ (३२-७-१)
हीरे माणक पथरहु पथर कोइ न हारि परोवै॥ (३२-७-२)
वटि जवाहरु तोलीऐ मुलि न तुलि विकाइ समोवै॥ (३२-७-३)
पथर अंदरि असट धातु पारसु परसि सुवन्नु अलोवै॥ (३२-७-४)
पथरु फटक झलकणा बहु रंगी होइ रंगु न गोवै॥ (३२-७-५)
पथर वासु न साउ है मन कठोरु होइ आपु विगोवै॥ (३२-७-६)
करि मूरखाई मूरखु रोवै ॥७॥ (३२-७-७)

जिउं मणि काले सप सिरि सार न जाणै विसू भरिआ॥ (३२-८-१)
जाणु कथूरी मिरग तनि झाड़ाँ सिंङदा फिरै अफरिआ॥ (३२-८-२)
जिउं करि मोती सिप विचि मरमु न जाणै अंदरि धरिआ॥ (३२-८-३)
जिउं गाईं थणि चिचुड़ी दुधु न पीऐ लोहू जरिआ॥ (३२-८-४)
बगला तरणि न सिखिओ तीरथि नश्राइ न पथरु तरिआ॥ (३२-८-५)
नालि सिअणे भली भिख मूरख राजहु काजु न सरिआ॥ (३२-८-६)
मेखी होइ विगाड़ै खरिआ ॥८॥ (३२-८-७)

कटणु चटणु कुतिआँ कुतै हलक तै मनु सूगावै॥ (३२-९-१)
ठंढा तता कोइला काला करि कै हथु जलावै॥ (३२-९-२)
जिउ चकचूंधर सप दी अन्नश्रा कोड़ही करि दिखलावै॥ (३२-९-३)

जाणु रसउली देह विचि वढी पीड़ रखी सरमावै॥ (३२-९-४)
वंसि कपूतु कुलछणा छडै बणै न विचि समावै॥ (३२-९-५)
मूरख हेतु न लाईऐ परहरि वैरु अलिपतु वलावै॥ (३२-९-६)
दुहीं पवाड़ीं दुखि विहावै ॥९॥ (३२-९-७)

जिउ हाथी दा नश्रावणा बाहरि निकलि खेह उडावै॥ (३२-१०-१)
जिउ ऊठै दा खावणा परहरि कणक जवाहाँ खावै॥ (३२-१०-२)
कमले दा कछोटड़ा कदे लक कदे सीसि वलावै॥ (३२-१०-३)
जिउं करि टुंडे हथड़ा सो चुती सो वाति वतावै॥ (३२-१०-४)
सन्नश्रा जाणु लुहार दी खिणु जलि विचि खिन अगनि समावै॥ (३२-१०-५)
मखी बाणु कुबाणु है लै दुर गंधु सुगंध न भावै॥ (३२-१०-६)
मूरख दा किहु हथी न आवै ॥१०॥ (३२-१०-७)

तोता नली न छडई आपण हथीं फाथा चीकै॥ (३२-११-१)
बादरु मुटी न छडई घरि घरि नचे झकिणु झीकै॥ (३२-११-२)
गदहु अड़ी न छडई रीघी पउदी हीकणी कीकै॥ (३२-११-३)
कुते चकी न चटणी पूछ न सिधी ध्रीकण ध्रीकै॥ (३२-११-४)
करनि कुफकड़ु मूरखाँ सप गए फड़ि फाटण लीकै॥ (३२-११-५)
पग लहाइ गणाइ सरीकै ॥११॥ (३२-११-६)

अन्नश्रा आखे लड़ि मरै खुसी होवै सुणि नाउ सुजाखा॥ (३२-१२-१)
भोला आखे भला मंनि अहमकु जाणि अजाणि न भाखा॥ (३२-१२-२)
धोरी आखै हसि दे बलद वखाणि करै मनि माखा॥ (३२-१२-३)
काउं सिआणप जाणदा विसटा खाइ न भाख सुभाखा॥ (३२-१२-४)
नाउ सुरीत कुरीत दा मुसक बिलाई गाँडी साखा॥ (३२-१२-५)
हेठि खड़ा थू थू करै गिदड़ हथि न आवै दाखा॥ (३२-१२-६)
बोल विगाड़ु मूरख भेडाखा ॥१२॥ (३२-१२-७)

रुखाँ विचि कुरुखु है अरंडु अवाई आपु गणाए॥ (३२-१३-१)
पिदा जिउ पंखेरूआँ बहि बहि डाली बहुतु बफाए॥ (३२-१३-२)
भेड भिविंगा मुहु करै तरणापै दिहि चारि वलाए॥ (३२-१३-३)
मुहु अखी नकु कन जिउं इंद्रीआँ विचि गाँडि सदाए॥ (३२-१३-४)
मीआ घरहु निकालीऐ तरकसु दरवाजे टंगवाए॥ (३२-१३-५)
मूरख अंदरि माणसाँ विणु गुण गरबु करै आखाए॥ (३२-१३-६)
मजलस बैठा आपु लखाए ॥१३॥ (३२-१३-७)

मूरख तिस नो आखीऐ बोलु न समझै बोलि न जाणै॥ (३२-१४-१)
होरो किहु करि पुछीऐ होरो किहु करि आखि वखाणै॥ (३२-१४-२)
सिख देइ समझाईऐ अर्थु अनरथु मनै विचि आणै॥ (३२-१४-३)
वडा असमझु न समझई सुरति विहूणा होइ हैराणै॥ (३२-१४-४)
गुरमति चिति न आणई दुरमति मित्रु सत्रु परवाणै॥ (३२-१४-५)
अगनी सपहुं वरजीऐ गुण विचि अवगुण करै धिङाणै॥ (३२-१४-६)
मूतै रोवै मा न सिञाणै ॥१४॥ (३२-१४-७)

राहु छडि उझड़ि पवै आगू नो भुला करि जाणै॥ (३२-१५-१)
बेड़े विचि बहालीऐ कुदि पवै विचि वहण धिङाणै॥ (३२-१५-२)
सुघड़ाँ विचि बहिठिआँ बोलि विगाड़ि उघाड़ि वखाणै॥ (३२-१५-३)
सुघड़ाँ मूरख जाणदा आपि सुघड़ु होइ विरतीहाणै॥ (३२-१५-४)
दिह नो राति वखाणदा चामचड़िक जिवें टानाणै॥ (३२-१५-५)
गुरमति मूरखु चिति न आणै ॥१५॥ (३२-१५-६)

वैदि चंगेरी ऊठणी लै सिल वटा कचरा भन्ना॥ (३२-१६-१)
सेवकि सिखी वैदगी मारी बुढी रोवनि रन्ना॥ (३२-१६-२)
पकड़ि चलाइआ रावलै पउदी उघड़ि गए सु कन्ना॥ (३२-१६-३)
पुछै आखि वखाणिउनु उघड़ि गइआ पाजु परछन्ना॥ (३२-१६-४)
पारखूआ चुणि कढिआ जिउ कचकड़ा न रलै रतन्ना॥ (३२-१६-५)
मूरखु अकली बाहरा वाँसहु मूलि न होवी गन्ना॥ (३२-१६-६)
माणस देही पसू उपन्ना ॥१६॥ (३२-१६-७)

महा देव दी सेव करि वरु पाइआ साहै दै पुतै॥ (३२-१७-१)
दरबु सरूप सरेवड़ै आए वड़े घरि अंदरि उतै॥ (३२-१७-२)
जिउ हथिआरी मारीअनि तिउ तिउ दरब होइ धड़धुतै॥ (३२-१७-३)
बुती करदे डिठिओनु नाई चैनु न बैठे सुतै॥ (३२-१७-४)
मारे आणि सरेवड़े सुणि दीबाणि मसाणि अछुतै॥ (३२-१७-५)
मथै वालि पछाड़िआ वाल छडाइनि किस दै बुतै॥ (३२-१७-६)
मूरखु बीजै बीउ कुरुतै ॥१७॥ (३२-१७-७)

गोसटि गाँगे तेलीऐ पंडित नालि होवै जगु देखै॥ (३२-१८-१)
खड़ी करै इक अंगुली गाँगा दुइ वेखालै रेखै॥ (३२-१८-२)
फेरि उचाइ पंजाँगुला गाँगा मुठि हलाए अलेखै॥ (३२-१८-३)

पैरीं पै उठि चलिआ पंडितु हार भुलावै भेखै॥ (३२-१८-४)
निरगुणु सरगुणु अंग दुइ परमेसरु पंजि मिलनि सरेखै॥ (३२-१८-५)
अखीं दोवैं भन्नसाँ मुकी लाइ हलाइ निमेखै॥ (३२-१८-६)
मूरख पंडितु सुरति विसेखै ॥१८॥ (३२-१८-७)

ठंढे खूहहुं नश्राइ कै पग विसारि आइआ सिरि नंगै॥ (३२-१६-१)
घर विचि रन्नाँ कमलीआँ धुसी लीती देखि कुढंगै॥ (३२-१६-२)
रन्नाँ देखि पिटंदीआँ ढाहाँ मारैं होइ निसंगै॥ (३२-१६-३)
लोक सिआपे आइआ रन्नाँ पुरस जुड़े लै पंगै॥ (३२-१६-४)
नाइण पुछदी पिटदीआँ किस दै नाइ अल्हाणी अंगै॥ (३२-१६-५)
सहुरे पुछहु जाइ कै कउण मुआ नूह उतरु मंगै॥ (३२-१६-६)
कावाँ रौला मूरखु संगै ॥१६॥ (३२-१६-७)

जे मूरखु समझाईऐ समझै नाही छाँव न धुपा॥ (३२-२०-१)
अखीं परखि न जाणई पितल सुइना कैहाँ रुपा॥ (३२-२०-२)
साउ न जाणै तेल घिअ धरिआ कोलि घड़ोला कुपा॥ (३२-२०-३)
सुरति विहूणा राति दिहु चानणु तुलि अनश्रेरा घुपा॥ (३२-२०-४)
वासु कथूरी थोम दी मिहर कुली अधउड़ी तुपा॥ (३२-२०-५)
वैरी मित्र न समझई रंगु सुरंग कुरंगु अछुपा॥ (३२-२०-६)
मूरख नालि चंगेरी चुपा ॥२०॥३२॥ (३२-२०-७)

Vaar 33

ੴ सतिगुरप्रसादि ॥ (३३-१-१)

गुरमुखि मनमुखि जाणीअनि साध असाध जगत वरतारा॥ (३३-१-२)
दुह विचि दुखी दुबाजरे खरबड़ होए खुदी खुआरा॥ (३३-१-३)
दुहीं सराईं जरद रू दगे दुराहे चोर चुगारा॥ (३३-१-४)
ना उरवारु न पारु है गोते खानि भरमु सिरि भारा॥ (३३-१-५)
हिंदू मुसलमान विचि गुरमुखि मनमुखि विच गुबारा॥ (३३-१-६)
जम्मणु मरणु सदा सिरि भारा ॥१॥ (३३-१-७)

दुहु मिलि जम्मे दुइ जणे दुहु जणिआँ दुइ राह चलाए॥ (३३-२-१)
हिंदू आखनि राम रामु मुसलमाणाँ नाउ खुदाए॥ (३३-२-२)
हिंदू पूरबि सउहिआँ पछमि मुसलमाणु निवाए॥ (३३-२-३)
गंग बनारसि हिंदूआँ मका मुसलमाणु मनाए॥ (३३-२-४)
वेद कतेबाँ चारि चारि चार वरन चारि मज़हब चलाए॥ (३३-२-५)
पंज तत दोवै जणे पउणु पाणी बैसंतरु छाए॥ (३३-२-६)
इक थाउं दुइ नाउं धराए ॥२॥ (३३-२-७)

देखि दुभिती आरसी मजलस हथो हथी नचै॥ (३३-३-१)
दुखो दुखु दुबाजरी घरि घरि फिरै पराई खचै॥ (३३-३-२)
अगै होइ सुहावणी मुहि डिठै माणस चहमचै॥ (३३-३-३)
पिछहु देखि डरावनी इको मुहु दुहु जिनसि विरचै॥ (३३-३-४)
खेहि पाइ मुहु माँजीऐ फिरि फिरि मैलु भरे रंगि कचै॥ (३३-३-५)
धरमराइ जमु इकु है धरमु अधरमु न भरमु परचै॥ (३३-३-६)
गुरमुखि जाइ मिलै सचु सचै ॥३॥ (३३-३-७)

वुणै जुलाहा तंदु गंढि इकु सूतु करि ताणा वाणा॥ (३३-४-१)
दरजी पाड़ि विगाड़दा पाटा मुल न लहै विकाणा॥ (३३-४-२)
कतरणि कतरै कतरणी होइ दुमूही चड़हदी साणा॥ (३३-४-३)
सूई सीवै जोड़ि कै विछुड़िआँ करि मेलि मिलाणा॥ (३३-४-४)
साहिबु इको राहि दुइ जग विचि हिंदू मुसलमाणा॥ (३३-४-५)
गुरसिखी प्रधानु है पीर मुरीदी है परवाणा॥ (३३-४-६)
दुखी दुबाजरिआ हैराणा ॥४॥ (३३-४-७)

जिउ चरखा अठखम्भीआ दुहि लठी दे मंझि मंझेरू॥ (३३-५-१)
दुइ सिरि धरि दुहु खुंढ विचि सिर गिरदान फिरै लखफेरू॥ (३३-५-२)
बाइड़ु पाइ पलेटीऐ माल्ह वटाइ पाइआ घट घेरू॥ (३३-५-३)
दुहु चरमख विचि त्रकुला कतनि कुड़ीआँ चिड़ीआँ हेरू॥ (३३-५-४)
तृंञणि बहि उठ जाँदीआँ जिउ बिरखहु उडि जानि पंखेरू॥ (३३-५-५)
ओड़ि निबाहू ना थीऐ कचा रंगु रंगाइआ गेरू॥ (३३-५-६)
घुंमि घुम्मदी छाउ घवेरू ॥५॥ (३३-५-७)

साहुरु पीहरु पलरै होइ निलज न लजा धोवै॥ (३३-६-१)
रावै जारु भतारु तजि खिंजोताणि खुसी किउ होवै॥ (३३-६-२)
समझाई ना समझदी मरणे परणे लोकु विगोवै॥ (३३-६-३)
धिरि धिरि मिलदे मेहणे हुइ सरमिंदी अंझू रोवै॥ (३३-६-४)
पाप कमाणे पकड़ीऐ हाणि काणि दीबाणि खड़ोवै॥ (३३-६-५)
मरै न जीवै दुख सहै रहै न घरि विचि पर घर जोवै॥ (३३-६-६)
दुबिधा अउगुण हारु परोवै ॥६॥ (३३-६-७)

जिउ बेसीवै थेहु करि पछोतावै सुखि ना वसै॥ (३३-७-१)
चड़ि चड़ि लड़दे भूमीए धाड़ा पेड़ा खसण खसै॥ (३३-७-२)
दुह नारी दा वलहा दुहु मुणसा दी नारि विणसै॥ (३३-७-३)
हुइ उजाड़ा खेतीऐ दुहि हाकम दुइ हुकमु खुणसै॥ (३३-७-४)
दुख दुइ चिंता राति दिहु घरु छिजै वैराइणु हसै॥ (३३-७-५)
दुहु खुंढाँ विचि रखि सिरु वसदी वसै न नसदी नसै॥ (३३-७-६)
दूजा भाउ भुइअंगमु डसै ॥७॥ (३३-७-७)

दुखीआ दुसटु दुबाजरा सपु दुमूहा बुरा बुरिआई॥ (३३-८-१)
सभ दूं मंदी सप जोनि सपाँ विचि कुजाति कुभाई॥ (३३-८-२)
कोड़ी होआ गोपि गुर निगुरे तंतु न मंतु सुखाई॥ (३३-८-३)
कोड़ी होवै लड़ै जिस विगड़ रूपि होइ मरि सहमाई॥ (३३-८-४)
गुरमुखि मनमुखि बाहरा लातो लावा लाइ बुझाई॥ (३३-८-५)
तिसु विहु वाति कुलाति मनि अंदरि गणती ताति पराई॥ (३३-८-६)
सिर चिथै विहु बाणि न जाई ॥८॥ (३३-८-७)

जिउ बहु मिती वेसुआ छडै खसमु निखसमी होई॥ (३३-९-१)
पुतु जणे जे वेसुआ नानकि दादकि नाउं न कोई॥ (३३-९-२)
नरकि सवारि सीगारिआ राग रंग छलि छलै छलोई॥ (३३-९-३)

घंडाहेड़ अहेड़ीआँ माणस मिरग विणाहु सथोई॥ (३३-९-४)
एथै मरै हराम होइ अगै दरगह मिलै न ढोई॥ (३३-९-५)
दुखीआ दुसटु दुबाजरा जाण रुपईआ मेखी सोई॥ (३३-९-६)
विगड़ै आपि विगाड़ै लोई ॥९॥ (३३-९-७)

वणि वणि काउं न सोहई खरा सिआणा होइ विगुता॥ (३३-१०-१)
चुतड़ि मिटी जिसु लगै जाणै खसम कुम्हाराँ कुता॥ (३३-१०-२)
बाबाणीआँ कहाणीआँ घरि घरि बहि बहि करनि कुपुता॥ (३३-१०-३)
आगू होइ मुहाइदा साथु छडि चउराहे सुता॥ (३३-१०-४)
जम्मी साख उजाड़दा गलिआँ सेती मेंहु कुरुता॥ (३३-१०-५)
दुखीआ दुसटु दुबाजरा खटरु बलदु जिवै हलि जुता॥ (३३-१०-६)
डमि डमि सानु उजाड़ी मुता ॥१०॥ (३३-१०-७)

दुखीआ दुसटु दुबाजरा तामे रंगहु कैहाँ होवै॥ (३३-११-१)
बाहरु दिसै उजला अंदरि मसु न धोपै धोवै॥ (३३-११-२)
सन्नी जाणु लुहार दी होइ दुमूहीं कुसंग विगोवै॥ (३३-११-३)
खणु ततो आरणि वड़ै खणु ठंढी जलु अंदरि टोवै॥ (३३-११-४)
तुमा दिसै सोहणा चित्रमिताला विसु विलोवै॥ (३३-११-५)
साउ न कउड़ा सहि सकै जीभै छालै अंझू रोवै॥ (३३-११-६)
कली कनेर न हारि परोवै ॥११॥ (३३-११-७)

दुखी दुसटु दुबाजरा सुतर मुरगु होइ कंमि न आवै॥ (३३-१२-१)
उडणि उडै न लदीऐ पुरसुस होई आपु लखावै॥ (३३-१२-२)
हसती दंद वखाणीअनि होरु दिखालै होरतु खावै॥ (३३-१२-३)
बकरीआँ नो चार थणु दुइ गल विचि दुइ लेवै लावै॥ (३३-१२-४)
इकनी दुधु समावदा इक ठगाऊ ठगि ठगावै॥ (३३-१२-५)
मोराँ अखी चारि चारि उइ देखनि ओनी दिसि न आवै॥ (३३-१२-६)
दूजा भाउ कुदाउ हरावै ॥१२॥ (३३-१२-७)

दम्मलु वजै दुहु धिरी खाइ तमाचे बंधनि जड़िआ॥ (३३-१३-१)
वजनि राग रबाब विचि कन्न मरोड़ी फिरि फड़िआ॥ (३३-१३-२)
खान मजीरे टकराँ सिरि तन भंनि मरदे करि धड़िआ॥ (३३-१३-३)
खाली वजै वंझुली दे सूलाक न अंदरि वड़िआ॥ (३३-१३-४)
सुइने कलसु सवारीऐ भन्ना घड़ा न जाई घड़िआ॥ (३३-१३-५)
दूजा भाउ सड़ाणै सड़िआ ॥१३॥ (३३-१३-६)

दुखीआ दुसटु दुबाजरा बगुल समाधि रहै इक टंगा॥ (३३-१४-१)
बजर पाप न उतरनि घुटि घुटि जीआँ खाइ विचि गंगा॥ (३३-१४-२)
तीर्थ नावै तूम्बड़ी तरि तरि तनु धोवै करि नंगा॥ (३३-१४-३)
मन विचि वसै कालकूटु भरमु न उतरै करमु कुढंगा॥ (३३-१४-४)
वरमी मारी ना मरै बैठा जाइ पतालि भुइअंगा॥ (३३-१४-५)
हसती नीरि नवालीऐ निकलि खेह उडाए अंगा॥ (३३-१४-६)
दूजा भाउ सुआओ न चंगा ॥१४॥ (३३-१४-७)

दूजा भाउ दुबाजरा मन पाटै खरबाड़ू खीरा॥ (३३-१५-१)
अगहु मिठा होइ मिलै पिछहु कउड़ा दोख सरीरा॥ (३३-१५-२)
जिउ बहु मिता कवल फुलु बहु रंगी बंनिश्र पिंडु अहीरा॥ (३३-१५-३)
हरिआ तिलु बूआड़ जिउ कली कनेर दुरंग न धीरा॥ (३३-१५-४)
जे सउ हथा नड़ु वधै अंदरु खाली वाजु नफीरा॥ (३३-१५-५)
चन्नण वास न बोहीअनि खहि खहि वाँस जलनि बेपीरा॥ (३३-१५-६)
जम दर चोटा सहा वहीरा ॥१५॥ (३३-१५-७)

दूजा भाउ दुबाजरा बधा करै सलामु न भावै॥ (३३-१६-१)
ढींग जुहारी ढींगुली गलि बधे ओहु सीसु निवावै॥ (३३-१६-२)
गलि बधै जिउ निकलै खूहहु पाणी उपरि आवै॥ (३३-१६-३)
बधा चटी जो भरै ना गुण ना उपकारु चड़हावै॥ (३३-१६-४)
निवै कमाण दुबाजरी जिह फड़िदे इक सीस सहावै॥ (३३-१६-५)
निवै अहोड़ी मिरगु देखि करै विसाह ध्रोहु सरु लावै॥ (३३-१६-६)
अपराधी अपराधु कमावै ॥१६॥ (३३-१६-७)

निवै न तीर दुबाजरा गाडी खम्भ मुखी मुहि लाए॥ (३३-१७-१)
निवै न नेजा दुमुहा रण विचि उचा आपु गणाए॥ (३३-१७-२)
असट धातु दा जबर जंगु निवै न फुटै कोट ढहाए॥ (३३-१७-३)
निवै न खंडा सार दा होइ दुधारा खून कराए॥ (३३-१७-४)
निवै न सूली घरेणी करि असवार फाहे दिवाए॥ (३३-१७-५)
निवणि न सीखाँ सखत होइ मासु परोइ कबाबु भुनाए॥ (३३-१७-६)
जिउं करि आरा रुखु तछाए ॥१७॥ (३३-१७-७)

अकु धतूरा झटुला नीवा होइ न दुबिधा खोई॥ (३३-१८-१)
फुलि फुलि फुले दुबाजरे बिखु फल फलि फलि मंदी सोई॥ (३३-१८-२)

पीऐ न कोई अकु दुधु पीते मरीऐ दुधु न होई॥ (३३-१८-३)
खखड़ीआँ विचि बुढीआँ फटि फटि छुटि छुटि उडनि ओई॥ (३३-१८-४)
चितमिताला अक तिडु मिलै दुबाजरिआँ किउ ढोई॥ (३३-१८-५)
खाइ धतूरा बरलीऐ कख चुणिंदा वतै लोई॥ (३३-१८-६)
कउड़ी रतक जेल परोई ॥१८॥ (३३-१८-७)

वधै चील उजाड़ विचि उचै उपरि उची होई॥ (३३-१९-१)
गंढी जलनि मुसाहरे पूत अपूत न छुहुदा कोई॥ (३३-१९-२)
छाँउ न बहनि पंधाणूआँ पवै पछावाँ टिबीं टोई॥ (३३-१९-३)
फिंड जिवै फलु फाटीअनि घुंघरिआले रुलनि पलोई॥ (३३-१९-४)
काठु कुकाठु न सहि सकै पाणी पवनु न धुप न लोई॥ (३३-१९-५)
लगी मूलि न विझवै जलदी हउमैं अगि खड़ोई॥ (३३-१९-६)
वडिआई करि दई विगोई ॥१९॥ (३३-१९-७)

तिलु काला फुलु उजला हरिआ बूटा किआ नीसाणी॥ (३३-२०-१)
मुढहु वढि बणाईऐ सिर तलवाइआ मझि बिबाणी॥ (३३-२०-२)
करि कटि पाई झम्बीऐ तेलु तिलीहूं पीड़े घाणी॥ (३३-२०-३)
सण कपाह दुइ राह करि परउपकार विकार विडाणी॥ (३३-२०-४)
वेलि कताइ वुणाईऐ पड़दा कजण कपड़ु प्राणी॥ (३३-२०-५)
खल कढाइ वटाइ सण रसे बन्नश्रनि मनि सरमाणी॥ (३३-२०-६)
दुसटाँ दुसटाई मिहमाणी ॥२०॥ (३३-२०-७)

किकर कंडे धरेक फल फलीं न फलिआ निहफल देही॥ (३३-२१-१)
रंग बिरंगी दुहाँ फुल दाख न गुछा कपट सनेही॥ (३३-२१-२)
चितमिताला अरिंड फलु थोथी थोहरि आस किनेही॥ (३३-२१-३)
रता फुल न मुलु अढु निहफल सिमल छाँव जिवेही॥ (३३-२१-४)
जिउ नलीएर कठोर फलु मुहु भन्ने दे गरी तिवेही॥ (३३-२१-५)
सूतु कपूतु सुपूतु दूत काले धउले तूत इवेही॥ (३३-२१-६)
दूजा भाउे कुदाउ धरेही ॥२१॥ (३३-२१-७)

जिउ मणि काले सपसिरि हसि हसि रसि रसि देइ न जाणै॥ (३३-२२-१)
जाणु कथूरी मिरग तनि जीवदिआँ किउं कोई आणै॥ (३३-२२-२)
आरणि लोहा ताईऐ घड़ीऐ जिउ वगदे वादाणै॥ (३३-२२-३)
सूरणु मारणि साधीऐ खाहि सलाहि पुरख परवाणै॥ (३३-२२-४)
पान सुपारी कथु मिलि चूने रंगु सुरंगु सिञाणै॥ (३३-२२-५)

अउखधु होवै कालकूटु मारि जीवालनि वैद सुजाणै॥ (३३-२२-६)
मनु पारा गुरमुखि वसि आणै ॥२२॥३३॥ (३३-२२-७)

Vaar 34

सतिगुरप्रसादि॥ (३४-१-१)

सतिगुर पुरखु अगम्मु है निरवैरु निराला॥ (३४-१-२)
जाणहु धरती धर्म की सची धरमसाला॥ (३४-१-३)
जेहा बीजै सो लुणै फलु कर्म सम्हाला॥ (३४-१-४)
जिउ करि निरमलु आरसी जगु वेखणि वाला॥ (३४-१-५)
जेहा मुहु करि भालीऐ तेहो वेखाला॥ (३४-१-६)
सेवकु दरगह सुरखरू वेमुखु मुहु काला ॥१॥ (३४-१-७)

जो गुर गोपै आपणा किउ सिझै चेला॥ (३४-२-१)
संगलु घति चलाईऐ जम पंथि इकेला॥ (३४-२-२)
लहै सजाई नरक विचि उहु खरा दुहेला॥ (३४-२-३)
लख चउरासीह भउदिआँ फिरि होइ न मेला॥ (३४-२-४)
जनमु पदारथु हारिआ जिउ जूए खेला॥ (३४-२-५)
हथ मरोड़ै सिरु धुनै उहु लहै न वेला ॥२॥ (३४-२-६)

आपि न वंञै साहुरे सिख लोक सुणावै॥ (३४-३-१)
कंत न पुछै वातड़ी सुहागु गणावै॥ (३४-३-२)
चूहा खड न मावई लकि छजु वलावै॥ (३४-३-३)
मंतु न होइ अठूहिआँ हथु सपीं पावै॥ (३४-३-४)
सरु सन्नअै आगास नो फिरि मथै आवै॥ (३४-३-५)
दुही सराई जरद रू बेमुख पछुतावै ॥३॥ (३४-३-६)

रतन मणी गलि बाँदरै किहु कीम न जाणै॥ (३४-४-१)
कड़छी साउ न सम्मल्है भोजन रसु खाणै॥ (३४-४-२)
डडू चिकड़ि वासु है कवलै न सिञाणै॥ (३४-४-३)
नाभि कथूरी मिरग दै फिरदा हैराणै॥ (३४-४-४)
गुजरु गोरसु वेचि कै खलि सूड़ी आणै॥ (३४-४-५)
बेमुख मूलहु घुथिआ दुख सहै जमाणै ॥४॥ (३४-४-६)

सावणि वणि हरीआवले सुकै जावाहा॥ (३४-५-१)
सभ को सरसा वरसदै झूरै जोलाहा॥ (३४-५-२)
सभना राति मिलावड़ा चकवी दोराहा॥ (३४-५-३)

संखु समुंदहु सखणा रोवै दे धाहा॥ (३४-५-४)
राहहु उझड़ि जो पवै मुसै दे फाहा॥ (३४-५-५)
तिउं जग अंदरि बेमुखाँ नित उभे साहा ॥५॥ (३४-५-६)

गिदड़ दाख न अपड़ै आखै थूह कउड़ी॥ (३४-६-१)
नचणु नचि न जाणई आखै भुइ सउड़ी॥ (३४-६-२)
बोलै अगै गावीऐ भैरउ सो गउड़ी॥ (३४-६-३)
हंसाँ नालि टटीहरी किउ पहुचै दउड़ी॥ (३४-६-४)
सावणि वण हरीआवले अकु जम्मै अउड़ी॥ (३४-६-५)
बेमुख सुखु न देखई जिउ छुटड़ि छउड़ी ॥६॥ (३४-६-६)

भेडै पूछलि लगिआँ किउ पारि लंघीऐ॥ (३४-७-१)
भूतै केरी दोसती नित सहसा जीऐ॥ (३४-७-२)
नदी किनारै रुखड़ा वेसाहु न कीऐ॥ (३४-७-३)
मिरतक नालि वीआहीऐ सोहाग न थीऐ॥ (३४-७-४)
विसु हलाहल बीजि कै किउ अमिउ लहीऐ॥ (३४-७-५)
बेमुख सेती पिरहड़ी जम डंडु सहीऐ ॥७॥ (३४-७-६)

कोरड़ु मोठु न रिझई करि अगनी जोसु॥ (३४-८-१)
सहस फलहु इकु विगड़ै तरवर की दोसु॥ (३४-८-२)
बिै नीरु न ठाहरै घणि वरसि गइओसु॥ (३४-८-३)
विणु संजमि रोगी मरै चिति वैद न रोसु॥ (३४-८-४)
अविआवर न विआपई मसतकि लिखिओसु॥ (३४-८-५)
बेमुख पड़है न इलम जिउं अवगुण सभिओसु ॥८॥ (३४-८-६)

अन्नश्रै चंदु न दिसई जगि जोति सबाई॥ (३४-९-१)
बोला रागु न समझई किहु घटि न जाही॥ (३४-९-२)
वासु न आवै गुणगुणै परमलु महिकाई॥ (३४-९-३)
गुंगै जीव न उघड़ै सभि सबदि सुहाई॥ (३४-९-४)
सतिगुर सागरु सेवि कै निधि सभनाँ पाई॥ (३४-९-५)
बेमुख ह्थ घघूटिआँ तिसु दोसि कमाई ॥९॥ (३४-९-६)

रतन उपन्नै साइरहुं भी पाणी खारा॥ (३४-१०-१)
सुझहु सुझनि तिनु लोअ अउलंगु विचिकारा॥ (३४-१०-२)
धरती उपजै अन्नु धन्नु विचि कलरु भारा॥ (३४-१०-३)

ईसरु तुसै होरना घरि खपरु छारा॥ (३४-१०-४)
जिउं हणवंति कछोटड़ा किआ करै विचारा॥ (३४-१०-५)
बेमुख मसतकि लिखिआ कउणु मेटणहारा ॥१०॥ (३४-१०-६)

गाईं घरि गोसाँईआँ माधाणु घड़ाए॥ (३४-११-१)
घोड़े सुणि सउदागराँ चाबक मुलि आए॥ (३४-११-२)
देखि पराए भाजवाड़ घरि गाहु घताए॥ (३४-११-३)
सुइना हटि सराफ दे सुनिआर सदाए॥ (३४-११-४)
अंदरि ढोई न लहै बाहरि बाफाए॥ (३४-११-५)
बेमुख बदल चाल है कूड़ो आलाए ॥११॥ (३४-११-६)

मखणु लइआ विरोलि कै छाहि छुटड़ि होई॥ (३४-१२-१)
पीड़ लई रस गंनिअहु छिलु छुहै न कोई॥ (३४-१२-२)
रंगु मजीठहु निकलै अढु लहै न सोई॥ (३४-१२-३)
वासु लई फुलवाड़ीअहु फिरि मिलै न ढोई॥ (३४-१२-४)
काइआ हंसु विछुंनिआ तिसु को न सथोई॥ (३४-१२-५)
बेमुख सुके रुख जिउं वेखै सभ लोई ॥१२॥ (३४-१२-६)

जिउ करि खूहहु निकलै गलि बधे पाणी॥ (३४-१३-१)
जिउ मणि काले सप सिरि हसि देइ न जाणी॥ (३४-१३-२)
जाण कथूरी मिरग तनि मरि मुकै आणी॥ (३४-१३-३)
तेल तिलहु किउ निकलै विणु पीड़े घाणी॥ (३४-१३-४)
जिउ मुहु भन्ने गरी दे नलीएरु निसाणी॥ (३४-१३-५)
बेमुखु लोहा साधीऐ वगदी वादाणी ॥१३॥ (३४-१३-६)

महुरा मिठा आखीऐ रुठी नो तुठी॥ (३४-१४-१)
बुझिआ वडा वखाणीऐ सवारी कुठी॥ (३४-१४-२)
जलिआ ठंढा गई नो आई ते उठी॥ (३४-१४-३)
अहमकु भोला आखीऐ सभ गलि अपुठी॥ (३४-१४-४)
उजड़ु त्रटी बेमुखाँ तिसु आखनि वुठी॥ (३४-१४-५)
चोरै संदी माउं जिउं लुकि रोवै मुठी ॥१४॥ (३४-१४-६)

वड़ीऐ कजल कोठड़ी मुहु कालख भरीऐ॥ (३४-१५-१)
कलरि खेती बीजीऐ किहु काजु न सरीऐ॥ (३४-१५-२)
टुटी पींघै पींघीऐ पै टोए मरीऐ॥ (३४-१५-३)

कन्ना फड़ि मनतारूआँ किउ दुतरु तरीऐ॥ (३४-१५-४)
अगि लाइ मंदरि सवै तिसु नालि न फरीऐ॥ (३४-१५-५)
तिउं ठग संगति बेमुखाँ जीअ जोखहु डरीऐ ॥१५॥ (३४-१५-६)

बाम्हण गाँई वंस घात अपराध करारे॥ (३४-१६-१)
मदु पी जूए खेलदे जोहनि पर नारे॥ (३४-१६-२)
मुहनि पराई लखिमी ठग चोर चगारे॥ (३४-१६-३)
विसास ध्रोही अकिरतघणि पापी हतिआरे॥ (३४-१६-४)
लख करोड़ी जोड़ीअनि अणगणत अपारे॥ (३४-१६-५)
इकतु लूइ न पुजनी बेमुख गुरदुआरे ॥१६॥ (३४-१६-६)

गंग जमुन गोदावरी कुलखेत सिधारे॥ (३४-१७-१)
मथुरा माइआ अयुधिआ कासी केदारे॥ (३४-१७-२)
गइआ पिराग सरसुती गोमती दुआरे॥ (३४-१७-३)
जपु तपु संजमु होम जगि सभ देव जुहारे॥ (३४-१७-४)
अखी परणै जे भवै तिहु लोअ मझारे॥ (३४-१७-५)
मूलि न उतरै हतिआ बेमुख गुरदुआरे ॥१७॥ (३४-१७-६)

कोटीं सादीं केतड़े जंगल भूपाला॥ (३४-१८-१)
थलीं वरोले केतड़े पर्बत बेताला॥ (३४-१८-२)
नदीआँ नाले केतड़े सरवर असराला॥ (३४-१८-३)
अम्बरि तारे केतड़े बिसीअरु पाताला॥ (३४-१८-४)
भम्भल भूसे भुलिआँ भवजल भरनाला॥ (३४-१८-५)
इकसु सतिगुर बाहरे सभि आल जंजाला ॥१८॥ (३४-१८-६)

बहुतीं घरीं पराहुणा जिउ रहंदा भुखा॥ (३४-१९-१)
साँझा बबु न रोईऐ चिति चिंत न चुखा॥ (३४-१९-२)
बहली डूमी ढढि जिउ ओहु किसै न धुखा॥ (३४-१९-३)
वणि वणि काउं न सोहई किउं माणै सुखा॥ (३४-१९-४)
जिउ बहु मिती वेसुआ तनि वेदनि दुखा॥ (३४-१९-५)
विणु गुर पूजनि होरना बरने बेमुखा ॥१९॥ (३४-१९-६)

वाइ सुणाए छाणनी तिसु उठ उठाले॥ (३४-२०-१)
ताड़ी मारि डराइंदा मैंगल मतवाले॥ (३४-२०-२)
बासकि नागै साम्हणा जिउं दीवा बाले॥ (३४-२०-३)

सीहुं सरजै सहा जिउं अखीं वेखाले॥ (३४-२०-४)
साइर लहरि न पुजनी पाणी परनाले॥ (३४-२०-५)
अणहोंदा आपु गणाइंदे बेमुख बेताले ॥२०॥ (३४-२०-६)

नारि भतारहु बाहरी सुखि सेज न चड़ीऐ॥ (३४-२१-१)
पुतु न मन्नै मापिआँ कमजातीं वड़ीऐ॥ (३४-२१-२)
वणजारा साहहुं फिरै वेसाहु न जड़ीऐ॥ (३४-२१-३)
साहिबु सउहैं आपणे हथिआरु न फड़ीऐ॥ (३४-२१-४)
कूड़ु न पहुंचै सच नो सउ घाड़त घड़ीऐ॥ (३४-२१-५)
मुंद्राँ कंनि जिनाड़ीआँ तिन नालि न अड़ीऐ ॥२१॥३४॥ (३४-२१-६)

Vaar 35

सतिगुरप्रसादि॥ (३५-१-१)

कुता राजि बहालीऐ फिरि चकी चटै॥ (३५-१-२)
सपै दुधु पीआलीऐ विहु मुखहु सटै॥ (३५-१-३)
पथरु पाणी रखीऐ मनि हठु न घटै॥ (३५-१-४)
चोआ चंदनु परहरै खरु खेह पलटै॥ (३५-१-५)
तिउ निंदक पर निंदहू हथि मूलि न हटै॥ (३५-१-६)
आपण हथीं आपणी जड़ आपि उपटै ॥१॥ (३५-१-७)

काउं कपूर न चखई दुरगंधि सुखावै॥ (३५-२-१)
हाथी नीरि नश्रवालीऐ सिरि छारु उडावै॥ (३५-२-२)
तुम्मे अमृत सिंजीऐ कउड़तु न जावै॥ (३५-२-३)
सिमलु रुखु सरेवीऐ फलु हथि न आवै॥ (३५-२-४)
निंदकु नाम विहूणिआ सतिसंग न भावै॥ (३५-२-५)
अन्नश्रा आगू जे थीऐ सभु साथु मुहावै ॥२॥ (३५-२-६)

लसणु लुकाइआ न लुकै बहि खाजै कूणै॥ (३५-३-१)
काला कम्बलु उजला किउं होइ सबूणै॥ (३५-३-२)
डेमू खखर जो छुहै दिसै मुहि सूणै॥ (३५-३-३)
कितै कंमि न आवई लावणु बिनु लूणै॥ (३५-३-४)
निंदकि नाम विसारिआ गुर गिआन विहूणै॥ (३५-३-५)
हलति पलति सुखु ना लहै दुखीआ सिरु झूणै ॥३॥ (३५-३-६)

डाइणु माणस खावणी पुतु बुरा न मंगै॥ (३५-४-१)
वडा विकरमी आखीऐ धी भैणहु संगै॥ (३५-४-२)
राजे ध्रोहु कमाँवदे रैबार सुरंगे॥ (३५-४-३)
बजर पाप न उतरनि जाइ कीचनि गंगै॥ (३५-४-४)
थरहर कम्बै नरकु जमु सुणि निंदक नंगै॥ (३५-४-५)
निंदा भली न किसै दी गुर निंद कुढंगै ॥४॥ (३५-४-६)

निंदा करि हरणाखसै वेखहु फलु वटै॥ (३५-५-१)
लंक लुटाई रावणै मसतकि दस कटै॥ (३५-५-२)
कंसु गइआ सण लसकरै सभ दैत संघटै॥ (३५-५-३)

वंसु गवाइआ कैरवाँ खूहणि लख फटै॥ (३५-५-४)
दंत बकत्र सिसपाल दे दंद होए खटै॥ (३५-५-५)
निंदा कोइ न सिझिओ इउ वेद उघटै॥ (३५-५-६)
दुरबासे ने सराप दे यादव सभ तटै ॥५॥ (३५-५-७)

सभनाँ दे सिर गुंदीअनि गंजी गुरड़ावै॥ (३५-६-१)
कंनि तनउड़े कामणी बूड़ी बरिड़ावै॥ (३५-६-२)
नथाँ नकि नवेलीआँ नकटी न सुखावै॥ (३५-६-३)
कजल अखीं हरणाखीआँ काणी कुरलावै॥ (३५-६-४)
सभनाँ चाल सुहावणी लंगड़ी लंगड़ावै॥ (३५-६-५)
गणत गणै गुदेव दी तिसु दुखि विहावै ॥६॥ (३५-६-६)

अपतु करीर न मउलीऐ दे दोस बसंतै॥ (३५-७-१)
संढि सपुती न थीऐ कणतावै कंतै॥ (३५-७-२)
कलरि खेतु न जम्मई घनहरु वरसंतै॥ (३५-७-३)
पंगा पिछै चंगिआँ अवगुण गुणवंतै॥ (३५-७-४)
साइरु विचि घंघूटिआँ बहु रतन अनंतै॥ (३५-७-५)
जनम गवाइ अकारथा गुरु गणत गणंतै ॥७॥ (३५-७-६)

ना तिसु भारे परबताँ असमान खहंदे॥ (३५-८-१)
ना तिसु भारे कोट गड़ह घर बार दिसंदे॥ (३५-८-२)
ना तिसु भारे साइराँ नद वाह वहंदे॥ (३५-८-३)
ना तिसु भारे तरुवराँ फल सुफल फलंदे॥ (३५-८-४)
ना तिसु भारे जीअ जंत अणगणत फिरंदे॥ (३५-८-५)
भारे भुईं अकिरतघण मंदी हू मंदे ॥८॥ (३५-८-६)

मद विचि रिधा पाइ कै कुते दा मासु॥ (३५-९-१)
धरिआ माणस खोपरी तिसु मंदी वासु॥ (३५-९-२)
रतू भरिआ कपड़ा करि कजणु तासु॥ (३५-९-३)
ढकि लै चली चूहड़ी करि भोग बिलासु॥ (३५-९-४)
आखि सुणाए पुछिआ लाहे विसवासु॥ (३५-९-५)
नदरी पवै अकिरतघणु मतु होइ विणासु ॥९॥ (३५-९-६)

चोरु गइआ घरि साह दै घर अंदरि वड़िआ॥ (३५-१०-१)
कुछा कूणै भालदा चउबारे चड़िहआ॥ (३५-१०-२)

सुइना रुपा पंड बंनिश्र अगलाई अड़िआ॥ (३५-१०-३)
लोभ लहरि हलकाइआ लूण हाँडा फड़िआ॥ (३५-१०-४)
चुखकु लै के चखिआ तिसु कखु न खड़िआ॥ (३५-१०-५)
लूण हरामी गुनहगारु धड़ु धम्मड़ धड़िआ ॥१०॥ (३५-१०-६)

खाधे लूण गुलाम होइ पीहि पाणी ढोवै॥ (३५-११-१)
लूण खाइ करि चाकरी रणि टुक टुक होवै॥ (३५-११-२)
लूण खाइ धी पुतु होइ सभ लजा धोवै॥ (३५-११-३)
लूणु वणोटा खाइ कै हथ जोड़ि खड़ोवै॥ (३५-११-४)
वाट वटाऊ लूणु खाइ गुणु कंठि परोवै॥ (३५-११-५)
लूण हरामी गुनहगार मरि जनमु विगोवै ॥११॥ (३५-११-६)

जिउ मिरयादा हिंदूआ गऊ मासु अखाजु॥ (३५-१२-१)
मुसलमाणाँ सूअरहु सउगंद विआजु॥ (३५-१२-२)
सहुरा घरि जावाईऐ पाणी मदराजु॥ (३५-१२-३)
सहा न खाई चूहड़ा माइआ मुहताजु॥ (३५-१२-४)
जिउ मिठै मखी मरै तिसु होइ अकाजु॥ (३५-१२-५)
तिउ धरमसाल दी झाक है विहु खंडूपाजु ॥१२॥ (३५-१२-६)

खरा दुहेला जग विचि जिस अंदरि झाकु॥ (३५-१३-१)
सोइने नो हथु पाइदा हुइ वंञै खाकु॥ (३५-१३-२)
इठ मित पुत भाइरा विहरनि सभ साकु॥ (३५-१३-३)
सोगु विजोगु सरापु है दुरमति नापाकु॥ (३५-१३-४)
वतै मुतड़ि रन्न जिउ दरि मिलै तलाकु॥ (३५-१३-५)
दुखु भुखु दालिद घणा दोजक अउताकु ॥१३॥ (३५-१३-६)

विगड़ै चाटा दुध दा काँजी दी चुखै॥ (३५-१४-१)
सहस मणा रूई जलै चिणगारी धुखै॥ (३५-१४-२)
बूरु विणाहे पाणीऐ खउ लाखहु रुखै॥ (३५-१४-३)
जिउ उदमादी अतीसारु खई रोगु मनुखै॥ (३५-१४-४)
जिउ जालि पंखेरू फासदे चुगण दी भुखै॥ (३५-१४-५)
तिउ अजरु झाक भंडार दी विआपै वेमुखै ॥१४॥ (३५-१४-६)

अउचरु झाक भंडार दी चुखु लगै चखी॥ (३५-१५-१)
होइ दुकुधा निकलै भोजनु मिलि मखी॥ (३५-१५-२)

राति सुखाला किउ सवै तिणु अंदरि अखी॥ (३५-१५-३)
कखा दबी अगि जिउ ओहु रहै न रखी॥ (३५-१५-४)
झाक झकाईऐ झाकवालु करि भख अभखी॥ (३५-१५-५)
गुर परसादी उबरे गुर सिखाँ लखी ॥१५॥ (३५-१५-६)

जिउ घुण खाधी लकड़ी विणु ताणि निताणी॥ (३५-१६-१)
जाण डरावा खेत विचि निरजीतु पराणी॥ (३५-१६-२)
जिउ धूअरु झड़ुवाल दी किउ वरसै पाणी॥ (३५-१६-३)
जिउ थण गल विचि बकरी दुहि दुधु न आणी॥ (३५-१६-४)
झाके अंदरि झाकवालु तिस किआ नीसाणी॥ (३५-१६-५)
जिउ चमु चटै गाइ महि उह भरमि भुलाणी ॥१६॥ (३५-१६-६)

गुछा होइ ध्रिकानूआ किउ वड़ीऐ दाखै॥ (३५-१७-१)
अकै केरी खखड़ी कोई अम्बु न आखै॥ (३५-१७-२)
गहणे जिउ जरपोस दे नही सोइना साखै॥ (३५-१७-३)
फटक न पुजनि हीरिआ ओइ भरे बिआखै॥ (३५-१७-४)
धउले दिसनि छाहि दुधु सादहु गुण गाखै॥ (३५-१७-५)
तिउ साध असाध परखीअनि करतूति सु भाखै ॥१७॥ (३५-१७-६)

सावे पीले पान हहि ओइ वेलहु तुटे॥ (३५-१८-१)
चितमिताले फोफले फल बिरखहुं छुटे॥ (३५-१८-२)
कथ हरेही भूसली दे चावल चुटे॥ (३५-१८-३)
चूना दिसै उजला दहि पथरु कुटे॥ (३५-१८-४)
आपु गवाइ समाइ मिलि रंगुचीच वहुटे॥ (३५-१८-५)
तिउ चहु वरना विचि साध हनि गुरमुखि मुह जुटे॥१८॥ (३५-१८-६)

चाकर सभ सदाइंदे साहिब दरबारे॥ (३५-१९-१)
निवि निवि करनि जुहारीआ सभ सै हथीआरे॥ (३५-१९-२)
मजलस बहि बफाइंदे बोल बोलनि भारे॥ (३५-१९-३)
गलीए तुरे नचाइंदे गजगाह सवारे॥ (३५-१९-४)
रण विचि पइआँ जाणीअनि जोध भजणहारे॥ (३५-१९-५)
तिउ साँगि सिञापनि सनमुखाँ बेमुख हतिआरे ॥१९॥ (३५-१९-६)

जे माँ होवै जारनी किउ पुतु पतारे॥ (३५-२०-१)
गाई माणकु निगलिआ पेटु पाड़ि न मारे॥ (३५-२०-२)

जे पिरु बहु घरु हंढणा सतु रखै नारे॥ (३५-२०-३)
अमरु चलावै चम्म दे चाकर वेचारे॥ (३५-२०-४)
जे मदु पीता बामणी लोइ लुझणि सारे॥ (३५-२०-५)
जे गुर साँगि वरतदा सिखु सिदकु न हारे ॥२०॥ (३५-२०-६)

धरती उपरि कोट गड़ भुइचाल कमंदे॥ (३५-२१-१)
झखड़ि आए तरुवरा सरबत हलंदे॥ (३५-२१-२)
डवि लगै उजाड़ि विचि सभ घाह जलंदे॥ (३५-२१-३)
हड़ आए किनि थम्मीअनि दरीआउ वहंदे॥ (३५-२१-४)
अम्बरि पाटे थिगली कूड़िआर करंदे॥ (३५-२१-५)
साँगै अंदरि साबते से विरले बंदे ॥२१॥ (३५-२१-६)

जे माउ पुतै विसु दे तिस ते किसु पिआरा॥ (३५-२२-१)
जे घरु भन्नै पाहरू कउणु रखणहारा॥ (३५-२२-२)
बेड़ा डोबै पातणी किउ पारि उतारा॥ (३५-२२-३)
आगू लै उझड़ि पवे किसु करै पुकारा॥ (३५-२२-४)
जे करि खेतै खाइ वाड़ि को लहै न सारा॥ (३५-२२-५)
जे गुर भरमाए साँगु करि किआ सिखु विचारा ॥२२॥ (३५-२२-६)

जल विचि कागद लूण जिउ घिअ चोपड़ि पाए॥ (३५-२३-१)
दीवे वटी तेलु दे सभ राति जलाए॥ (३५-२३-२)
वाइ मंडल जिउ डोर फड़ि गुडी ओडाए॥ (३५-२३-३)
मुह विचि गरड़ दुगार पाइ जिउ सपु लड़ाए॥ (३५-२३-४)
राजा फिरै फकीरु होइ सुणि दुखि मिटाए॥ (३५-२३-५)
साँगै अंदरि साबता जिसु गुरू सहाए ॥२३॥३५॥ (३५-२३-६)

Vaar 36

सतिगुरप्रसादि॥ (३६-१-१)

कुता राजि बहालीऐ फिरि चकी चटै॥ (३६-१-२)
सपै दुधु पीआलीऐ विहु मुखहु सटै॥ (३६-१-३)
पथरु पाणी रखीऐ मनि हठु न घटै॥ (३६-१-४)
चोआ चंदनु परहरै खरु खेह पलटै॥ (३६-१-५)
तिउ निंदक पर निंदहू हथि मूलि न हटै॥ (३६-१-६)
आपण हथीं आपणी जड़ आपि उपटै ॥१॥ (३६-१-७)

काउं कपूर न चखई दुरगंधि सुखावै॥ (३६-२-१)
हाथी नीरि नश्रवालीऐ सिरि छारु उडावै॥ (३६-२-२)
तुम्मे अमृत सिंजीऐ कउड़तु न जावै॥ (३६-२-३)
सिमलु रुखु सरेवीऐ फलु हथि न आवै॥ (३६-२-४)
निंदकु नाम विहूणिआ सतिसंग न भावै॥ (३६-२-५)
अन्नश्रा आगू जे थीऐ सभु साथु मुहावै ॥२॥ (३६-२-६)

लसणु लुकाइआ न लुकै बहि खाजै कूणै॥ (३६-३-१)
काला कम्बलु उजला किउं होइ सबूणै॥ (३६-३-२)
डेमू खखर जो छुहै दिसै मुहि सूणै॥ (३६-३-३)
कितै कंमि न आवई लावणु बिनु लूणै॥ (३६-३-४)
निंदकि नाम विसारिआ गुर गिआन विहूणै॥ (३६-३-५)
हलति पलति सुखु ना लहै दुखीआ सिरु झूणै ॥३॥ (३६-३-६)

डाइणु माणस खावणी पुतु बुरा न मंगै॥ (३६-४-१)
वडा विकरमी आखीऐ धी भैणहु संगै॥ (३६-४-२)
राजे ध्रोहु कमाँवदे रैबार सुरंगे॥ (३६-४-३)
बजर पाप न उतरनि जाइ कीचनि गंगै॥ (३६-४-४)
थरहर कम्बै नरकु जमु सुणि निंदक नंगै॥ (३६-४-५)
निंदा भली न किसै दी गुर निंद कुढंगै ॥४॥ (३६-४-६)

निंदा करि हरणाखसै वेखहु फलु वटै॥ (३६-५-१)
लंक लुटाई रावणै मसतकि दस कटै॥ (३६-५-२)
कंसु गइआ सण लसकरै सभ दैत संघटै॥ (३६-५-३)

वंसु गवाइआ कैरवाँ खूहणि लख फटै॥ (३६-५-४)
दंत बकत्र सिसपाल दे दंद होए खटै॥ (३६-५-५)
निंदा कोइ न सिझिओ इउ वेद उघटै॥ (३६-५-६)
दुरबासे ने सराप दे यादव सभ तटै ॥५॥ (३६-५-७)

सभनाँ दे सिर गुंदीअनि गंजी गुरड़ावै॥ (३६-६-१)
कंनि तनउड़े कामणी बूड़ी बरिड़ावै॥ (३६-६-२)
नथाँ नकि नवेलीआँ नकटी न सुखावै॥ (३६-६-३)
कजल अखीं हरणाखीआँ काणी कुरलावै॥ (३६-६-४)
सभनाँ चाल सुहावणी लंगड़ी लंगड़ावै॥ (३६-६-५)
गणत गणै गुदेव दी तिसु दुखि विहावै ॥६॥ (३६-६-६)

अपतु करीर न मउलीऐ दे दोस बसंतै॥ (३६-७-१)
संढि सपुती न थीऐ कणतावै कंतै॥ (३६-७-२)
कलरि खेतु न जम्मई घनहरु वरसंतै॥ (३६-७-३)
पंगा पिछै चंगिआँ अवगुण गुणवंतै॥ (३६-७-४)
साइरु विचि घंघूटिआँ बहु रतन अनंतै॥ (३६-७-५)
जनम गवाइ अकारथा गुरु गणत गणंतै ॥७॥ (३६-७-६)

ना तिसु भारे परबताँ असमान खहंदे॥ (३६-८-१)
ना तिसु भारे कोट गड़ह घर बार दिसंदे॥ (३६-८-२)
ना तिसु भारे साइराँ नद वाह वहंदे॥ (३६-८-३)
ना तिसु भारे तरुवराँ फल सुफल फलंदे॥ (३६-८-४)
ना तिसु भारे जीअ जंत अणगणत फिरंदे॥ (३६-८-५)
भारे भुईं अकिरतघण मंदी हू मंदे ॥८॥ (३६-८-६)

मद विचि रिधा पाइ कै कुते दा मासु॥ (३६-९-१)
धरिआ माणस खोपरी तिसु मंदी वासु॥ (३६-९-२)
रतू भरिआ कपड़ा करि कजणु तासु॥ (३६-९-३)
ढकि लै चली चूहड़ी करि भोग बिलासु॥ (३६-९-४)
आखि सुणाए पुछिआ लाहे विसवासु॥ (३६-९-५)
नदरी पवै अकिरतघणु मतु होइ विणासु ॥९॥ (३६-९-६)

चोरु गइआ घरि साह दै घर अंदरि वड़िआ॥ (३६-१०-१)
कुछा कूणै भालदा चउबारे चड़िहआ॥ (३६-१०-२)

सुइना रुपा पंड बंनिश्र अगलाई अड़िआ॥ (३६-१०-३)
लोभ लहरि हलकाइआ लूण हाँडा फड़िआ॥ (३६-१०-४)
चुखकु लै के चखिआ तिसु कखु न खड़िआ॥ (३६-१०-५)
लूण हरामी गुनहगारु धड़ु धम्मड़ धड़िआ ॥१०॥ (३६-१०-६)

खाधे लूण गुलाम होइ पीहि पाणी ढोवै॥ (३६-११-१)
लूण खाइ करि चाकरी रणि टुक टुक होवै॥ (३६-११-२)
लूण खाइ धी पुतु होइ सभ लजा धोवै॥ (३६-११-३)
लूणु वणोटा खाइ कै हथ जोड़ि खड़ोवै॥ (३६-११-४)
वाट वटाऊ लूणु खाइ गुणु कंठि परोवै॥ (३६-११-५)
लूण हरामी गुनहगार मरि जनमु विगोवै ॥११॥ (३६-११-६)

जिउ मिरयादा हिंदूआ गऊ मासु अखाजु॥ (३६-१२-१)
मुसलमाणाँ सूअरहु सउगंद विआजु॥ (३६-१२-२)
सहुरा घरि जावाईऐ पाणी मदराजु॥ (३६-१२-३)
सहा न खाई चूहड़ा माइआ मुहताजु॥ (३६-१२-४)
जिउ मिठै मखी मरै तिसु होइ अकाजु॥ (३६-१२-५)
तिउ धरमसाल दी झाक है विहु खंडूपाजु ॥१२॥ (३६-१२-६)

खरा दुहेला जग विचि जिस अंदरि झाकु॥ (३६-१३-१)
सोइने नो हथु पाइदा हुइ वंञै खाकु॥ (३६-१३-२)
इठ मित पुत भाइरा विहरनि सभ साकु॥ (३६-१३-३)
सोगु विजोगु सरापु है दुरमति नापाकु॥ (३६-१३-४)
वतै मुतड़ि रन्न जिउ दरि मिलै तलाकु॥ (३६-१३-५)
दुखु भुखु दालिद घणा दोजक अउताकु ॥१३॥ (३६-१३-६)

विगड़ै चाटा दुध दा काँजी दी चुखै॥ (३६-१४-१)
सहस मणा रूई जलै चिणगारी धुखै॥ (३६-१४-२)
बूरु विणाहे पाणीऐ खउ लाखहु रुखै॥ (३६-१४-३)
जिउ उदमादी अतीसारु खई रोगु मनुखै॥ (३६-१४-४)
जिउ जालि पंखेरू फासदे चुगण दी भुखै॥ (३६-१४-५)
तिउ अजरु झाक भंडार दी विआपै वेमुखै ॥१४॥ (३६-१४-६)

अउचरु झाक भंडार दी चुखु लगै चखी॥ (३६-१५-१)
होइ दुकुधा निकलै भोजनु मिलि मखी॥ (३६-१५-२)

राति सुखाला किउ सवै तिणु अंदरि अखी॥ (३६-१५-३)
कखा दबी अगि जिउ ओहु रहै न रखी॥ (३६-१५-४)
झाक झकाईऐ झाकवालु करि भख अभखी॥ (३६-१५-५)
गुर परसादी उबरे गुर सिखाँ लखी ॥१५॥ (३६-१५-६)

जिउ घुण खाधी लकड़ी विणु ताणि निताणी॥ (३६-१६-१)
जाण डरावा खेत विचि निरजीतु पराणी॥ (३६-१६-२)
जिउ धूअरु झड़ुवाल दी किउ वरसै पाणी॥ (३६-१६-३)
जिउ थण गल विचि बकरी दुहि दुधु न आणी॥ (३६-१६-४)
झाके अंदरि झाकवालु तिस किआ नीसाणी॥ (३६-१६-५)
जिउ चमु चटै गाइ महि उह भरमि भुलाणी ॥१६॥ (३६-१६-६)

गुछा होइ ध्रिकानूआ किउ वड़ीऐ दाखै॥ (३६-१७-१)
अकै केरी खखड़ी कोई अम्बु न आखै॥ (३६-१७-२)
गहणे जिउ जरपोस दे नही सोइना साखै॥ (३६-१७-३)
फटक न पुजनि हीरिआ ओइ भरे बिआखै॥ (३६-१७-४)
धउले दिसनि छाहि दुधु सादहु गुण गाखै॥ (३६-१७-५)
तिउ साध असाध परखीअनि करतूति सु भाखै ॥१७॥ (३६-१७-६)

सावे पीले पान हहि ओइ वेलहु तुटे॥ (३६-१८-१)
चितमिताले फोफले फल बिरखहुं छुटे॥ (३६-१८-२)
कथ हरेही भूसली दे चावल चुटे॥ (३६-१८-३)
चूना दिसै उजला दहि पथरु कुटे॥ (३६-१८-४)
आपु गवाइ समाइ मिलि रंगुचीच वहुटे॥ (३६-१८-५)
तिउ चहु वरना विचि साध हनि गुरमुखि मुह जुटे॥१८॥ (३६-१८-६)

चाकर सभ सदाइंदे साहिब दरबारे॥ (३६-१९-१)
निवि निवि करनि जुहारीआ सभ सै हथीआरे॥ (३६-१९-२)
मजलस बहि बफाइंदे बोल बोलनि भारे॥ (३६-१९-३)
गलीए तुरे नचाइंदे गजगाह सवारे॥ (३६-१९-४)
रण विचि पइआँ जाणीअनि जोध भजणहारे॥ (३६-१९-५)
तिउ साँगि सिञापनि सनमुखाँ बेमुख हतिआरे ॥१९॥ (३६-१९-६)

जे माँ होवै जारनी किउ पुतु पतारे॥ (३६-२०-१)
गाई माणकु निगलिआ पेटु पाड़ि न मारे॥ (३६-२०-२)

जे पिरु बहु घरु हंढणा सतु रखै नारे॥ (३६-२०-३)
अमरु चलावै चम्म दे चाकर वेचारे॥ (३६-२०-४)
जे मदु पीता बामणी लोइ लुझणि सारे॥ (३६-२०-५)
जे गुर साँगि वरतदा सिखु सिदकु न हारे ॥२०॥ (३६-२०-६)

धरती उपरि कोट गड़ भुइचाल कमंदे॥ (३६-२१-१)
झखड़ि आए तरुवरा सरबत हलंदे॥ (३६-२१-२)
डवि लगै उजाड़ि विचि सभ घाह जलंदे॥ (३६-२१-३)
हड़ आए किनि थम्मीअनि दरीआउ वहंदे॥ (३६-२१-४)
अम्बरि पाटे थिगली कूड़िआर करंदे॥ (३६-२१-५)
साँगै अंदरि साबते से विरले बंदे ॥२१॥ (३६-२१-६)

जे माउ पुतै विसु दे तिस ते किसु पिआरा॥ (३६-२२-१)
जे घरु भन्नै पाहरू कउणु रखणहारा॥ (३६-२२-२)
बेड़ा डोबै पातणी किउ पारि उतारा॥ (३६-२२-३)
आगू लै उझड़ि पवे किसु करै पुकारा॥ (३६-२२-४)
जे करि खेतै खाइ वाड़ि को लहै न सारा॥ (३६-२२-५)
जे गुर भरमाए साँगु करि किआ सिखु विचारा ॥२२॥ (३६-२२-६)

जल विचि कागद लूण जिउ घिअ चोपड़ि पाए॥ (३६-२३-१)
दीवे वटी तेलु दे सभ राति जलाए॥ (३६-२३-२)
वाइ मंडल जिउ डोर फड़ि गुडी ओडाए॥ (३६-२३-३)
मुह विचि गरड़ दुगार पाइ जिउ सपु लड़ाए॥ (३६-२३-४)
राजा फिरै फकीरु होइ सुणि दुखि मिटाए॥ (३६-२३-५)
साँगै अंदरि साबता जिसु गुरू सहाए ॥२३॥३५॥ (३६-२३-६)

१ॐ सतिगुरप्रसादि ॥ (३६-२४-१)
तीर्थ मंझि निवासु है बगुला अपतीणा॥ (३६-२४-२)
लवै बबीहा वरसदै जल जाइ न पीणा॥ (३६-२४-३)
वाँसु सुगंधि न होवई परमल संगि लीणा॥ (३६-२४-४)
घुघू सुझु न सुझई करमा दा हीणा॥ (३६-२४-५)
नाभि कथूरी मिरग दे वतै ओडीणा॥ (३६-२४-६)
सतिगुर सचा पातिसाहु मुहु कालै मीणा ॥१॥ (३६-२४-७)

नीलारी दे मट विचि पै गिदड़ु रता॥ (३६-२५-१)

जंगल अंदरि जाइ कै पाखंडु कमता॥ (३६-२५-२)
दरि सेवै मिरगावली होइ बहै अवता॥ (३६-२५-३)
करै हकूमति अगली कूड़ै मदि मता॥ (३६-२५-४)
बोलणि पाज उघाड़िआ जिउ मूली पता॥ (३६-२५-५)
तिउ दरगहि मीणा मारीऐ करि कूड़ु कुपता ॥२॥ (३६-२५-६)

चोरु करै नित चोरीआ ओड़कि दुख भारी॥ (३६-२६-१)
नकु कन्नु फड़ि वढीऐ रावै पर नारी॥ (३६-२६-२)
अउघट रुधे मिरग जिउ वितु हारि जुआरी॥ (३६-२६-३)
लंङी कुहलि न आवई पर वेलि पिआरी॥ (३६-२६-४)
वग न होवनि कुतीआ मीणे मुरदारी॥ (३६-२६-५)
पापहु मूलि न तगीऐ होइ अंति खुआरी ॥३॥ (३६-२६-६)

चानणि चंद न पुजई चमकै टानाणा॥ (३६-२७-१)
साइर बूंद बराबरी किउ आखि वखाणा॥ (३६-२७-२)
कीड़ी इभ न अपड़ै कूड़ा तिसु माणा॥ (३६-२७-३)
नानेहालु वखाणदा मा पासि इआणा॥ (३६-२७-४)
जिनि तूं साजि निवाजिआ दे पिंड पराणा॥ (३६-२७-५)
मुढहु घुथहु मीणिआ तुधु जम पुरि जाणा ॥४॥ (३६-२७-६)

कैहा दिसै उजला मसु अंदरि चितै॥ (३६-२८-१)
हरिआ तिलु बूआड़ जिउ फलु कम्म न कितै॥ (३६-२८-२)
जेही कली कनेर दी मनि तनि दुहु भितै॥ (३६-२८-३)
पेंझू दिसनि रंगुले मरीऐ अगलितै॥ (३६-२८-४)
खरी सुआलिओ वेसुआ जीअ बझा इतै॥ (३६-२८-५)
खोटी संगति मीणिआ दुख देंदी मितै ॥५॥ (३६-२८-६)

बधिकु नादु सुणाइ कै जिउ मिरगु विणाहै॥ (३६-२९-१)
झीवरु कुंडी मासु लाइ जिउ मछी फाहै॥ (३६-२९-२)
कवलु दिखालै मुहु खिड़ाइ भवरै वेसाहै॥ (३६-२९-३)
दीपक जोति पतंग नो दुरजन जिउ दाहै॥ (३६-२९-४)
कला रूप होइ हसतनी मैगलु ओमाहै॥ (३६-२९-५)
तिउ नकट पंथु है मीणिआ मिलि नरकि निबाहै ॥६॥ (३६-२९-६)

ग्रहरि चंदउरी देखि कै करदे भरवासा॥ (३६-३०-१)

थल विच तपनि भठीआ किउ लहै पिआसा॥ (३६-३०-२)
सुहणे राजु कमाईऐ करि भोग बिलासा॥ (३६-३०-३)
छाइआ बिरखु न रहै थिरु पुजै किउ आसा॥ (३६-३०-४)
बाजीगर दी खेड जिउ सभु कूड़ु तमासा॥ (३६-३०-५)
रलै जु संगति मीणिआ उठि चलै निरासा ॥७॥ (३६-३०-६)

कोइल काँउ रलाईअनि किउ होवनि इकै॥ (३६-३१-१)
तिउ निंदक जग जाणीअनि बोलि बोलनि फिकै॥ (३६-३१-२)
बगुले हंसु बराबरी किउ मिकनि मिकै॥ (३६-३१-३)
तिउ बेमुखु चुणि कढीअनि मुहि काले टिकै॥ (३६-३१-४)
किआ नीसाणी मीणिआ खोटु साली सिकै॥ (३६-३१-५)
सिरि सिरि पाहणी मारीअनि ओइ पीर फिटिकै ॥८॥ (३६-३१-६)

राती नींगर खेलदे सभ होइ इकठे॥ (३६-३२-१)
राजा परजा होवदे करि साँग उपठे॥ (३६-३२-२)
इकि लसकर लै धावदे इकि फिरदे नठे॥ (३६-३२-३)
ठीकरीआँ हाले भरनि उइ खरे असठे॥ (३६-३२-४)
खिन विचि खेड उजाड़िदे घरु घरु त्रठे॥ (३६-३२-५)
विणु गुणु गुरू सदाइदे ओइ खोटे मठे ॥९॥ (३६-३२-६)

उचा लम्मा झाटुलला विचि बाग दिसंदा॥ (३६-३३-१)
मोटा मुढु पतालि जड़ि बहु गरब करंदा॥ (३६-३३-२)
पत सुपतर सोहणे विसथार बणंदा॥ (३६-३३-३)
फुल रते फल बकबके होइ अफल फलंदा॥ (३६-३३-४)
सावा तोता चुहचुहा तिसु देखि भुलंदा॥ (३६-३३-५)
पिछो दे पछुताइदा ओहु फलु न लहंदा ॥१०॥ (३६-३३-६)

पहिनै पंजे कपड़े पुरसावाँ वेसु॥ (३६-३४-१)
मुछाँ दाड़ही सोहणी बहु दुर्बल वेसु॥ (३६-३४-२)
सै हथिआरी सूरमा पंचीं परवेसु॥ (३६-३४-३)
माहरु दड़ दीबाण विचि जाणै सभु देसु॥ (३६-३४-४)
पुरखु न गणि पुरखतु विणु कामणि कि करेसु॥ (३६-३४-५)
विणु गुर गुरू सदाइदे कउण करै आदेसु ॥११॥ (३६-३४-६)

गलीं जे सहु पाईऐ तोता किउ फासै॥ (३६-३५-१)

मिलै न बहुतु सिआणपै काउ गूंहु गिरासै॥ (३६-३५-२)
जोरावरी न जिपई शीह सहा विणासै॥ (३६-३५-३)
गीत कवित न भिजई भट भेख उदासै॥ (३६-३५-४)
जोबन रूपु न मोहीऐ रंगु कसुम्भ दुरासै॥ (३६-३५-५)
विणे सेवा दोहागणी पिरु मिलै न हासै ॥१२॥ (३६-३५-६)

सिर तलवाए पाईऐ चमगिदड़ जूहै॥ (३६-३६-१)
मड़ी मसाणी जे मिलै विचि खुडाँ चूहै॥ (३६-३६-२)
मिलै न वडी आरजा बिसीअरु विहु लूहै॥ (३६-३६-३)
होइ कुचीलु वरतीऐ खर सूर भसूहे॥ (३६-३६-४)
कंद मूल चित लाईऐ अईअड़ वणु धूहे॥ (३६-३६-५)
विणु गुर मुकति न होवई जिउं घरु विणु बूहे ॥१३॥ (३६-३६-६)

मिलै जि तीरथि नातिआँ डडाँ जल वासी॥ (३६-३७-१)
वाल वधाइआँ पाईऐ बड़ जटाँ पलासी॥ (३६-३७-२)
नंगे रहिआँ जे मिलै वणि मिरग उदासी॥ (३६-३७-३)
भसम लाइ जे पाईऐ खरु खेह निवासी॥ (३६-३७-४)
जे पाईऐ चुप कीतिआँ पसूआँ जड़ हासी॥ (३६-३७-५)
विणु गुर मुकति न होवई गुर मिलै खलासी ॥१४॥ (३६-३७-६)

जड़ी बूी जे जीवीऐ किउ मरै धनंतरु॥ (३६-३८-१)
तंतु मंतु बाजीगराँ ओइ भवहि दिसंतरु॥ (३६-३८-२)
रुखीं बिरखीं पाईऐ कासट बैसंतरु॥ (३६-३८-३)
मिलै न वीराराधु करि ठग चोर न अंतरु॥ (३६-३८-४)
मिलै न राती जागिआँ अपराधु भवंतरु॥ (३६-३८-५)
विणु गुर मुकति न होवई गुरमुखि अमरंतरु ॥१५॥ (३६-३८-६)

घंटु घड़ाइआँ चूहिआँ गलि बिली पाईऐ॥ (३६-३९-१)
मता मताइआ मखीआँ घिअ अंदरि नाईऐ॥ (३६-३९-२)
सूतकु लहै न कीड़िआँ किउ झथु लंघाईऐ॥ (३६-३९-३)
सावणि रहण भम्बीरीआँ जे पारि वसाईऐ॥ (३६-३९-४)
कूंजड़ीआँ वैसाख विचि जिउ जूह पराईऐ॥ (३६-३९-५)
विणु गुर मुकति न होवई फिरि आईऐ जाईऐ ॥१६॥ (३६-३९-६)

जे खुथी बिंडा बहै किउ होइ बजाजु॥ (३६-४०-१)

कुते गल वासणी न सराफी साजु॥ (३६-४०-२)
रतनमणी गलि बाँदरै जउहरी नहि काजु॥ (३६-४०-३)
गदहुं चंदन लदीऐ नहिं गाँधी गाजु॥ (३६-४०-४)
जे मखी मुहि मकड़ी किउ होवै बाजु॥ (३६-४०-५)
सच सचावाँ काँढीऐ कूड़ि कूड़ा पाजु ॥१७॥ (३६-४०-६)

अंङणि पुतु गवाँढणी कूड़ावा माणु॥ (३६-४१-१)
पाली चउणा चारदा घर वितु न जाणु॥ (३६-४१-२)
बदरा सिरि वेगारीऐ निरधनु हैराणु॥ (३६-४१-३)
जिउ करि राखा खेत विचि नाही किरसाणु॥ (३६-४१-४)
पर घरु जाणै आपणा मूरखु मिहमाणु॥ (३६-४१-५)
अणहोंदा आपु गणाइंदा ओहु वडा अजाणु ॥१८॥ (३६-४१-६)

कीड़ी वाक न थम्मीऐ हसती दा भारु॥ (३६-४२-१)
हथ मरोड़े मखु किउ होवै सींह मारु॥ (३६-४२-२)
मछरु डंगु न पुजई बिसीअरु बुरिआरु॥ (३६-४२-३)
चित्रे लख मकउड़िआँ किउ होइ सिकारु॥ (३६-४२-४)
जे जूह सउड़ी संजरी राजा न भतारु॥ (३६-४२-५)
अणहोदा आपु गणाइंदा उहु वडा गवारु ॥१९॥ (३६-४२-६)

पुतु जणै वड़ि कोठड़ी बाहरि जगु जाणै॥ (३६-४३-१)
धनु धरती विचि दबीऐ मसतकि परवाणै॥ (३६-४३-२)
वाट वटाऊ आखदे वुठै इंद्राणै॥ (३६-४३-३)
सभु को सीसु निवाइदा चड़िहऐ चंद्राणै॥ (३६-४३-४)
गोरखु दे गलि गोदड़ी जगु नाथु वखाणै॥ (३६-४३-५)
गुर परचै गुरु आखीऐ सचि सचु सिञाणै ॥२०॥ (३६-४३-६)

हउ अपराधी गुनहगार हउ बेमुख मंदा॥ (३६-४४-१)
चोरु यारु जूआरि हउ पर घरि जोहंदा॥ (३६-४४-२)
निंदकु दुसटु हरामखोरु ठगु देस ठगंदा॥ (३६-४४-३)
काम क्रोध मदु लोभु मोहु अहंकारु करंदा॥ (३६-४४-४)
बिसासघाती अकिरतघण मै को न रखंदा॥ (३६-४४-५)
सिमरि मुरीदा ढाढीआ सतिगुर बखसंदा ॥२१॥३६॥ (३६-४४-६)

Vaar 37

ੴ सतिगुरप्रसादि॥ (३७-१-१)

इकु कवाउ पसाउ करि ओअंकारि अकारु बणाइआ॥ (३७-१-२)
अम्बरि धरति विछोड़ि कै विणु थम्माँ आगासु रहाइआ॥ (३७-१-३)
जल विचि धरती रखीअनि धरती अंदरि नीरु धराइआ॥ (३७-१-४)
काठै अंदरि अगि धरि अगी हौंदी सुफलु फलाइआ॥ (३७-१-५)
पउण पाणी बैसंतरो तिन्ने वैरी मेलि मिलाइआ॥ (३७-१-६)
राजस सातक तामसो ब्रह्मा बिसनु महेसु उपाइआ॥ (३७-१-७)
चोज विडाणु चलितु वरताइआ ॥१॥ (३७-१-८)

सिव सकती दा रूप करि सूरजु चंदु चरागु बलाइआ॥ (३७-२-१)
राती तारे चमकदे घरि घरि दीपक जोति जगाइआ॥ (३७-२-२)
सूरजु एकंकारु दिहि तारे दीपक रूपु लुकाइआ॥ (३७-२-३)
लख दरीआउ कवाउ विचि तोलि अतोलु न तोलि तुलाइआ॥ (३७-२-४)
ओअंकारु अकारु जिसि परवदगारु अपारु अलाइआ॥ (३७-२-५)
अबगति गति अति अगम है अकथ कथा नहि अलखु लखाइआ॥ (३७-२-६)
सुणि सुणि आखणु आखि सुणाइआ ॥२॥ (३७-२-७)

खाणी बाणी चारि जुग जल थल तरवरु पर्बत साजे॥ (३७-३-१)
तिन्न लोअ चउदह भवण करि इकीह ब्रहमंड निवाजे॥ (३७-३-२)
चारे कुंडा दीप सत नउ खंड दह दिसि वजणि वाजे॥ (३७-३-३)
इकस इकस खाणि विचि इकीह इकीह लख उपाजे॥ (३७-३-४)
इकत इकत जूनि विचि जीअ जंतु अणगणत बिराजे॥ (३७-३-५)
रूप अनूप सरूप करि रंग बिरंग तरंग अगाजे॥ (३७-३-६)
पउणु पाणी घरु नउ दरवाजे ॥३॥ (३७-३-७)

काला धउला रतड़ा नीला पीला हरिआ साजे॥ (३७-४-१)
रसु कसु करि विसमादु सादु जीभहुं जाप न खाज अखाजे॥ (३७-४-२)
मिठा कउड़ा खटु तुरसु फिका साउ सलूणा छाजे॥ (३७-४-३)
गंध सुगंधि अवेसु करि चोआ चंदनु केसरु काजे॥ (३७-४-४)
मेदु कथूरी पान फुलु अम्बरु चूर कपूर अंदाजे॥ (३७-४-५)
राग नाद सम्बाद बहु चउदह विदिआ अनहद गाजे॥ (३७-४-६)
लख दरीआउ करोड़ जहाजे ॥४॥ (३७-४-७)

सत समुंद अथाह करि रतन पदार्थ भरे भंडारा॥ (३७-५-१)
महीअल खेती अउखधी छादन भोजन बहु बिसथारा॥ (३७-५-२)
तरुवर छाइआ फुल फल साखा पत मूल बहु भारा॥ (३७-५-३)
पर्बत अंदरि असट धातु लालु जवाहरु पारसि पारा॥ (३७-५-४)
चउरासीह लख जोनि विचि मिलि मिलि विछुड़े वड परवारा॥ (३७-५-५)
जम्मणु जीवणु मरण विचि भवजल पूर भराइ हजारा॥ (३७-५-६)
माणस देही पारि उतारा ॥५॥ (३७-५-७)

माणस जनम दुलम्भु है छिण भंगरु छल देही छारा॥ (३७-६-१)
पाणी दा करि पुतला उडै न पउणु खुले नउं दुआरा॥ (३७-६-२)
अगनि कुंड विचि रखीअनि नरक घोर महिं उदरु मझारा॥ (३७-६-३)
करै उरध तपु गरभ विचि चसा न विसरै सिरजणहारा॥ (३७-६-४)
दसी महीनीं जंमिआँ सिमरण करी करे निसतारा॥ (३७-६-५)
जम्मदो माइआ मोहिआ नदरि न आवै रखणहारा॥ (३७-६-६)
साहों विछुड़िआ वणजारा ॥६॥ (३७-६-७)

रोवै रतन गवाइ कै माइआ मोहु अनेरु गुबारा॥ (३७-७-१)
ओहु रोवै दुखु आपणा हसि हसि गावै सभ परवारा॥ (३७-७-२)
सभनाँ मनि वाधाईआँ रुणु झुंझनड़ा रुण झुणकारा॥ (३७-७-३)
नानकु दादकु सोहले देनि असीसाँ बालु पिआरा॥ (३७-७-४)
चुखहुं बिंदक बिंदु करि बिंदहुं कीता पर्बत भारा॥ (३७-७-५)
सति संतोख दइआ धरमु अर्थु सुगरथ विसारि विसारा॥ (३७-७-६)
काम करोधु विरोधु विचि लोभु मोहु धरोह अहंकारा॥ (३७-७-७)
महाँ जाल फाथा वेचारा ॥७॥ (३७-७-८)

होइ सुचेत अचेत इव अखीं होंदी अन्नश्रा होआ॥ (३७-८-१)
वैरी मितु न जाणदा डाइणु माउ सुभाउ समोआ॥ (३७-८-२)
बोला कन्नीं होंवदा जसु अपजसु मोहु धोहु न सोआ॥ (३७-८-३)
गुंगा जीभै हुंदीऐ दुधु विचि विसु घोलि मुहि चोआ॥ (३७-८-४)
विहु अमृत समसर पीऐ मरन जीवन आस त्रास न ढोआ॥ (३७-८-५)
सरपु अगनि वलि हथु पाइ करै मनोरथ पकड़ि खलोआ॥ (३७-८-६)
समझै नाही टिबा टोआ ॥८॥ (३७-८-७)

लूला पैरी होंवदी टंगाँ मारि न उठि खलोआ॥ (३७-९-१)

हथो हथु नचाईऐ आसा बंधी हारु परोआ॥ (३७-९-२)
उदम उकति न आवई देहि बिदेहि न नवाँ निरोआ॥ (३७-९-३)
हगण मूतण छडणा रोगु सोगु विचि दुखीआ रोआ॥ (३७-९-४)
घुटी पीऐ न खुसी होइ सपहुं रखिअड़ा अणखोआ॥ (३७-९-५)
गुणु अवगुणु न विचारदा न उपकारु विकारु अलोआ॥ (३७-९-६)
समसरि तिसु हथीआरु संजोआ ॥९॥ (३७-९-७)

मात पिता मिलि निंमिआ आसावंती उदरु मझारे॥ (३७-१०-१)
रस कस खाइ निलज होइ छुह छुह धरणि धरै पग धारे॥ (३७-१०-२)
पेट विचि दस माह रखि पीड़ा खाइ जणै पुतु पिआरे॥ (३७-१०-३)
जण कै पालै कसट करि खान पान विचि संजम सारे॥ (३७-१०-४)
गुड़हती देइ पिआलि दुधु घुटी वटी देइ निहारे॥ (३७-१०-५)
छादन भोजनु पेखिआ भदणि मंगणि पड़हनि चितारे॥ (३७-१०-६)
पाँधे पासि पड़हाइआ खटि लुटाइ होइ सुचिआरे॥ (३७-१०-७)
उरिणत होइ भारु उतारे ॥१०॥ (३७-१०-८)

माता पिता अनंद विचि पुतै दी कुड़माई होई॥ (३७-११-१)
रहसी अंग न मावई गावै सोहिलड़े सुख सोई॥ (३७-११-२)
विगसी पुत विआहिऐ घोड़ी लावाँ गाव भलोई॥ (३७-११-३)
सुखाँ सुखै मावड़ी पुतु नूंह दा मेल अलोई॥ (३७-११-४)
नुहु नित कंत कुमंतु देइ विहरे होवह ससु विगोई॥ (३७-११-५)
लख उपकारु विसारि कै पुत कुपुति चकी उठि झोई॥ (३७-११-६)
होवै सरवण विरला कोई ॥११॥ (३७-११-७)

कामणि कामणिआरीऐ कीतो कामणु कंत पिआरे॥ (३७-१२-१)
जम्मे साँई विसारिआ वीवाहिआँ माँ पिअ विसारे॥ (३७-१२-२)
सुखाँ सुखि विवाहिआ सउणु संजोगु विचारि विचारे॥ (३७-१२-३)
पुत नूहैं दा मेलु वेखि अंग ना माथनि माँ पिउ वारे॥ (३७-१२-४)
नूंह नित मंत कुमंत देइ माँ पिउ छडि वडे हतिआरे॥ (३७-१२-५)
वख होवै पुतु रंनि लै माँ पिउ दे उपकारु विसारे॥ (३७-१२-६)
लोकाचारि होइ वडे कुचारे ॥१२॥ (३७-१२-७)

माँ पिउ परहरि सुणै वेदु भेदु न जाणै कथा कहाणी॥ (३७-१३-१)
माँ पिउ परहरि करै तपु वणखंडि भुला फिरै बिबाणी॥ (३७-१३-२)
माँ पिउ परहरि करै पूजु देवी देव न सेव कमाणी॥ (३७-१३-३)

माँ पिउ परहरि नश्रावणा अठसठि तीर्थ घुम्मण वाणी॥ (३७-१३-४)
माँ पिउ परहरि करै दान बेईमान अगिआन पराणी॥ (३७-१३-५)
माँ पिउ परहरि वरत करि मरि जम्मै भरमि भुलाणी॥ (३७-१३-६)
गुरु परमेसरु सारु न जाणी ॥१३॥ (३७-१३-७)

कादरु मनहुं विसारिआ कुदरति अंदरि कादरु दिसै॥ (३७-१४-१)
जीउ पिंड दे साजिआ सास मास दे जिसै किसै॥ (३७-१४-२)
अखी मुहुं नकु कन्नु देइ हथु पैरु सभि दात सु तिसै॥ (३७-१४-३)
अखीं देखै रूप रंगु सबद सुरति मुहि कन्न सरिसै॥ (३७-१४-४)
नकि वासु हथीं किरति पैरी चलण पल पल खिसै॥ (३७-१४-५)
वाल दंद नहुं रोम रोम सासि गिरासि समालि सलिसै॥ (३७-१४-६)
सादी लबै साहिबो तिस तूं सम्मल सैवैं हिसै॥ (३७-१४-७)
लूणु पाइ करि आटै मिसै ॥१४॥ (३७-१४-८)

देही विचि न जापई नींद भुखु तेह किथै वसै॥ (३७-१५-१)
हसणु रोवणु गावणा छिक डिकारु खंगूरणु दसै॥ (३७-१५-२)
आलक ते अंगवाड़ीआँ हिडकी खुरकणु परस परसै॥ (३७-१५-३)
उभे साह उबासीआँ चुटकारी ताड़ी सुणि किसै॥ (३७-१५-४)
आसा मनसा हरखु सोगु जोगु भोगु दुखु सुखु न विणसै॥ (३७-१५-५)
जागदिआँ लखु चितवणी सुता सुहणे अंदरि धसै॥ (३७-१५-६)
सुता ही बरड़ाँवदा किरति विरति विचि जस अपजसै॥ (३७-१५-७)
तिसना अंदरि घणा तरसै ॥१५॥ (३७-१५-८)

गुरमति दुरमति वरतणा साधु असाधु संगति विचि वसै॥ (३७-१६-१)
तिन्न वेस जमवार विचि होइ संजोगु विजोगु मुणसै॥ (३७-१६-२)
सहस कुबाण न विसरै सिरजणहारु विसारि विगसै॥ (३७-१६-३)
पर नारी पर दरबु हेतु पर निंदा परपंच रहसै॥ (३७-१६-४)
नाम दान इसनानु तजि कीर्तन कथा न साधु परसै॥ (३७-१६-५)
कुता चउक चड़हाईऐ चकी चटणि कारण नसै॥ (३७-१६-६)
अवगुणिआरा गुण न सरसै ॥१६॥ (३७-१६-७)

जिउ बहु वरन वणासपति मूल पत्र फलु फुलु घनेरे॥ (३७-१७-१)
इक वरनु बैसंतरै सभना अंदरि करदा डेरे॥ (३७-१७-२)
रूपु अनूपु अनेक होइ रंगु सुरंगु सु वासु चंगेरे॥ (३७-१७-३)
वाँसहु उठि उपंनि करि जालि करंदा भसमै ढेरे॥ (३७-१७-४)

रंग बिरंगी गऊ वंस अंगु अंगु धरि नाउ लवेरे॥ (३७-१७-५)
सळदी आवै नाउ सुणि पाली चारै मेरे तेरे॥ (३७-१७-६)
सभना दा इकु रंगु दुधु घिअ पट भाँडै दोख न हेरे॥ (३७-१७-७)
चितै अंदरि चेतु चितेरे ॥१७॥ (३७-१७-८)

धरती पाणी वासु है फुली वासु निवासु चंगेरी॥ (३७-१८-१)
तिल फुलाँ दे संगि मिलि पतित पुनीतु फुलेलु घवेरी॥ (३७-१८-२)
अखी देखि अनश्रेरु करि मनि अंधे तनि अंधु अंधेरी॥ (३७-१८-३)
छिअ रुत बारह माह विच सूरजु इकु न घुघू हेरी॥ (३७-१८-४)
सिमरणि कूंज धिआन कछु पथर कीड़े रिजकु सवेरी॥ (३७-१८-५)
करते नो कीता चितेरी ॥१८॥ (३७-१८-६)

घुघू चामचिड़क नो देहुं न सुझै चानणु होंदे॥ (३७-१६-१)
राति अनश्रेरी देखदे बोलु कुबोल अबोलु खळंदे॥ (३७-१६-२)
मनमुख अन्नश्रे राति दिहुं सुरति विहूणे चकी झोंदे॥ (३७-१६-३)
अउगुण चुणि चुणि छडि गुण परहरि हीरे फटक परोंदे॥ (३७-१६-४)
नाउ सुजाखे अंनिआ माइआ मद मतवाले रोंदे॥ (३७-१६-५)
काम करोध विरोध विचि कारे पलो भरि भरि धोंदे॥ (३७-१६-६)
पथर पाप न छुटहि ढोंदे ॥१६॥ (३७-१६-७)

थला अंदरि अकु उगवनि वुठे मींह पवै मुहि मोआ॥ (३७-२०-१)
पति टुटै दुधु वहि चलै पीतै कालकूटु ओहु होआ॥ (३७-२०-२)
अकहुं फल होइ खखड़ी निहफलु सो फलु अकतिडु भोआ॥ (३७-२०-३)
विहुं नसै अक दुध ते सपु खाधा खाइ अक नरोआ॥ (३७-२०-४)
सो अक चरि कै बकरी देइ दुधु अमृत मोहि चोआ॥ (३७-२०-५)
सपै दुधु पिआलीऐ विसु उगालै पासि खड़ोआ॥ (३७-२०-६)
गुण कीतै अवगुणु करि ढोआ ॥२०॥ (३७-२०-७)

कुहै कसाई बकरी लाइ लूण सीख मासु परोआ॥ (३७-२१-१)
हसि हसि बोले कुहींदी खाधे अकि हालु इहु होआ॥ (३७-२१-२)
मास खानि गलि छुरी दे हालु तिनाड़ा कउणु अलोआ॥ (३७-२१-३)
जीभै हंदा फेड़िआ खउ दंदाँ मुहु भंनि विगोआ॥ (३७-२१-४)
पर तन पर धन निंद करि होइ दुजीभा बिसीअरु भोआ॥ (३७-२१-५)
वसि आवै गुरुमंत सपु निगुरा मनमुखु सुणै न सोआ॥ (३७-२१-६)
वेखि न चलै अगै टोआ ॥२१॥ (३७-२१-७)

आपि न वंझै साहुरै लोका मती दे समझाए॥ (३७-२२-१)
चानण घरि विचि दीविअहु हेठ अन्नेरु न सकै मिटाए॥ (३७-२२-२)
हथु दीवा फड़ि आखुड़ै हुइ चकचउधी पैरु थिड़ाए॥ (३७-२२-३)
हथ कंङणु लै आरसी अउखा होवै देखि दिखाए॥ (३७-२२-४)
दीवा इकतु हथ लै आरसी दूजै हथि फड़ाए॥ (३७-२२-५)
हुंदे दीवे आरसी आखुड़ि टोए पाउंदा जाए॥ (३७-२२-६)
दूजा भाउ कुदाउ हराए ॥२२॥ (३७-२२-७)

अमिअ सरोवरि मरै डुबि तरै न मनतारू सु अवाई॥ (३७-२३-१)
पारसु परसि न पथरहु कंचनु होइ न अघड़ु घड़ाई॥ (३७-२३-२)
बिसीअरु विसु न परहरै अठ पहर चन्नणि लपटाई॥ (३७-२३-३)
संख समुंदहुं सखणा रोवै धाहाँ मारि सुणाई॥ (३७-२३-४)
घुघू सुझु न सुझई सूरजु जोति न लुकै लुकाई॥ (३७-२३-५)
मनमुख वडा अकृतघणु दूजै भाइ सुआइ लुभाई॥ (३७-२३-६)
सिरजनहार न चिति वसाई ॥२३॥ (३७-२३-७)

माँ गभणि जीअ जाणदी पुतु सपुतु होवै सुखदाई॥ (३७-२४-१)
कुपुतहुं धी चंगेरड़ी पर घर जाइ वसाइ न आई॥ (३७-२४-२)
धीअहुं सप सकारथा जाउ जणेंदी जणि जणि खाई॥ (३७-२४-३)
माँ डाइण धन्नु धन्नु है कपटी पुतै खाइ अघाई॥ (३७-२४-४)
बाम्हण गाई खाइ सपु फड़ि गुर मंत्र पवाइ पिड़ाई॥ (३७-२४-५)
निगुरे तुलि न होरु को सिरजणहारै सिरठि उपाई॥ (३७-२४-६)
माता पिता न गुरु सरणाई ॥२४॥ (३७-२४-७)

निगुरे लख न तुल तिस सतिगुर सरणि न आए॥ (३७-२५-१)
जो गुर गोपै आपणा तिसु डिठे निगुरे सरमाए॥ (३७-२५-२)
सींह सउहाँ जाणा भला ना तिसु बेमुख सउहाँ जाए॥ (३७-२५-३)
सतिगुर ते जो मुहु फिरै तिसु मुहि लगणु वडी बुलाए॥ (३७-२५-४)
जे तिसु मारै धर्म है मारि न हंघै आपु हटाए॥ (३७-२५-५)
सुआमि ध्रोही अकिरतघणु बामण गऊ विसाहि मराए॥ (३७-२५-६)
बेमुख लूंअ न तुलि तुलाइ ॥२५॥ (३७-२५-७)

माणस देहि दुलम्भु है जुगह जुगंतरि आवै वारी॥ (३७-२६-१)
उतमु जनमु दुलम्भु है इक वाकी कोड़मा वीचारी॥ (३७-२६-२)

देहि अरोग दुलम्भु है भागठु है मात पिता हितकारी॥ (३७-२६-३)
साधू संगि दुलम्भु है गुरमुखि सुख फलु भगति पिआरी॥ (३७-२६-४)
फाथा माइआ महाँ जालि पंजि दूत जमकालु सु भारी॥ (३७-२६-५)
जिउ करि सहा वहीर विचि पर हथि पासा पउछकि सारी॥ (३७-२६-६)
दूजै भाइ कुदाइअड़ि जम जंदारु सार सिरि मारी॥ (३७-२६-७)
आवै जाइ भवाईऐ भवजलु अंदरि होइ खुआरी॥ (३७-२६-८)
हारै जनमु अमोलु जुआरी ॥२६॥ (३७-२६-९)

इहु जगु चउपड़ि खेलु है आवा गउण भउजल सैंसारे॥ (३७-२७-१)
गुरमुखि जोड़ा साधसंगि पूरा सतिगुर पारि उतारे॥ (३७-२७-२)
लगि जाइ सु पुगि जाइ गुर परसादी पंजि निवारे॥ (३७-२७-३)
गुरमुखि सहजि सुभाउ है आपहुं बुरा न किसै विचारे॥ (३७-२७-४)
शबद सुरति लिव सावधान गुरमुखि पंथ चलै पगु धारे॥ (३७-२७-५)
लोक वेद गुरु गिआन मति भाइ भगति गुरु सिख पिआरे॥ (३७-२७-६)
निज घरि जाइ वसै गुरु दुआरे ॥२७॥ (३७-२७-७)

वास सुगंध न होवई चरणोदक बावन बोहाए॥ (३७-२८-१)
कचहु कंचन न थीऐ कचहुं कंचन पारस लाए॥ (३७-२८-२)
निहफलु सिम्मलु जाणीऐ अफलु सफलु करि सभ फलु पाए॥ (३७-२८-३)
काउं न होवनि उजले काली हूं धउले सिरि आए॥ (३७-२८-४)
कागहु हंस हुइ पर्म हंसु निरमोलकु मोती चुणि खाए॥ (३७-२८-५)
पसू परेतहुं देव करि साधसंगति गुरु सबदि कमाए॥ (३७-२८-६)
तिस गुरु सार न जातीआ दुरमति दूजा भाइ सभाए॥ (३७-२८-७)
अन्ना आगू साथु मुहाए ॥२८॥ (३७-२८-८)

मै जेहा न अकिरतिघणु है भि न होआ होवणिहारा॥ (३७-२९-१)
मै जेहा न हरामखोरु होरु न कोई अवगुणिआरा॥ (३७-२९-२)
मै जेहा निंदकु न कोइ गुरु निंदा सिरि बजरु भारा॥ (३७-२९-३)
मै जेहा बेमुखु न कोइ सतिगुर ते बेमुख हतिआरा॥ (३७-२९-४)
मै जेहा को दुसट नाहि निरवैरै सिउ वैर विकारा॥ (३७-२९-५)
मै जेहा न विसाहु ध्रोहु सगल समाधी मीन अहारा॥ (३७-२९-६)
बजरु लेपु न उतरै पिंडु अपरचे अउचरि चारा॥ (३७-२९-७)
मै जेहा न दुबाजरा तजि गुरमति दुरमति हितकारा॥ (३७-२९-८)
नाउ मुरीद न सबदि वीचारा ॥२९॥३७॥ (३७-२९-९)

Vaar 38

काम लख करि कामना बहु रूपी सोहै॥ (३८-१-१)
लख करोध करोध करि दुसमन होइ जोहै॥ (३८-१-२)
लख लोभ लख लखमी होइ धोहण धोहै॥ (३८-१-३)
माइआ मोहि करोड़ मिलि हो बहु गुण सोहै॥ (३८-१-४)
असुर संघारि हंकार लख हउमै करि छोहै॥ (३८-१-५)
साधसंगति गुरु सिख सुणि गुरु सिख न पोहै ॥१॥ (३८-१-६)

लख कामणि लख कावरू लख कामणिआरी॥ (३८-२-१)
सिंगलदीपहुं पदमणी बहु रूपि सीगारी॥ (३८-२-२)
मोहणीआँ इंद्रा पुरी अपछरा सुचारी॥ (३८-२-३)
हूराँ परीआँ लख लख बहिसत सवारी॥ (३८-२-४)
लख कउलाँ नव जोबनी लख काम करारी॥ (३८-२-५)
गुरमुखि पोहि न सकनी साधसंगति भारी ॥२॥ (३८-२-६)

लख दुरयोधन कंस लख लख दैत लड़ंदे॥ (३८-३-१)
लख रावण कुम्भकरण लख लख राकस मंदे॥ (३८-३-२)
परसराम लख सहंसबाहु करि खुदी खहंदे॥ (३८-३-३)
हरनाकस बहु हरणाकसा नरसिंघ बुकंदे॥ (३८-३-४)
लख करोध विरोध लख लख वैरु करंदे॥ (३८-३-५)
गुरु सिख पोहि न सकई साधसंगि मिलंदे ॥३॥ (३८-३-६)

सोइना रुपा लख मणा लख भरे भंडारा॥ (३८-४-१)
मोती माणिक हीरिआँ बहु मोल अपारा॥ (३८-४-२)
देस वेस लख राज भाग परगणे हजारा॥ (३८-४-३)
रिधी सिधी जोग भोग अभरण सीगारा॥ (३८-४-४)
कामधेनु लख पारिजाति चिंतामणि पारा॥ (३८-४-५)
चार पदार्थ सगल फल लख लोभ लुभारा॥ (३८-४-६)
गुर सिख पोह न हंघनी साधसंगि उधारा ॥४॥ (३८-४-७)

पिउ पुतु मावड़ धीअड़ी होइ भैण भिरावा॥ (३८-५-१)
नारि भतारु पिआर लख मन मेलि मिलावा॥ (३८-५-२)
सुंदर मंदर चित्रसाल बाग फुल सुहावा॥ (३८-५-३)
राग रंग रस रूप लख बहु भोग भुलावा॥ (३८-५-४)

लख माइआ लख मोहि मिलि होइ मुदई दावा॥ (३८-५-५)
गुरु सिख पोहि न हंघनी साधसंगु सुहावा ॥५॥ (३८-५-६)

वरना वरन न भावनी करि खुदी खहंदे॥ (३८-६-१)
जंगल अंदरि सींह दुइ बलवंति बुकंदे॥ (३८-६-२)
हाथी हथिआई करनि मतवाले हुइ अड़ी अड़ंदे॥ (३८-६-३)
राज भूप राजे वडे मल देस लड़ंदे॥ (३८-६-४)
मुलक अंदरि पातिसाह दुइ जाइ जंग जुड़ंदे॥ (३८-६-५)
हउमै करि हंकार लख मल मल घुलंदे॥ (३८-६-६)
गुरु सिख पोहि न सकनी साधु संगि वसंदे ॥६॥ (३८-६-७)

गोरख जती सदाइंदा तिसु गुरु घरिबारी॥ (३८-७-१)
सुकर काणा होइआ मंती अवीचारी॥ (३८-७-२)
लखमण साधी भुख तेह हउमै अहंकारी॥ (३८-७-३)
हनूम्मंत बलवंत आखीऐ चंचल मति खारी॥ (३८-७-४)
भैरउ भूत कुसूत संगि दुरमति उरधारी॥ (३८-७-५)
गुरसिख जती सलाहीअनि जिनि हउमै मारी ॥७॥ (३८-७-६)

हरी चंद सति रखिआ निखास विकाणा॥ (३८-८-१)
बल छलिआ सतु पालदा पातालि सिधाणा॥ (३८-८-२)
करनु सु कंचन दान करि अंतु पछोताणा॥ (३८-८-३)
सतिवादी हुइ धरमपुतु कूड़ जमपुरि जाणा॥ (३८-८-४)
जती सती संतोखीआ हउमै गरबाणा॥ (३८-८-५)
गुरसिख रोम न पुजनी बहु माणु निमाणा ॥८॥ (३८-८-६)

मुसलमाणा हिंदूआँ दुइ राह चलाए॥ (३८-९-१)
मजहब वरण गणाइंदे गुरु पीरु सदाए॥ (३८-९-२)
सिख मुरीद पखंड करि उपदेस दृड़ाए॥ (३८-९-३)
राम रहीम धिआइंदे हउमै गरबाए॥ (३८-९-४)
मका गंग बनारसी पूज जारत आए॥ (३८-९-५)
रोजे वरत नमाज करि डंडउति कराए॥ (३८-९-६)
गुरु सिख रोम न पुजनी जो आपु गवाए ॥९॥ (३८-९-७)

छिअ दरसन वरताइआ चउदह खनवादे॥ (३८-१०-१)
घरै घूंमि घरबारीआ असवार पिआदे॥ (३८-१०-२)

संनिआसी दस नाम धरि करि वाद कवादे॥ (३८-१०-३)
रावल बारह पंथ करि फिरदे उदमादे॥ (३८-१०-४)
जैनी जूठ न उतरै जूठे परसादे॥ (३८-१०-५)
गुरु सिख रोम न पुजनी धुरि आदि जुगादे ॥१०॥ (३८-१०-६)

बहु सुन्नी शीअ राफज़ी मज़हब मनि भाणे॥ (३८-११-१)
मुलहिद होइ मुनाफ़का सभ भरमि भुलाणे॥ (३८-११-२)
ईसाई मूसाईआँ हउमै हैराणे॥ (३८-११-३)
होइ फिरंगी अरमनी रूमी गरबाणे॥ (३८-११-४)
काली पोस कलंदराँ दरवेस दुगाणे॥ (३८-११-५)
गुरु सिख रोम न पुजनी गुर हटि विकाणे ॥११॥ (३८-११-६)

जप तप संजम साधना हठ निग्रह करणे॥ (३८-१२-१)
वरत नेम तीर्थ घणे अधिआतम धरणे॥ (३८-१२-२)
देवी देवा देहुरे पूजा परवरणे॥ (३८-१२-३)
होम जग बहु दान करि मुख वेद उचरणे॥ (३८-१२-४)
कर्म धर्म भै भर्म विचि बहु जम्मण मरणे॥ (३८-१२-५)
गुरमुखि सुखफलु साधसंगि मिलि दुतर तरणे ॥१२॥ (३८-१२-६)

उदे असति विचि राज करि चक्रवरति घनेरे॥ (३८-१३-१)
अरब खरब लै दरब निधि रस भोगि चंगेरे॥ (३८-१३-२)
नरपति सुरपति छत्रपति हउमै विचि घेरे॥ (३८-१३-३)
सिव लोकहुं चड़िह ब्रह्म लोक बैकुंठ वसेरे॥ (३८-१३-४)
चिर जीवणु बहु हंढणा होहि वडे वडेरे॥ (३८-१३-५)
गुरमुखि सुखफलु अगमु है होइ भले भलेरे ॥१३॥ (३८-१३-६)

रूपु अनूपु सरूप लख होइ रंग बिरंगी॥ (३८-१४-१)
राग नाद सम्बाद लख संगीत अभंगी॥ (३८-१४-२)
गंध सुगंधि मिलाप लख अरगजे अदंगी॥ (३८-१४-३)
छतीह भोजन पाकसाल रस भोग सुढंगी॥ (३८-१४-४)
पाट पटम्बर गहणिआँ सोहहिं सरबंगी॥ (३८-१४-५)
गुरमुखि सुखफलु अगम्मु है गुरसिख सहलंगी ॥१४॥ (३८-१४-६)

लख मति बुधि सुधि उकति लख लख लख चतुराई॥ (३८-१५-१)
लख बल बचन बिबेक लख परकिरति कमाई॥ (३८-१५-२)

लख सिआणप सुरति लख लख सुरति सुघड़ाई॥ (३८-१५-३)
गिआन धिआन सिमरणि सहंस लख पति वडिआई॥ (३८-१५-४)
हउमै अंदरि वरतणा दरि थाइ न पाई॥ (३८-१५-५)
गुरमुखि सुखफलु अगम है सतिगुर सरणाई ॥१५॥ (३८-१५-६)

सति संतोख दइआ धरमु लख अर्थ मिलाही॥ (३८-१६-१)
धरति अगास पाणी पवण लख तेज तपाही॥ (३८-१६-२)
खिमाँ धीरज लख लजि मिलि सोभा सरमाही॥ (३८-१६-३)
साँति सहज सुख सुकृता भाउ भगति कराही॥ (३८-१६-४)
सगल पदार्थ सगल फल आनंद वधाही॥ (३८-१६-५)
गुरमुखि सुखफल पिरमि रसु इकु तिलु न पुजाही ॥१६॥ (३८-१६-६)

लख लख जोग धिआन मिलि धरि धिआनु बहंदे॥ (३८-१७-१)
लख लख सुन्न समाधि साधि निज आसण संदे॥ (३८-१७-२)
लख सेख सिमरणि करहिं गुण गिआन गणंदे॥ (३८-१७-३)
महिमाँ लख महातमाँ जैकार करंदे॥ (३८-१७-४)
उसतति उपमाँ लख लख लख भगति जपंदे॥ (३८-१७-५)
गुरमुखि सुखफलु पिर्म रसु इक पलु न लहंदे ॥१७॥ (३८-१७-६)

अचरज नो आचरजु है अचरजु होवंदा॥ (३८-१८-१)
विसमादै विसमादु है विसमादु रहंदा॥ (३८-१८-२)
हैराणै हैराणु है हैराणु करंदा॥ (३८-१८-३)
अबिगतहुं अबिगतु है नहिं अलखु लखंदा॥ (३८-१८-४)
अकथहुं अकथ अलेखु है नेति नेति सुणंदा॥ (३८-१८-५)
गुरमुखि सुखफलु पिर्म रसु वाहु वाहु चवंदा ॥१८॥ (३८-१८-६)

इकु कवाउ पसाउ करि ब्रहमंड पसारे॥ (३८-१९-१)
करि ब्रहमंड करोड़ लख रोम रोम संजारे॥ (३८-१९-२)
पारब्रह्म पूरण ब्रह्म गुरु रूपु मुरारे॥ (३८-१९-३)
गुरु चेला चेला गुरू गुर सबदु वीचारे॥ (३८-१९-४)
साधसंगति सचु खंड है वासा निरंकारे॥ (३८-१९-५)
गुरमुखि सुखफलु पिर्म रसु दे हउमै मारे ॥१९॥ (३८-१९-६)

सतिगुर नानक देउ है परमेसरु सोई॥ (३८-२०-१)
गुरु अंगदु गुरु अंग ते जोती जोति समोई॥ (३८-२०-२)

अंरापदु गुरु अंगदहुं हुइ जाणु जणोई॥ (३८-२०-३)
गुरु अमरहुं गुरब रामदास अमृत रसु भोई॥ (३८-२०-४)
रामदासहुं अरजन गुरू गुरु सबद सथोई॥ (३८-२०-५)
हरिगोविंद गुरु अरजनहुं गुरु गोविंदु होई॥ (३८-२०-६)
गुरमुखि सुखफल पिर्म रसु सतिसंग अलोई॥ (३८-२०-७)
गुरु गोविंदहुं बाहिरा दूजा नही कोई ॥२०॥३८॥ (३८-२०-८)

Vaar 39

ੴ सतिगुरप्रसादि॥ (३९-१-१)

एकंकारु इकाँग लिखि ऊड़ा ओअंकारु लिखाइआ॥ (३९-१-२)
सतिनामु करता पुरखु निरभउ होइ निरवैरु सदाइआ॥ (३९-१-३)
अकाल मूरति परतखि होइ नाउ अजूनी सैभं भाइआ॥ (३९-१-४)
गुरपरसादि सु आदि सचु जुगह जुगंतरि होंदा आइआ॥ (३९-१-५)
हैभी होसी सचु नाउ सचु दरसणु सतिगुरू दिखाइआ॥ (३९-१-६)
शबद सुरति लिवलीणु होइ गुरु चेला परचा परचाइआ॥ (३९-१-७)
गुरु चेला रहिरासि करि वीह इकीह चड़हाउ चड़हाइआ॥ (३९-१-८)
गुरमुखि सुखफलु अलखु लखाइआ ॥१॥ (३९-१-९)

निरंकारु अकारु करि एकंकारु अपार सदाइआ॥ (३९-२-१)
ओअंकारु अकारु करि इकु कवाउ पसाउ कराइआ॥ (३९-२-२)
पंज तत परवाणु करि पंज मित्र पंज सत्र मिलाइआ॥ (३९-२-३)
पंजे तिनि असाध साधि साधु सदाइ साधु बिरदाइआ॥ (३९-२-४)
पंजे एकंकार लिखि अगों पिछौं सहस फलाइआ॥ (३९-२-५)
पंजे अखर प्रधान करि परमेसरु होइ नाउ धराइआ॥ (३९-२-६)
सतिगुर नानक देउ है गुरु अंगदु अंगहुं उपजाइआ॥ (३९-२-७)
अंगद ते गुरु अमरपद अमृत राम नामु गुरु भाइआ॥ (३९-२-८)
रामदास गुरु अरजन छाइआ ॥२॥ (३९-२-९)

दसतगीर हुइ पंज पीर हरि गुरु हरि गोबिंद अतोला॥ (३९-३-१)
दीन दुनी दा पातिसाहु पातिसाहाँ पातिसाहु अडोला॥ (३९-३-२)
पंज पिआले अजरु जरि होइ मसतान सुजाण विचोला॥ (३९-३-३)
तुरीआ चड़िह जिणि परमततु छिअ वरतारे कोलो कोला॥ (३९-३-४)
छिअ दरसणु छिअ पीड़हीआँ इकसु दरसणु अंदरि गोला॥ (३९-३-५)
जती सती संतोखीआँ सिध नाथ अवतार विरोला॥ (३९-३-६)
गिआरह रुद्र समुंद्र विचि मरि जीवै तिसु रतनु अमोला॥ (३९-३-७)
बारह सोलाँ मेल करि वीह इकीह चड़हाउ हिंडोला॥ (३९-३-८)
अंतरजामी बाला भोला ॥३॥ (३९-३-९)

गुर गोविंदु खुदाइ पीर गुरु चेला चेला गुरु होआ॥ (३९-४-१)
निरंकार आकारु करि एकंकारु अकारु पलोआ॥ (३९-४-२)

ओअंकारि अकारि लख लख दरीआउ करेंदे ढोआ॥ (३६-४-३)
लख दरीआउ समुंद्र विचि सत समुंद्र गड़ाड़ि समोआ॥ (३६-४-४)
लख गड़ाड़ि कड़ाह विचि तृसना दझहिं सीख परोआ॥ (३६-४-५)
बावन चंदन बूंद इकु ठंढे तते होइ खलोआ॥ (३६-४-६)
बावन चंदन लख लख चरण कवल चरणोदकु होआ॥ (३६-४-७)
पारब्रह्मु पूरन ब्रह्मु आदि पुरखु आदेसु अलोआ॥ (३६-४-८)
हरिगोविंद गुर छत्र चंदोआ ॥४॥ (३६-४-६)

सूरज दै घरि चंद्रमा वैरु विरोधु उठावै केतै॥ (३६-५-१)
सूरज आवै चंदृ घरि वैरु विसारि समालै हेतै॥ (३६-५-२)
जोती जोति समाइ कै पूरन पर्म जोति चिति चेतै॥ (३६-५-३)
लोक भेद गुणु गिआनु मिलि पिर्म पिआला मजलस भेतै॥ (३६-५-४)
छिअ रुती छिअ दरसनाँ इकु सूरजु गुरु गिआनु समेतै॥ (३६-५-५)
मजहब वरन सपरसु करि असतधातु इकु धातु सु खेतै॥ (३६-५-६)
नउ घर थापे नवै अंग दसमाँ सुन्न लंघाइ अगेतै॥ (३६-५-७)
नील अनील अनाहदो निझरु धारि अपार सनेतै॥ (३६-५-८)
वीह इकीह अलेख लेख संख असंख न सतिजुगु त्रेतै॥ (३६-५-६)
चारि वरन तम्बोल रस देव करेंदा पसू परेतै॥ (३६-५-१०)
फकर देस किउं मिलै दमेतै ॥५॥ (३६-५-११)

चारि चारि मजहब वरन छिअ दरसन वरतै वरताराा॥ (३६-६-१)
सिव सकती विच वणज करि चउदह हट साहु वणजाराा॥ (३६-६-२)
सचु वणजु गुरु हटीऐ साधसंगति कीरति करताराा॥ (३६-६-३)
गिआन धिआन सिमरन सदा भाउ भगति भउ सबदि बिचाराा॥ (३६-६-४)
नामु दानु इसनानु दृड़ गुरमुखि पंथु रतन वापाराा॥ (३६-६-५)
परउपकारी सतिगुरू सच खंडि वासा निरंकाराा॥ (३६-६-६)
चउदह विदिआ सोधि कै गुरमुखि सुखफलु सचु पिआराा॥ (३६-६-७)
सचहुं ओरै सभ किहु उपरि गुरमुखि सचु आचाराा॥ (३६-६-८)
चंदन वासु वणासपति गुरु उपदेसु तरै सैसाराा॥ (३६-६-६)
अपिउ पीअ गुरमति हुसीआरा ॥६॥ (३६-६-१०)

अमली सोफी चाकराँ आपु आपणे लागे बन्नै॥ (३६-७-१)
महरम होइ वजीर सो मंत्र पिआला मूलि न मन्नै॥ (३६-७-२)
ना महरम हुसिआर मसत मरदानी मजलस करि भन्नै॥ (३६-७-३)
तकरीरी तहरीर विचि पीर परसत मुरीद उपन्नै॥ (३६-७-४)

गुरमति अलखु न लखीऐ अमली सूफी लगनि कन्नै॥ (३६-७-५)
अमली जाणनि अमलीआँ सोफी जाणनि सोफी वन्नै॥ (३६-७-६)
हेतु वजीरै पातिसाह दोइ खोड़ी इकु जीउ सिधन्नै॥ (३६-७-७)
जिउ समसेर मिआन विचि इकतु थेकु रहनि दुइ खन्नै॥ (३६-७-८)
वीह इकीह जिवैं रसु गन्नै ॥७॥ (३६-७-९)

चाकर अमली सोफीआँ पातिसाह दी चउकी आए॥ (३६-८-१)
हाजर हाजराँ लिखीअनि गैर हाजर गैर-हाजर लाए॥ (३६-८-२)
लाइक दे विचारि कै विरलै मजलस विचि सदाए॥ (३६-८-३)
पातिसाहु हुसिआर मसत खुश फहिमी दोवै परचाए॥ (३६-८-४)
देनि पिआले अमलीआँ सोफी सभि पीआवण लाए॥ (३६-८-५)
मतवाले अमली होए पी पी चड़हे सहजि घरि आए॥ (३६-८-६)
सूफी मारनि टकराँ पूज निवाजै सीस निवाए॥ (३६-८-७)
वेद कतेब अजाब विचि करि करि खुदी बहस बहसाए॥ (३६-८-८)
गुरमुखि सुखफलु विरला पाए ॥८॥ (३६-८-९)

बहै झरोखे पातिसाह खिड़की खोल्हि दीवान लगावै॥ (३६-९-१)
अंदरि चउकी महल दी बाहरि मरदाना मिलि आवै॥ (३६-९-२)
पीऐ पिआला पातिसाहु अंदरि खासाँ महलि पीलावै॥ (३६-९-३)
देवनि अमली सूफीआँ अवलि दोम देखि दिखलावै॥ (३६-९-४)
करे मनाह शराब दी पीऐ आपु न होरु सुखावै॥ (३६-९-५)
उलस पिआला मिहर करि विरले देइ न पछोतावै॥ (३६-९-६)
किहु न वसावै किहै दा गुनह कराइ हुकमु बखसावै॥ (३६-९-७)
होरु न जाणै पिर्म रसु जाणै आप कै जिस जणावै॥ (३६-९-८)
विरले गुरमुखि अलखु लखावै ॥९॥ (३६-९-९)

वेद कतेब वखाणदे सूफी हिंदू मुसलमाणा॥ (३६-१०-१)
मुसलमाण खुदाइ दे हिंदू हरि परमेसुरु भाणा॥ (३६-१०-२)
कलमाँ सुन्नत सिदक धरि पाइ जनेऊ तिलकु सुखाणा॥ (३६-१०-३)
मका मुसलमान दा गंग बनारस दा हिंदुवाणा॥ (३६-१०-४)
रोज़े रखि निमाज़ करि पूजा वरत अंदरि हैराणा॥ (३६-१०-५)
चारि चारि मजहब वरन छिअ घरि गुरु उपदेसु वखाणा॥ (३६-१०-६)
मुसलमान मुरीद पीर गुरु सिखी हिंदू लोभाणा॥ (३६-१०-७)
हिंदू दस अवतार करि मुसलमाण इको रहिमाणा॥ (३६-१०-८)
खिंजोताणु करेनि धिङाणा ॥१०॥ (३६-१०-९)

अमली खासे मजलसी पिरमु पिआला अलखु लखाइआ॥ (३६-११-१)
माला तसबी तोड़ि कै जिउ सउ तिवै अठोतरु लाइआ॥ (३६-११-२)
मेरु इमामु रलाइ कै रामु रहीमु न नाउं गणाइआ॥ (३६-११-३)
दुइ मिलि इकु वजूदु हुइ चउपड़ सारी जोड़ि जुड़ाइआ॥ (३६-११-४)
सिव सकती नो लंघि कै पिर्म पिआले निज घरि आइआ॥ (३६-११-५)
राजसु तामसु सातको तीनो लंघि चउथा पदु पाइआ॥ (३६-११-६)
गुर गोविंद खुदाइ पीरु गुरसिख पीरु मुरीदु लखाइआ॥ (३६-११-७)
सचु सबद परगासु करि शबद सुरति सचु सचि मिलाइआ॥ (३६-११-८)
सचा पातिसाहु सचु भाइआ ॥११॥ (३६-११-९)

पारब्रह्मु पूरन ब्रह्मु सतिगुरु साधसंगति विचि वसै॥ (३६-१२-१)
सबदि सुरति अराधीऐ भाइ भगति भै सहजि विगसै॥ (३६-१२-२)
ना ओहु मरै न सोगु होइ देंदा रहै न भोगु विणसै॥ (३६-१२-३)
गुरू समाणा आखीऐ साधसंगति अबिनासी हसै॥ (३६-१२-४)
छेवीं पीड़ही गुरू दी गुर सिखा पीड़ही को दसै॥ (३६-१२-५)
सचु नाउं सचु दरसनो सचखंड सतिसंगु सरसै॥ (३६-१२-६)
पिर्म पिआला साधसंगि भगति वछलु पारसु परसै॥ (३६-१२-७)
निरंकारु अकारु करि होइ अकाल अजोनी जसै॥ (३६-१२-८)
सदा सचु कसौटी कसै ॥१२॥ (३६-१२-९)

ओअंकार अकारु करि त्रै गुण पंज तत उपजाइआ॥ (३६-१३-१)
ब्रह्मा बिसनु महेसु साजि दस अवतार चलित वरताइआ॥ (३६-१३-२)
छिअ रुति बारह माह करि सति वार सैंसार उपाइआ॥ (३६-१३-३)
जनम मरन दे लेख लिखि सासत्र वेद पुराण सुणाइआ॥ (३६-१३-४)
साधसंगति दा आदि अंतु थित न वारु न माहु लिखाइआ॥ (३६-१३-५)
साधसंगति सचुखंडु है निरंकारु गुरु सबदु वसाइआ॥ (३६-१३-६)
बिरखहुं फलु फलते बिरखु अकल कला करि अलखु लखाइआ॥ (३६-१३-७)
आदि पुरख आदेसु करि आदि पुरखु आदेसु कराइआ॥ (३६-१३-८)
पुरखु पुरातनु सतिगुरू ओतपोति इकु सूत्र बणाइआ॥ (३६-१३-९)
विसमादै विसमादु मिलाइआ ॥१३॥ (३६-१३-१०)

ब्रह्मे दिते वेद चारि चारि वरन आसरम उपजाए॥ (३६-१४-१)
छिअ दरसन छिअ सासता छिअ उपदेस भेस वरताए॥ (३६-१४-२)
चारे कुंडाँ दीप सत नउ खंड दह दिसि वंड वंडाए॥ (३६-१४-३)

जल थल वण खंड परबताँ तीर्थ देव सथान बणाए॥ (३६-१४-४)
जप तप संजम होम जग कर्म धर्म करि दान कराए॥ (३६-१४-५)
निरंकारु न पछाणिआ साधसंगति दसै न दसाए॥ (३६-१४-६)
सुणि सुणि आखणु आखि सुणाए ॥१४॥ (३६-१४-७)

दस अवतारी बिसनु होइ वैर विरोध जोध लड़वाए॥ (३६-१५-१)
देव दानव करि दुइ धड़े दैत हराए देव जिणाए॥ (३६-१५-२)
मछ कछ वैराह रूप नर सिंघ बावन बौध उपाए॥ (३६-१५-३)
परसरामु राम कृसनु होइ किलक कलंकी नाउ गणाए॥ (३६-१५-४)
चंचल चलित पखंड बहु वल छल करि परपंच वधाए॥ (३६-१५-५)
पारब्रह्मु पूरन ब्रह्म निरभउ निरंकारु न दिखाए॥ (३६-१५-६)
खत्री मारि संघारु करि रामायण महाभारत भाए॥ (३६-१५-७)
काम करोधु न मारिओ लोभु मोहु अहंकारु न जाए॥ (३६-१५-८)
साधसंगति विणु जनमु गवाए ॥१५॥ (३६-१५-९)

इकदू गिआरह रुद्र होइ घरबारी अउधूतु सदाइआ॥ (३६-१६-१)
जती सती संतोखीआँ सिध नाथ करि परचा लाइआ॥ (३६-१६-२)
संनिआसी दस नाँव धरि जोगी बारह पंथ चलाइआ॥ (३६-१६-३)
रिधि सिधि निधि रसाइणाँ तंत मंत चेटक वरताइआ॥ (३६-१६-४)
मेला करि सिवरात दा करामात विचि वादु वधाइआ॥ (३६-१६-५)
पोसत भंग सराब दा चलै पिआला भुगत भुंचाइआ॥ (३६-१६-६)
वजनि बुरगू सिंङीआँ संख नाद रहरासि कराइआ॥ (३६-१६-७)
आदि पुरखु आदेसु करि अलखु जगाइ न अलखु लखाइआ॥ (३६-१६-८)
साधसंगति विणु भरमि भुलाइआ ॥१६॥ (३६-१६-९)

निरंकार आकारु करि सतिगुरु गुराँ गुरू अबिनासी॥ (३६-१७-१)
पीराँ पीर वखाणीऐ नाथां नाथु साधसंगि वासी॥ (३६-१७-२)
गुरमुखि पंथु चलाइआ गुरसिखु माइआ विचि उदासी॥ (३६-१७-३)
सनमुखि मिलि पंच आखीअनि बिरदु पंच परमेसुरु पासी॥ (३६-१७-४)
गुरमुखि मिलि परवाण पंच साधसंगति सच खंड बिलासी॥ (३६-१७-५)
गुर दरसन गुरसबद है निज घरि भाइ भगति रहरासी॥ (३६-१७-६)
मिठा बोलणु निव चलणु खटि खवालणु आस निरासी॥ (३६-१७-७)
सदा सहजु बैरागु है कली काल अंदरि परगासी॥ (३६-१७-८)
साधसंगति मिलि बंद खलासी ॥१७॥ (३६-१७-९)

नारी पुरखु पिआरु है पुरखु पिआर करेंदा नारी॥ (३६-१८-१)
नारि भतारु संजोग मिलि पुत सपुतु कुपुतु सैंसारी॥ (३६-१८-२)
पुरखु पुरखाँ जो रचनि ते विरले निर्मल निरंकारी॥ (३६-१८-३)
पुरखहु पुरख उपजदा गुरु ते चेला सबद वीचारी॥ (३६-१८-४)
पारस होआ पारसहु गुरु चेला चेला गुणकारी॥ (३६-१८-५)
गुरमुखि वंसी परमहंस गुरसिख साध से परउपकारी॥ (३६-१८-६)
गुरभाई गुरभाईआँ साक सचा गुर वाक जुहारी॥ (३६-१८-७)
पर तन परधनु परहरे पर निंदा हउमै परहारी॥ (३६-१८-८)
साधसंगति विटहु बलिहारी॥१८॥ (३६-१८-६)

पिउ दादा पड़दादिअहु पुत पोता पड़पोता नता॥ (३६-१६-१)
माँ दादी पड़दादीअहु फुफी भैण धीअ सणखता॥ (३६-१६-२)
नाना नानी आखीऐ पड़नाना पड़नानी पता॥ (३६-१६-३)
ताइआ चाचा जाणीऐ ताई चाची माइआ मता॥ (३६-१६-४)
मामे तै मामाणीआ मासी मासड़ दै रंग रता॥ (३६-१६-५)
मासड़ फुफड़ साक सभ सहुरा सस साली सालता॥ (३६-१६-६)
ताएर पितीएर मेलु मिलि मउलेर फुफेर अवता॥ (३६-१६-७)
साढू कुड़मु कुटम्ब सभ नदी नाव संजोग निसता॥ (३६-१६-८)
सचा साक न विछड़ै साधसंगति गुर भाई भता॥ (३६-१६-६)
भोग भुगति विचि जोग जुगता ॥१६॥ (३६-१६-१०)

पीउ दे नांह पिआर तुलि ना फुफी ना पितीए ताए॥ (३६-२०-१)
माऊ हेतु न पुजनी हेतु न मामे मासी जाए॥ (३६-२०-२)
अम्बा सधर न उतरै आणि अम्बाकड़ीआँ जे खाए॥ (३६-२०-३)
मूली पान पटंतरा वासु डिकारु परगटीआए॥ (३६-२०-४)
सूरज चंद न पुजनी दीवे लख तारे चमकाए॥ (३६-२०-५)
रंग मजीठ कुसुम्भ दा सदा सथोई वेसु वटाए॥ (३६-२०-६)
सतिगुरु तुलि न मिहरवान मात पिता न देव सबाए॥ (३६-२०-७)
डिठे सभे ठोकि वजाए॥२०॥ (३६-२०-८)

मापे हेतु न पुजनी सतिगुर हेतु सुचेत सहाई॥ (३६-२१-१)
साह विसाह न पुजनी सतिगुर साहु अथाहु समाई॥ (३६-२१-२)
साहिब तुलि न साहिबी सतिगुर साहिब सचा साईं॥ (३६-२१-३)
दाते दाति न पुजनी सतिगुर दाता सचु दृड़ाई॥ (३६-२१-४)
वैद न पुजनि वैदगी सतिगुर हउमै रोग मिटाई॥ (३६-२१-५)

देवी देव न सेव तुलि सतिगुर सेव सदा सुखदाई॥ (३६-२१-६)
साइर रतन न पुजनी साधसंगति गुरि सबदु सुभाई॥ (३६-२१-७)
अकथ कथा वडी वडिआई ॥२१॥३६॥ (३६-२१-८)

Vaar 40

ੴ सतिगुरप्रसादि॥ (४०-१-१)

सउदा इकतु हटि है पीराँ पीरु गुराँ गुरु पूरा॥ (४०-१-२)
पतित उधारणु दुख हरणु असरणु सरणि वचन दा सूरा॥ (४०-१-३)
अुगुण लै गुण विकणै सुख सागरु विसराइ विसूरा॥ (४०-१-४)
कटि विकार हजार लख परउपकारी सदा हजूरा॥ (४०-१-५)
सति नामु करता पुरखु सति सरूपु न कदही ऊरा॥ (४०-१-६)
साधसंगति सच खंडि वसि अनहद सबद वजाए तूरा॥ (४०-१-७)
दूजा भाउ करे चकचूरा ॥१॥ (४०-१-८)

पारस परउपकार करि जात न असट धातु वीचारै॥ (४०-२-१)
बावन चंदन बोहिंदा अफल सफलु न जुगति उर धारै॥ (४०-२-२)
सभ ते इंदर वरसदा थाउं कुथाउं न अमृत धारै॥ (४०-२-३)
सूरज जोति उदोत करि उतपोति हो किरण पसारै॥ (४०-२-४)
धरति अंदरि सहन सील पर मल हरै अवगुण न चितारै॥ (४०-२-५)
लाल जवाहर मणि लोहा सुइना पारस जाति बिचारै॥ (४०-२-६)
साधसंगति का अंत न पारै ॥२॥ (४०-२-७)

पारस धाति कंचनु करै होइ मनूर न कंचन झूरै॥ (४०-३-१)
बावन बोहै बनासपति बाँसु निगंध न बुहै हजूरै॥ (४०-३-२)
खेती जम्मै सहंस गुण कलर खेति न बीज अंगूरै॥ (४०-३-३)
उलू सुझ न सुझई सतिगुरु सुझ सुझाइ हजूरै॥ (४०-३-४)
धरती बीजै सु लूणै सतिगुरु सेवा सभ फल चूरै॥ (४०-३-५)
बोहिथ पवै सो निकलै सतिगुरु साधु असाधु न दूरै॥ (४०-३-६)
पसू परेतहुं देव विचूरै ॥३॥ (४०-३-७)

कंचनु होवै पारसहुं कंचन करै न कंचन होरी॥ (४०-४-१)
चंदन बावन चंदनहुं ओदूं होरु न पवै करोरी॥ (४०-४-२)
वुठै जम्मै बीजिआ सतिगुरु मति चितवै फल भोरी॥ (४०-४-३)
राति पवै दिहु आथवै सतिगुर गुरु पूरण धुर धोरी॥ (४०-४-४)
बोहिथ पर्बत ना चड़हे सतिगुरु हठ निग्रहु न सहोरी॥ (४०-४-५)
धरती नो भुंचाल डर गुरु मति निहचल चलै न चोरी॥ (४०-४-६)
सतिगुर रतन पदार्थ बोरी ॥४॥ (४०-४-७)

सुरज चड़िऐ लुक जानि उलू अंध कंध जग माही॥ (४०-५-१)
बुके सिंघ उदिआन महि जम्बुक मिरग न खोजे पाही॥ (४०-५-२)
चड़िहआ चंद अकास ते विचि कुठाली लुकै नाही॥ (४०-५-३)
पंखी जेते बन बिखै डिठे बाज न ठउरि रहाही॥ (४०-५-४)
चोर जार हरामखोर दिहु चड़िहआ को दिसै नाही॥ (४०-५-५)
जिन कै रिदै गिआन होइ लख अगिआनी सुध कराही॥ (४०-५-६)
साधसंगति कै दरसनै कलि कलेसि सभ बिनस बिनाही॥ (४०-५-७)
साधसंगति विटहुं बलि जाही ॥५॥ (४०-५-८)

राति हनश्रेरी चमकदे लख करोड़ी अम्बरि तारे॥ (४०-६-१)
चड़िहऐ चंद मलीण होणि को लुकै को बुकै बबारे॥ (४०-६-२)
सूरज जोति उदोति करि तारे चंद न रैणि अंधारे॥ (४०-६-३)
देवी देव न सेवकाँ तंत न मंत न फुरनि विचारे॥ (४०-६-४)
वेद कतेब न असट धातु पूरे सतिगुरु सबद सवारे॥ (४०-६-५)
गुरमुखि पंथ सुहावड़ा धन्न गुरू धन्नु गुरू पिआरे॥ (४०-६-६)
साधसंगति परगटु संसारे ॥६॥ (४०-६-७)

चारि वरनि चारि मज़हबाँ छिअ दरसन वरतनि वरतारे॥ (४०-७-१)
दस अवतार हजार नाव थान मुकाम सभे वणजारे॥ (४०-७-२)
इकतु हटहुं वणज लै देस दिसंतरि करनि पसारे॥ (४०-७-३)
सतिगुरु पूरा साहु है बेपरवाहु अथाहु भंडारे॥ (४०-७-४)
लै लै मुकरि पानि सभ सतिगुरु देइ न देंदा हारे॥ (४०-७-५)
इकु कवाउ पसाउ करि ओअंकारि अकार सवारे॥ (४०-७-६)
पारब्रह्म सतिगुर बलिहारे ॥७॥ (४०-७-७)

पीर पैकम्बर औलीए गौस कुतब उलमाउ घनेरे॥ (४०-८-१)
सेख मसाइक सादका सुहदे और सहीद बहुतेरे॥ (४०-८-२)
काजी मुलाँ मउलवी मुफती दानसवंद बंदेरे॥ (४०-८-३)
रिखी मुनी दिगम्बराँ कालख करामात अगलेरे॥ (४०-८-४)
साधिक सिधि अगणत हैनि आप जणाइनि वडे वडेरे॥ (४०-८-५)
बिनु गुर कोइ न सिझई हउमैं वधदी जाइ वधेरे॥ (४०-८-६)
साधसंगति बिनु हउमै हेरे ॥८॥ (४०-८-७)

किसै रिधि सिधि किसै देइ किसै निधि करामात सु किसै॥ (४०-९-१)

किसै रसाइण किसै मणि किसै पारस किसै अमृत रिसै॥ (४०-९-२)
तंतु मंतु पाखंड किसै वीराराध दिसंतरु दिसै॥ (४०-९-३)
किसै कामधेनु पारिजात किसै लखमी देवै जिसै॥ (४०-९-४)
नाटक चेटक आसणा निवली कर्म भर्म भउ मिसै॥ (४०-९-५)
जोगी भोगी जोगु भोगु सदा संजोगु विजोगु सलिसै॥ (४०-९-६)
ओअंकारि अकार सु तिसै ॥९॥ (४०-९-७)

खाणी बाणी जुगि चारि लख चउरासीह जूनि उपाई॥ (४०-१०-१)
उतम जूनि वखाणीऐ माणसि जूनि दुलम्भ दिखाई॥ (४०-१०-२)
सभि जूनी करि वसि तिसु माणसि नो दिती वडिआई॥ (४०-१०-३)
बहुते माणस जगत विचि पराधीन किछु समझि न पाई॥ (४०-१०-४)
तिन मै सो आधीन को मंदी कम्मीं जनमु गवाई॥ (४०-१०-५)
साधसंगति दे वुठिआँ लख चउरासीह फेरि मिटाई॥ (४०-१०-६)
गुरु सबदी वडी वडिआई ॥१०॥ (४०-१०-७)

गुरसिख भलके उठ करि अमृत वेले सरु नश्रावंदा॥ (४०-११-१)
गुरु कै बचन उचारि कै धरमसाल दी सुरति करंदा॥ (४०-११-२)
साधसंगति विचि जाइ कै गुरबाणी दे प्रीति सुणंदा॥ (४०-११-३)
संका मनहुं मिटाइ कै गुरु सिखाँ दी सेव करंदा॥ (४०-११-४)
किरत विरत करि धरमु दी लै परसाद आणि वरतंदा॥ (४०-११-५)
गुरसिखाँ नो दोइ करि पिछों बचिआ आपु खवंदा॥ (४०-११-६)
कली काल परगास करि गुरु चेला चेला गुरु संदा॥ (४०-११-७)
गुरमुख गाडी राहु चलंदा ॥११॥ (४०-११-८)

ओअंकार अकारु जिसु सतिगुरु पुरखु सिरंदा सोई॥ (४०-१२-१)
इकु कवाउ पसाउ जिस सबद सुरति सतिसंग विलोई॥ (४०-१२-२)
ब्रह्मा बिसनु महेसु मिलि दस अवतार वीचार न होई॥ (४०-१२-३)
भेद न बेद कतेब नो हिंदू मुसलमाण जणोई॥ (४०-१२-४)
उतम जनमु सकारथा चरणि सरणि सतिगुरु विरलोई॥ (४०-१२-५)
गुरु सिख सुणि गुरु सिख होइ मुरदा होइ मरीद सु कोई॥ (४०-१२-६)
सतिगुर गोरिसतान समोई ॥१२॥ (४०-१२-७)

जप तप हठि निग्रह घणे चउदह विदिआ वेद वखाणे॥ (४०-१३-१)
सेख नाग सनकादिकाँ लोमस अंतु अनंत न जाणे॥ (४०-१३-२)
जती सती संतोखीआँ सिध नाथ होइ नाथ भुलाणे॥ (४०-१३-३)

पीर पैकम्बर अउलीए बुज़रकवार हज़ार हैराणे॥ (४०-१३-४)
जोग भोग लख रोग सोग लख संजोग विजोग विडाणे॥ (४०-१३-५)
दस नाउं संनिआसीआँ भम्भल भूसे खाइ भुलाणे॥ (४०-१३-६)
गुरु सिख जोगी जागदे होर सभे बनवासु लुकाणे॥ (४०-१३-७)
साधसंगति मिलि नामु वखाणे ॥१३॥ (४०-१३-८)

चंद सूरज लख चानणे तिल न पुजनि सतिगुरु मती॥ (४०-१४-१)
लख पाताल अकास लख उची नीवीं किरणि न रती॥ (४०-१४-२)
लख पाणी लक पउण मिलि रंग बिरंग तरंग न वती॥ (४०-१४-३)
आदि न अंतु न मंतु पलु लख परलउ लख लख उतपती॥ (४०-१४-४)
धीरज धर्म न पुजनी लख लख पर्बत लख धरती॥ (४०-१४-५)
लख गिआन धिआन लख तुलि न तुलीऐ तिल गुरमती॥ (४०-१४-६)
सिमरण किरणि घणी घोल घती ॥१४॥ (४०-१४-७)

लख दरीआउ कवाउ विचि लख लख लहरि तरंग उठंदे॥ (४०-१५-१)
इकस लहरि तरंग विचि लख लख लख दरीआउ वहंदे॥ (४०-१५-२)
इकस इकस दरीआउ विचि लख अवतार अकार फिरंदे॥ (४०-१५-३)
मछ कछ मरिजीवड़े अगम अथाह न हाथि लहंदे॥ (४०-१५-४)
परवदगार अपारु है पारावार न लहनि तरंदे॥ (४०-१५-५)
अजरावरु सतिगुरु पुरखु गुरमति गुरु सिख अजरु जरंदे॥ (४०-१५-६)
करनि बंदगी विरले बंदे ॥१५॥ (४०-१५-७)

इक कवाउ अमाउ जिसु केवडु वडे दी वडिआई॥ (४०-१६-१)
ओअंकार अकार जिसु तिसु दा अंतु न कोऊ पाई॥ (४०-१६-२)
अधा साहु अथाहु जिसु वडी आरजा गणत न आई॥ (४०-१६-३)
कुदरति कीम न जाणीऐ कादरु अलखु न लखिआ जाई॥ (४०-१६-४)
दाति न कीम न राति दिहु बेसुमारु दातारु खुदाई॥ (४०-१६-५)
अबिगति गति अनाथ नाथ अकथ कथा नेति नेति अलाई॥ (४०-१६-६)
आदि पुरखु आदेसु कराई ॥१६॥ (४०-१६-७)

सिरु कलवतु लै लख वार होमे कटि कटि तिलु तिलु देही॥ (४०-१७-१)
गलै हिमाचल लख वारि करै उरध तप जुगति सनेही॥ (४०-१७-२)
जल तपु साधे अगनि तपु पूंअर तपु करि होइ विदेही॥ (४०-१७-३)
वरत नेम संजम घणे देवी देव असथान भवेही॥ (४०-१७-४)
पुन्न दान चंगिआईआँ सिधासण सिंघासण थे एही॥ (४०-१७-५)

निवली कर्म भुइअंगमाँ पूरक कुम्भक रेच करेही॥ (४०-१७-६)
गुरमुखि सुख फल सरनि सभेही ॥१७॥ (४०-१७-७)

सहस सिआणे सैपुरस सहस सिआणप लइआ न जाई॥ (४०-१८-१)
सहस सुघड़ सुघड़ाईआँ तुलु सहस चतुर चतुराई॥ (४०-१८-२)
लख हकीम लख हिकमती दुनीआदार वडे दुनिआई॥ (४०-१८-३)
लख साह पतिसाह लख लख वज़ीर न मसलत काई॥ (४०-१८-४)
जती सती संतोखीआँ सिध नाथ मिलि हाथ न पाई॥ (४०-१८-५)
चार वरन चार मजहबाँ छिअ दरसन नहिं अलखु लखाई॥ (४०-१८-६)
गुरमुखि सुख फल वडी वडिआई ॥१८॥ (४०-१८-७)

पीर मुरीदी गाखड़ी पीराँ पीरु गुराँ गुरु जाणै॥ (४०-१९-१)
सतिगुर दा उपदेसु लै वीह इकीह उलंघि सिञाणै॥ (४०-१९-२)
मुरदा होइ मुरीद सो गुरु सिख जाइ समाइ बबाणै॥ (४०-१९-३)
पैरीं पै पा खाक होइ तिसु पा खाक पाकु पतीआणै॥ (४०-१९-४)
गुरमुखि पंथु अगम्मु है मरि मरि जीवै जाइ पछाणै॥ (४०-१९-५)
गुरु उपदेसु अवेसु करि कीड़ी भ्रिंगी वाँग विडाणै॥ (४०-१९-६)
अकथ कथा कउण आखि वखाणै ॥१९॥ (४०-१९-७)

चारि वरनि मिलि साधसंगि चार चवका सोलहि जाणै॥ (४०-२०-१)
पंज सबद गुर सबद लिव पंजू पंजे पंजीह लाणै॥ (४०-२०-२)
छिअ दरसण इक दरसणो छिअ छके छतीह समाणै॥ (४०-२०-३)
सत दीप इक दीपको सत सते उणवंजहि भाणै॥ (४०-२०-४)
असट धातु इकु धात करि अठू अठे चउहठ माणै॥ (४०-२०-५)
नउं नाथ इक नाथ है नउं नाएं एकासीह दाणै॥ (४०-२०-६)
दस दुआर निरधार करि दाहो दाहे सउ परवाणै॥ (४०-२०-७)
गुरमुखि सुखफल चोज विडाणै ॥२०॥ (४०-२०-८)

सउ विच वरतै सिख संत इकोतर सौ सतिगुर अबिनासी॥ (४०-२१-१)
सदा सदीव दीबाण जिसु असथिर सदा न आवै जासी॥ (४०-२१-२)
इक मन जिनश्रैं धिआइआ काटी गलहु तिसै जम फासी॥ (४०-२१-३)
इको इक वरतदा शबद सुरति सतिगुरू जणासी॥ (४०-२१-४)
बिनु दरसनु गुरु मूरति भ्रमता फिरे लख जूनि चउरासी॥ (४०-२१-५)
बिनु दीखिआ गुरदेव दी मरि जनमे विचि नरक पवासी॥ (४०-२१-६)
निरगुण सरगुण सतिगुरू विरला को गुर सबद समासी॥ (४०-२१-७)

बिनु गुरु ओट न होर को सची ओट न कदे बिनासी॥ (४०-२१-८)
गुराँ गुरू सतिगुरु पुरखु आदि अंति थिर गुरू रहासी॥ (४०-२१-९)
को विरला गुरमुखि सहजि समासी ॥२१॥ (४०-२१-१०)

धिआन मूल मूरति गुरू पूजा मूल गुरु चरण पुजाए॥ (४०-२२-१)
मंत्र मूलु गुरु वाक है सचु सबदु सतिगुरू सुणाए॥ (४०-२२-२)
चरणोदकु पवित्र है चरण कमल गुरु सिख धुआए॥ (४०-२२-३)
चरणामृत कसमल कटे गुरु धूरी बुरे लेख मिटाए॥ (४०-२२-४)
सति नाम करता पुरखु वाहिगुरू विचि रिदै समाए॥ (४०-२२-५)
बारह तिलक मिटाए के गुरमुखि तिलक नीसाण चड़हाए॥ (४०-२२-६)
रहुरासी रहुरासि एहु इको जपीऐ होरु तजाए॥ (४०-२२-७)
बिनु गुर दरसणु देखणा भ्रमता फिरे ठउड़ि नहीं पाए॥ (४०-२२-८)
बिनु गुरु पूरै आए जाए ॥२२॥४०॥ (४०-२२-९)

Vaar 41

सतिगुरप्रसादि॥ (४१-१-१)

बोलणा भाई गुरदास का॥ (४१-१-२)

हरि सचे तखत रचाइआ सति संगति मेला॥ (४१-१-३)
नानक निरभउ निरंकार विचि सिधाँ खेला॥ (४१-१-४)
गुरु दास मनाई कालका खंडे की वेला॥ (४१-१-५)
पीओ पाहुल खंडधार होइ जनम सुहेला॥ (४१-१-६)
संगति कीनी खालसा मनमुखी दुहेला॥ (४१-१-७)
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥१॥ (४१-१-८)

सचा अमर गोबिंद का सुण गुरू पिआरे॥ (४१-२-१)
सति संगति मेलाप करि पंच दूत संघारे॥ (४१-२-२)
विचि संगति ढोई ना लहनि जो खसमु विसारे॥ (४१-२-३)
गुरमुखि मथे उजले सचे दरबारे॥ (४१-२-४)
हरि गुरु गोबिंद धिआईऐ सचि अमृत वेला॥ (४१-२-५)
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥२॥ (४१-२-६)

हुकमै अंदरि वरतदी सभ सृसटि सबाई॥ (४१-३-१)
इकि आपे गुरमुखि कीतीअनु जिनि हुकम मनाई॥ (४१-३-२)
इकि आपे भर्म भुलाइअनु दूजै चितु लाई॥ (४१-३-३)
इकना नो नामु बखसिअनु होइ आपि सहाई॥ (४१-३-४)
गुरमुखि जनमु सकारथा मनमुखी दुहेला॥ (४१-३-५)
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥३॥ (४१-३-६)

गुर बाणी तिनि भाईआ जिनि मसतकि भाग॥ (४१-४-१)
मनमुखि छुटड़ि कामणी गुरमुखि सोहाग॥ (४१-४-२)
गुरमुखि ऊजल हंसु है मनमुख है काग॥ (४१-४-३)
मनमुखि ऊंधे कवलु हैं गुरमुखि सो जाग॥ (४१-४-४)
मनमुखि जोनि भवाईअनि गुरमुखि हरि मेला॥ (४१-४-५)
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥४॥ (४१-४-६)

सचा साहिबु अमर सचु सची गुरु बाणी॥ (४१-५-१)

सचे सेती रतिआ सुख दरगह माणी॥ (४१-५-२)
जिनि सतिगुरु सचु धिआइआ तिनि सुख विहाणी॥ (४१-५-३)
मनमुखि दरगहि मारीऐ तिल पीड़ै घाणी॥ (४१-५-४)
गुरमुखि जनम सदा सुखी मनमुखी दुहेला॥ (४१-५-५)
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥५॥ (४१-५-६)

सचा नामु अमोल है वडभागी सुणीऐ॥ (४१-६-१)
सतिसंगति विचि पाईऐ नित हरि गुण गुणीऐ॥ (४१-६-२)
धर्म खेत कलिजुग सरीर बोईऐ सो लुणीऐ॥ (४१-६-३)
सचा साहिब सचु निआइ पाणी जिउं पुणीऐ॥ (४१-६-४)
विचि संगति सचु वरतदा नित नेहु नवेला॥ (४१-६-५)
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥६॥ (४१-६-६)

ओअंकार अकार आपि है होसी भी आपै॥ (४१-७-१)
ओही उपावनहारु है गुर सबदी जापै॥ (४१-७-२)
खिन महिं ढाहि उसारदा तिसु भाउ न बिआपै॥ (४१-७-३)
कली काल गुरु सेवीऐ नहीं दुख संतापै॥ (४१-७-४)
सभ जगु तेरा खेलु है तूं गुणी गहेला॥ (४१-७-५)
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥७॥ (४१-७-६)

आदि पुरख अनभै अनंत गुरु अंत न पाईऐ॥ (४१-८-१)
अपर अपार अगम्म आदि जिसु लखिआ न जाईऐ॥ (४१-८-२)
अमर अजाची सति नामु तिसु सदा धिआईऐ॥ (४१-८-३)
सचा साहिब सेवीऐ मन चिंदिआ पाईऐ॥ (४१-८-४)
अनिक रूप धरि प्रगटिआ है एक अकेला॥ (४१-८-५)
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥८॥ (४१-८-६)

अबिनासी अनंत है घटि घटि दिसटाइआ॥ (४१-९-१)
अघ नासी आतम अभुल नहीं भुलै भुलाइआ॥ (४१-९-२)
हरि अलख अकाल अडोल है गुरु सबदि लखाइआ॥ (४१-९-३)
सर्ब बिआपी है अलेप जिसु लगै न माइआ॥ (४१-९-४)
हरि गुरमुखि नाम धिआईऐ जितु लंघै वहेला॥ (४१-९-५)
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥९॥ (४१-९-६)

निरंकारु नरहरि निधान निरवैरु धिआईऐ॥ (४१-१०-१)

नाराइण निरबाण नाथ मन अनदिन गाईऐ॥ (४१-१०-२)
नरक निवारण दुख दलण जपि नरकि न जाईऐ॥ (४१-१०-३)
देणहार दइआल नाथ जो दोइ सु पाईऐ॥ (४१-१०-४)
दुख भंजन सुख हरि धिआन माइआ विचि खेला॥ (४१-१०-५)
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥१०॥ (४१-१०-६)

पारब्रह्म पूरन पुरख परमेसुर दाता॥ (४१-११-१)
पतित पावन परमात्मा सर्ब अंतिर जाता॥ (४१-११-२)
हरि दाना बीना बेसुमार बेअंत बिधाता॥ (४१-११-३)
बनवारी बखसिंद आपु आपे पिता माता॥ (४१-११-४)
इह मानस जनम अमोल है मिलने की वेला॥ (४१-११-५)
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥११॥ (४१-११-६)

भै भंजन भगवान भजो भै नासन भोगी॥ (४१-१२-१)
भगति वछल भै भंजनो जपि सदा अरोगी॥ (४१-१२-२)
मनमोहन मूरति मुकंद प्रभु जोग सु जोगी॥ (४१-१२-३)
रसीआ रखवाला रचनहार जो करेे सु होगी॥ (४१-१२-४)
मधुसूधनि माधो मुरारि बहु रंगी खेला॥ (४१-१२-५)
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥१२॥ (४१-१२-६)

लोचा पूरन लिखमहारु है लेख लिखारी॥ (४१-१३-१)
हरि लालन लाल गुलाल सचु सचा वापारी॥ (४१-१३-२)
रावनहारु रहीमु राम आपे नर नारी॥ (४१-१३-३)
रिखीजेस रघुनाथ राइ जपीऐ बनवारी॥ (४१-१३-४)
परमहंस भै त्रास नास जपि रिदै सुहेला॥ (४१-१३-५)
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥१३॥ (४१-१३-६)

प्रान मीत परमात्मा पुरखोतम पूरा॥ (४१-१४-१)
पोखनहार पातिसाह है प्रतिपालन ऊरा॥ (४१-१४-२)
पतित उधारन प्रानपति सद सदा हजूरा॥ (४१-१४-३)
वह प्रगटिओ पुरख भगवंत रूप गुर गोबिंद सूरा॥ (४१-१४-४)
अनंद बिनोदी चोजीआ सचु सची वेला॥ (४१-१४-५)
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥१४॥ (४१-१४-६)

उहु गुरु गोबिंद होइ प्रगटिओ दसवाँ अवतारा॥ (४१-१५-१)

जिन अलख अपइर निरंजना जपिओ करतारा॥ (४१-१५-२)
निज पंथ चलाइओ खालसा धरि तेज करारा॥ (४१-१५-३)
सिर केस धारि गहि खड़ग को सभ दुसट पछारा॥ (४१-१५-४)
सील जत की कछ पहरि पकड़ो हथिआरा॥ (४१-१५-५)
सच फते बुलाई गुरू की जीतिओ रण भारा॥ (४१-१५-६)
सभ दैत अरिनि को घेर करि कीचै प्रहारा॥ (४१-१५-७)
तब सहिजे प्रगटिओ जगत मै गुरु जाप अपारा॥ (४१-१५-८)
इउं उपजे सिंघ भुजंगीए नील अम्बर धारा॥ (४१-१५-९)
तुरक दुसट सभि छै कीए हरि नाम उचारा॥ (४१-१५-१०)
तिन आगे कोइ न ठहिरिओ भागे सिरदारा॥ (४१-१५-११)
जह राजे साह अमीरड़े होए सभ छारा॥ (४१-१५-१२)
फिर सुन करि ऐसी धमक कउ काँपै गिरि भारा॥ (४१-१५-१३)
तब सभ धरती हलचल भई छाडे घर बारा॥ (४१-१५-१४)
इउं ऐसे दुंद कलेस महि खपिओ संसारा॥ (४१-१५-१५)
तिहि बिनु सतिगुर कोई है नही भै काटन हारा॥ (४१-१५-१६)
गहि ऐसे खड़ग दिखाईऐ को सकै न झेला॥ (४१-१५-१७)
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥१५॥ (४१-१५-१८)

गुरुबर अकाल के हुकम सिउं उपजिओ बिगिआना॥ (४१-१६-१)
तब सहिजे रचिओ खालसा साबत मरदाना॥ (४१-१६-२)
इउं उठे सिंघ भभकारि कै सभ जग डरपाना॥ (४१-१६-३)
मड़ी देवल गोर मसीत ढाहि कीए मैदाना॥ (४१-१६-४)
बेद पुरान खट सासत्रा फुन मिटे कुराना॥ (४१-१६-५)
बाँग सलात हटाइ करि मारे सुलताना॥ (४१-१६-६)
मीर पीर सभ छपि गए मजहब उलटाना॥ (४१-१६-७)
मलवाने काजी पड़ि थके कछु मरमु न जाना॥ (४१-१६-८)
लख पंडति ब्रहमन जोतकी बिख सिउ उरझाना॥ (४१-१६-९)
फुन पाथर देवल पूजि कै अति ही भरमाना॥ (४१-१६-१०)
इउं दोनो फिरके कपट मों रच रहे निदाना॥ (४१-१६-११)
इउं तीसर मजहब खालसा उपजिओ परधाना॥ (४१-१६-१२)
जिनि गुरु गोबिंद के हुकम सिउ गहि खड़ग दिखाना॥ (४१-१६-१३)
तिह सभ दुसटन कउ छेदि कै अकाल जपाना॥ (४१-१६-१४)
फिर ऐसा हुकम अकाल का जग मै प्रगटाना॥ (४१-१६-१५)
तब सुन्नत कोइ न कर सकै काँपति तुरकाना॥ (४१-१६-१६)
इउं उमत सभ मुहम्मदी खपि गई निदाना॥ (४१-१६-१७)

तब फते डंक जग मो घुरे दुख दुंद मिटाना॥ (४१-१६-१८)
इउं तीसर पंथ रचाइनु वड सूर गहेला॥ (४१-१६-१९)
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥१६॥ (४१-१६-२०)

जागे सिंघ बलवंत बीर सभ दुसट खपाए॥ (४१-१७-१)
दीन मुहम्मदी उठ गइओ हिंदक ठहिराए॥ (४१-१७-२)
तहि कलमा कोई न पड़ह सकै नहीं जिकरु अलाए॥ (४१-१७-३)
निवाज़ दरूद न फाइता नह लंड कटाए॥ (४१-१७-४)
यह राहु शरीअत मेट करि मुसलम भरमाए॥ (४१-१७-५)
गुरु फते बुलाई सभन कउ सच खेल रचाए॥ (४१-१७-६)
निज सूर सिंघ वरिआमड़े बहु लाख जगाए॥ (४१-१७-७)
सभ जग तिनहूं लूट करि तुरकाँ चुणि खाए॥ (४१-१७-८)
फिर सुख उपजाइओ जगत मै सभ दुख बिसराए॥ (४१-१७-९)
निज दोही फिरी गोबिंद की अकाल जपाए॥ (४१-१७-१०)
तिह निरभउ राज कमाइअनु सच अदल चलाए॥ (४१-१७-११)
इउं कलिजुग मै अवतार धारि सतिजुग वरताए॥ (४१-१७-१२)
सभ तुरक मलेछ खपाइ करि सच बणत बनाए॥ (४१-१७-१३)
तब सकल जगत कउ सुख दीए दुख मारि हटाए॥ (४१-१७-१४)
इउं हुकम भइओ करतार का सभ दुंद मिटाए॥ (४१-१७-१५)
तब सहजे धर्म प्रगासिआ हरि हरि जस गाए॥ (४१-१७-१६)
वह प्रगटिओ मरद अगम्मड़ा वरीआम इकेला॥ (४१-१७-१७)
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥१७॥ (४१-१७-१८)

निज फते बुलाई सतिगुरू कीनो उजीआरा॥ (४१-१८-१)
झूठ कपट सभ छपि गए सच सच वरतारा॥ (४१-१८-२)
फिर जग होम ठहिराइ कै निज धर्म सवारा॥ (४१-१८-३)
तुरक दुंद सभ उठ गइओ रचिओ जैकारा॥ (४१-१८-४)
जह उपजै सिंघ महाँ बली खालस निरधारा॥ (४१-१८-५)
सभ जग तिनहूं बस कीओ जप अलख अपारा॥ (४१-१८-६)
गुर धर्म सिमरि जग चमकिओ मिटिओ अंधिआरा॥ (४१-१८-७)
तब कुसल खेम आनंद सिउं बसिओ संसारा॥ (४१-१८-८)
हरि वाहिगुरू मंतर अगम्म जग तारनहारा॥ (४१-१८-९)
जो सिमरहि नर प्रेम सिउ पहुंचै दरबारा॥ (४१-१८-१०)
सभ पकड़ो चरन गोबिंद के छाडो जंजारा॥ (४१-१८-११)
नातरु दरगह कुटीअनु मनमुखि कूड़िआरा॥ (४१-१८-१२)

तह छुटै सोई जु हरि भजै सभ तजै बिकारा॥ (४१-१८-१३)
इस मन चंचल कउ घेर करि सिमरै करतारा॥ (४१-१८-१४)
तब पहुंचै हरि हुकम सिउं निज दसवैं दुआरा॥ (४१-१८-१५)
फिर इउं सहिजे भेटै गगन मै आतम निरधारा॥ (४१-१८-१६)
तब वै निरखैं सुरग महि आनंद सुहेला॥ (४१-१८-१७)
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥१८॥ (४१-१८-१८)

वहि उपजिओ चेला मरद का मरदान सदाए॥ (४१-१९-१)
जिनि सभ पृथवी कउ जीत करि नीसान झुलाए॥ (४१-१९-२)
तब सिंघन कउ बखस कर बहु सुख दिखलाए॥ (४१-१९-३)
फिर सभ पृथवी के ऊपरे हाकम ठहिराए॥ (४१-१९-४)
तिनहूं जगत सम्भाल करि आनंद रचाए॥ (४१-१९-५)
तह सिमरि सिमरि अकाल कउ हरि हरि गुन गाए॥ (४१-१९-६)
वाह गुरु गोबिंद गाजी सबल जिनि सिंघ जगाए॥ (४१-१९-७)
तब भइओ जगत सभ खालसा मनमुख भरमाए॥ (४१-१९-८)
इउं उठि भबके बल बीर सिंघ ससत्र झमकाए॥ (४१-१९-९)
तब सभ तुरकन को छेद करि अकाल जपाए॥ (४१-१९-१०)
सभ छत्रपती चुनि चुनि हते कहूं टिकनि न पाए॥ (४१-१९-११)
तब जग मैं धर्म परगासिओ सचु हुकम चलाए॥ (४१-१९-१२)
यह बारह सदी निबेड़ करि गुर फड़े बुलाए॥ (४१-१९-१३)
तब दुशट मलेछ सहिजे खपे छल कपट उडाए॥ (४१-१९-१४)
इउं हरि अकाल के हुकम सों रण जुध मचाए॥ (४१-१९-१५)
तब कुदे सिंघ भुजंगीए दल कटक उडाए॥ (४१-१९-१६)
इउं फते भई जग जीत करि सचु तखत रचाए॥ (४१-१९-१७)
बहु दीओ दिलासा जगत को हरि भगति दृड़ाए॥ (४१-१९-१८)
तब सभ पृथवी सुखीआ भई दुख दरद गवाए॥ (४१-१९-१९)
फिर सुख निहचल बखसिओ जगत भै त्रास चुकाए॥ (४१-१९-२०)
गुरदास खड़ा दर पकड़ि कै इउं उचरि सुणाए॥ (४१-१९-२१)
हे सतिगुर जम त्रास सों मुहि लेहु छुडाए॥ (४१-१९-२२)
जब हउं दासन को दासरो गुर टहिल कमाए॥ (४१-१९-२३)
तब छूटै बंधन सकल फुन नरकि न जाए॥ (४१-१९-२४)
हरिदासाँ चिंदिआ सद सदा गुर संगति मेला॥ (४१-१९-२५)
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥१९॥ (४१-१९-२६)

संत भगत गुर सिख हहि जग तारन आए॥ (४१-२०-१)

से परउपकारी जग मो गुरु मंत्र जपाए॥ (४१-२०-२)
जप तप संजम साध करि हरि भगति कमाए॥ (४१-२०-३)
तहि सेवक सो परवान है हरि नाम दृड़ाए॥ (४१-२०-४)
काम करोध फुन लोभ मोह अहंकार चुकाए॥ (४१-२०-५)
जोग जुगति घटि सेध करि पवणा ठहिराए॥ (४१-२०-६)
तब खट चकरा सहिजे घुरे गगना घरि छाए॥ (४१-२०-७)
निज सुन्न समाधि लगाइ कै अनहद लिव लाए॥ (४१-२०-८)
तब दरगह मुख उजले पति सिउं घरि जाए॥ (४१-२०-९)
कली काल मरदान मरद नानक गुन गाए॥ (४१-२०-१०)
यह वार भगउती जो पड़है अमरा पद पाए॥ (४१-२०-११)
तिह दूख संताप न कछु लगै आनंद वरताए॥ (४१-२०-१२)
फिर जो चितवै सोई लहै घटि अलख लखाए॥ (४१-२०-१३)
तब निस दिन इस वार सों मुख पाठ सुनाए॥ (४१-२०-१४)
सो लहै पदार्थ मुकति पद चड़िह गगन समाए॥ (४१-२०-१५)
तब कछू नपूछे जम धर्म सभ पाप मिटाए॥ (४१-२०-१६)
तब लगै न तिसु जम डंड दुख नहिं होइ दुहेला॥ (४१-२०-१७)
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥२०॥ (४१-२०-१८)

हरि सतिगुर नानक खेल रचाइआ॥ (४१-२१-१)
अंगद कउ प्रभु अलख लखाइआ॥ (४१-२१-२)
पृथम महल हर नामु जपाइओ॥ (४१-२१-३)
दुतीए अंगद हरि गुण गाइओ॥ (४१-२१-४)
तीसर महल अमर परधाना॥ (४१-२१-५)
जिह घट महि निरखे हरि भगवाना॥ (४१-२१-६)
जल भरिओ सतिगुरु के दुआरे॥ (४१-२१-७)
तब इह पाइओ महल अपारे॥ (४१-२१-८)
गुरु रामदास चउथे परगासा॥ (४१-२१-९)
जिनि रटे निरंजन प्रभु अभिनासा॥ (४१-२१-१०)
गुरू अरजन पंचम ठहराइओ॥ (४१-२१-११)
जिन सबद सुधार गरंथ बणाइओ॥ (४१-२१-१२)
ग्रंथ बणाइ उचार सुनाइओ॥ (४१-२१-१३)
तब सर्ब जगत मै पाठ रचाइओ॥ (४१-२१-१४)
करि पाठ ग्रंथ जगत सभ तरिओ॥ (४१-२१-१५)
जिह निस बासुर हरि नाम उचरिओ॥ (४१-२१-१६)
गुर हरि गोबिंद खसटम अवतारे॥ (४१-२१-१७)

जिनि पकड़ि तेग बहु दुसट पछारे॥ (४१-२१-१८)
इउं सभ मुगलन का मन बउराना॥ (४१-२१-१९)
तब हरि भगतन सों दुंद रचाना॥ (४१-२१-२०)
इउं करि है गुरदास पुकारा॥ (४१-२१-२१)
हे सतिगुरु मुहि लेहु उबारा ॥२१॥ (४१-२१-२२)

सपतम महिल अगम हरिराइआ॥ (४१-२२-१)
जिन सुन्न धिआन करि जोग कमाइआ॥ (४१-२२-२)
चड़िह गगन गुफा महि रहिओ समाई॥ (४१-२२-३)
जहा बैठ अडोल समाधि लगाई॥ (४१-२२-४)
सभ कला खैंच करि गुप्त रहायं॥ (४१-२२-५)
तहि अपन रूप को नहिं दिखलायं॥ (४१-२२-६)
इउं इस परकार गुबार मचाइओ॥ (४१-२२-७)
तह देव अंस को बहु चमकाइओ॥ (४१-२२-८)
हरिकिसन भयो असटम बल बीरा॥ (४१-२२-९)
जिन पहुंचि देहली तजिओ सरीरा॥ (४१-२२-१०)
बाल रूप धरि स्वाँग रचाइओ॥ (४१-२२-११)
तब सहिजे तन को छोडि सिधाइओ॥ (४१-२२-१२)
इउ मुगलनि सीस परी बहु छारा॥ (४१-२२-१३)
वै खुद पति सो पहुंचे दरबारा॥ (४१-२२-१४)
औरंगे इह बाद रचाइओ॥ (४१-२२-१५)
तिन अपना कुल सभ नास कराइओ॥ (४१-२२-१६)
इउ ठहकि ठहकि मुगलनि सिरि झारी॥ (४१-२२-१७)
फुन होइ पापी वह नरक सिधारी॥ (४१-२२-१८)
इउं करि है गुरदास पुकारा॥ (४१-२२-१९)
हे सतिगुर मुहि लेहु उबारा ॥२२॥ (४१-२२-२०)

गुरू नानक सभ के सिर ताजा॥ (४१-२३-१)
जिह कउ सिमरि सरे सभ काजा॥ (४१-२३-२)
गुर तेग बहादर स्वाँग रचायं॥ (४१-२३-३)
जिह अपन सीस दे जग ठहरायं॥ (४१-२३-४)
इस बिधि मुगलन को भरमाइओ॥ (४१-२३-५)
तब सतिगुर अपना बल न जनाइओ॥ (४१-२३-६)
प्रभ हुकम बूझि पहुंचे दरबारा॥ (४१-२३-७)
तब सतिगुरु कीनी मिहर अपारा॥ (४१-२३-८)

इउं मुगलनि को दोख लगाना॥ (४१-२३-९)
होइ खराब खपि गए निदाना॥ (४१-२३-१०)
इउं नउं महलों की जुगति सुनाई॥ (४१-२३-११)
जिह करि सिमरन हरि भगति रचाई॥ (४१-२३-१२)
हरि भगति रचाइ नाम निसतारे॥ (४१-२३-१३)
तब सभ जग मै प्रगटिओ जैकारे॥ (४१-२३-१४)
इउं करि है गुरदास पुकारा॥ (४१-२३-१५)
हे सतिगुर मुहि लेहु उबारा ॥२३॥ (४१-२३-१६)

गुरु गोबिंद दसवाँ अवतारा॥ (४१-२४-१)
जिन खालसा पंथ अजीत सुधारा॥ (४१-२४-२)
तुरक दुसट सभ मारि बिदारे॥ (४१-२४-३)
सभ पृथवी कीनी गुलजारे॥ (४१-२४-४)
इउं प्रगटे सिंघ महाँ बलबीरा॥ (४१-२४-५)
तिन आगे को धरै न धीरा॥ (४१-२४-६)
फते भई दुख दुंद मिटाए॥ (४१-२४-७)
तह हरि अकाल का जाप जपाए॥ (४१-२४-८)
पृथम महल जपिओ करतारा॥ (४१-२४-९)
तिन सभ पृथवी को लीओ उबारा॥ (४१-२४-१०)
हरि भगति दृड़ाए नरू सभ तारे॥ (४१-२४-११)
जब आगिआ कीनी अलख अपपारे॥ (४१-२४-१२)
इउं सतिसंगति का मेल मिलायं॥ (४१-२४-१३)
जह निस बासुर हरि हरि गुन गायं॥ (४१-२४-१४)
इउं करि है गुरदास पुकारा॥ (४१-२४-१५)
हे सतिगुर मुहि लेहु उबारा ॥२४॥ (४१-२४-१६)

तूं अलख अपार निरंजन देवा॥ (४१-२५-१)
जिह ब्रह्मा बिसनु सिव लखै न भेवा॥ (४१-२५-२)
तुम नाथ निरंजन गहर गम्भीरे॥ (४१-२५-३)
तुम चरननि सों बाँधे धीरे॥ (४१-२५-४)
अब गहि पकरिओ तुमरा दरबारा॥ (४१-२५-५)
जिउं जानहु तिउं लेहु सुधारा॥ (४१-२५-६)
हम कामी क्रोधी अति कूड़िआरे॥ (४१-२५-७)
तुम ही ठाकुर बखसनहारे॥ (४१-२५-८)
नहीं कोई तुम बिणु अवरु हमारा॥ (४१-२५-९)

जो करि है हमरी प्रतिपारा॥ (४१-२५-१०)
तुम अगम अडोल अतोल निराले॥ (४१-२५-११)
सभ जग की करिहो प्रतिपाले॥ (४१-२५-१२)
जल थल महीअल हुकम तुमारा॥ (४१-२५-१३)
तुम कउ सिमरि तरिओ संसारा॥ (४१-२५-१४)
इउं करि है गुरदास पुकारा॥ (४१-२५-१५)
हे सतिगुरु मुहि लेहु उबारा ॥२५॥ (४१-२५-१६)

तुम अछल अछेद अभेद कहायं॥ (४१-२६-१)
जहा बैठि तखत पर हुकम चलायं॥ (४१-२६-२)
तुझ बिनु दूसरि अवर न कोई॥ (४१-२६-३)
तुम एको एकु निरंजन सोई॥ (४१-२६-४)
ओअंकार धरि खेल रचायं॥ (४१-२६-५)
तुम आप अगोचर गुप्त रहायं॥ (४१-२६-६)
प्रभ तुमरा खेल अगम निरधारे॥ (४१-२६-७)
तुम सभ घट भीतर सभ ते न्यारे॥ (४१-२६-८)
तुम ऐसा अचरज खेल बनाइओ॥ (४१-२६-९)
जिह लख ब्रहमंड को धारि खपाइओ॥ (४१-२६-१०)
प्रभु तुमरा मरमु न किनहू लखिओ॥ (४१-२६-११)
जह सभ जग झूठे धंदे खपिओ॥ (४१-२६-१२)
बिनु सिमरन ते छुटै न कोई॥ (४१-२६-१३)
तुम को भजै सु मुकता होई॥ (४१-२६-१४)
गुरदास गरीब तुमन का चेला॥ (४१-२६-१५)
जपि जपि तुम कउ भइओ सुहेला॥ (४१-२६-१६)
इह भुल चूक सभ बखश करीजै॥ (४१-२६-१७)
गुरदास गुलाम अपना करि लीजै॥ (४१-२६-१८)
इउं करि है गुरदास पुकारा॥ (४१-२६-१९)
हे सतिगुरु मुहि लेहु उबारा ॥२६॥ (४१-२६-२०)

इह कवन कीट गुरदास बिचारा॥ (४१-२७-१)
जो अगम निगम की लखै सुमारा॥ (४१-२७-२)
जब करि किरपा गुर बूझ बुझाई॥ (४१-२७-३)
तब इह कथा उचारि सुनाई॥ (४१-२७-४)
जिह बिन हुकम इक झुलै न पाता॥ (४१-२७-५)
फुनि होइ सोई जे करै बिधाता॥ (४१-२७-६)

हुकमै अंदरि सगल अकारे॥ (४१-२७-७)
बुझै हुकम सु उतरै पारे॥ (४१-२७-८)
हुकमै अंदरि ब्रह्म महेसा॥ (४१-२७-९)
हुकमै अंदरि सुर नर सेसा॥ (४१-२७-१०)
हुकमै अंदरि बिसनु बनायं॥ (४१-२७-११)
जिन हुकम पाइ दीवान लगायं॥ (४१-२७-१२)
हुकमै अंदरि धर्म रचायं॥ (४१-२७-१३)
हुकमै अंदरि इंदर उपायं॥ (४१-२७-१४)
हुकमै अंदरि ससि अरु सूरे॥ (४१-२७-१५)
सभ हरि चरण की बाँछहि धूरे॥ (४१-२७-१६)
हुकमै अंदरि धरनि अकासा॥ (४१-२७-१७)
हुकमै अंदरि सासि गिरासा॥ (४१-२७-१८)
जिह बिना हुकम कोई मरै न जीवै॥ (४१-२७-१९)
बूझै हुकम सो निहचल थीवै॥ (४१-२७-२०)
इउं करि है गुरदास पुकारा॥ (४१-२७-२१)
हे सतिगुरु मुहि लेहु उबारा ॥२७॥ (४१-२७-२२)

इह वार भगउती महाँ पुनीते॥ (४१-२८-१)
जिस उचरति उपजति परतीते॥ (४१-२८-२)
जो इस वार सों प्रेम लगावै॥ (४१-२८-३)
सोई मन बाँछित फल पावै॥ (४१-२८-४)
मिटहिं सगल दुख दुंद कलेसा॥ (४१-२८-५)
फुन प्रगटै बहु सुख परवेसा॥ (४१-२८-६)
जो निस बासुर रटहिं इह वारे॥ (४१-२८-७)
सो पहुंचे धुर हरि दरबारे॥ (४१-२८-८)
इह वार भगउती समापति कीनी॥ (४१-२८-९)
तब घट बिदिआ की सभ बिधि चीनी॥ (४१-२८-१०)
इउ सतिगुर साहिब भए दिआला॥ (४१-२८-११)
तब छूट गए सभ ही जंजाला॥ (४१-२८-१२)
करि किरपा प्रभ हरि गिरधारे॥ (४१-२८-१३)
उहि पकड़ि बाँह भउजल सों तारे॥ (४१-२८-१४)
इउं करि है गुरदास पुकारा॥ (४१-२८-१५)
हे सतिगुरु मुहि लेहु उबारा ॥२८॥४१॥ (४१-२८-१६)